वृहद् भक्तामर महामण्डल विधान

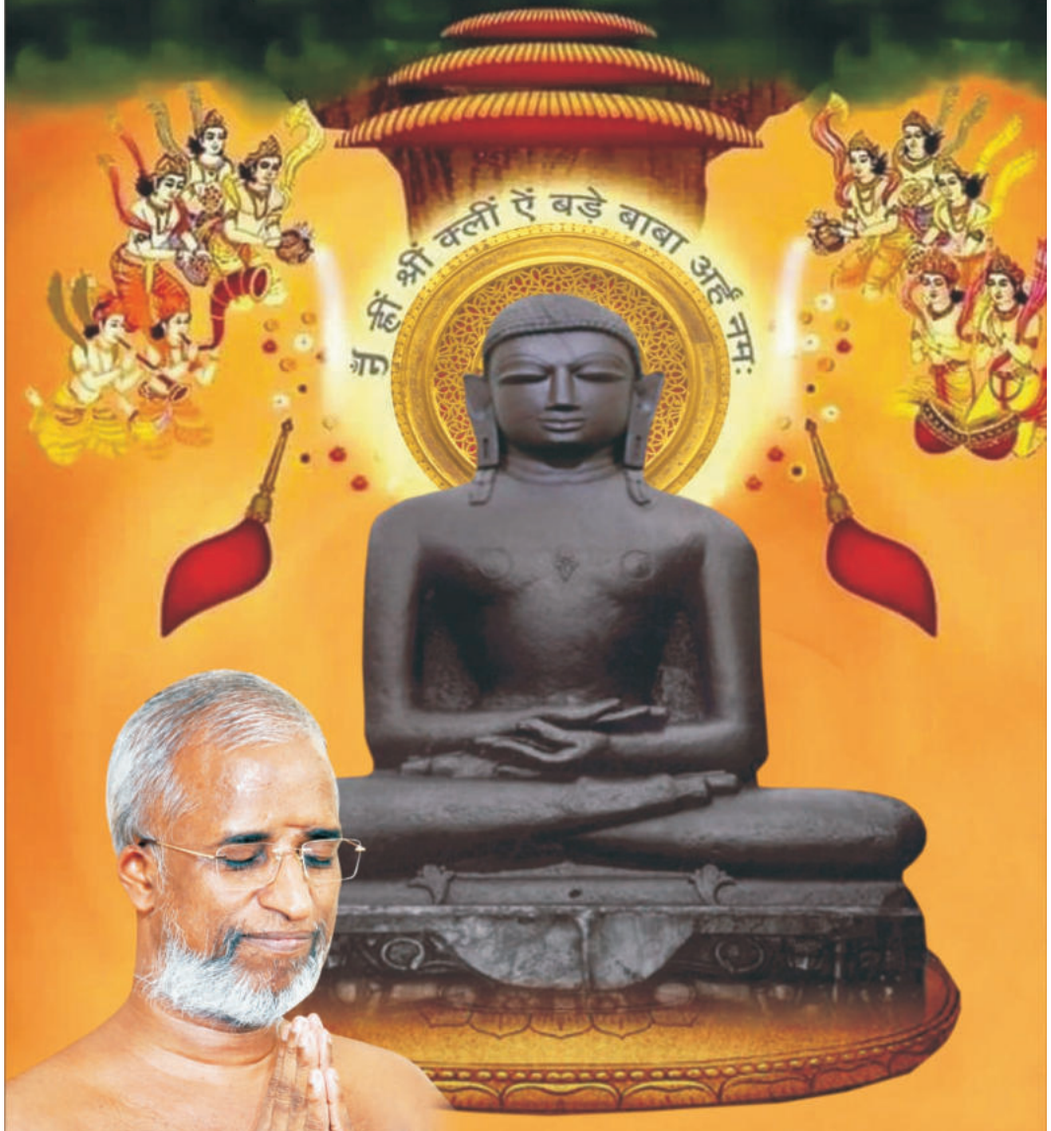

आशीर्वाद

भक्तामर महोदधि उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

वृहद् भक्तामर महामण्डल विधान

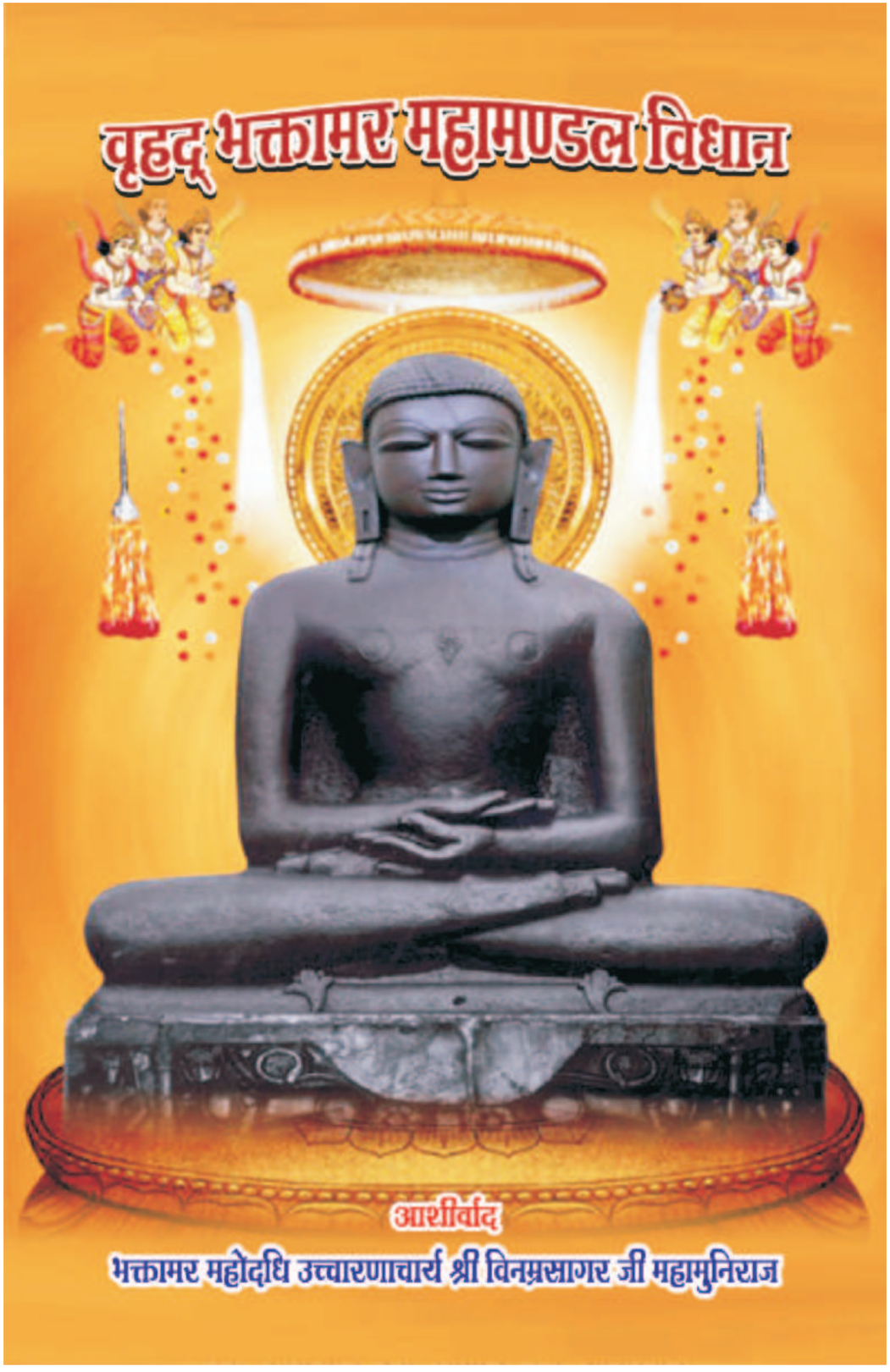

आशीर्वाद

भक्तामर महोदधि उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

कृति	–	**वृहद् भक्तामर महामण्डल विधान**
मंगल आशीर्वाद	–	परम पूज्य भक्तामर महोदधि उच्चारणाचार्य श्री 108 विनम्रसागर जी महामुनिराज
रचियत्री	–	श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी
प्रथमावृत्ति	–	3300 प्रतियाँ, अप्रैल 2022
द्वितीयावृति	–	3300 प्रतियाँ, दीक्षा भूमि महोत्सव–2023
ज्ञानदान राशि	–	500/–रुपये
प्राप्ति स्थल	–	सम्यग्ज्ञान विराग विद्या पीठ, भिण्ड
	–	देवेन्द्र जैन, बीना मो. 9425452825
	–	निर्ग्रन्थ श्रमण सेवा समिति मो. 9826214859
	–	धर्म प्रभावना न्यास, भिण्ड मो. 9826801542

डिजीटल इंडिया का जैन यू-ट्यूब चैनल...
विनम्र देशना चैनल
You Tube
Mob.: 9414426947, 9891206953

वंदनीय आचार्य परम्परा

चारित्र चक्रवर्ती मुनि कुञ्जर
आचार्य श्री 108 आदिसागर जी महामुनिराज

तीर्थभक्त शिरोमणि, समाधि सम्राट
आचार्य श्री 108 महावीरकीर्ति जी महामुनिराज

वात्सल्य रत्नाकर
आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महामुनिराज

तपस्वी सम्राट
आचार्य श्री 108 सन्मतिसागर जी महामुनिराज

परम पूज्य युग प्रमुख, काव्य शिरोमणि
सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महामुनिराज

जीवन है पानी की बूँद के 8100 छंद के रचयिता
परम पूज्य उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

अनुक्रमणिका

1.	आशीर्वाद	6
2.	अंतस् के उद्गार	8
3.	भक्ति में शक्ति	11
4.	मंगलाष्टक स्तोत्र	16
5.	जल शुद्धि मंत्र	18
6.	लघु अभिषेक पाठ	18
7.	लघु शांतिधारा	21
8.	विनय पाठ	24
9.	पूजा प्रारम्भ	27
10.	स्वस्ति मंगल	29
11.	परमर्षि उपासना	30
12.	नवदेवता पूजन	31
13.	अर्घावली	35
14.	सिद्ध भक्तिः (प्राकृत)	41
15.	मंगलाचरण	42
16.	पूजन	43
17.	पूर्णार्घ	49
18.	विधान प्रारम्भ	57
19.	ऋद्धि मंत्रों के अर्घ	444
19.	आचार्य श्री की पूजन	446
20.	महाअर्घ	453
21.	शान्ति पाठ	454
22.	विसर्जन	456

श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी

गुर्वाशीष ही सर्वश्रेष्ठ सम्पदा है

भक्ति का रस हमारे जीवन को आमूल–चूल परिवर्तित कर सकता है। संत के पास त्याग–संयम–ज्ञान के कारण ध्यान है जिसमें लीन होकर यहाँ तक कि अपने शरीर से भी बेखबर होकर सारी दुनियाँ को बहुत आसानी से भूला जा सकता है लेकिन श्रावक के पास त्याग–संयम–ज्ञान संत जैसा नहीं है उसके पास भगवान की पूजा है और भक्ति है जिसमें रमकर चरमोत्कर्ष आनंद प्राप्त करते हुए घर–परिवार–द्वार ही नहीं खुद को भी भक्ति में भूला जा सकता है। श्रावक को भक्ति ही है जो महान् पुण्य का अनुबंध कराकर सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र को ही नहीं सर्वश्रेष्ठ महान् तीर्थंकर प्रकृति का भी बंध करा सकती है, भक्ति ही है जो प्रत्येक पाप कर्म का नाश कर सकती है, भक्ति ही है जो चक्रवर्ती, बलदेव, राजा–महाराजा बना सकती है, भक्ति ही है जो सर्व विद्याओं का स्वामी बना सकती है, भक्ति ही है जो पाषाण की प्रतिमा में परमात्मा को दिखा सकती है, भक्ति ही है जो यहाँ का अर्जित किया हुआ ज्ञान अगले जन्म तक ले जा सकती है, भक्ति ही है जो मोक्ष का द्वार जबरन खुलवा सकती है, भक्ति ही है जो रत्नत्रयधारी बनाकर बोधि–समाधि दिला सकती है और क्या कहें **भक्ति ही है जो भक्त को भगवान से मिला सकती है और स्वयं को भगवान बना सकती है।**

संसार के सभी कार्यों में सफलता पाने के लिये भक्ति ही एक अचूक मंत्र है, भक्ति ही श्रद्धा, आस्था, ज्ञान–संस्कार, संयम–सरलता,सहजता–समानता पैदा करती है तभी कहते हैं **भक्ति के द्वारा भक्त के वश में भगवान हुआ करते हैं।** जैनधर्म में भक्ति के स्तोत्रों में एक भक्तामर स्तोत्र हुआ है जो सातवीं शताब्दी में आचार्य प्रवर श्री मानतुंग जी के द्वारा रचाया गया था आज इक्कसवीं शताब्दी है 1400 वर्ष हो जाने पर भी वह स्तोत्र सबसे ज्यादा प्रसिद्धि को प्राप्त हुआ है जिसकी महिमा आज प्रत्येक संत महापुरुष गाते–गाते थकते नहीं हैं। जहाँ–जहाँ इस स्तोत्र का पाठ–जाप और विधान होते हैं उनके घरों में धन सम्पदा, पारिवारिक सुख, व्यापार आदि सभी फलीभूत होते देखे जाते हैं, आने वाली अशुभ बाधायें नष्ट हो जाती हैं उसके भाग्य ही जाग जाते हैं, वह हर क्षेत्र में उन्नति को प्राप्त करता जाता है, बाधायें आने के पूर्व ही मिट जाती हैं, व्यंतर–भूत बाधायें उसे छू भी नहीं पातीं जो इस भक्तामर स्तोत्र का शुद्ध उच्चारण के साथ भावों को समझता हुआ प्रतिदिन नियमपूर्वक पाठ और जाप करता है। इसको शुद्ध पढ़ते समय अंतरंग में एक अलग आनंदानुभूति होती है जिसे सिर्फ अनुभव किया जा सकता है शब्दों से अभिव्यक्त नहीं किया जा सकता।

इस भक्तामर स्तोत्र का शिविर लगाते हुए मुझे आज 27 वर्ष हो चुके हैं इस स्तोत्र को मेरे द्वारा 13 बार पद्यानुवाद अलग–अलग छंद में किया गया है अन्य लोगों ने भी इसे लगभग 150 तरह से अनुवादित किया है चिरजीवित यह स्तोत्र का विधान 48 छंदों में पूर्व से प्रचलित है जो आचार्य श्री सोमदेवकीर्ति ने लिखा है इसी स्तोत्र का पद्यानुवाद कर प्रत्येक अक्षर पर छंद की रचना करते हुए हमारे संघस्थ **श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी ने 2688 छंद लिखकर "वृहद् भक्तामर विधान"** की रचना की है जो प्रत्येक भक्त श्रावक को बहुत ही आनंदकारिणी है यह विधान सिद्धचक्र विधान और अन्य कल्पद्रुम आदि विधानों से भी बड़ा विधान बन गया है मुझे लगता है यह सबसे बड़ा विधान बन गया है धौलपुर में इस विधान की रचना पूर्ण हुई और प्रथम बार यह विधान धौलपुर समाज को करवाने का अवसर प्राप्त हुआ इसी विधान के अन्तर्गत समाज के कुछ पुण्यशाली श्रेष्ठीगणों ने इस विधान को सभी समाज तक पहुँचाने के लिए इसे प्रकाशित कराने का भाव बनाया जो ज्ञानार्जन का प्रतीक है और बहुत ही शोभनीय है।

श्रमणी आर्यिका विमलश्री माताजी के अथक प्रयास द्वारा श्रेष्ठ भक्ति से, गुरुओं के प्रति बहुमान से, परमात्मा के प्रति सम्मान से इस विधान की रचना में जो पुरुषार्थ किया गया है इससे यह कृति अमरता को प्राप्त अवश्य होगी साथ ही इस रचना के द्वारा श्रमणी आर्यिका की यशकीर्ति भी चिरजीवित रहेगी उनके इस परिश्रम के लिये, धर्मवृद्धि व समाधि हेतु मेरा बहुत–बहुत आशीर्वाद है। उनकी यह प्रभु भक्ति अनंता को प्राप्त कराये पुन: बहुत–बहुत आशीर्वाद।

– आचार्य विनम्रसागर

अंतस् के उद्गार

पूज्येषु गुणानुरागो भक्ति: पूज्य पुरुषों के गुणों में अनुराग होना भक्ति है। वीतराग शासन की अनादि कालीन परम्परा भक्ति परम्परा रही है। भक्ति वह रसायन है जो भोजन में मिल जाये तो प्रसाद बन जाती है, जल में मिल जाये तो गंधोदक बन जाती है, सफर में मिल जाए तो तीर्थयात्रा बन जाती है, संगीत में मिल जाये तो कीर्तन बन जाती है, कार्य में मिल जाये तो कर्तव्य बन जाती है, क्रिया में मिल जाये तो सेवा घर में मिल जाये तो मंदिर और वही भक्ति अपने आत्मा में मिल जाये तो परमात्मा बना देती है।

भक्ति वह सेतु है जो परमात्म से मिला दे, वह संगीत है जो हृदय में झंकृत कर दे, वह खुश्बू है जो आत्मा को महकाती है, वह चमकता दिनकर है जिसमें कैवल्य रश्मियाँ स्फुरायमान होती हैं, वह रस है जिसके बिना सारे रस बेरस हैं, वह गंगा है जिसमें नहाकर भक्त का हृदय आनंदित हो उठता है। आचार्य पूज्यपाद स्वामी कहते हैं–

एकापि समर्थेऽयं जिन भक्ति दुर्गतिं निवारयितुं।
पुण्यानि च पूरयितुं दातुं मुक्तिश्रियं कृतिन:।।

एक प्रभु भक्ति ही है जो दुर्गति का निवार करने वाली है, पुण्य का कोष को भरने वाली है, और मुक्ति द्वार पर लगे हुए ताले की चाबी है।

आचार्य श्री मानतुंग जी ने कर्मरूपी कारागृह में भी प्रभु भक्ति की और उस भक्ति में एक–एक मोती चुनकर पिरोया तो विश्वविख्यात भक्तामर स्तोत्र बन गया। उनका ध्येय भक्तामर लिखना बनाना नहीं था उनका ध्येय तो निर्बन्धन का अभिवंदन करने का था आत्मनंदन का था परन्तु उस निर्बन्धन की भक्ति ने उन्हें बंधन से मुक्ति दिला दी।

इस भक्तामर स्तोत्र का एक–एक अक्षर बीज मंत्र है ऐसा आचार्य मानतुंग के लघुनंदन ममाराध्य गुरुवर जब अपने मुखारविन्द से भक्तामर की महिमा जन–जन को सुनाते हैं। जब इसकी महिमा को सुना तो मन में इक भक्ति का कौतुहल जागा और लगा कि जब एक–एक अक्षर मंत्र है तब क्यों न प्रत्येक मंत्र अर्थात् अक्षर द्वारा प्रभु की भक्ति की जाए। गुरुदेव के चरणों निवेदन किया तो

गुरुदेव ने आशीर्वादात्मक आदेश दिया कि इस कार्य को आपको सम्पन्न करना है। मेरे अंदर जो लभगग पाँच युगों से गुरुदेव ने आदि प्रभु की महिमा रूपी भक्ति रस भरा था वह झलक पड़ा और मन में भाव आया कि "भक्तामर महोदधि" "भक्तामर वाले बाबा" अर्थात् ममाराध्य गुरुवर जो उच्चारण के धनी हैं जिनकी भक्तामर के प्रति अटूट श्रद्धा है जैसी भक्ति आदि प्रभु की वे करते हैं वैसी निष्काम भक्ति हम भी करके देखें। क्योंकि "यकीन के बिना हम एक कदम भी नहीं चल सकते और उम्मीद, उमंग के बिना सफल नहीं हो सकते यकीन व उम्मीद कार्य आसान नहीं सफल बनाते हैं" और उसी यकीन व उम्मीद पर आरूढ़ हो ऐसी ही आदीश्वर की भक्ति में मुक्ति पर्यंत करती रहूँ। क्योंकि कहा है "भक्ति मुक्ति दातार" साथ ही आचार्य श्री मानतुंग जी ने भी इसी स्तोत्र के 23वें छंद के चौथे चरण में कह दिया है "नान्य: शिव: शिव पदस्य मुनीन्द्र पंथा:" अत: इसके अलावा कोई मुक्ति का मार्ग नहीं है।

यह विधान विशेष भक्ति के साथ प्रतिदिन एक छंद के के 56 अर्घ चढ़ाकर 48 दिनों में पूर्ण कर सकते हैं। फिर अपनी सुविधानुसार 24 या 8 दिन में भी कर सकते हैं। इतना ध्यान रखें कि जितने दिन विधान करें उतने दिन विधान की पूजन करें पुन: अग्रिम अर्घ चढ़ाएँ अंत में जयमाल पढ़ें। यदि विधान का समय न हो तो आदि स्तवन के रूप में पाठ भी कर सकते हैं।

आचार्य भगवन् श्री सोमसेन जी महाराज के द्वारा भी भक्तामर स्तोत्र पर वृहद विधान की रचना हुई तदनुसार ही प्रत्येक अक्षर को लेकर इस "श्री भक्तामर महामण्डल विधान" की संयोजना की। जो अक्षर है जैसे– भ क्ता म र प्र ण त मौ लि म णि प्र भा णा आदि 2688 अक्षरों प्रथम अक्षर शब्द या प्रथम चरण में लिखने का प्रयास किया गया है और उन अक्षरों को लाल वर्ण का करके प्रदर्शित किया गया है।

यह विधान बुद्धि ऋद्धि सिद्धि प्रदायी, अतिशयकारी विघ्न विनाशी है। सदियों के बाद भी यह दिगम्बर व श्वेताम्बर दोनों सम्प्रदायों अतिशय मान्य है। इसकी महिमा समयानुसार वृद्धिंगत हो रही है। देश–विदेश में इसके मंत्रों द्वारा बड़ी–बड़ी बीमारियों का इलाज किया जा रहा है इसका अतिशय जन जीवन पर प्रभावशाली असर डाल रहा है। अनेकों भक्तगण ग्रह शांति और आत्म शान्ति हेतु

प्रतिदिन पाठ करते हैं। यह विश्वास है कि सभी विधान करने वालों को इससे आनन्दानुभूति अवश्य होती एवं प्रभु चरणों से अनुराग बढ़ेगा और उनके हृदय में "वंदे तद् गुण लब्धये" चरितार्थ होगा।

विशेष फल पाने के लिए 2688 उपवास व एकासन करके व्रत कर सकते हैं।

निर्देश– * व्रत अपनी सुविधानुसार किसी भी तिथी को कर सकते हैं।

* इस व्रत को करने वाले प्रात:काल भगवान आदिनाथ की पूजन करने के बाद व्रत वाले अर्घ को चढ़ा सकते हैं। ॐ ह्रीं अर्हं महिमावन्त "भ" बीजाक्षर संयुक्ताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वहा।

* व्रत वाले दिन उसी अर्घ की जाप करें। जाप– ॐ ह्रीं अर्हं महिमावन्त "भ" बीजाक्षर संयुक्ताय श्री वृषभजिनेन्द्राय नमो नम:।

इस विधान को आपके समक्ष लाने में पूज्य गुरुदेव का परम आशीर्वाद, श्रमणवर्ग संघस्थ आर्यिका विपुलश्री, विमुदश्री आदि सभी आर्यिकाएँ एवं बाल ब्रह्मचारिणी श्रिया आदि सभी बहिनों का अनमोल सहयोग रहा है।

हम सभी प्रभु भक्तों का मुक्ति पथ प्रशस्त हो, जब तक मुक्ति न मिले तब तक प्रभु व गुरु भक्ति मेरे अंदर अक्षुण्ण बनी रहे इसी भावना से मम श्रद्धालय के देवता आचार्य मानतुंग के लघुनंदन "भक्तामर महोदधि उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज" के चरण कमलों में त्रय भक्ति युत नमन कर उन्हीं की कृति उनके ही कर कमलों में सविनय अर्पित समर्पित।

–गुरुकृपा आश्रिता
श्रमणी आर्यिका विमलश्री

भक्ति में शक्ति

संस्कृत साहित्य की तीन विधायें प्रमुख रूप से हैं। (1) गद्य साहित्य (2) पद्य साहित्य (3) चम्पू साहित्य। तीनों साहित्यों में रचनायें उपलब्ध होती हैं। पद्य साहित्य के अन्तर्गत स्तोत्र काव्य लिखे गये हैं। जैन दर्शन में कवियों में भक्ति के वशीभूत होकर स्तोत्रों की रचना की। यथा–एकीभाव स्तोत्र, विषापहार स्तोत्र, कल्याण मंदिर स्तोत्र तथा भक्तामर स्तोत्र।

जिसमें विषापहार स्तोत्र की रचना विष को दूर करने हेतु लिखा गया। उस स्तोत्र के द्वारा कवि ने भक्ति के वशीभूत होकर पुत्र का सर्प के विष को दूर करने हेतु विषापहार स्तोत्र की रचना की।

उसी प्रकार जब आचार्य मानतुंग को बेड़ियों में बांध दिया गया तो आचार्य मानतुंग ने प्रथम तीर्थंकर आदिनाथ भगवान की स्तुति करते हुए 'भक्तामर स्तोत्र' की रचना की। तथा स्तुति करते हुए ही उनकी बेड़िया टूट गयीं।

स्तोत्रों में भक्तामर स्तोत्र को अधिक प्रसिद्धि प्राप्त हुई। इतनी अन्य स्तोत्रों को प्रसिद्धि प्राप्त नहीं हो सकी। जैन समाज में गृह प्रवेश आदि किसी भी कार्य के प्रारंभ में भक्तामर विधान ऋद्धि मंत्रों सहित किया जाता है। इसके महत्त्व कोऔर अधिक प्रभावक बनाने हेतु परम पूज्य आचार्य श्री 108 विमलसागर जी महाराज की परम्परा में उनके शिष्य परम पूज्य सूरिगच्छाचार्य श्री 108 विरागसागर जी महाराज के परम शिष्य भक्तामर महोदधि उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज की अनन्य शिष्या, तदनुगामी, परम पूज्या श्रमणी आर्यिका 105 विमलश्री माताजी ने भक्तामर स्तोत्र के प्रत्येक वर्ण (अक्षर) पर एक–एक पद्य को लिखकर एक वृहद् विधान की रचना की है। जिससे भक्तामर स्तोत्र का और अधिक महत्त्व बढ़ गया है। यह भक्तामर महामंडल विधान 2688 पद्यों में लिखा गया है। अभी तक विधानों का राजा श्री 1008 सिद्धचक्र महामण्डल विधान माना जाता है। जिसमें 2040 पद्य है और यह विधान आठ दिवस में किया जाता है। परन्तु पूज्य आर्यिका विमलश्री माताजी द्वारा लिखा गया विधान 2688 पद्यों में हैं, यह 10 दिवस से कम में नहीं हो सकता। अत: श्री सिद्धचक्र महामंडल विधान समतुल्य है।

मेरा परम सौभाग्य है कि फाल्गुन की अष्टाह्निका पर्व में मुझे परम पूज्य आचार्य श्री विनम्रसागर जी महाराज के ससंघ सान्निध्य में श्री 1008 भक्तामर महामंडल विधान अड़तालीस मण्डल बनाकर मुरैना नगर के श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर

जैन बड़ा मंदिर में कराने का अवसर प्राप्त हुआ। मैं अपना अहो भाग्य मानता हूँ कि जिन पूज्य आर्यिका माताजी के द्वारा यह विधान लिखा गया है उनके गुरु भक्तामर महोदधि की उपाधि से सुशोभित उच्चारणाचार्य श्री 108 विनम्रसागर जी के ससंघ सान्निध्य में पूज्य आर्यिका श्री के मुखारविन्द से उच्चारण पूर्वक कराने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

पहले मैंने सोचा कि यह भक्तामर महामण्डल विधान इतने उच्च शब्दों के द्वारा तर्ज निर्मित करके कैसे लिखा गया। परम पूज्य आर्यिका 105 ज्ञानमती माताजी के विधानों के समतुल्य भावों से भरा हुआ यह विधान है। बाद में मुझे स्मरण आया कि परम पूज्य आर्यिका 105 विमलश्री माताजी संघ में ज्येष्ठ माताजी हैं एवं स्वाध्याय मनन-चिंतन में ही सदैव संलग्न रहती हैं और जिन्होंने गृहस्थ अवस्था में स्नातकोत्तर डिग्री के बाद भी पी.एच.डी. की उपाधि प्राप्त की है। उनके द्वारा ऐसी शब्दावली विधान में प्रयुक्त की जा सकती है।

पूज्य आर्यिका श्री से जब इस संबंध में चर्चा की तो उन्होंने बताया कि मुझे भी कभी-कभी ऐसा लगता है कि इतने सुसंस्कारित शब्दों से सहित इतना वृहद् विधान मेरे द्वारा कैसे लिखा गया, विश्वास नहीं होता। कभी-कभी अपनी लेखनी पर स्वयं को विश्वास नहीं होता।

परम पूज्य आर्यिका श्री का यह महाविधान अमरता को प्राप्त हो और मुझे पूज्य आर्यिका श्री के सान्निध्य में कराने का सुअवसर प्राप्त हो ऐसी मंगल भावना के साथ अपने शब्दों को विराम देता हूँ।

परम पूज्य आचार्य श्री एवं समस्त मुनिगण तथा पूज्य आर्यिका विमलश्री माताजी सहित समस्त पूज्य आर्यिका संघ के चरणों कोटि-कोटि नमन्।

।। जैनम् जयतु शासनम् ।।

डॉ. हरिशचन्द्र जैन शास्त्री (प्राचार्य)

श्री गोपाल दि. जैन सिद्धांत संस्कृत महाविद्यालय, मुरैना (म.प्र.)

मो. 94251123167

प्रकाशन में सहयोगी परिवार

श्री देवेन्द्र कामरा-श्रीमती शशि कामरा, राकेश कुमार कामरा-श्रीमती नीमल कामरा, श्री सुनील कामरा-श्रीमती ज्योति कामरा
मुकेश कामरा-श्रीमती सपना कामरा, संतोषकुमार कामरा-श्रीमती अर्चना कामरा, अंकित कामरा-श्रीमती अंजली कामरा
महावीर कामरा-श्रीमती शिल्पी कामरा, ऋषि कामरा-श्रीमती शिवांगी कामरा, शिवम कामरा एड.-श्रीमती सलोनी कामरा
राखी कामरा, सचिन कामरा, अर्चा कामरा, आर्जव कामरा, आराध्या कामरा, ललितपुर

श्री सनतकुमार जी-श्रीमती अनीता जैन, श्री चन्द्रेश जी-श्रीमती सोनाली जैन
इंजी अमन जैन, सीए शुभम् जैन, वेदिका जैन, क्यूटी जैन

प्रकाशन में सहयोगी परिवार

स्व. वीरेन्द्र जी–श्रीमती रजनी देवी
दीपाली सराफ

श्रीमती मोनिका जैन
रिमि जैन, रौनक जैन

श्री दिलीप जी–श्रीमती रीना सराफ
रिया सराफ, तमन्ना सराफ

श्री प्रदीप जी–श्रीमती सपना सराफ
रायूष सराफ, सिद्ध सराफ

स्व. श्री रविन्द्र कुमार जी–श्रीमती मीना जैन, श्री महेन्द्र कुमार जी–श्रीमती संगीता जैन
राजेन्द्र जी–श्रीमती मधु जैन, अभिषेक जी–श्रीमती प्रिन्सी जैन
अमिताभ, अंजलि, आदिश, आस्था, अर्जुन जैन

प्रकाशन में सहयोगी परिवार

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

गुप्तदान

मंगलाष्टक स्तोत्र

अर्हन्तो भगवंत इन्द्र-महिताः सिद्धाश्च सिद्धीश्वराः
आचार्या जिनशासनोन्नतिकराः पूज्या उपाध्यायकाः।
श्री सिद्धान्त-सुपाठकाः मुनिवरा रत्नत्रयाराधकाः,
पञ्चैते परमेष्ठिनः प्रतिदिनं, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।

श्रीमन्नम्र - सुरासुरेन्द्र - मुकुट - प्रद्योत - रत्नप्रभा-
भास्वत्पाद-नखेन्दवः प्रवचनाम्भोधीन्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन सिद्ध-सूर्यनुगतास्ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्या योगिजनैश्च पंचगुरवः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।1।।

सम्यग्दर्शन - बोध - वृत्तममलं, रत्नत्रयं पावनं,
मुक्ति-श्री नगराधिनाथ-जिनपत्युक्तोपवर्गप्रदः।
धर्मः सूक्तिसुधा च चैत्यमखिलं चैत्यालयं श्र्यालयं,
प्रोक्तं च त्रिविधं चतुर्विधममी, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।2।।

नाभेयादि-जिनाधिपास्त्रि-भुवनख्याताश्चतुर्विंशतिश्,
श्रीमन्तो भरतेश्वर प्रभृतयो, ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु-प्रति विष्णु-लांगलधराः सप्तोत्तरा विंशतिस्,
त्रैकाल्ये प्रथितास्त्रिषष्टि पुरुषाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।3।।

देव्योऽष्टौ च जयादिका द्विगुणिता विद्यादिका देवता,
श्री तीर्थंकर मातृकाश्च जनका, यक्षाश्च यक्ष्यस्तथा।
द्वात्रिंशत् त्रिदशाधिपास्थितिसुरा दिक्कन्यकाश्चाष्टधा,
दिक्पाला दश चैत्यमी सुरगणाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।4।।

ये सर्वौषधि ऋद्धयः सुतपसो, वृद्धिंगताः पंच ये,
ये चाष्टांग-महानिमित्त-कुशला, येऽष्टौ विधाश्चारणाः।
पंचज्ञानधरास्त्रयोऽपिबलिनो, ये बुद्धि ऋद्धीश्वराः,
सप्तैते सकलार्चिता गणभृतः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।5।।

कैलाशे वृषभस्य निर्वृतिमही, वीरस्य पावापुरे,
चम्पायां वसुपूज्य सज्जिनपतेः, सम्मेद शैलेऽर्हताम्।
शेषाणामपि चोर्जयन्त शिखरे, नेमीश्वरस्यार्हतो,
निर्वाणवनयः प्रसिद्धविभवाः, कुर्वन्तु मंगलम्।।6।।

ज्योतिर्व्यन्तर- भावनामरगृहे, मेरौ-कुलाद्रौस्तथा,
जम्बू-शाल्मलि-चैत्यशाखिषु तथा, वक्षार-रूप्याद्रिषु।
इष्वाकारगिरौ च कुण्डलनगे, द्वीपे च नन्दीश्वरे,
शैले ये मनुजोत्तरे जिनगृहाः, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।7।।

यो गर्भावतरोत्सवो भगवतां, जन्माभिषेकोत्सवो,
यो जातः परिनिष्क्रमेण विभवो, यः केवलज्ञानभाक्।
यः कैवल्यपुर प्रवेश महिमा, संपादितः स्वर्गिभिः,
कल्याणानि च तानि पंच सततं, कुर्वन्तु नो मंगलम्।।8।।

इत्थं श्री जिनमंगलाष्टकमिदं, सौभाग्य-संपत्प्रदं,
कल्याणेषु महोत्सवेषु सुधियस्तीर्थंकराणामुषाः।
ये शृण्वन्ति पठन्ति तैश्च सुजनै-र्धर्मार्थ-कामान्विता,
लक्ष्मीराश्रयते व्यपाय रहिता निर्वाण लक्ष्मीरपि।।9।।

।।इति मंगलाष्टकम्।।

जल शुद्धि मंत्र

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: नमोऽर्हते भगवते श्रीमत्पद्ममहापद्म-तिगिञ्छकेसरि पुण्डरीक महापुण्डरीक गंगासिन्धुरोहिद्रोहितास्या हरिद्धरिकान्ता सीता सीतोदा नारी नरकान्ता सुवर्ण रूप्यकूला रक्तारतोदा: क्षीराम्भोनिधि शुद्ध जलं सुवर्णघटकं प्रक्षालित-परिपूरित नव-रत्नगन्धाक्षत पुष्पार्चितं ममोदकं पवित्रं कुरु कुरु झं झं झ्रौं झ्रौं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं द्रां द्रां द्रीं द्रीं अ सि आ उ सा नम: हं स: पवित्रं जलेन जलं शुद्धि करोमि स्वाहा (जलाभिमन्त्रणम्)।

लघु अभिषेक पाठ

शोधये सर्वपात्राणि, पूजार्थानपि वारिभि:।
समाहतो यथाम्नायं, करोमि सकली क्रियाम्।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: असिआउसा पवित्रतर जलेन शुद्धिं करोमि।

(मंत्र पढ़कर जल से शुद्धि करें)

श्री मज्जिनेन्द्र-मभिवन्द्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वादनायक-मनन्त चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ-सुदृशां सुकृतैक हेतुर, जैनेन्द्र यज्ञ विधिरेष मयाभ्यधायि।।1।।

ॐ ह्रीं अभिषेक प्रतिज्ञायां पुष्पांजलिं क्षिपामि।

सौगन्ध्य-सङ्गत-मधुव्रत झङ्कृतेन, सम्वर्ण्य-मानमिव गन्धमनिन्द्य-मादौ।
आरोपयामि विबुधेश्वर-वृन्द-वन्द्य-पादारविन्द-मभिवन्द्य जिनोत्तमानम्।।2।।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: मम सर्वाङ्ग शुद्धिं कुरु कुरु।

(यह मंत्र पढ़कर चन्दन से तिलक लगाना व हाथ धोना)

ये सन्ति केचिदिह दिव्य-कुल-प्रसूता:, नागा प्रभूत-बल-दर्पयुता विबोधा:।
संरक्षणार्थ-ममृतेन शुभेन तेषां, प्रक्षालयामि पुरत: स्नपनस्य भूमिम्।।3।।

ॐ ह्रीं जलेन भूमि शुद्धिं करोमि।

(यह मंत्र पढ़कर भूमि शुद्धि करें)

क्षीरार्णवस्य पयसां शुचिभि: प्रवाहै:, प्रक्षालितं सुरवरै-र्यदनेकवारम्।
अत्युद्य-मुद्यत-महं जिनपाद पीठ, प्रक्षालयामि भव-सम्भव-तापहारि।।4।।

ॐ ह्रीं श्रीमते पवित्रतर जलेन पीठ प्रक्षालनं करोमि।

(जिसमें प्रतिमा विराजमान करना है, उस थाली को धावें)

श्री शारदा-सुमुख-निर्गत-बीजवर्णं, श्री मङ्गलीक-वर-सर्व-जनस्य नित्यम्।
श्रीमत्स्वयं क्षयति तस्य विनाशविघ्नं, श्रीकार-वर्ण-लिखितं जिन भद्रपीठे।।5।।

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीकार लेखनं करोमि।

(जिसमें प्रतिमा विराजमान करना है, उस थाली में 'श्री' लिखें)

यं पाण्डुकामल-शिलागतमादिदेव-मस्ना-पयन्सुरवरा: सुरशैलमूर्ध्नि।
कल्याण-मीप्सुरह-मक्षत-तोय-पुष्पै:, सम्भावयामि पुर एव तदीय-बिम्बम्।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं श्रीवर्णे प्रतिमा स्थापनं करोमि।

(यह पढ़कर श्रीवर्ण पर प्रतिमा स्थापन करना चाहिए)

सत्पल्लवार्चित-मुखान्-कलधौतरौप्य-ताम्रारकूट-घटितान्पयसा सुपूर्णान्।
सम्वाह्यतामिव गतांश्चतुर: समुद्रान्, संस्थापयामि कलशाज्जिन वेदिकान्ते।।7।।

ॐ ह्रीं स्वहस्ते चतु:कोणेषु कलश स्थापनं करोमि।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकै:।
धवल मंगल गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ-महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाय अर्हत् परमेष्ठिने अर्घ्यं निर्वपामिति स्वाहा।

(एक कलश से अभिषेक करें)

दुरावनम्र सुरनाथ-किरीट-कोटी-संलग्न-रत्न-किरणच्छवि-धूसराङ्घ्रिम्।
प्रस्वेद-ताप-मल-मुक्तमपि प्रकृष्टै, भक्त्या जलैर्जिनपतिं बहुधाभिषिञ्चे।।8।।

1. ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विञ्शति तीर्थंकर परं देवं आद्यानामाद्ये–मध्यलोके–जम्बूद्वीपे–भरत क्षेत्रे–आर्यखण्डे–भारतदेशे..... प्रदेशे.....जिले.....मासे..... पक्षे.....वासरे शुभदिने पौर्वाह्निक समये मुन्यार्यिका श्रावक–श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

(मुनि–आर्यिका–श्रावक–श्राविका जो तीर्थंकर भगवान् के ऊपर जल की धारा देवें देखें ताके कर्मन की क्षय।)

2. ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं अर्हं वं मं हं सं तं पं वं वं मं मं हं हं सं सं तं तं पं पं झं झं इवीं इवीं क्ष्वीं क्ष्वीं द्रां द्रां द्रीं द्रीं द्रावय–द्रावय ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते पवित्रतर जलेन जिनाभिषेकं करोमि।

3. तीर्थोत्तम–भवैर्नीरैः, क्षीर–वारिधि–रूपकैः।
स्नपयामि सुजन्माप्तान् जिनान् सर्वार्थसिद्धिदान्।।

ॐ ह्रीं श्री वृषभादि वीरान्तान् जलेन स्नप्याम:

उदक–चंदन–तंदुल–पुष्पकैश्चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घकैः।
धवल मंगल गान–रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ–महं यजे।।

ॐ ह्रीं वृषभादिवीरान्तेभ्यो अभिषेकान्ते अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(चार कलशों से अभिषेक करें)

इष्टैर्मनोरथ–शतैरिव भव्य पुंसां, पूर्णै सुवर्ण कलशै–र्निखलै–र्वसानैः।
संसार सागर–विलंघन, हेतु–सेतु–माप्लावये त्रिभुवनैक–पतिं जिनेन्द्रम्।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादि महवीर पर्यन्त चतुर्विञ्शति तीर्थंकर परं देवं आद्यानमाद्ये–मध्यलोके–जम्बूद्वीपे–भरत क्षेत्र–आर्यखण्डे–भारतदेशे..... प्रदेशे.....जिले.....मासे..... पक्षे.....वासरे शुभदिने पौर्वाह्निक समये मुन्यार्यिका श्रावक–श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं जलेनाभिषिञ्चे नमः।

लघु शांतिधारा

(शान्तिधारा भगवान् के सिर पर अथवा यंत्र पर करें)

ॐ नमः सिद्धेभ्यः श्री वीतरागाय नमः, ॐ नमोऽर्हते भगवते, श्रीमते श्री पार्श्व तीर्थङ्कराय, द्वादशगण परिवेष्टिताय, शुक्लध्यान पवित्राय, सर्वज्ञाय, स्वयंभुवे, सिद्धाय, बुद्धाय,परमात्मने, परम सुखाय, त्रैलोक्यमही व्याप्ताय, अनंतसंसार चक्रपरिमर्दनाय, अनन्त दर्शनाय, अनन्त ज्ञानाय, अनंत वीर्याय, अनंत सुखाय, त्रैलोक्य वंशकराय, सत्यज्ञानाय, सत्यब्रह्मणे, धरणेन्द्र फणा मण्डल–मण्डिताय, ऋष्यार्यिका–श्रावक–श्राविका प्रमुख चतुस्संघोपसर्ग विनाशनाय, घातिकर्म विनाशनाय, अघातिकर्म विनाशनाय।

(शान्तिधारा कर्ता का नाम)

अपवादं अस्माकं छिंद छिंद भिंद भिंद, मृत्युं छिंद छिंद भिंद भिदं।
अतिकामं छिंद छिंद भिंद भिंद, रतिकामं छिंद छिंद भिंद भिदं।
क्रोधं पापं वैरं च छिंद छिंद भिंद भिंद, अग्नि वायु भयं सर्वोपसर्गं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्वविघ्नं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्वभयं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्वराजभयं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्वं चोर भयं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्वदुष्टभयं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व मृग भयं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्वमात्म चक्रभयं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्वपरमंत्रं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्व शूलरोगं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व क्षयरोगं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्व कुष्ट रोगं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व क्रूर रोगं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्व नरमारिं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व गजमारिं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्वाश्वमारिं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व गोमारिं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्व महिषमारिं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व वृक्षमारिं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्व पत्रमारिं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व पुष्पमारिं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्व फलमारिं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व राष्ट्रमारिं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्व देशमारिं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व विषमारिं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्व वेतालशाकिनी भयं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व वेदनीयं छिंद छिंद भिंद भिदं। सर्व मोहनीयं छिंद छिंद भिंद भिंद, सर्व कर्माष्टकं छिंद छिंद भिंद भिदं।

ॐ सुदर्शन महाराज चक्र-विक्रम तेजो बल-शौर्य-वीर्य-शांतिं कुरु कुरु, सर्व जनानन्दनं कुरु, कुरु, सर्व भव्यानन्दनं कुरु कुरु, सर्व गोकुलानन्दनं कुरु कुरु, सर्व ग्राम-नगर-खेट-कर्वट-मटंब-पत्तन-द्रोणमुख संवाहानन्दनं कुरु कुरु, सर्व लोकानन्दनं कुरु कुरु, सर्व देशानन्दनं कुरु कुरु, सर्व यजमानानन्दनं कुरु कुरु, सर्व दु:खं, हन-हन-दह-दह पच-पच-कुट-कुट शीघ्रं शीघ्रं।

यत्सुखं त्रिषु लोकेषु, व्याधि-व्यसन वर्जितं।
अभयं क्षेम-मारोग्यं, स्वस्ति-रस्तु विधीयते।।

शिवमस्तु! कुल-गोत्र-धन-धान्यं सदास्तु पद्मप्रभ चन्दप्रभ-वासुपूज्य-मल्लि-वर्द्धमान-पुष्पदन्त शीतलनाथ-मुनिसुव्रत-नेमिनाथ पार्श्वनाथ इत्येभ्यो नम:।

(इत्यनेन मन्त्रेण नवग्रह शान्त्यर्थ गन्धोदकं धारा वर्षणं)

श्री शान्तिरस्तु, शिवमस्तु, जयोस्तु, नित्यमारोग्यमस्तु, सर्वेषां पुष्टिरस्तु, तुष्टिरस्तु समृद्धिरस्तु, कल्यामस्तु, सुखमस्तु, अभिवृद्धिरस्तु, कुल गोत्र धन धान्यं सदास्तु, श्री सद्धर्म बल आयु: आरोग्य ऐश्वर्य अभिवृद्धिरस्तु।

ॐ ह्रीं अर्हं णमो सम्पूर्ण कल्याण मंगल रूप मोक्ष पुरुषार्थश्च भवतु:।

ॐ नमोऽर्हते भगवते श्रीमते प्रक्षीणाशेष दोष कल्मषाय दिव्यतेजो मूर्तये श्री शान्तिनाथाय शान्तिकराय, सर्व विघ्न प्रणाशनाय, सर्व रोगापमृत्यु विनाशनाय, सर्व परकृत क्षुद्रोपद्रव विनाशनाय, सर्वक्षाम-डामर विनाशनाय, ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्र: अ सि आ उ सा नम: सर्व देशस्य चतुर्विध संघस्य तथैव सर्व विश्वस्य तथैव मम (शांतिधाराकर्ता का नाम) सर्व शान्तिं कुरु कुरु, तुष्टिं कुरु कुरु, पुष्टिं कुरु कुरु वषट् स्वाहा।
शान्ति: शिरोधृत जिनेश्वर शासनानां, शान्ति: निरंतर तपोभव भावितानां।
शान्ति: कषाय जय जृम्भित वैभवानां, शान्ति: स्वभाव महिमान-मुपागतानां।।

संपूजकानां प्रतिपालकानां, यतीन्द्र सामान्य तपोधनानाम्।
देशस्य राष्ट्रस्य पुरस्य राज्ञ:, करोतु शान्तिं भगवान् जिनेन्द्र:।।

अर्घ

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकै:।
धवल मंगल गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथ-महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री परमदेवाय शांतिधारा अभिषेकान्ते अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

निर्मलं निर्मली करणं, पवित्रं पाप नाशनम्।
जिन गंधोदक वन्दे, अष्ट कर्म विनाशनम्।।

(यह छंद पढ़ते हुए गंधोदक नाभि के ऊपर विभिन्न अंगों में लगावें।)

नहीं विश्वास पंखों पर वो क्या ऊँचाई पायेगा?
नहीं विश्वास चरणों पर वो क्या मंज़िल पे जायेगा?
साँस लेकर यहाँ जीना न मकसद जिन्दगी का है,
नहीं जिन्दादिली दिल है तो क्या विश्वास पायेगा?

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिनेश्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।

अनन्त चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिरताज।
मुक्ति-वधू के कन्त तुम, तीन भुवन के राज।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा हरन, भवदधि शोषणहार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिवसुख के करतार।।3।।

हरता अघ अँधियार के, करता धर्म प्रकाश।
थिरतापद दातार हो, धरता निजगुण राश।।4।।

धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञानभानु तुम रूप।
तुमरे चरण-सरोज को, नावत तिहुँ जग भूप।।5।।

मैं वन्दौं जिनदेव को, कर अति निर्मल भाव।
कर्मबन्ध के छेदने, और न कछू उपाव।।6।।

भविजन को भवकूप तैं, तुमही काढ़नहार।
दीनदयाल अनाथ पति, आतम गुण भण्डार।।7।।

चिदानन्द निर्मल कियो, धोय कर्मरज मैल।
सरल करी या जगत में, भविजन को शिवगैल।।8।।

तुम पदपंकज पूजतैं, विघ्न रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निरविषता थाय।।9।।

चक्री खग धर इन्द्रपद, मिलैं आपतैं आप।
अनुक्रमकर शिवपद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।10।।

तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल बिन मीन।
जन्म जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वाधीन।।11।।

पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अञ्जन से तारे प्रभु, जय-जय-जय जिनदेव।।12।।

थकी नाव भवदधिविषैं, तुम प्रभु पार करेव।
खेवटिया तुम हो प्रभु, जय-जय-जय जिनदेव।।13।।

राग सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीतराग भैंट्यो अबै, मैंटो राग कुटेव।।14।।

कित निगोद-कित नारकी-कित तिर्यञ्च अज्ञान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिनवर थान।।15।।

तुमको पूजैं सुरपति-अहिपति-नरपति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।

अशरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भवसिन्धु में, खेव लगाओ पार।।17।।

इन्द्रादिक गणपति थके, कर विनती भगवान।
अपनो विरद निहारि कैं, कीजै आप समान।।18।।

तुमरी नेक सुदृष्टितैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार।।19।।

जौ मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उर झार।
मेरी तो तोसों बनी, तातैं करौं पुकार।।20।।

वन्दों पाँचों परम गुरु, सुरगुरु वन्दत जास।
विघनहरन मंगलकरन, पूरन परम प्रकाश।।21।।

चौबीसों जिनपद नमो, नमो शारदा माय।
शिवमग साधक साधु 'नमि', रच्यो पाठ सुखदाय।।22।।

मंगल मूर्ति परमपद, पंच धरों नित ध्यान।
हरो अमंगल विश्व का, मंगलमय भगवान।।23।।

मंगल जिनवर पद नमो, मंगल अर्हत्देव।
मंगलकारी सिद्ध पद, सो वन्दों स्वयमेव।।24।।

मंगल आचारज मुनि, मंगल गुरु उवझाय।
सर्व साधु मंगल करो, वन्दो मन वच काय।।25।।

मंगल सरस्वति मात का, मंगल जिनवर धर्म।
मंगल मय मंगल करो, हरो असाता कर्म।।26।।

या विधि मंगल करन से, जग में मंगल होत।
मंगल "नाथूराम" यह, भवसागर दृढ़ पोत।।27।।

पठन करूँ श्री आदि का, अन्त नाम महावीर।
तीर्थंकर चौबीस जिन, तिन्हें नवाऊँ शीश।।28।।

पुष्पांजलिं क्षिपामि (कायोत्सर्गं करोम्यहम्)

न स्वर्गों सा महल चाहूँ हमें नर्कों सा घर दे दो,
न दौलत सम्पदा चाहूँ हमें गम का असर दे दो।
शिकायत को न लाऊँगा न चेहरे पर शिकन कोई,
हमें गुरु साथ रहने का वचन देकर सफर दे दो।।

पूजा प्रारम्भ

ॐ जय जय जय, नमोऽस्तु नमोऽस्तु नमोऽस्तु।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं,
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।।1।।
ॐ ह्रीं अनादि मूल मन्त्रेभ्यो नमः। (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

चत्तारि मंगलं – अरिहंत मंगलं, सिद्ध मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा– अरिहंत लोगुत्तमा, सिद्ध लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमा।
चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरिहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू सरणं पव्वज्जामि,
केवलि पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि।
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा (पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि)

मंगल विधान

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत्पंच नमस्कारं, सर्वपापैः प्रमुच्यते।।1।।
अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत्परमात्मानं, स बाह्याभ्यंतरे शुचिः।।2।।
अपराजित मन्त्रोऽयं, सर्वविघ्न विनाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु, प्रथमं मंगलं मतः।।3।।
एसो पंच णमोयारो, सव्व पावप्पणासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवई मंगलम्।।4।।

अर्हमित्यक्षरं ब्रह्मवाचकं परमेष्ठिनः।
सिद्धचक्रस्य सद्बीजं, सर्वतः प्रणमाम्यहम्।।5।।
कर्माष्टक विनिर्मुक्तं, मोक्ष लक्ष्मी निकेतनं।
सम्यक्त्वादि गुणोपेतं, सिद्धचक्रं नमाम्यहम्।।6।।
विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति, शाकिनी-भूत-पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति, स्तूयमाने जिनेश्वरे।।7।।
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे कल्याण-महं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री भगवतो गर्भजन्मतपज्ञान-निर्वाण पंचकल्याणकेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाथमहं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्योऽर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिननाममहं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री भगवज्जिन अष्टाधिक सहस्रनामेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा

उदक-चंदन-तंदुल-पुष्पकैश्चरु-सुदीप-सुधूप-फलार्घकैः।
धवल-मंगल-गान-रवाकुले, जिनगृहे जिनसूत्रमहं यजे।।
ॐ ह्रीं श्री जिनसूत्रेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

स्वस्ति मंगल

श्रीमज्जिनेन्द्र-मभिवंद्य जगत्त्रयेशं, स्याद्वाद-नायक-मनंत-चतुष्टयार्हम्।
श्री मूलसंघ-सुदृशां सुकृतैक हेतुर, जैनेन्द्र-यज्ञ-विधिरेष मयाभ्यधायि।।1।।
स्वस्ति त्रिलोक-गुरवे जिन-पुंगवाय, स्वस्ति स्वभाव-महिमोदय-सुस्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश-सहजोर्जित-दृङ्मयाय, स्वस्ति प्रसन्न-ललिताद्भुत-वैभवाय।।2।।
स्वस्त्युच्छलद् विमल-बोध-सुधा-प्लवाय, स्वस्ति स्वभाव-परभाव-विभासकाय।
स्वस्ति त्रिलोक-वितैक-चिदुद्गमाय, स्वस्ति त्रिकाल-सकलायत-विस्तृताय।।3।।
द्रव्यस्य शुद्धि-मधिगम्य यथानुरूपं, भावस्य शुद्धि-मधिकामधि-गंतुकामः।
आलंबनानि विविधान्यवलम्ब्य वल्गन्, भूतार्थ-यज्ञ-पुरुषस्य करोमि यज्ञं।।4।।
अर्हत्पुराण-पुरुषोत्तम-पावनानि, वस्तून्यनून-मखिलान्ययमेक एव।
अस्मिन् ज्वलद् विमल केवल बोध वह्नौ, पुण्यं समग्र-महमेकमना जुहोमि।।5।।
ॐ ह्रीं विधियज्ञ प्रतिज्ञानाय जिनप्रतिमाग्रे पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि।

(यहाँ स्वस्ति कहते समय पुष्प क्षेपण करें)

श्री वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अजितः।
श्री संभवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अभिनन्दनः।
श्री सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री पद्मप्रभः।
श्री सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री चन्द्रप्रभः।
श्री पुष्पदन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शीतलः।
श्री श्रेयांसः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वासुपूज्यः।
श्री विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अनन्तः।
श्री धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री शान्तिः।
श्री कुंथुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री अरहनाथः।
श्री मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री मुनिसुव्रतः।
श्री नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री नेमिनाथः।
श्री पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री वर्द्धमानः।
इति जिनेन्द्र स्वस्तिमंगलविधानम्। पुष्पांजलिं क्षिपामि

परमर्षि उपासना

नित्याप्रकम्पाद् भुत-केवलौघाः, स्फुरन्मनः पर्यय-शुद्धबोधाः।
दिव्यावधिज्ञान-बलप्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥1॥
कोष्ठस्थ-धान्योपममेकबीजं, संभिन्न-संश्रोतृ-पदानुसारि।
चतुर्विधं बुद्धिबलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥2॥
संस्पर्शनं संश्रवणं च दूरादास्वादन-घ्राण-विलोकनानि।
दिव्यान् मतिज्ञान-बलाद्वहंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥3॥
प्रज्ञा-प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक बुद्धा दश सर्व पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांगनिमित्त विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥4॥
जंघानल - श्रेणि - फलांबु - तंतु - प्रसून - बीजांकुर - चारणाह्वाः।
नभोऽङ्गण-स्वैर-विहारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥5॥
अणिम्नि दक्षाः कुशला महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो-वपुर्वाग्बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥6॥
सकामरूपित्व - वशित्वमैश्यं, प्राकाम्य - मन्तर्द्धिमथाप्तिमाप्ताः।
तथाप्रतीघात गुण प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥7॥
दीप्तं च तप्तं च तथा महोग्रं, घोरं तपो घोर पराक्रमस्थाः।
ब्रह्मापरं घोर गुणाश्चरंतः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥8॥
आमर्ष - सर्वौषधयस्तथाशी - र्विषाविषा - दृष्टि - विषाविषाश्च।
सखेल्ल-विड्जल्ल-मलौषधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥9॥
क्षीरं स्रवंतोऽत्र घृतं स्रवंतोमधु स्रवंतोऽप्यमृतं स्रवंतः।
अक्षीण संवास महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः॥10॥

इति परमऋषि स्वस्ति मंगल विधानं पुष्पांजलिं क्षिपामि (कायोत्सर्गं करोम्यहम्)।

नवदेवता पूजन

तर्ज - तुझे सूरज कहूँ या चंदा

पूजन का अवसर आया, भक्ति से थाल सजाया,
नवदेव चरण आकरके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।
अरहंत सिद्ध आचार्य, उपाध्याय साधु परमेष्ठी।
जिनधर्म जिनागम जिनवर, मंदिर पर है मम दृष्टि॥
मम उर में आन विराजो श्रद्धा से हृदय सजाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत सिद्धाचार्योपाध्याय साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय नवदेव-समूह अत्र अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत सिद्धाचार्योपाध्याय साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय नवदेव-समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री अर्हत सिद्धाचार्योपाध्याय साधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालय नवदेव-समूह अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

नयनों को कलश बनाया, भक्ति का जल भरवाया,
अश्रूपूरित कलशों से, चरणों में आन चढ़ाया।
मम जन्म जरा मिट जाये, इस जग से मन अकुलाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिरि चंदन लाया, केशर के संग घिसाया,
इस तपती धूप में जिनवर, तव चरण है शीतल छाया।
संसार ताप नश जाये, जगताप ने बहुत तपाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः भवाताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

मोती सम उज्ज्वल तंदुल, भरकर के थाल सजाया,
रत्नत्रय की बगिया से, अंतस् का बाग खिलाया।

अक्षय पद की आशा ले, अक्षत मैं चरणों लाया।
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।
नंदनवन सा बन महका, गुण सुरभित पा मन चहका,
वह कामदेव भी आकर, जिनवर चरणों में झुकता।
हो कामबाण का नाश, पुष्पाञ्जलि चरण चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्य: कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।
षट्रस व्यंजन बनवाया, स्वर्णिम है थाल सजाया,
पाने निज परमानंद, जिनदेव शरण में आया।
मम क्षुधा रोग नश जाये, नैवेद्य है चरण चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्य: क्षुधा-रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।
मिथ्यात्व का घना अँधेरा, किंचित् ना मिला उजेरा,
रत्नों के दीप सजाकर, आरती करता मन मेरा।
मन अंधकार मिट जाये, दीपक है चरण चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
चंदन कपूर आदिक ले, यह धूप दशांग बनाया,
धूपायन धूप को खेकर, जीवन आँगन महकाया।
मम अष्ट कर्म मिट जाये, जिन चरण में धूप चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्योऽष्टकर्म विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
पिस्ता अरु दाख छुहारा, चिलगोजा साथ सँवारा,
मुक्तेश्वर के चरणों में, मुक्ति का भाव सजाया।

शुभ मोक्षमहल को पाने, फल का शुभ थाल चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
अगणित गुण के धारी जिन, तुम गुण के हो भण्डारा,
देवेन्द्र लोक से हमने, यह दिव्य द्रव्य मँगवाया।
अविनाशी पद को पाने, यह दिव्य अर्घ है चढ़ाया,
नव देव चरण आ करके, भक्ति कर यहाँ बुलाया।।
ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

शीतल जल धारा करूँ, सब जग शांति हेत।
नव देवों के चरण की, देव करें नित सेव।।
शांतये शांतिधारा.....
जूही चमेली केवड़ा, सुमन सु-मन से लाय।
नवदेवों के चरण में, पुष्पाञ्जलि चढ़ाय।।
दिव्य पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

जाप्य-ॐ ह्रीं श्री अर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसाधु जिनधर्म जिनागम जिन चैत्य चैत्यालयेभ्यो नमः।

जयमाला

नवदेवों की भक्ति ही, हर लेती सब पाप।
करें यहाँ गुणगान हम, हरपल करते जाप।।

(पद्धरि छंद)

जय जय हो श्री अरहन्त देव, शत इन्द्र करें तव चरण सेव।
कर दिये घातिया कर्म नाश, करते भव्यों के हृदय वास।।1।।
हो दोष अठारह रहित आप, छ्यालीस गुणों से पूर्ण नाथ।
है समवशरण जिनवर विशाल, चरणों में झुकते हम त्रिकाल।।2।।

कर दिए अघाति कर्म चूर, हो अष्ट गुणों से आप पूर।
हे सिद्धि प्रदायक! सिद्ध प्रभु, तव गुण को हम याचें विभु।।3।।
छत्तीस गुणों के धारी जो, सब शिष्यों के उपकारी जो।
शिष्यों को शिक्षित करें नाथ, मुक्ति पथ चलते साथ-साथ।।4।।
पाठक हैं जग में ज्ञान धनी, उपदेश की वर्षा करें घणी।
पच्चीस गुणों से शोभित जो, सन्मार्ग तुम्हीं उपदेशक हो।।5।।
हैं ज्ञान ध्यान तप में प्रवीण, निज आत्म तत्त्व में सदा लीन।
अठबीस गुणों से युक्त आप, भव्यों के करते दूर ताप।।6।।
जिनधर्म अहिंसा प्यारा है, भव्यों को यही सहारा है।
जो इसकी शरण में आ जाये, वो भव से मुक्ति पा जाये।।7।।
जिन आगम देता आत्म बोध, कर देता चेतन का सुशोध।
जो भवि जिन आगम पान करे, भव रोग मिटा शिवकांत बने।।8।।
जिन चैत्य वंदना कर त्रिकाल, चैतन्यरूप से हो विशाल।
जिन मूरत निज सूरत दिखाय, लखकर भवि भव से पार जाय।।9।।
कृत्रिम अकृत्रिम जिन मंदिर, जिनमें प्रभु प्रतिमा अति सुंदर।
अन्तर बाहर सब शत्रु नाश, सिद्धालय में जा करें वास।।9।।
नवदेवों की मैं भक्ति भाव, करता मैं पूजा बड़े चाव।
अरि कर्म जीतने हेतु नाथ, नित-शीश झुकाऊँ चरण माथ।।10।।

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्योऽनर्घपद प्राप्तये जयमालाये महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

बड़े पुण्य से हो यहाँ, नवदेवों का दर्श।
"विमल" बुद्धि पाने प्रभु, करूँ चरण स्पर्श।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपामी)।

विद्यमान बीस तीर्थंकर का अर्घ

पंच विदेह सदा ही रहते, बीस तीर्थंकर प्रभु महान,
सीमंधर युगमंधर आदि, प्यारे तीन लोक में नाम।
जल फल आठों द्रव्य सजाकर, अर्घ चढ़ाऊँ पाने धाम,
अष्टकर्म तज शिवपद पाऊँ, प्रभु पद मेरा नम्र प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री विद्यमान विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ

भवन ज्योतिषी व्यंतरवासी, कल्पदेव में कहे विमान,
तीन लोक कृत्रिम-अकृत्रिम, चैत्यालय को करूँ प्रणाम।
जल चंदन ले अष्ट दरब को, थाल सजाकर लाया हूँ,
दुष्ट कर्म मम शांत करो मैं, अर्घ चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री कृत्रिमाकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिन बिम्बेभ्यो अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

श्री सिद्ध प्रभु का अर्घ

निर्भय! निर्मल! निराकर! हे शोक रहित! निरहंकारी,
बंधरहित! हे विश्वशांत! है तुमको धोक सदा मेरी।
जल गंधादिक अष्ट दरब से, पूजूँ मैंटो आक्रंदन,
हे विशुद्ध! हे सिद्ध! प्रभु को, शत-शत बार विनम्र नमन।।

ॐ ह्रीं श्री सिद्धचक्राधिपतये सिद्ध परमेष्ठिने अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

आदिनाथ का अर्घ

आदि विधाता युगपत् ज्ञाता, भविजन को तुम साता हो,
ज्ञान दिवाकर मोह प्रहारक, दर्शन ज्ञान प्रदाता हो।
करुणावारिधि तेरे चरणों, अष्ट दरब को लाया हूँ,
कर्म नाशकर मुक्ति दिलाओ, नमूँ आश करि आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चन्द्रप्रभ का अर्घ

धवल वर्ण हे धवल! मनोहर, धवल तुम्हारा चेतनवास,
दर्शन–ज्ञान–शक्ति–सुख नंत, तेरा ध्यान महा विश्वास।
अष्ट दरब को चरण चढ़ाकर, धवल बनूँ पाने शिवधाम,
चन्दप्रभ के चरण कमल में, मेरा बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री चन्दप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री शांतिनाथ का अर्घ

कामदेव–चक्री–तीर्थंकर, सुंदर रूप तुम्हारा है,
करुणाधारी–आनंदकारी, तेरी अंतर धारा है।
तीन लोक से वन्दनीय तुम, मेरा अर्घ करो स्वीकार,
शांतिनाथ! हे शांतिनाथ प्रदाता! तुमको वन्दूँ बारम्बार।।

ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पार्श्वनाथ का अर्घ

हे प्रभु! तुमने ध्यान लगाकर, जीत लिया उपसर्ग महान,
तीन लोक से वंदनीय तुम, सब प्राणी गाते गुणगान।
तेरी महिमा अद्भुत लगती, अर्घ चढ़ाऊँ लेकर नाम,
पार्श्वनाथ दुख दूर करो मम, तुमको बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री महावीर स्वामी का अर्घ

गणधर–हलधर–चक्रगदाधर, विद्याधर पूजैं मन लाय,
दु:ख विनाशक ज्ञान प्रकाशक, वंदन करत महासुख छाय।
अर्घ चढ़ाकर करूँ प्रार्थना, अंतिम महावीर भगवान,
नाश करो मेरे अघ सारे, मेरा सौ–सौ बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री महावीर जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री चौबीसी का अर्घ

कमलासन पर शोभित होते, दर्शन ज्ञान लीन भगवान,
जो भी तेरे गुण को गाते, वे पा जाते सम्यग्ज्ञान।
चौबीसों तीर्थंकर पद में, अर्घ बनाकर लाया हूँ,
शत–शत बार विनम्र नमन कर, गुण को पाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री बाहुबलि का अर्घ

विंध्याचल पर्वत पर तुमने, शुक्लध्यान लगाया था,
मोह नाशकर वीतरागता, पाकर ज्ञान सजाया था।
अष्टद्रव्य ले तेरे चरणों, पाने आया दर्शन–ज्ञान,
गोमटेश के युगल चरण में, शत शत बार विनम्र प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री बाहुबलि जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

श्री पंच बालयति का अर्घ

ब्रह्मचर्यधारी हे भगवन्! अद्भुत शक्ति अकंप महान्,
वासुपूज्य–मलि–नेमि–पार्श्व जिन! महावीर को करूँ प्रणाम।
वसुविधि द्रव्य मनोहर लेकर, अर्घ चढ़ाऊँ पाने धाम,
नमन करो स्वीकार हमारा, दो मुझको निज पद विश्राम।।

ॐ ह्रीं श्री पंचबालयति जिनेन्द्राय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोलहकारण भावना का अर्घ

एक इन्द्री से पंचइन्द्री तक, सब प्राणी होवे कल्याण,
ज्ञान–विनय–भक्ति कर पाऊँ, अर्हत् भगवन् के गुणधाम।
दरश विशुद्धि सोलह भावन, हृदय धरूँ हे जिन! भगवान,
अर्घ समर्पित कर तीर्थङ्कर, पद को पाने करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री दर्शन विशुद्धि आदि षोडश कारणेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

पंचमेरु का अर्घ

मेरू पर्वत–विजय–अचल, मंदर–विद्युत्माली पच नाम,
अस्सी मन्दिर मणिमय मूरत, अकृत्रिम प्यारे भगवान।
सहस्र आठ जिन छह सौ चालीस, दर्शाते जो दर्शन ज्ञान,
अर्घ चढ़ाऊँ जिन सा बनने, सबके चरणों नम्र प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरू सम्बन्धी अशीति जिनचैत्यालयेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नन्दीश्वर द्वीप का अर्घ

हाथ सहस दो अवगाहन की, प्रतिमा हैं नन्दीश्वर द्वीप,
पद्मासन में राजित आभा, सूर्य समां, सुर को संदीप।
वसुविध अर्घ चढ़ाकर चरणों, चारों दिश पूजूँ जिनधाम,
पंच सहस छह सौ सोलह जिन, चरणों में अति नम्र प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री नन्दीश्वरद्वीपे द्विपंचाशत् जिनालयस्थ जिनप्रतिमाभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दशलक्षण धर्म का अर्घ

उत्तम क्षमा आदि दश धर्म, जग के रोग मिटाते हैं,
जो भी ऋषिवर पाते उर में, वे ईश्वर बन जाते हैं।
भव आताप मिटाने भगवन्, दश धर्मों का गान करूँ,
अर्घ चढ़ाऊँ उर में पाऊँ, नमन् सदा श्रद्धान वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री उत्तमक्षमादि दशलक्षण धर्मांगाय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

रत्नत्रय का अर्घ

सम्यक् दर्शन ज्ञान चरित ही, जन्म रोग भव नाशक हैं,
धन्य महाधरती पर प्राणी, जो रत्नत्रय साधक हैं।

अष्ट दरब को अर्पित करके, तीन रतन को पाऊँ धाम,
रत्नत्रयधारी को निशदिन, मेरा सौ–सौ बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री सम्यक् रत्नत्रयाय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जिनवाणी का अर्घ

सात तत्त्व छह द्रव्य प्रकाशक, तीन लोक की माता हो,
तेरी करुणा महामहिम, जग देती सबको साता हो।
तीर्थंकर ध्वनि गणधर ने सुनि, द्वादशांगमय किया बखान,
हे सरस्वती! शिवसुखदायी, अर्घ समर्पण करूँ प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वती देव्यै: अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विरागसागर जी का अर्घ

सूरज चाँद करें नित वन्दन, तीर्थंकर के लघुनन्दन,
कुंदकुंद सा चारित जिनका, पंचम युग के हैं भगवन्।
विद्या वारिधि ज्ञान दिवाकर, चरणों अर्घ करूँ अर्पण,
गुरुवर विरागसागर पद में, शत–शत बार विनम्र नमन्।।

ॐ ह्रीं श्री परम पूज्य सूरिगच्छाचार्य श्री विरागसागर यतिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

आचार्य श्री विनम्रसागर जी का अर्घ

पूजन की महिमा बतलाते, भक्तामर का ज्ञान महान,
तत्त्व–द्रव्य का राज बताते, जैन धरम की हैं गुरु शान।
हो विनम्र त्रय रत्न सजाते, हो विनम्र करता सम्मान,
गुरु विनम्र पद अर्घ चढ़ाऊँ, मेरा बारम्बार प्रणाम।।

ॐ ह्रीं प.पू. आचार्य श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सभी मुनिवरों का अर्घ

वीतरागमय लक्ष्य बनाया, भाव सहित मुनि पद को धार,
लीन रहें निज आतम में नित, छोड़ दिये संसार विचार।
मुनिवर तीन न्यून नवकोटि, शिवपुर गामी कहे प्रधान,
अर्घ चढ़ाऊँ सब मुनियों को, शत-शत बार विनम्र प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री त्र्यून नवकोटि मुनिवरेभ्यो अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

निर्वाण क्षेत्र का अर्घ

अष्ट करम को ध्यान अग्नि से, नाश दिया पाया निज सार,
अष्टापद-सम्मेदाचल, पावापुर-चंपापुर-गिरनार।
चौबीसों निर्वाण भूमि को, अर्घ चढ़ाऊँ विनती धार,
नित प्रति वन्दूँ पावन थल को, पाने निज में निज पद सार।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति तीर्थङ्कर निर्वाण क्षेत्रेभ्यो अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

करें पूजा तो ये पत्थर नहीं भगवान होता है,
कोई आकार पाकर के नहीं इंसान होता है।
करो पूजा पढ़ो तुम ग्रंथ दस उपवास भी कर लो,
धरम के आचरण के बिन नहीं कल्याण होता है।।

सिद्ध भक्तिः (प्राकृत)

असरीरा जीवघणा उवजुत्ता दंसणेय णाणे य।
सायार मणायारा लक्खण-मेयं तु सिद्धाणं।।1।।
मूलोत्तर पयडीणं बंधोदय-सत्त-कम्म-उम्मुक्का।
मंगल-भूदा सिद्धा अट्ठ-गुणातीद-संसारा।।2।।
अट्ठ-विहकम्म वियला सीदीभूदा णिरंजणा णिच्चा।
अट्ठ-गुणा किदकिच्चा लोयग्गणिवासिणो सिद्धा।।3।।
सिद्धा णट्ठट्ठमला विसुद्ध-बुद्धीय लद्धि-सब्भावा।
तिहुअण सिर सेहरया पसियंतु भडारया सव्वे।।4।।
गमणागमण-विमुक्के विहडिय-कम्म-पयडि संघारा।
सासह-सुह-संपत्ते ते सिद्धा वंदिमो णिच्चं।।5।।
जय मंगल-भूदाणं विमलाणं णाण-दंसणमयाणं।
तियलोय-सेहराणं णमो सदा सव्वसिद्धाणं।।6।।
सम्मत्त-णाण-दंसण-वीरिय-सुहमं तहेव अवग्गहणं।
अगुरुलघु मव्वावाहं अट्ठगुणा होंति सिद्धाणं।।7।।
तवसिद्धे णयसिद्धे संजमसिद्धे चरित्तसिद्धे य।
णाणम्मि दंसणम्मिय सिद्धे सिरसा णमस्सामि।।8।।

इच्छामि भंते! सिद्धभत्ति काउस्सग्गो कओ तस्सालोचेउं सम्मणाण- सम्मदंसण-सम्मचरित्त जुत्ताणं अट्ठविहकम्मविप्पमुक्काणं अट्ठगुणसंपण्णाणं उड्ढलोयमत्थयम्मि पयट्ठियाणं तवसिद्धाणं, णयसिद्धाणं, संजमसिद्धाणं, चरित्तसिद्धाणं, अतीदाणागदवट्ट माण-कालत्तयसिद्धाणं, सव्वसिद्धाणं, सया णिच्चकालं, अच्चेमि, पुज्जेमि, वंदामि, णमस्सामि, दुक्खक्खओ, कम्मक्खओ, बोहिलाओ, सुगइगमणं, समाहिमरणं, जिणगुणसंपत्ति होउ मज्झं।

(यहाँ नौ बार णमोकार मंत्र पढ़कर विधान का संकल्प करें तत्पश्चात् विधान आरंभ करें।)

मंगलाचरण

दोहा

युग के आदि जिनेश की, महिमा अपरम्पार।
चरण झुका जो भी यहाँ, होता भवदधि पार।।
अतिशयकारी स्तोत्र है, महिमा बड़ी महान।
संकट हारी स्तवन, गुण समूह की खान।।
मंत्र रूप माना यहाँ, हर अक्षर मुनिनाथ।
जिसको पढ़कर भक्तजन, पाते जिन का साथ।।

नरेन्द्र छन्द

सब स्तोत्रों में है अतिशय, महिमा जिसकी कही विशाल।
संकटहारी है जिन महिमा, सब दु:खों की नाशनहार।।
मंत्र रूप हर इक अक्षर है, तंत्र रूप श्लोक कहा।
जिसको पढ़कर भक्ति भाव से, पद पा लेता भक्त महां।।
भक्तामर विधान है पावन, कष्ट सभी के हरता है।
मन वच तन से करे आराधन, सर्व दु:खों को नशता है।।
मानतुंग गुरुवर ने देखो, बंधन मुक्ति पाई थी।
ताले टूटे बंधन छूटे, जनता सब हरषाई थी।।
आदि प्रभु की गुण महिमा का, इस विधान में वर्णन है।
अनुपम उपमाधारी जिनवर, के गुण गण का दर्शन है।।
अष्ट प्रातिहार्यों का वर्णन, अतिशय अरु सुखकारी है।
सर्व भयों से मुक्ति दिलाकर, उत्तम पद दातारी है।।
जो भी भक्तामर को गाता, सम्मानित पद पाता है।
पूजन अरु विधान को करके, अजर अमर पद पाता है।।

पूजन

तर्ज–गोम्मटेश जय गोम्मटेश

स्थापना

वृषभेश जय वृषभेश, मम हृदय विराजो–2
हम यही कामना करते हैं–2, ऐसा आने वाला पल हो
आ जायें हृदय में आदीश्वर, सारे जग में शुभ मंगल हो
हम यही कामना...
श्री मानतुंग जी गुरुवर ने, अपने हृदयाँगन बसा लिया–2
गणपति शंकर ब्रह्मा बुद्धादि, नामों से है सजा लिया–2
आदीश्वर की महिमा देखो–2, सब विघ्न नशें सुख अविचल हो।
हम यही कामना...

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर सम्पन्न श्री वृषभ जिनेन्द्र! मम हृदये अवतर अवतर संवौषट् इत्याह्वाननम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर सम्पन्न श्री वृषभ जिनेन्द्र! मम हृदये तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ: स्थापनम्। ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं महाबीजाक्षर सम्पन्न श्री वृषभ जिनेन्द्र! मम हृदयसमीपे सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

आदीश्वर अर्चा–2, सकल विश्व में शांति सुधा बरसाये
आदीश्वर अर्चा–2
क्षीरोदधि का शुभनीर लिया, कंचनझारी भर लाये हैं।–2
हे नाथ! आपकी पूजन कर, हम तृषा बुझाने आये हैं।।–2
वृषभेश्वर पद अर्पण करते–2 मम जन्म जरा मिट जाये
आदीश्वर अर्चा...

ॐ ह्रीं परमशांति विधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

मलयागिर चंदन लेकर के, केशर संग घिसकर लाये हैं–2
हे नाथ! चरण रज पाकर के, भव भव के ताप नशाये हैं–2
प्रभु पद में चर्चित करते ही–2 तन मन शीतल हो जाये,
आदीश्वर अर्चा...

ॐ ह्रीं परमशांति विधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

शुभ शालि वन से धोकर के, अक्षत अखण्ड हम लाये हैं–2
चरणों में पुंज चढ़ा करके, अक्षय पद पाने आये हैं–2
जिन पद में अर्पित करते ही–2 रत्नत्रय धन मिल जाये,
आदीश्वर अर्चा...

ॐ ह्रीं परमशांति विधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

बेला चमेली जूही चम्पा के, सुमन सु–मन से लाये हैं–2
तुम मदन विजेता हो प्रभुवर, हम काम नशाने आये हैं–2
आदीश्वर के द्वय चरणों में–2 हम पुष्प चढ़ा सुख पायें,
आदीश्वर अर्चा...

ॐ ह्रीं परमशांति विधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

पकवान बनाये नव्य दिव्य, अरु थाल सजाकर लाये हैं–2
तुम परमानंदामृत भोगी, इसलिए शरण में आये हैं–2
नैवेद्य चढ़ाकर हे जिनवर!–2 हम परम तृप्ति को पायें,
आदीश्वर अर्चा...

ॐ ह्रीं परमशांति विधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जगमग घृत के दीपावलि से, हम थाल सजाकर लाये हैं–2
प्रभु तुम हो केवलज्ञान सूर्य, उजियारा पाने आये हैं–2
दीपक से आरति करके प्रभु–2 अँधियारा दूर भगायें,
आदीश्वर अर्चा...

ॐ ह्रीं परमशांति विधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय मोहान्धकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अगरु चंदन की धूप बना, पावक में खेने आये हैं–2
प्रभु अष्ट कर्म हों नष्ट मेरे, ये मन में भाव बनाये हैं–2
हम धूपायन में धूप खेय–2 निज के सब कर्म जलायें,
आदीश्वर अर्चा...

ॐ ह्रीं परमशांति विधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय अष्ट कर्म दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

दाड़िम केला अरु आम आदि, फल अनन्नास ले आये हैं–2
वर मोक्ष महाफल पाने को, प्रभु चरण चढ़ाने आये हैं–2
फल से पूजा करके भगवन्–2 मुक्ति की विधि पा जायें,
आदीश्वर अर्चा...

ॐ ह्रीं परमशांति विधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल फलादि वसु द्रव्य लिए, हम कनक थाल सजवाये हैं–2
हे प्रभु! अनर्घ पद मिल जाये, यह आश हृदय में लाये हैं–2
चरणों में अर्घ चढ़ा करके–2 हम गुण अनंत पा जायें,
आदीश्वर अर्चा...

ॐ ह्रीं परमशांति विधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभ जिन चरणाय अनर्घ पद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शांतिधारा से सदा, जग में शांति होय।
आदि व्याधि सब दूर हो, मन में शांति होय।।

शांतये शांतिधारा-३

नाना विधि के सुमन चुन, चरणों दिए चढ़ाय,
सुख संपत्ति पाऊँ सुयश, "विमल" बनूँ जिनराय।।

दिव्य पुष्पांजलिं क्षिपामि

पंचकल्याणक अर्घ

सर्वारथ सिद्धि विमाना, तज आये प्रभु श्रीमाना।
मरुदेवी उर में समाये, देवों ने रत्न गिराये।।

ॐ ह्रीं आषाढ़ कृष्णा द्वितीयां गर्भ मंगल मंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व...

कलि चैत की नवमी आयी, शुभ जन्म लिया जिनरायी।
मेरु पै न्हवन कराया, जन जन का मन हर्षाया।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा नवम्यां जन्म मंगल मंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व...

नवमी थी चैत वदी की, प्रथमेश ने दीक्षा धरी थी।
तन पंच महाव्रत साजा, इन्द्रों ने बजाये बाजा।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्णा नवम्यां तपो मंगल मंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व...

फाल्गुन वदि ग्यारस आयी, प्रभु केवलज्ञान उपायी।
सुर समवशरण रचवाया, सब जग में यश को गाया।।

ॐ ह्रीं फाल्गुन कृष्णा एकादश्यां ज्ञान मंगल मंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व...

वदि माघ चतुर्दशी आयी, शिवनारि वरी जिनरायी।
हिमगिरी कैलाश महाना, हम पूजैं मोक्ष कल्याणा।

ॐ ह्रीं माघ कृष्णा चतुर्दश्यां मोक्ष मंगल मंडिताय श्री आदिनाथ जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्व...

जाप्य- ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री वृषभनाथतीर्थंकराय नमः।

जयमाला

छन्द-सोरठा

जय जिन आदि महान, आदि ब्रह्म परमात्मा।
नंत गुणों की खान, कैसे हम वर्णन करें।।

तर्ज- हे दीन बंधु श्रीपति...

जय जय श्री आदीश जिन हैं देव हमारे।
चउ घातिकर्म नाश कर भवि जीव उवारे।।
माता पिता- के लाड़ले भोगभूमि में जन्मे।
लख पूर्व चौरासी की महा आयु को धरे।।1।।
घटने लगा प्रभाव जहाँ कल्पवृक्षों का।
तब आपने उपदेश असि मसि का दिया था।।
जब राज्य भोगने लगे उत्सव हुए महां।
तब इन्द्र ने नीलांजना को भेज दी वहाँ।।2।।
वह अन्तर्ध्यान हो गई आयु हुई थी पूर्ण।
स्व बोध जगा आपका करने को कर्म चूर्ण।।
वैराग्य भाव देख लौकान्तिक भी आ गये।
अनुमोदना की आपकी वापस चले गये।।3।।
मरुनंद पालकी सुदर्शना चढ़े थे जब।
पग सात पालकी उठा के मनुज चले तब।।
विद्याधरों ने पालकी उठायी थी जहाँ।
फिर इन्द्र लोग लेके चले गगन में यहाँ।।4।।
इक स्वच्छ शिला बैठ किया सिद्धों का सुमिरन।
पंच मुष्टि से कर दीना तब ही केश का लुंचन।।

तब ही महामुनि आदि जिन के ज्ञान हुए चार।
इन्द्रों ने जय जय घोष किया शुभ था समाचार।।5।।
छह माह का प्रभु योग धार कर के बैठे थे।
निष्कम्प अचल आत्म तत्त्व में ही ठहरे थे।।
जब शुक्ल ध्यान धार क्षपक श्रेणी पर चढ़े।
तब सारे मोह कर्म बंध टूट ही पड़े।।6।।
चउ कर्म नष्ट होते ही प्रकटे थे चतुष्टय।
भवि जीव बोधने को खिरी वाणी जो अक्षय।।
प्रभु एक लाख पूर्व गगन में गमन किया।
सन्मार्ग का उपदेश दिया योग धर लिया।।7।।
कृष्णा चतुर्दशी का दिन शुभ माघ का यहाँ।
वसु कर्म नाश त्याग दिया आपने जहां।।
अग्नि कुमार देवों ने नख केश जलाये।
इन्द्रों ने आके खूब ही उत्सव थे मनाये।।8।।
लोकाग्र में हैं राजे चूड़ामणि नाथ हैं।
हम हाथ जोड़ चरण में झुकाते माथ हैं।।
जिनदेव मुझपे आप कृपा दृष्टि कीजिए।
अपने समान मुझको "विमल" बुद्धि दीजिए।।9।।

धत्ता छंद

हे आदि जिनंदा! मैंटो फंदा, सब जग का उपकार करो।
करुणा के सागर, ज्ञान दिवाकर, शरण पड़ा उद्धार करो।।

ॐ ह्रीं परमशांति विधायकाय हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनचरणाय जयमालाये पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पूर्णार्घ

1. मुकुटों की मणियाँ, झिलमिल लड़ियाँ, चमक चरण की आभा से।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ, प्रभु गुण गाऊँ, मानतुंग सम भक्ति से।।
ॐ ह्रीं विश्वविघ्नहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

2. सबके मन हरती, जिनवर स्तुति, इन्द्रों ने है गान किया।
मैं भी गाऊँगा, झुक जाऊँगा, भक्ति से यह अर्घ लिया।।
ॐ ह्रीं नानामरसंस्तुताय सकलरोगहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

3. शशि बिम्ब को पकड़े, बालक दौड़े, अन्य कौन तैयार हुआ।
मैं भी अबोध हूँ, चला शोध कूँ, बालक बन यह अर्घ लिया।।
ॐ ह्रीं मत्यादि-सुज्ञानप्रकाशनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

4. उफना समुद्र है, कौन शक्य है, निज भुजबल से पार करें।
प्रभु गुण अनन्त हैं, बुद्धि मंद है, श्रद्धा भर हम अर्घ धरें।।
ॐ ह्रीं नानादुःख समुद्रतारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

5. शक्ति हीन मृगी, पुत्र प्रेम सजी, शेर से लड़ने आ जाती।
प्रभु शक्ति हीन मैं, भक्ति लीन, मम स्तुति अर्घ चढ़ा जाती।।
ॐ ह्रीं सकलकार्यसिद्धिकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

6. हो ऋतु बसंत जब, आम्र बोर लख, कोयल स्वयं कुहुकती है।
मैं अज्ञ हूँ भगवन्, विज्ञ हँसे जन, भक्ति मेरी मचलती है।।
ॐ ह्रीं याचितार्थ प्रतिपादन शक्ति सहिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

7. रात्रि भर का तम, सूर्य किरण लख, क्षण भर में नश जाता है।
तव सच्ची भक्ति, अर्घ दे व्यक्ति, भव भव अघ मिट जाता है।।
ॐ ह्रीं सकलपाप फल कष्ट निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

8. जल बिंदु पत्ती पै, लगे मोती है, सज्जन मन का हरण करे।
जिनवर की स्तुति, अर्घ की प्रस्तुति, कर प्राणी शिव सौख्य वरे।।
ॐ ह्रीं अनेक संकट संसार दु:ख निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

9. रवि रश्मि से यूँ, कमल खिलें ज्यों, अघ नशते हैं भक्ति से।
प्रभु कथा आपकी, हरे पाप की, अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति से।।
ॐ ह्रीं सकलमनोवांछित फलदात्रे क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

10. प्रभु सम हो जाते, गुण से गाते, भक्त बने भगवान यहाँ।
सच्चे मालिक तुम, पूज रचें हम, अर्घ चढ़ा मिले ज्ञान महां।।
ॐ ह्रीं अर्हज्जिन-स्मरण-जिनसम्भूताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

11. प्रभु क्षीर समां हैं, क्षार नहीं हैं, इकटक दर्श के योग्य कहे।
श्री वीतरागी की, शरण प्राप्त की, अर्घ चढ़ा शिवसौख्य वरे।।
ॐ ह्रीं सकलतुष्टि-पुष्टिकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

12. अणु सुन्दर भू पर, रचे प्रभूवर, देह आप सम और नहीं।
अनुपम तनधारी, हे त्रिपुरारि, अर्घ चढ़ा लूँ मोक्ष मही।।
ॐ ह्रीं वांछित रूपफलशक्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

13. उपमायें जीतीं, हैं सब फीकीं, तव अनुपम मुख नेत्र हरे।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ, महिमा गाऊँ, लक्ष्य रहा शिव सौख्य अरे।।
ॐ ह्रीं लक्ष्मीसुख-विधायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

14. नहिं रोके कोई, शरण जो लेई, आदीश्वर के चरणों की।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ, गुण को गाऊँ, चाह मेरी शिव वरने की।।
ॐ ह्रीं भूतप्रेतादि-भयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

15. वह प्रलयंकारी, पवन दु:खारी, मेरु शिखर न हिला पाती।
सुर ललना चंचल, अडिग प्रभु मन, श्रद्धा अर्घ चढ़ा जाती।।
ॐ ह्रीं मेरुवन्मनोबलकरणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

16. नहिं धूम रु बाती, न हवा बुझाती, अनुपम दीप जगत्रय में।
तिहुँ लोक प्रकाशें, जगत विकासें, अर्घ चढ़ाऊँ प्रभु पद में।।
ॐ ह्रीं त्रैलोक्य-लोकवशंकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

17. जिनदेव अस्त नहिं, राहु ग्रसे नहिं, बादल भी नहिं ढक पायें।
तिहुँ लोक प्रकाशें, सूर्य समां हैं! अर्घ चढ़ा हम झुक जायें।।
ॐ ह्रीं पापान्धकार-निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

18. हैं उदित हमेशा, मुदित महेशा, राहु न बादल ढकें जिनम्।
पूर्णार्घ चढ़ाऊँ, कर्म नशाऊँ, अपूर्व चंद्र हैं श्री भगवन्।।
ॐ ह्रीं चन्द्रवत्-सर्वलोकोद्योतनकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

19. पक चुके जो चावल, झुके हों बादल, काम नहीं कुछ जलधर का।
रवि शशि क्या काम, तम हर नाम, अर्घ चढ़ाऊँ रत्नों का।।
ॐ ह्रीं सकल-कालुष्य-दोषनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

20. रागी द्वेषी जो, काँच समां वो, जिनवर पूर्ण ज्ञानधारी।
मणि सम जो चमकें, जग में दमकें, पूज रचाऊँ सुखकारी।।
ॐ ह्रीं केवलज्ञान-प्रकाशित-लोकालोक स्वरूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

21. जिनवर को देखा, मन संतोषा, अन्य देव नहिं तोष करें।
प्रभु श्रेष्ठ आप हो, नाम जाप हो, अर्घ चढ़ा हम बोध वरें।।
ॐ ह्रीं सर्वदोषहर शुभदर्शनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

22. पूर्व दिशा सम, नाथ मात त्वं, जिनपति को जनने वाली।
हम अर्घ चढ़ाएँ, भक्ति बढ़ाएँ, मुक्ति पथ देने वाली।।
ॐ ह्रीं अद्भुतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

23. मुक्ति पथ दर्शक, निर्मल तैजस, ज्योतिर्मय मुनिजन मानें।
प्रभु परम पुरुष हो, मृत्युञ्जयी हो, अर्घ चढ़ा हम गुण गायें।।
ॐ ह्रीं मनोवांछित-फलदायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

24. अव्यय विभु आदिक, नाम जिनाधिप, ज्ञानरूप सज्जन कहते।
अठ सहस जु नाम, करें प्रणाम, अर्घ बना चरणों धरते।।
ॐ ह्रीं सहस्र-नामाधीश्वराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

25. हो बुद्ध विधाता, शम के दाता, पुरुषोत्तम कहलाते हो।
श्रद्धा से गायें, अर्घ चढ़ायें, उन्हें मोक्ष पहुँचाते हो।।
ॐ ह्रीं षड्दर्शन-पारंगताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

26. हरते दुःख दूषण, जग आभूषण, त्रिभुवन के परमेश्वर हो।
भवदधि के शोषक, भविजन पोषक, सविनय अर्घ समर्पण हो।।
ॐ ह्रीं नाना दुःख विलीनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

27. शरणागत गुणगण, पाया आश्रय, अवगुण गये अभिमानी में।
निर्दोष आदि हैं, हरें व्याधि हैं, अर्घ चढ़ा शिवगामी बनें।।
ॐ ह्रीं सकलदोष-विनिर्मुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

28. तरु अशोक नीचे, जिनवर दीखें, ज्यों मेघों में रवि चमके।
शुभ प्रातिहार्य है, श्रेष्ठ कार्य है, अर्घ चढ़ा भवि शिव पहुँचे।।
ॐ ह्रीं अशोकतरु-विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

29. उदयाचल ऊपर, चमके दिनकर, सिंहासन पर जिनवर जी।
प्रभु अधर विराजें, सुरगण नाचें, अर्घ चढ़ायें भविजन भी।।
ॐ ह्रीं मणिमुक्ता-खचित-सिंहासन-प्रातिहार्य-युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

30. निर्झर से झरते, चँवर जो ढुरते, चौंसठ जिनवर पर सुखदाय।
पुरु पद की महिमा, सबसे कहना, अर्घ चढ़ा भवि शिवपुर जाय।।
ॐ ह्रीं चतुःषष्टि-चामर-प्रातिहार्य युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

31. त्रय छत्र मनोहर, सूर्य तापहर, त्रिभुवनपति के सूचक हैं।
प्रभु शाश्वत सुख दो, अक्षय पद हो, अर्घ चढ़ा हम पूजत हैं।।
ॐ ह्रीं छत्रत्रय-प्रातिहार्य युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

32. जय घोष कराती, दिशा गुँजाती, शुभ संगम करवाती है।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ, कीरति गाऊँ, दुन्दुभि जिन की पाती* है।।
ॐ ह्रीं त्रैलोक्यआज्ञाविद्यायिने-प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

33. पुष्पों की वर्षा, सुरुतरु हर्षा, मंद सुगन्धित जल बूँदें।।
पक्षी सम लगतीं, मन को हरतीं, अर्घ चढ़ा जिनपद पूजें।।
ॐ ह्रीं समस्त-पुष्पजाति-वृष्टि-प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

34. तिहुँ लोक की कान्ति, लज्जित होती, सहस्र सूर्य सम भामण्डल।
भव सात दिखाता, देता साता, अर्घ देत सुर नर मण्डल।।
ॐ ह्रीं कोटि भास्कर-प्रभामंडित-भामण्डल प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

35. त्रय गति के प्राणी, सुनते वाणी, दिव्य ध्वनि है कल्याणी।
सब भाषा में पाओ, अर्घ चढ़ाओ, भवि को है शिव-सुखदानी।।
ॐ ह्रीं जलधर-पटलगर्जित-सर्वभाषात्मक-योजनप्रमाणदिव्यध्वनि-प्रातिहार्य युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

*संदेश/पत्र

36. प्रभु करें विहार, हो जयकार, सुरगण स्वर्णिम कमल रचें।
हैं दो सौ पच्चीस, हृदय कमल जित, अर्घ चढ़ा हम चरण जजें।।
ॐ ह्रीं पादन्यासे पद्मश्री युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

37. प्रभु आप विभूति, अन्य न होती, धर्मोपदेश की बेला में।
सूरज सम ज्योति, तारों न होती, अर्घ चढ़ा बनूँ चेला मैं।।
ॐ ह्रीं धर्मोपदेशसमये समवशरणादि-लक्ष्मीविभूति विराजमनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

38. प्रभु क्रोध भरा मद, उन्मत हो गज, भक्त विजय पा लेता है।
वह नहिं घबराता, आश्रय पाता, अर्घ चढ़ा गुण गाता है।।
ॐ ह्रीं हस्त्यादि-गर्वदुर्द्धर-भयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

39. तव पद गिरि आश्रय, पा हो निर्भय, सिंह सामने आ जाये।
प्रभु भक्त तुम्हारा, लिया सहारा, अर्घ चढ़ा शिवपुर पाये।।
ॐ ह्रीं युगादि देवनाम-प्रसादात् केशरिभय-विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

40. तुम नाम मंत्र के, मंत्रित जल से, प्रलयंकारी अग्नि बुझे।
भव रागानल हो, दावानल हो, अर्घ चढ़ा शिव पैंड़ी चढ़े।।
ॐ ह्रीं संसाराग्नि-ताप निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

41. क्रोधित हो काला, भुजंग निराला, भक्त सामने आ जाये।
तुम नाम की बूटी, जड़ी अँगूठी, पूर्ण अर्घ दे शिव पाये।।
ॐ ह्रीं त्वन्नाम-नागदमनी-शक्तिसम्पन्नाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

42. रिपुओं की सेना, होवे भय ना, भक्ति से संबल मिलता।
प्रभु धर्म सुनेता, कर्म विजेता, अर्घ चढ़ा मैं पद नमता।।
ॐ ह्रीं संग्राम मध्ये क्षेमंकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

43. जो शूरवीर है, देत पीर है, मोह महा योद्धा भारी।
चरणों में नमता, भक्ति करता, उससे सब सेना हारी।।
ॐ ह्रीं वनगजादि-भयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

44. तूफानी सागर, दिखे है डागर, प्रभु नाम के सुमिरन से।
भव सिन्धु बड़ा है, पार खड़ा है, अर्घ चढ़ा जिन भक्ति से।।
ॐ ह्रीं संसाराब्धितारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

45. हुआ रोग जलोदर, भीम भगन्दर, जीने की आशा नहिं हो।
प्रभु अर्घ चढ़ाकर, छुए चरण रज, कामदेव सी काया हो।।
ॐ ह्रीं दाहताप-जलोदर-अष्ट-दशकुष्टसन्निपातादि-रोगहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

46. हथकड़ी बेड़ियाँ, छिली एड़ियाँ, जकड़ा नख से शिख तक हो।
गुरु मानतुंग सम, नाम जपे त्वम्, बंधन क्षण में तड़तड़ हो।।
ॐ ह्रीं नानाविध कठिनबन्धन दूरकरणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

47. गज मृग दावानल, सर्प महाबल, समुद्र जलोदर बंधन भय।
सब स्वयं नष्ट हों, आप इष्ट हों, अर्घ चढ़ा हो क्षण में क्षय।।
ॐ ह्रीं बहुविध विघ्नविनाशाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

48. प्रभु गुण की डोरी, सुमनों जोड़ी, वर्ण वर्ण के पुष्प चुने।
मुनि मानतुंग सम, कण्ठ धरें हम, अर्घ चढ़ाकर मुक्ति वरें।।
ॐ ह्रीं सकलकार्य-साधनसमर्थाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

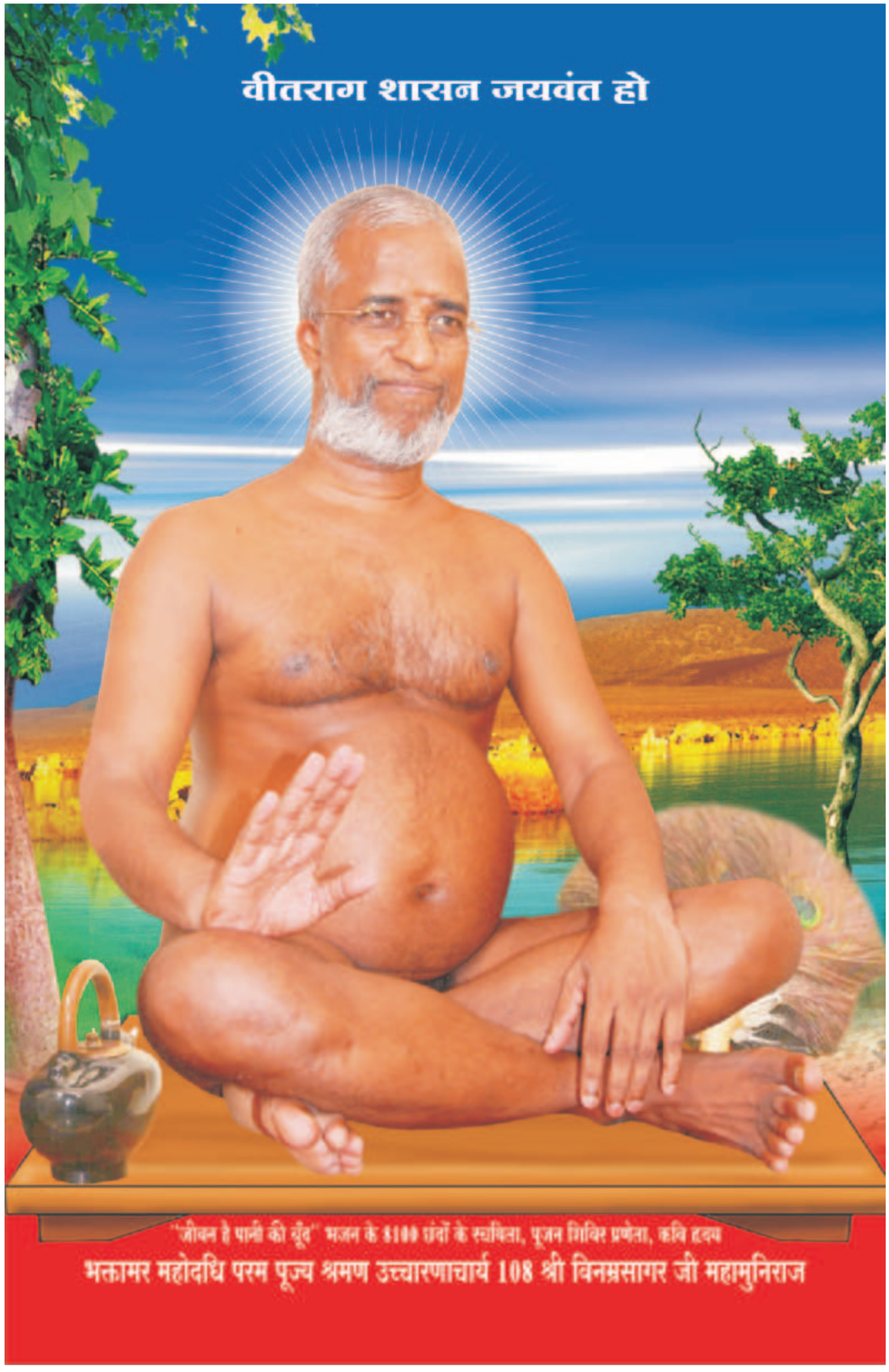

श्लोक नं. 1

सर्व विघ्न विनाशक

भक्तामर–प्रणत–मौलि–मणि–प्रभाणा–
मुद्योतकं–दलित–पाप–तमो–वितानम्।
सम्यक्–प्रणम्य जिन–पाद युगं–युगादा–
वालम्बनं–भवजले–पततां–जनानाम् ।।1।।

दोहा

गुण अनन्त प्रभु आदि के, आदि करूँ गुणगान।
आदिम प्रभु हे आदि जिन! तुम्हें विनम्र प्रणाम।।
पहिले तीर्थंकर प्रभो, आदिनाथ भगवान।
भक्तामर गाऊँ यहाँ, करूँ "विनम्र" प्रणाम।।

चौपाई

भक्त इन्द्र चरणों में आते, मुकुट सहित नित शीश झुकाते,
पुण्यकांति का कोष बढ़ाते, सारे अन्धकार मिट जाते।
जिनके युगपद हैं आलम्बन, युग आदि के आदिनाथ जिन,
भवतारण है जिनका नाम, सम्यक् ढंग से उन्हें प्रणाम।।1।।

जिनान् सर्वान् जितारातीन्, मुनि गण सुर नर सेवितान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।1।।
ॐ ह्रीं अर्हं जिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्द्ध ज्ञानोदय छंद

1. भगवन् की भक्ति करने से, नई रौशनी प्राप्त हुई।
प्रभुवर तेरे चरणों आकर, ज्ञान लक्ष्मी साथ हुई।।1।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।
2. मुक्ता माणिक चरणों लाया, वंदन मेरा स्वीकारो।
डूब रहा हूँ भव सागर में, जगनिधि से प्रभु अब तारो।।2।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. महिमा प्रभु वर्णन करने में, यह जिह्वा नहिं सक्षम है।
वृहस्पति तव गुण गागर, अमृत पीने में अक्षम है।।3।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. रहता नत चरणों में प्रतिपल, वह उन्नत हो जाता है।
जिनवर भक्ति करने वाला, निज मन्नत को पाता है।।4।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. प्रथम जिनेश्वर आदि विधाता, सबको शिवमग दाता हो।
आठ प्रहर तीनो संध्या में, चरणों नित नत माथा हो।।5।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं... ।
6. णमोकार के प्रथम चरण के, जिनवर तुम अधिकारी हो।
शत इंद्रों से वंदित प्रभुवर, चरणों धोक हमारी हो।।6।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. तम अज्ञान ने चादर फैला, यह संसार सुलाया है।
ज्ञान दिवाकर स्वामी तुमसे, जग परकाशित पाया है।।7।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मौलिक सुख जिसमें मिलता है, वह पद तुमने प्राप्त किया।
अविनश्वर अविनाशी बनकर, सिद्धालय में वास किया।।8।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. लिखना चाहूँ गुण को भगवन, गाते हैं जो सन्त सभी।
साहस नहीं लेखनी में प्रभु, तव गुण का है अंत नहीं।।9।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. महाभाग्य हे भाग्य विधाता! तुमको आज पुकारा है।
भाग्य बना दो निज सम प्रभुवर, तू ही एक सहारा है।।10।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. अणिमा महिमा आदिक ऋद्धि, तव चरणों में खेली हैं।
मुक्तिवधु के प्राणनाथ प्रभु, ये तो उसकी सहेली हैं।।11।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. प्रण करता हूँ आज जिनेश्वर, पुरुषारथ वह कर जाऊँ।
जिन गुण से प्रभु आप भरे हो, उनको मैं उर में पाऊँ।।12।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. भाव हमारे हमें हे भगवन!, भव वन में भटकाते हैं।
शरण तुम्हारी जो भवि रहते, भव सागर तिर जाते हैं।।13।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. णाणावरणादिक चउघाती, कर्मों का प्रभु क्षरण किया।
नंत चतुष्टय लक्ष्मी ने तव, आदि जिनेश्वर वरण किया।।14।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. मुक्तिवधु के स्वामी हो तुम, तव पद का अनुरागी हूँ।
नंतकाल से खोज रहा प्रभु, मिले जो अब बड़भागी हूँ।।15।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. उद्योतन उद्यमन आदि से, चउ आराधन को धारा।
रत्नत्रय की दिव्य ज्योति से, किया जगत में उजियारा।।16।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तत्त्व द्रव्य अरु नव पदार्थ का, सत्स्वरूप जो प्रकट किया।
अन्य धर्म अवलम्बी जन को, कभी न इनका ज्ञान हुआ।।17।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. कंकर से शंकर बनने का, मार्ग यहाँ पर दर्शाया।
चला यहाँ श्रद्धा से भर कर, अविचल धाम वही पाया।।18।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. दर्पण सम तव ज्ञानरूप में, वस्तु चराचर दिखती है।
अचरच नहिं है कोई इसमें, दिव्य ज्ञान की शक्ति है।।19।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. लिम्पित हैं चरणों से जो भवि, कम्पित न कर सके कोई।
सर्व जगत में विचरण करता, रोक न सकता उसे कोई।।20।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तर्क योग्य न स्वभाव जिनका, अरु अभाव सब कर्मों का।
अवर्णनीय है प्रभाव जिनका, जिनमत शासन जिनवर का।।21।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. पावन परम अमल परमातम, नाम आपके हैं भगवन्।
बुद्धि ज्ञान बढ़ाने को प्रभु, जपते रहते हैं निशदिन।।22।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. पतित बनाया पावन तुमने, जो चरणों की सेव करे।
मैं भी चरण शरण में आया, सेवा के उर भाव धरे।।23।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तर जाता वह पत्थर सागर, जिस पर नाम लिखा है राम।
क्यों न तरूँगा मैं भवसागर, हृदयांकित हो प्रभु अभिराम।।24।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. मोह महातम दलने वाले, सदा उदित हो सूर्य समां।
जिनवर की ही दिव्य ज्योति से, जगमग होता यहाँ जहां।।25।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. विचरण करते आत्म गगन में, अनंत गुण पंछी उड़ते।
निजस्वरूप में लीन रहें प्रभु, हम जिनवाणी में पढ़ते।।26।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तारण तरण तुम्हीं इस जग में, और न कोई तार सके।
पालक हो जिनराज आप ही, और न कोई पाल सके।।27।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नंत ज्ञान अवगाहक जिनवर, तव गुण का ही चातक हूँ।
मैं भी बनूँ गुणों का गाहक, तव चरणों का चाकर हूँ।।28।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. संशय विभ्रम विमोह का प्रभु, नाश आपने कर डाला।
चरणों से लिपटा जो प्राणी, क्षायिक सम्यक् दे डाला।।29।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सम्यक् पथ बतलाकर जिनवर, चलकर स्वयं हि दिखलाया।
तव मग मैं भी चलना चाहूँ, यही भाव उर है भाया।।30।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. प्रकृति प्रदेश स्थिति अनुभाग, बंध चार बतलाये हैं।
इन सबका अब हनन करूँ मैं, जो जिनवाणी गाये हैं।।31।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. णमोकार अक्षय पद दाता, इक इक अक्षर ध्यान करूँ।
ध्यान अग्नि में बैठ जिनेश्वर, कर्मों का संधान करूँ।।32।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. प्यारी अरजी सुनो प्रभु जी, तव चरणों में आया हूँ।
तुम हो दीनानाथ कृपालु, भव वन में भरमाया हूँ।।33।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जिनशासन के तेज पुंज हे!, निज शासन के अधिकारी।
चरणाम्बुज में वंदन करता, महामहिम महिमा धारी।।34।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. नष्ट अष्ट कर्मों को करके, कष्ट मिटाये भव वन के।
लोक शिखर पर आप विराजे, त्रिलोक चूड़ामणि बन के।।35।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. पाप पुण्य ने बेड़ी बनकर, पाँव सभी के कस डाले।
चरण पड़ा जो भक्ति भरा वो, बंधन उसके प्रभु टाले।।36।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. दमन किया है अक्ष चक्र का, शमन कषायें कर डालीं।
श्रेणी आरोहण कर जिनवर, कर्म कर दिए सब खाली।।37।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. युग के आदि विधाता जिनवर! तव पद का अभिलाषी हूँ।
युगल चरण की करूँ वंदना, निज गुण का अनुरागी हूँ।।38।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. गंगा सिंधु चलीं पर्वत से, तब चरणन प्रक्षाल किया।
गंधोदक वन बहीं धरा पर, जीवों का उद्धार किया।।39।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. युग भावों को आत्मसात् कर, ऋषिवर आतम ध्यान करें।
आत्म शांति पाने को हम भी, अर्पण चरणों अर्घ करें।।40।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. गाते जो गुणगान प्रभू के, वे गुणमय हो जाते हैं।
भक्तिभाव से भरे हुए मन, गुण गुलशन बन जाते है।।42।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. दाता महामहिम इस जग को, सारी निधियाँ दे डालीं।
महादान बनकर प्रभुवर ने, शिवमग गलियाँ दिखला दीं।।43।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. वात वलय पर तिष्ठित जिनवर, तव चरणों का ध्यान धरूँ।
अष्ट द्रव्य का थाल सजाकर, अर्पित चरणों अर्घ करूँ।।43।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. लंका पति भी जिन चरणों में, भ्रमर समां गुंजन करता।
पराग पाकर जिन गुण की वह, जीवन को नंदन करता।।44।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. बन वैरागी वन-वन घूमे, विचरण करते स्वात्म गगन।
स्वस्थ रहे जो निज चेतन में, गाता जिनको जैनागम।।45।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. नंत काल से छिपी आत्मनिधि, प्रभु अब तक न जानी थी।
दर्शन पाकर प्रभु आपका, निज निधि भी पहिचानी थी।।46।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. भगवत पद को पाने वाले, परम ऋषीश्वर कहलाते।
क्षपक श्रेणी आरोहण कर प्रभु, आदि जिनेश्वर कहलाते।।47।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वर्तमान के वर्द्धमान थे, पथ अपवर्ग प्रदायक थे।
यत्न मुक्ति का करने वाले, शिवपुर के शिवनायक थे।।48।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. जलनिधि सम संसार सिंधु को, आत्म तपन से सुखा दिया।
ध्यान अग्नि से बैठ स्वयं ही, कर्मेंधन को जला दिया।।49।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. लेकर श्रद्धा सुमन भविकजन, प्रभु चरणों अर्पण करते।
भक्ति भाव की नाव बैठकर, चारों गति के दुख हरते।।50।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ले" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. पतित जनों को पावन करने, वाली प्रभु की वाणी है।
करते जो रसपान भविकजन, उनको ही कल्याणी है।।51।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. तव भक्ति ही एक सहारा, हम भक्तों के जीवन का।
हाथ जोड़ कर करें प्रार्थना, दे दो वर प्रभु मुक्ति का।।52।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. तांडव नृत्य किया इन्द्रों ने, गिरि मेरु से जब लाये।
आँखें सहस बनाकर के भी, देखत मन भर नहिं पाये।।53।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. जल है तन का ताप मिटाए, भक्ति से संताप मिटे।
जो प्रभु चरण में शीश झुकाए, उसके सारे रोग मिटे।।54।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नाना योनि में भ्रमण किया प्रभु, जब चरणों से दूर रहा।
आज उदय शुभ आया जिनवर, तव चरणों में लिपट रहा।।55।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. नाम् मंत्र से जग में प्राणी, हृदय सुसज्जित करता जो।
पाता मन आह्लाद अनूठा, सदा प्रफुल्लित रहता वो।।56।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

मुकुटों की मणियाँ, झिलमिल लड़ियाँ, चमक चरण की आभा से।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ, प्रभु गुण गाऊँ, मानतुंग सम भक्ति से।।

ॐ ह्रीं विश्वविघ्नहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय
श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

गुरु मिलने पे ये समझो जमाना मिल गया हमको,
दिल गाये यहाँ दिल से तराना मिल गया हमको।
गुरु से बढ़के दुनियाँ में नजर कुछ भी नहीं आता,
चरण की धूल मिल जाये खजाना मिल गया हमको।।

श्लोक नं. 2

सर्व विघ्न विनाशक

यः संस्तुतः सकल-वाङ्मय-तत्त्व-बोधा-
दुद्भूत-बुद्धि-पटुभिः सुरलोक-नाथैः।
स्तोत्रै - र्जगत्-त्रितय - चित्त - हरैरुदारैः,
स्तोष्ये किलाह-मपि तं प्रथमं जिनेन्द्रम् ।।2।।

चौपाई

द्वादशांग का जिनको ज्ञान, ऐसे इन्द्र करें गुणगान,
सभी जनों का मन हर लेगी, गाये वो पाये सम्मान।
देवों ने भी जिनको गाया, मेरा मन गाने को आया,
निश्चय से करता गुणगान, आदिनाथ को प्रथम प्रणाम।।2।।

अवधिज्ञान संयुक्तान्, जिनान् कर्म रिपु घातकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं अवधि जिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सखी–छंद (मुनि सकलव्रती)

1. यः करोति सः है कर्ता, कर्मों का फल है भोक्ता।
तुम कर्म करो शुभ प्राणी, मिल जाये मुक्ति रानी।।57।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. संकट मोचन जिनराजा, शिवमार्ग दिखावत साजा।
भव्यों के भाग्य बनाते, शिवरमणी से परिणाते।।58।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. स्तुति करते जो भविजन, वो काटें भव के फंदन।
नमते जिन चरण हमेशा, पूज्यों के पूज्य जिनेशा।।59।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. भवतः हो मुक्त जिनेश्वर, तिहुँ जग के हो परमेश्वर।
नयनों से नहीं दिखे हो, मम उर में प्रभु बसे हो।।60।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. सब जीवन को सुख दाता, भव्यों के भाग्य विधाता।
वंदन से बंधन मिटते, हम त्रय योगों से नमते।।61।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. करते विहार सब जग में, विचरण करते प्रभु नभ में।
दुंदुभि है आनंदकारी, शुभ संगम हेतु पुकारी।।62।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. लखते प्रभु को नयनों से, पर ज्ञान गम्य प्रभु रहते।
बसते हैं लोक शिखर पर, हम नमन करें धरती पर।।63।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. वाङ्मय प्रभु का अनुपम है, भवि हंस करें सेवन है।
कर नीर क्षीर को छिन् भिन्, रस पाते आतम बुधजन।।64।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वाङ्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. मम हृदय विराजो जिनवर, कमलासन पर कमलाकर।
भक्ति करते तन त्यागूँ, तव गुण में ही मन पागूँ।।65।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. यह लोक भरा कर्मों से, प्रभु आप बचाते दुख से।
अशरण के नाथ सहारे, त्राता जग के दो किनारे।।66।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. जो तत्त्व ज्ञान करें ऋषिगण, पा जाते हैं वे निजधन।
प्रभु ज्ञान सुधा बरसाते, हम चरणन शीश झुकाते।।67।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. त्वद् भक्ति के स्वर गूँजें, तड़–तड़ ताले तब टूटें।
वे द्वारपाल अचरज में, नृप भोज पड़ा चरणन में।।68।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. बोली कोयल जब बोले, जन–जन का मन है डोले।
प्रभु दिव्य ध्वनि सुखकारी, भवि जीवन को हितकारी।।69।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. बोधात् योग धरा प्रभु ने, पूजा की ब्रह्मऋषि ने।
डोली सुदर्शना लाये, वन सिद्धारथ पहुँचाये।।70।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धात्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. उद्भूत हुए धरती पर, सर्वार्थसिद्ध से चयकर।
शांति संसार में छायी, वह क्षण था मंगलदायी।।71।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "उद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. भूतल पर सूना जीवन, नहीं बसे प्रभु जिनके मन।
हैं भक्तों के रखवाले, प्रभु आदिनाथ जी प्यारे।।72।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तन की द्युति जाम्बूनद* सी, श्री आदि प्रथम जिनवर की।
जिन सूरज उदित हुआ है, भविजन मन मुदित हुआ है।।73।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. बुधजन गुणगान करें जब, भक्ति रसपान करें सब।
भक्तों का यही निवेदन, अब ना हो भव-भव वेदन।।74।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. ऋद्धि सिद्धि के दाता, हे वृषभ! जिनेश्वर त्राता।
निज सम भक्तों को करते, महिमा ना हम गा सकते।।75।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. पर का स्वरूप परकाशा, अरु स्व स्वरूप निज भासा।
हे तीन भुवनके स्वामी!, अन्तर्यामी अभिरामी।।76।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. टुकड़े कीने कर्मों के, निज ध्यान ज्ञान के घन से।
कामादिक को परिहारा, चरणों में नमन हमारा।।77।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "टु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. सुरभि: फैली चहुँ ओर, नहिं पुष्प वृष्टि का छोर।
गन्धोदक वर्षा प्यारी, लगती सबको मनहारी।।78।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सुर असुर चरण में नमते, भक्ति कर मुक्ति वरते।
हे केवल ज्ञान दिवाकर! हे विमल रत्न रत्नाकर।।79।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रस गंध वर्ण न जिनमें, प्रभु लीन रहें चेतन में।
सब जगत चराचर जानें, द्रव गुण पयर्य पहिचानें।।80।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. लौकान्तिक देव जु आये, वैराग्य प्रभु मन भाये।
पंच मुट्ठी लुंचन कीना, सिद्धों का ध्यान धरीना।।81।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*स्वर्ण

26. कल्मष कर्मों का क्षयकर, बन गये नाथ क्षेमंकर।
जिनवर जिन तीर्थ चलाया, भवि को शिवमार्ग दिखाया।।82।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. ना दिखते हो लोचन से, अनुभूत हुए अनुभव से।
प्रभु लोकालोक निहारें, भक्ति से तुम्हें पुकारे।।83।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. मुनि नाथै: समझाते हैं, भवि जीवन में लाते हैं।
करते श्रद्धान गिरा* पर, वे जाते सिद्ध शिला पर।।84।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थै:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. स्तोत्र महासुख कारी, जिसने भक्ति से उचारी।
मिलती आतम शक्ति है, भवि तारण को भक्ति है।।85।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. त्रै:योग से करता वंदन, हे नाभिराय मरु नंदन!
बाहुबलि भरत पिता हो, भक्तों के प्रभु त्राता हो।।86।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रै:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. जयवन्त रहें जगती पर, श्री वृषभनाथ वृषभेश्वर।
प्रभु अतुल ज्ञान भण्डारी, मैं आया शरण तुम्हारी।।87।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. गत्यादि गगन प्रभु करते, सुरगण जयकार उचरते।
भक्तों को यहाँ बुलाते, शुभमय संगम करवाते।।88।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. त्रिभुवन के तुम परमेश्वर, हे प्रथम देव आदीश्वर।
वन्दूँ तुमको ध्रुवधामी, हो गये आप शिवधामी।।89।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तव पूजा पावन करती, सुख मार्ग दिखा दु:ख हरती।
वह भक्त मुक्त हो जाता, जो जिन भक्ति कर जाता।।90।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*वाणी

35. यह सूत्र आप समझाया, कोई शत्रु मित्र न भाया*।
सब पर विभाव को त्यागा, प्रभु निज स्वभाव को पाया।।91।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. चिर संचित पाप हमारे, जिनवर भक्ति ने संहारे।
हे नंत गुणाकर स्वामी! दुःख मैंटो अन्तर्यामी।।92।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. चित्त को नित आनंददायी, प्रभु महिमा वरणी ना जायी।
ऋषिवर तुमरे गुण गाते, सब वेद पुराण सुनाते।।93।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. हरि हल चक्री से वंदित, करते सबको आनंदित।
हो गये आप शिवधामी, अगणित वंदन हो स्वामी।।94।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. रै शब्द का अर्थ कहा धन, भव्यों को भक्ति है धन।
जो जिन भक्ति को करता, सब ही गुण कोष को भरता।।95।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रुक जाय कर्म का बंधन, जो हृदय धरे मरु नंदन।
मुनि मानतुंग गुरु वंदें, अन्तस् में ही आनंदें।।96।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. दाता तुम मोक्ष प्रदाता, यह दास सदा सिर नाता।
मैं अशरण तुम्हें पुकारूँ, यह जीवन तुम पर वारूँ।।97।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. रैः ज्ञान हरा है सारा, मुझे कर्म बैरी ने मारा।
सब इष्टानिष्ट विसारे, अब हैं जिनदेव सहारे।।98।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. स्तोत्र तुम्हारा भगवन, करता जग के सब अघ हन।
खंड-खंड किये कर्मों के, निज में निज आतम लखके।।99।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*भैया

44. रूप्ये* चाहे जग सारा, पर प्रभु ना रूषे हमारा।
मैं शरण तुम्हारी आया, सारा जग है बिसराया।।100।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. किया देश विदेश विहारा, सर्वत्र धर्म विस्तारा।
देवों के देव कहाये, हम चरण सदा सिर नाये।।102।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. लाया प्रभु अर्घ बनाकर, भक्ति से थाल सजाकर।
चरणों में आन चढ़ाया, तव गुण अनंत मन भाया।।102।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. हर रंक राव हो जाता, श्रद्धा से प्रभु को ध्याता।
जीने की कला सिखाते, प्रभु भक्त हृदय बस जाते।।103।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. महका जीवन का उपवन, ताले टूटे सब बंधन।
नृप भोज हुआ अजरज में, फिर पड़ा गुरु चरणन में।।104।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. पितु मात हृदय हर्षाया, बालक घुटनों चल आया।
किलकारी गूँजी आँगन, बन्धुजन को मन भावन।।105।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तं आदि ब्रह्म जिनदेवं, सुर असुर करें पद सेवं।
भक्तों के आश्रय दाता, निजसम गुण धाम प्रदाता।।106।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. प्रत्यक्ष ज्ञान के स्वामी, असहाय अतुल अभिरामी।
शिवरमणी तुम्हें निहारे, तव क्रम युग चरण पखारे।।107।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. थम गया सूर्य नभ आकर, जब जन्म लिया आदीश्वर।
हुआ मंगलाचार अपारा, भक्ति कर भाग्य संवारा।।108।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*रूठे

53. मंत्रों में मंत्र महाना, प्रभु आदि जिनेश्वर नामा।
जपते श्रद्धा उर धर भवि, वे पार उतरते भवदधि।।109।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्ताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. जिन सूरज उदित हुआ है, मन छवि लख मुदित हुआ है।
कहीं और न अब मैं देखूँ, जिनवर तुमको अवलोकूँ।।110।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्ताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नेगम संग्रह व्यवहारा, प्रभु नय का ज्ञान प्रसारा।
नय ने प्रमाण दिखलाया, पद प्रामाणिक है पाया।।111।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्ताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. इन्द्रं अरु नाग नरेन्द्रं, भक्ति करते जिन चंद्रं।
भक्तों के पुण्य बढ़ाते, शिवराह प्रभू दिखलाते।।112।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्द्रं" बीजाक्षर संयुक्ताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छन्द)

सबके मन हरती, जिनवर स्तुति, इन्द्रों ने है गान किया।
मैं भी गाऊँगा, झुक जाऊँगा, भक्ति से यह अर्घ लिया।।

ॐ ह्रीं नानामरसंस्तुताय सकलरोगहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

मेरे घावों पे गुरुवर तुम कोई मरहम लगा देना,
मुझे निज आत्मरस अनुभव यहाँ थोड़ा पिला देना।
तुम्हारे बिन मैं अब तक जी रहा मुरझाए गुल जैसा,
ये दोनों हाथ रख सर पे मेरे गुल को खिला देना।।

सर्व सिद्धि-दायक

बुद्धया विनापि विबुधार्चित-पाद-पीठ,
स्तोतुं समुद्यत-मति-र्विगत-त्रपोऽहम्।
बालं विहाय जल संस्थितमिन्दु-बिम्ब-
मन्यः क इच्छति जनः सहसा ग्रहीतुम्।।3।।

चौपाई

देवों ने सिंहासन पूजा, महिमा प्रभु की अतुल अजूबा,
बुद्धि नहीं है फिर भी भगवन्, लज्जा छोड़ करे थुति ये मन।
चन्द्र बिम्ब जल में दिख जाये, उसे पकड़ने बालक आये,
बुद्धिमान नहिं दौड़ लगाये, गुरुवर मानतुंग बतलाये।।3।।

परमावधि संयुक्तान्, जिनान् विश्व प्रकाशकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं परमावधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

1. बुद्ध शुद्ध शंकर शिवं, हे गणनायक! ईश।
चरण कमल की वंदना, नाथ नवाऊँ शीश।।113।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. ध्यान आपका है परम, हे अचिन्त्य गुणधाम!
कर्म बंध को नाशने, चरणों करूँ प्रणाम।।114।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. विश्वरूप विश्वात्मा, बने विश्व लोकेश।
यही भक्त की भावना, चरणों रहूँ जिनेश।।115।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. नाथ आपका दर्श ही, करता तम का नाश।
यही प्रार्थना आपसे, मैंटो भव का पाश।।116।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. पिता मात बंधु सखा, कोई न देता साथ।
हाथ पकड़ लो नाथ तुम, चरणन में मम माथ।।117।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. विश्व झलकता आप में, फिर भी हो अविकल्प।
अशुभ विकल्प हटें सभी, यही करूँ संकल्प।।118।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. बुधजन वंदें तव चरण, हे आदीश्वर! देव।
भक्ति भाव से हम नमें, करें चरण की सेव।।119।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. धार्मिक जब धारे धरम, करे करम सब चूर।
पाता है निज ज्ञान धन, गुण से हो भरपूर।।120।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. चित् चैतन्य स्वरूप मय, त्रिजग गुरु आदीश।
त्रैलोकाग्र शिखामणि, तुम्हें नवाऊँ शीश।।121।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तप्त जाम्बुनद* सी द्युति, सब जग मनहारी।
धीर वीर गम्भीर प्रभु, भव तारण हारी।।122।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. पाप पुण्य से मुक्त हो, गुण अनंत की खान।
मुक्ति पथ नेता तुम्हीं, जय हो जय भगवान।।123।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. दर्श आपका है परम, दर्श दिलाता धर्म।
बने दूरदर्शन प्रभो, मुझे दिलाओ शर्म।।124।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. पीकर जिनवाणी परम, भक्त हुए संतुष्ट।
ध्याया जिनने परम गुरु, कर्म हुए सब नष्ट।।125।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. ठग बनकर इस मोह ने, ठगा सर्व संसार।
आदीश्वर ने मोह का, किया पूर्ण संहार।।126।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ठ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. स्तोत्रों के गान से, गूँजा यहाँ जहान।
रोमांचित तव भक्त हैं, प्रभु भक्तों की जान।।127।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्तो" बीजाक्षर संयुक्ताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तुं गुण महिमा है अगम, आगम की प्रभु शान।
अविकारी अविरल परम, जिन आगम की जान।।128।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*सोना

17. सहज सरल स्वभाव से, सफल किया प्रभु ध्यान।
सकल कर्म को नाशकर, पहुँचे शिवपुर थान।।129।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. मुझमें तुममें भेद बस, भक्त मैं तुम भगवान।
शरण तुम्हारी आ पड़ा, कीजै अब कल्याण।।130।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. द्युम्नाभ* सम रूप तव, दीप्ति फैली चहुँ ओर।
दलन दुःख का कर दिया, पुरुषारथ पुरजोर।।131।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तरुवर पर पंछी बसे, चहुँ दिशि से उड़ आय।
कल्पवृक्ष सम हो विभो, भविजन पाते छाँव।।132।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मम उर ज्ञान प्रकाश हो, अंधकार हो नाश।
चहुँगति के भवजाल से, काड़ो देकर आश।।133।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तिरस्कार करता यहाँ, प्रभु आभामण्डल।
सौम्य छवि जीते यहाँ, चन्द्र बिम्ब मण्डल।।134।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तिर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. विश्वव्याप्य विश्वेश हो, विधि के कर्ता आप।
इक्ष्वाकु कुल नंद तुम, भवि का हरते ताप।।135।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. गगन गमन करके प्रभो, जग में किया विहार।
गमगीनों को बोध कर, तुम कीना उद्धार।।136।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तव गुण कीर्तन को विभो, जो करता दिन शाम।
गुण से भर देते उसे, पहुँचाते शिवधाम।।137।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*स्वर्णसमां

26. त्रस्त लस्त अरु पस्त हैं, कहलाते वे गृहस्थ।
शरण आपकी बैठकर, हो जाते आत्मस्थ।।138।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. पोषक हो भवि जीव के, शोषक हो भवसिंधु।
निज सम बालक को करो, जय जय जय जगबंधु।।139।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. अहंकार को नाशकर, किया ज्ञान परकाश।
ज्ञान सूर्य विकसायकर, कमल खिलाओ नाथ।।140।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽहं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. बादल गरजे जब गगन, नाचें झूमें मोर।
ओंकार ध्वनि प्रभु खिरे, भवि नाचें चहुँ ओर।।141।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. लंबी आयु पायकर, जग को मार्ग दिखाय।
असि मसि कृषि उपदेश दे, जीना दिया सिखाय।।142।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. वित्त से चित्त हटायकर, धारण किया विराग।
नीलांजन का क्षरण लख, सब जग कीना त्याग।।143।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. हा मा धिक उपदेश दे, जग का किया सुधार।
जिओ जीने दो तुम सभी, निज पर हो उपकार।।144।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. यत्न किया संयम धरा, किया प्रयत्न जिनदेव।
केवल ज्योति विलोक* कर, देव करें नित सेव।।145।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जगद्योनि जगती बने, फूल खिलाया धर्म।
भवि जीवों को बोधकर, पहुँचाया शिव शर्म।।146।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*देखकर

35. लखनिज आतम की निधि, लिखा आत्म का सार।
ज्ञानगम्य बन आदि ने, भविजन कीने पार।।147।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. संस्कृती तब खिल उठी, दिया आत्म संस्कार।
कृतकृत्य हो गये विभो, भव्यों के उपहार।।148।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. स्थिर योग में थिर हुए, बने अयोगी जिन।
त्रययोगों को नष्ट कर, हुए कर्म के बिन।।149।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्थि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तम हर है उपदेश जिन, ध्वनि खिरे दे सार।
अघहर ज्ञान विशेष दे, दिखला देती सार।।150।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. मिथ्यादृष्टि जीव को, इक क्षण का हो साथ।
मिथ्या हो मिथ्यात्व तब, समदृष्टि हो आप।।151।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. इन्दु प्रकाशित गगन में, किरण हरे संताप।
लोक शिखर राजे प्रभो, भवि के मैंटे ताप।।152।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. बिंब चन्द्र लख बाल ही, दौड़ पकड़ने जाय।
तव भक्ति प्रभु आदि जिन, मम मन को ललचाय।।153।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. बन यात्री चलूँ रात दिन, प्रभु आपके पंथ।
आश यही जिनराज बस, करूँ कर्म का अंत।।154।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मति सुमति कर दो प्रभो, मुझ जड़मति की आज।
नाथ विराजो मम हृदय, बन जाओ सरताज।।155।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. अन्यः आप समां कोई, भूपति हो या भृत्य।
तव चरणन सेवा करें, इन्द्र करत हैं नृत्य।।156।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. कर्म किये क्षय आपने, दिया धर्म उपदेश।
बने धर्म घोषक प्रभो, जय हो आदि जिनेश।।157।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. इच्छाओं का त्याग कर, दीक्षा ली वन जाय।
चार ज्ञान धारी हुए, जय जय जय जिनराय।।158।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "इच्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. छत्र तीन शोभित सदा, देते जग उपदेश।
तीन लोक के नाथ तुम, जगत मिटाओ क्लेश।।159।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "छ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तिरस्कार का पात्र बन, भव वन भटका नाथ।
शरण आपकी आ पड़ा, सिर पर रख दो हाथ।।160।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. जग जल बिंदु समान है, यह कब जाये सूख।
अतः तजा संसार को, बन शिवरमणी भूप।।161।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. मनः मनः पद में नमे, सुरगुरु सम न ज्ञान।
जीवन में पुरुषार्थ हो, दो ऐसा वरदान।।162।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सकल जगत में स्वार्थ है, प्रभु जग में निःस्वार्थ।
तज दूँ सब स्वारथ अभी, चलूँ आप के पाथ।।163।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. हनन किये दुर्नय यहाँ, सुनय किया विस्तार।
तनय नाभिनंदन जिनम्, जगत किया उद्धार।।164।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. साथ न दे परछाईं भी, तब पर का क्या साथ।
इस असार संसार में, तार दिया दे हाथ।।165।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. ग्रसित काल के गाल से, जीव नंत दुःख पाय।
काल कराल को जो ग्रसे, प्रभु ने दिया उपाय।।166।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. ही से भी की ओर सब, चलना हे मतिमान!
दिया जगत उपदेश यह, पहुँचाया शिवथान।।167।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह्री" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तुम्हें पूजते सुरपति, अहपति नरपति देव।
अल्पबुद्धि मैं पूजूँ, करूँ चरण नित सेव।।168।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

शशि बिम्ब को पकड़े, बालक दौड़े, अन्य कौन तैयार हुआ।
मैं भी अबोध हूँ, चला शोध कूँ, बालक बन यह अर्घ लिया।।

ॐ ह्रीं मत्यादि-सुज्ञानप्रकाशनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं ह्रौं ह्रौं नमः।

कि जिसमें पंथ होता है उसे निर्ग्रन्थ मत मानो,
भले ही भेष साधु का उसे तुम संत मत मानो।
जो है मेंढक कुए का हंस वो कैसे नजर आये,
जहाँ पर पक्ष बैठा हो वहाँ भव अंत मत जानो।।

जल जन्तु भय मोचक

वक्तुं गुणान् गुण-समुद्र! शशांक-कान्तान्
कस्ते क्षमः सुरगुरु-प्रतिमोऽपि बुद्ध्या।
कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-नक्र-चक्रं,
को वा तरीतु-मल-मम्बुनिधिं भुजाभ्याम्।।4।।

चौपाई

उज्ज्वल गुणधारी गुण सागर, कौन कहे तेरे गुण गाकर,
कोई सक्षम नहीं जगत में, सुरगुरु के सम मुख पे लाकर।
प्रलयकाल की पवन चले जब, नक्र चक्र से कुपित हो सागर,
कौन तैरकर कर ले पार, तेरे गुण में यही विचार।।4।।

हैं अनंतगुण आदि जिन, आदि आदि आधार।
गुण चाहूँ उनके सदा, नमहूँ बारम्बार।।

सर्वावधि संयुक्तान्, जिनान् घातिक्षयङ्करान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वावधि जिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छंद

1. वक्ता प्रभु सकल जहाँ के, वाणी रस पान कराते।
भव्यों को बने सहारा, प्रभु आदिनाथ अवतारा।।169।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. तुं गुण गण की जो स्तुति, मुख सहस्र कहे न बृहस्पति।
मैं अल्पमति क्या गाऊँ, नत चरणों में हो जाऊँ।।170।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. गुण रत्नाकर कहलाते, रत्नों से कोष सजाते।
जिन गुण हमको हैं भाते, ऋषि मुनि यति तव गुणगाते।।171।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. प्राणान्त होय जब मेरा, तब खुला द्वार हो तेरा।
बस नाम रटूँ जिनवर का, न कंठ रुद्ध हो मेरा का।।172।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. गुप्तित्रय से शृंगारित, व्रत समिति पंच से पूरित।
हे आदि जिनेश्वर! तुम तन, हर लेता भव्यों का मन।।173।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. णव निधि के तुम अधिकारी, हे शील गुणव्रत धारी!
भव भोग रोग विनशाते, हम चरणन शीश झुकाते।।174।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. सब लोकप्रिय कहलाते, जग में अपूर्व ही भाते।
हे त्रिकालदर्शी स्वामी! वंदूँ पदरज अभिरामी।।175।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मुक्ति के दूत तुम्हीं हो, माँ मरु के पूत तुम्हीं हो।
सुत भरत पितु वृषभेश्वर, हम पूजत हैं परमेश्वर।।176।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. द्रह से निःसृत जो नदियाँ, गंगा सिंधु हैं सखियाँ।
जिनवर अभिषेक करत हैं, फिर आकर कुण्ड भरत हैं।।177।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. शक्ति न थुति करने की, भक्ति प्रभु प्रेरित करती।
भक्तों ने तुम्हें पुकारा, आतम अनुपम रस धारा।।178।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. शांति की खोज सभी को, मिलती न कभी रागी को।
प्रभु राग द्वेष निरवारो, अपनो तुम विरद निहारो।।179।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. कर्मोदय ने है सताया, भक्ति से दूर भगाया।
प्रभु भक्ति कभी नहिं तजना, हैं आदि प्रभु के वयना।।180।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. कान्ति आदि की जग में, सूरज फीके पड़े मग में।
प्रभु लोकालोक प्रकाशें, अरु आपा-पर को भासें।।181।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. दुरितान् क्षरण प्रभु करते, भक्ति से चरणों नमते।
जिनवर हो आप हमारे, प्राणेश्वर प्राण से प्यारे।।182।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. आकस्मिक आप भिषक् हो, भव रोग प्रभु शामक हो।
शुभ मन से आदि पुकारूँ, त्रयरोगों को निरवारूँ।।183।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कम्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. तेरे चरणों की धूलि, चंदन बन जग में फैली।
जो मस्तक यहाँ लगाये, उसकी तकदीर उजेली।।184।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. क्षण भर भी ध्यान करे जो, चिर संचित पाप हरे वो।
हम सब भी नाथ पुकारें, दे दो अब आप सहारे।।185।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. ममता ने मोह बढ़ाया, जंजीरों से जकड़ाया।
लख चौरासी भटकाकर, चहुँगति का भ्रमण कराया।।186।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. सुरनर किन्नर भक्ति से, पाते सम्यक् मस्ती से।
गुणगान आपका गाते, गुणवारिधि में रम जाते।।187।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. रस रहित अगंध अरूपी, नहिं वर्ण सुसिद्ध स्वरूपी।
चित् अचित द्रव्य सब जानें, दर्पणवत् चित में भानें।।188।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. गुरु और लघु का भेद, प्रभु आदि किया उच्छेद।
त्रयलोक निरखते स्वामी, तव चरणों में प्रणमामि।।189।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. रुकता न कभी प्रभाव, जिनवर का यही स्वभाव।
चरणों का आश्रय पाया, निज का स्वरूप मन भाया।।190।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. प्रथमेश्वर आदि जिनेश्वर, परमेष्ठी युग परमेश्वर।
प्रभु स्वयं तिरे भवि तारे, भक्तों के हो रखवारे।।191।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तिरने की कला सिखाते, तब तीर्थंकर कहलाते।
हे वृषभेश्वर! इस जग में, निज वृष* का दर्श कराते।।192।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. मोही को बोधि मिले ना, ये प्रथम देव के वैना*।
प्रभु दर्शन मोह नशायें, निज का दर्शन करवायें।।193।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*धर्म *वचन

26. अपि शब्द बड़ा ही न्यारा, ही का करता निस्तारा।
प्रभु दिव्य देशना में ही, भव्यों को बना सहारा।।194।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. बुद्धि है बोधि प्रदायी, सर्वोच्च विचार से आयी।
हो प्राणी मात्र कल्याणा, जिनवर ने ऐसा बखाना।।195।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. ध्याया खुद ध्येय बनाया, ध्याता बन ध्यान लगाया।
तीनों को एक कराकर, ज्ञायक स्वरूप को पाया।।196।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. कल्याण जगत का कीना, संयम का दिया नगीना।
श्रेणी आरोह करायी, उपशम क्षायिक कहलायी।।197।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पाया शुभ दर्शन मुनिवर, उपजा समकित अति सुखकर।
फिर समवशरण को पाकर, कीना क्षायिक क्षपणा कर।।198।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. हे नंत ज्ञान गुणसागर! हम अवगुण की हैं गागर।
अवगाहन करने आये, हम भी तुम सम बन जायें।।199।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. कामादिक रोग घनेरे, जो रहते निशदिन घेरे।
प्रभु आदि आज निरवारो, हम चरणों पड़े सम्भारो।।200।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. लख पूर्व तिरासी आयु, बीती सुख में ज्यों वायु।
फिर त्याग राज दरबारा, संयम ले वृषभ सम्हारा।।201।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. पलकें नहिं झपकें स्वामी, यह केवलज्ञान निशानी।
भय का कीना संहारा, भवदधि के आप किनारा।।202।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. वरदान प्रभु ये चाहूँ, इक पल न तुम्हें भुलाऊँ।
हो मरण समाधि हमारा, द्वारा हो प्रभु तुम्हारा।।203।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. नोकर्म भाव अरु द्रव्य, प्रभु आप मिटाया सत्त्व।
अमरत्व आपने पाया, हम सब को मार्ग दिखाया।।204।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शुद्धेश एक चेतनमय, प्रभु आदि दर्श मंगलमय।
दु:ख श्वेद खेद से वर्जित, वंदन कर लो सुख अर्जित।।205।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्धे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तन से निर्मुक्त हुए हो, मन से शिवदर्श दिए हो।
बिन दर्शन गुण को गाऊँ, अंतर मन से प्रभु ध्याऊँ।।206।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. नर काया को सुर तरसें, कब संयम को हम परसें।
भक्ति कर भाग्य बढ़ाया, संयम का भाव बनाया।।207।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. क्रम पूर्वक श्रेणी चढ़कर, मोही कर्मों का क्षयकर।
फिर त्रेसठ प्रकृति नशायीं, वंदूँ हे त्रिभुवनरायी!।।208।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. चलते भी अचल रहें प्रभु, आत्मस्थ सुशोभित हैं विभु।
हम शरण चरण की पायें, जीवन को धन्य बनायें।।209।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. क्रम युगल अमर तव पूजें, कोई देव न जग में दूजे।
हे आदिनाथ गुणधारी! वर ली प्रभु तुम शिवनारी।।210।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. कोटी सूरज से बढ़कर, मुख तेज पुंज आदीश्वर।
दर्शन प्रभु का सुखदायी, वंदन चरणों जिनरायी।।211।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "को" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. वार्ता करते प्रभु निज में, रहें सदा मगन चेतन में।
जीने की कला सिखाते, हम चरणन शीश नवाते।।212।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तव भक्ति के स्वर गूँजे, ताले इक पल में टूटे।
नृप भोज चरण में पड़कर, की क्षमायाचना सिर धर।।213।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रीता सा जीवन उनका, नहिं भक्ति भरा मन जिनका।
कैसे सम्यक् को पायें, वृषभेश गुणों को गायें।।214।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "री" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तुम भरत पितु कहलाते, भक्तों के मन को भाते।
भारत यह नाम सुहाना, तव सुत के नाम से जाना।।215।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. महिमा महान प्रभुवर की, भक्तों को बोधि भर दी।
मैंने भी झोली पसारी, भर दो अब मेरी बारी।।216।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. लखकर संसार असारा, लिख दीना नया इशारा।
फिर राज पाठ को तजकर, निज आतम रूप निहारा।।217।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. मंगल है रूप तुम्हारा, मंगल है नाम तुम्हारा।
मंगल में मंगल जिनवर, हम करें भक्ति मंगलकर।।218।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. बुध ज्ञान समाधि प्रदाता, भरते जीवन में साता।
दाता हो आप महान, हे आदिनाथ! भगवान।।219।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. निर्ग्रन्थ नि:संग दिगम्बर, प्रभु वस्त्र बनाया अम्बर।
करते आकाश विहार, करने भवि पर उपकार।।220।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. आधि व्याधि क्षय करते, जिनवर की शरण जो रहते।
हम मरण समाधि चाहें, भव की उपाधि विसरायें।।221।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. भुवनत्रय ज्ञायक प्रभुवर, हूँ नाथ आपका किंकर।
श्रद्धा सुमनों को लेकर, आया भक्ति से भरकर।।222।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. जागी भक्ति भक्तों में, प्रभु वीतराग के पद में।
प्रभु आदि शरण है पायी, हे जिनाधीश! सुखदायी।।223।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. निज कराभ्यां वंदेऽहं, चिंतन करते प्रभु सोऽहं।
आदीश्वर नाम सहारा, गुण चिंतन है सुखकारा।।224
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्यां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

उफना समुद्र है, कौन शक्य है, निज भुजबल से पार करें।
प्रभु गुण अनन्त हैं, बुद्धि मंद है, श्रद्धा भर हम अर्घ धरें।।

ॐ ह्रीं नानादु:ख समुद्रतारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नम:।

मेरी मझधार में नैया किनारे पर लगा देना,
बुरे कर्मों की सत्ता को मेरे गुरुवर मिटा देना।
मुझे अब तक न मिल पाया यहाँ सच रास्ता सच में,
हमें मंजिल के रस्ते को मेरे गुरुवर दिखा देना।।

नेत्र रोग संहारक

सोऽहं तथापि तव भक्ति -वशान्मुनीश!
कर्तुं स्तवं विगत-शक्ति -रपि प्रवृत्त:।
प्रीत्यात्म - वीर्य-मविचार्य मृगी मृगेन्द्रं,
नाभ्येति किं निज-शिशो: परिपालनार्थम्।।5।।

चौपाई

शक्ति नहीं फिर भी तैयार, तेरी थुति से इतना प्यार,
कोई कुछ भी कहे यहाँ पर, मैं इसका नहिं करूँ विचार।
शेर हिरण शिशु मारन आये, हिरणी शक्ति विचार न लाये,
क्या वह लड़ने नहिं आ जाये, आती यही प्रीति कहलाये।।5।।

अनन्तावधि संयुक्तान्, जिनांस्तत्त्व विशारदान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं णमो अनन्तावधिजिनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा

1. सोता था जब जग यहाँ, तब तुम जगे ऋषीश।
मोह नींद मैं था पड़ा, जगा दिया जगदीश।।225।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. सोऽहं सोऽहं बोलकर, योगी करते ध्यान।
परम ध्येय प्रभु आदि जिन, चरण पड़ा मैं आन।।226।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽहं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. तव स्वभाव न तर्क युत, वचन अगोचर देव।
अमल अरूप अकंप तुम, जानें गणधर देव।।227।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. थाल पुष्प का ले सजा, चउ विध सुर हैं आय।
भक्ति भाव से पूजते, जय जय जय जिनराय।।228।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "था" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. पिया निजातम रस यहाँ, हो गये अजर अमर।
सिद्धालय में जा बसे, प्रभुवर आदीश्वर।।229।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तत्त्व द्रव्य सार दर्श प्रभु, वाणी में निःसृत्य।
आत्म तत्त्व के ईश तुम, भक्तों से संस्तुत्य।।230।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वक्ता श्रेष्ठ तुम्हीं जिनं, खिरते दिव्य वचन।
धारण करता जो हृदय, होता निर्मल मन।।231।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भक्त भक्ति खोदे सुरंग, खोजे निज का सार।
मार्ग दिखा दो हे प्रभु! दूर करो अंधकार।।232।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. भक्ति मुक्ति दातार है, कहते वेद पुराण।
श्रद्धा अरु भक्ति भरो, करो नाथ कल्याण।।233।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. वचन पंक्ति यूँ ही खिरे, ज्यों खग चलें गगन।
देख छवि बारह सभा, नर सुर होंय मगन।।234।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. शान्त भाव परमाणु जग, जिन से वपु निर्मित।
शान्त छवि लख हो गया, चरणों मन अर्पित।।235।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शान्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मुक्ति सम्पादक प्रभो, शक्ति के प्रभु कोष।
युक्ति बताओ मुक्ति की, दूर करो सब दोष।।236।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. नीर क्षीर को पृथक करि, बने आत्मद्रह हंस।
आत्म सुधारस के रसिक, प्रभु हैं उत्तम हंस।।237।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. शत्रु मित्र का भेद न, न मन कोई विभाव।
सूत्र आत्मस्थ कर लिया, कीना कर्म अभाव।।238।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. कर्ता बन कर आज तक, किया कर्म का बंध।
सारे बंध छुड़ायकर, हुए आप निर्बन्ध।।239।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. तुम्हीं मात बंधु सखा, तुम्हीं श्रेष्ठ गुरुदेव।
भटकों को सन्मार्ग दे, बने पिता जिनदेव।।240।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. अस्त हुआ है ज्ञान सब, जीव हुए सब त्रस्त।
हे अविकारी! आपने, जग को किया अश्वस्त।।241।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. वंदनीय जिनदेव तुम, दिव्य सुधा बरसात।
भक्त आपका हे प्रभो!, पा जाता सुखसात।।242।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. विघ्न मिटाने को प्रभो, करते भक्त पुकार।
भक्ति पूजन से विभो, पा जाते निजसार।।243।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. गगन विराजित हे जिनं! नमन किया तीर्थेश।
एक समय में गमन कर, पहुँचे निज के देश।।244।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तप कर कर्म सुखा दिए, द्रव्य भाव नो कर्म।
सिद्धालय घर जा बसे, पाया शाश्वत शर्म।।245।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. शल्य तीन का क्षय किया, हुए आदि निश्शल।
जो पूजे श्रद्धा सहित, पाये आतम बल।।246।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. शक्ति हे प्रभो! भक्ति की ऐसी हो उत्पन्न।
मानतुंग गुरुवर समां, टूटे सब बंधन।।247।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रक्षक हो प्रभु धर्म के, बना निरास्रव भाव।
बंद किया सब बंध का, अरु आस्रव का द्वार।।248।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कपि मृग शुक पर्याय में, पाया कष्ट अनंत।
अब पायी शरणा प्रभु, भव दुःख का हो अंत।।249।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रभुत्व नाथ लख आपका, नृपति हुआ था नम्र।
चरणों में आ गिर पड़ा, हृदय हुआ विनम्र।।250।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. वृषभपति वृषभेश तुम, रहित हो गये शोक।
पाया जब संसर्ग तव, तरुवर हुआ अशोक।।251।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. मत्तः हो प्राणी यहाँ, पी मदिरा सम मोह।
अतः आपसे प्रार्थना, नाथ मिटा दो नेह।।252।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. प्रीति जगत से जो करे, पाये दुख अम्बार।
आदि चरण की प्रीति से, पाये शाश्वत सार।।253।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्री" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. त्यागा सभी विभाव को, पाया स्वच्छ विचार।
निज आतम दर्पण किया, लखा सर्व संसार।।254।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. आत्म ज्ञान बिन जगत में, भ्रमण किया बहुबार।
प्रभु आत्म ज्ञानी भए, नाशा सब संसार।।255।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वीर्य आत्म प्रभु आपका, कर्म किया चकचूर।
धन्य आपका दर्श है, शिवपुर के प्रभु शूर।।256।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वीर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. यत्न मुक्ति का नहिं करें, सम्यक् करें न धर्म।
कैसे भव से तर सकें, आदि बतावें मर्म।।257।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र्म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मन मोहक छवि आपकी, रवि शशि सम है कान्ति।
दिव्य तेज लख आपका, मिट जाती सब भ्रान्ति।।258।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. विचरण आत्म गगन करें, गुण पंछी चहकाय।
स्वस्थ रहें निज में मगन, आगम यही बताय।।259।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. चातक बन मुनि देखते, निज आतम वृषभेश।
परम स्वभाव प्रकट करें, हो जाते तीर्थेश।।260।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शौर्य आपका देखकर, यतिवर धरें चरित्र।
परमानन्दी स्रोत के, निर्झर झरें पवित्र।।261।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मृग मरीचिका में फँसा, वह मारीच प्रपौत्र।
चारों गति के दुख सहे, भक्ति का नहिं स्रोत।।262।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. गीता वेद पुराण सब, जिनवाणी का सार।
श्रद्धा से धारें हृदय, भविजन होते पार।।263।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. मृतका सम यह जगत है, जीवन बिंदु समां।
चिन्मय को ना जानकर, चहुँगति जीव भ्रमा।।264।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. गेंदा बेल चमेली अरु, विविध पुष्प की माल।
अलिगण मँडराते सदा, भक्त नवाते भाल।।265।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गें" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. इंद्रं अरु धरणेन्द्र भी, चरण झुकाते शीश।
जगद्वंद्य हे जिनवरं!, तुम त्रिभुवन के ईश।।266।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. नायक हो तुम मुक्ति के, युग के आदि जिनेश।
आश्रय पा तव चरण का, भव्य बने परमेश।।267।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. अभ्येति मृगि क्यों नहीं, निज शिशु रक्षा हेत।
मम भक्ति प्रेरित करे, प्रभु सद्बुद्धि देत।।268।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तिरस्कार जग का सहा, भ्रमण किया सर्वत्र।
अब करके सम्मान निज, पाया शरण पवित्र।।269।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. किंकर्त्तव्य विमूढ़ वह, लख जिन गुण में खोय।
फिकर करे नहिं जगत की, बस प्रभु का ही होय।।270।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. निराभरण हो कर प्रभो, बने जगत भूषण।
भक्त हृदय में राजकर, हरते सब दूषण।।271।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जगत शिरोमणि भूप तुम, जगती के आधार।
अर्पित है तव पद कमल, अष्ट दरब का थार* ।।272।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. शिवनगरी के भूप तुम, निज आतम के कंत।
बसें सदा निज आत्म में, सिद्धातम हैं नंत।।273।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. शिशोः बोध देने प्रभु, बने शोध संस्थान।
मुनिगण निज में शोधकर, पाते उत्तम थान।।274।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शोः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. परम पिता परमात्मा, पतित किया उद्धार।
पावन कर दो हे विभो! पा जाऊँ निज सार।।275।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रिक्त सदा अरि रज रहस, अतः आप निर्दोष।
सदा ज्ञान रवि चमकता, भव्य जलज के तोष।।276।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*थाली

53. पारसमणि प्रभु आदि जिन, भवि को स्वर्ण बनाय।
लोह बना जग घूमता, मन चरणों ललचाय।।277।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. लगी लगन भगवन् बनूँ, करूँ सु आतम ध्यान।
नाथ अरज सुन लीजिए, दीजै चरणन थान।।278।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. अनार्य बन भटका जगत, हे ज्ञानार्णव देव!
ज्ञान जलधि डुबकी लगा, बनूँ आर्य जिनदेव।।279।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नार्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. थंभ दंभ का कर दिया, बन गये आत्मानंद।
तव समीपता पाय कर, केलि करें निज ब्रह्म।।280।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थें" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

शक्ति हीन मृगी, पुत्र प्रेम सजी, शेर से लड़ने आ जाती।
प्रभु शक्ति हीन मैं, भक्ति लीन, मम स्तुति अर्घ चढ़ा जाती।।

ॐ ह्रीं सकलकार्यसिद्धिकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

मिला पानी मगर फिर भी रहे प्यासे न पी पाये,
मेरे हाथों में सुई धागा मगर कपड़े न सी पाये।
मुकद्दर के भरोसे में जिये हैं जिन्दगी सारी,
बना दे जो मेरी किस्मत वो जीवन हम न जी पाये।।

सरस्वती विद्या प्रसारक

अल्पश्रुतं-श्रुतवतां परिहास-धाम,
त्वद्-भक्ति -रेव मुखरी-कुरुते बलान्माम्।
यत्कोकिलः किल-मधौ मधुरं विरौति,
तच्चाम्र-चारु-कलिका-निक-रैक-हेतु।।6।।

चौपाई

अल्पज्ञान मुझमें भगवान, बुधजन हँसें मुझे नहिं मान,
लेकिन भक्ति बलात् तुम्हारी, करवाती हमसे गुणगान।
जैसे कोयल ऋतु बसंत में, लाती मीठे गीत कंठ में,
हेतु आम्र कलिका यह जानो, यही हेतु प्रभु मुझमें जानो।।6।।

कोष्ठ बुद्धीनृषीन् विश्व, शास्त्र विस्तृतमानसान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं कोष्ठबुद्धिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा

1. अल्प बुद्धि है नाथ, बोधि का वर दीजिए।
बैठूँ चरण की छाँव, विमल मति भर दीजिए।।281।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "अल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. पर मुझमें न देव, न ही मैं पर द्रव्य हूँ।
करूँ चरण की सेव, पर से नेह हटाय कर।।282।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. श्रुत स्कंध घना यहाँ, बैठा इसकी छाँव जो।
शांति दूत बना यहाँ, आत्म ज्योति प्रकटाय कर।।283।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. तंत्र मंत्र निस्सार, आदि मंत्र पर गर्व है।
सब दुख हों संहार, इसी मंत्र के जाप से।।284।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. श्रुत का ही अभ्यास, मोह शत्रु को नाशता।
निज धन का आभास, वृषभेश्वर के पद लहा।।285।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. तन मन पुलकित होय, वृषभदेव जिन वयन सुन।
हृदयस्पंदित होय, अनुपम मुद्रा देख जिन।।286।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. वतन आपका नाथ, अष्टम पृथ्वी पर सजा।
करूँ प्रार्थना आज, निज वैभव वर दीजिए।।287।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तांत्रिक करे है तंत्र, सर्व जगत को मोहते।
प्रभु वपु ऐसा तंत्र, देख भविक चहकें यहाँ।।288।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. परिणामों का खेल, पल में बंध अबंध करि।
प्रभु भक्ति की रेल, बैठ भविक शिव सुख लहें।।289।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. रिश्ता तुमसे नाथ, आज बनाऊँ एक मैं।
तब तक देना साथ, पा जाऊँ शिव लोक मैं।।290।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. हारा सब संसार, मोह महाबल से सदा।
हरा उसे प्रभु आप, जीत जगत में प्रकट है।।291।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. सहस्र चक्षु निर्माण, किए इन्द्र ने रूप लख।
पाया निज का सार, इक भवावतारी बना।।292।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. धारण किया निरोध, योग हटा शिवपुर गये।
कभी न आना होय, दुःखमयी संसार में।।293।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. मगन हुए आचार्य, मानतुंग प्रभु भक्ति में।
देखा अचरज आर्य, बंधन अरु ताले खुले।।294।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. त्वद् भक्ति ही नाथ, एक सहारा भगत का।
सदा नवाऊँ माथ, ज्ञान करो जड़ता हरो।।295।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. भक्त खड़े कर जोर, नाथ नाव को तार दो।
विपदाएँ चहुँ ओर, नाथ भँवर से काड़ दो।।296।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तिरे भक्त जलधार, नाम मंत्र हृदये धरा।
हम भी करें पुकार, प्रथम देव चरणों खड़े।।297।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. रेवा तट का नीर, प्यास बुझाता पथिक की।
प्रभु न्हवन का नीर, भव का ताप मिटावता।।298।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. वर्ण स्वर्ण को देख, भास्कर भी शरमा गया।
प्रभु गुण का उद्योत, जगमग हो संसार सब।।299।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्रय अर्घ्यं...।

20. मुख मुद्रा संतृप्त, करती है बारह सभा।
प्रभु वाणी करे तृप्त, पुलकित हों भवि श्रवण कर।।300।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. खग मृग नर सुर आय, करें वंदना वृषभ जिन।
प्रभु पद में जिनराय, मुकुटों की मणि झिलमिलें।।301।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. रीझ गई शिवनारि, रूप दिगम्बर देख जिन।
लखती प्रभु अनिमेष, त्रय जगदीश्वर को सदा।।302।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "री" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. कुमति बचावत नाथ, सुगति धरत जयवन्त जिन।
अल्पमति गुण गाय, श्रद्धा से सुमिरन करूँ।।303।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रुधिर वर्ण प्रभु श्वेत, शुक्ल लेश्या को कहे।
निष्कषाय जिनदेव, नमन करत भव भय मिटे।।304।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तेज पुंज प्रभु आप, चहुँ दिश मुख है सोहता।
समवशरण जिनराज, सबको सम शरणा मिले।।305।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. बहिर्भाव सब त्याग, अन्तर्मुख रहते सदा।
शरण गही प्रभु आप, भवि जीवों के बंधु हो।।306।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भव्य कमल अम्लान्, खिले सूर्य जिन किरण से।
भविजन भ्रमर समान, गुंजन करते भक्ति भर।।307।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. माम् त्राहि जिनदेव! रक्षक हो तुम जगत के।
पाप कर्म चहुँ ओर, जन्म मरण दुःख नाश दो।।308।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. यत् कोकिल गुंजन, सर्व जगत का मन हरे।
हेतु आम्र कलिकन, भवि गूँजें जिनवर निरख।।309।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. कोई नहीं जगबंधु, स्वात्म जगत है आपका।
जगत छुड़ाओ सिंधु, दुखियारा चरणों पड़ा।।310।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "को" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. किया न प्रभु का दर्श, निज दर्शन कैसे करूँ।
जिनवर का शुभ दर्श, देता आतम भक्ति शुभ।।311।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. अचलः अमलः देव! नित्य निरंजन शांत शिव।
अविकारी अविनाश, गणधर इन्द्र नमन करें।।312।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. किया सृष्टि उद्धार, ज्ञान किरण से जगत में।
लिया आदि अवतार, युग आदि में प्रथम जिन।।313।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. लगन लगी जिनदेव! चरणों का सामीप्य पा।
करे लक्ष्मी सेव, नंत चतुष्टय के धनी।।314।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. महामहिम ऋषिराज, सुर नर पद वंदन करें।
पाये बोधि समाज, सरस्वती चरणों बसे।।315।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मधौ ऋतु कही बसन्त, कोयल गान से मन हरे।
भक्ति करते संत, हृदय कमल खिल खिल उठे।।316।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. महाभाग्य तुम नाथ, भाग्य हीन हम थुति करें।
कर दो नाथ सनाथ, भवि जीवों के नाथ तुम।।317।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. धुरी धर्म की धार, चहुँ गति दुःख से ऊबरे।
प्रभु हम हैं मझधार, हाथ पकड़ के तारिये।।318।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. रम्भा उर्वशी आदि, आदि चित्त नहिं चला सकीं।
भेष दिगम्बर धारि, अगणित भवि तारे प्रभु।।319।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. विषय कषाय न लेश, ज्ञानकाय धारी प्रभो।
नाशे क्लेश महेश, मानतुंग भक्ति करें।।320।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. रौद्र रखे परिणाम, नंत काल भव भव भ्रमे।
आदि बताया धर्म, धर्म ध्यान भव दुःख हरे।।321।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. तिरते भव्य अनेक, ध्यान सिंधु में डूबकर।
नंत सिद्ध हुए एक, सिद्धालय में जायकर।।322।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तच्चित् सम हो चित्त, यह अवगम वर दीजिए।
शान्त भाव का वित्त, ये पूँजी प्रभु दीजिए।।323।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तच्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. चाह दाह की हेतु, तप्त किया जीवन सकल।
राह मुक्ति का सेतु, वीतराग छवि मन मगन।।324।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. ताम्र न निरखे नैन, क्रोध रहित प्रभु आपके।
सुख देते प्रभु वैन, दोष अठारह से रहित।।325।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. चार घातिया नाश, केवलज्ञान प्रकाशिया।
पंचम गति में वास, सिद्ध धाम अधिपति प्रभो।।326।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. रुग्ण कभी न होय, नाम मंत्र औषधि धरे।
पर उपकारी सोह, सदा व्याधि पर की हरे।।327।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. कर्म भुलाता धर्म, सदा आदि भक्ति करो।
भक्ति दिलाए शर्म, गुरु कहते मन में धरो।।328।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. लिम्पित जड़ से होय, भव भव में भटके यहाँ।
प्रभु पद में लिम्पेय, फिर भव वन में ना फिरे।।329।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. कारज रहा न शेष, कृतकृत्य हो गये प्रभो।
कर्म रहे ना अशेष, लोक शिखर वासी विभो।।330।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नित्य निरंजन नाथ, अष्ट द्रव्य ले पूजता।
ढूँढ़े प्रभु के पाद, अष्ट कर्म क्षय हों प्रभु।।331।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. करूँ अर्चना आज, निरास्रवी आदीश की।
प्रथम जिनेश्वर राज, कब आओगे मम हृदय।।323।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. रैन समान अनंत, भव बीते मोहान्ध में।
करो नाथ निर्द्वन्द्व, तीर्थंकर पद में पड़ा।।333।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कब प्रभु दोगे दर्श, भक्त प्रत्यक्ष की आश ले।
हृदय बनाया फर्श, बैठो प्रभु अर्चा करूँ।।334।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. हे मरुदेवी नंद! लगन लगी तव चरण में।
मैंटो जग के फंद, शिवपुर गामी मैं बनूँ।।335।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तुम जग के हो बंधु, सबको आतम पथ दिया।
अतः चरण वंदूँ, प्रथम तीर्थ हो आदि जिन।।336।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

हो ऋतु बसंत जब, आम्र बोर लख, कोयल स्वयं कुहुकती है।
मैं अज्ञ हूँ भगवन्, विज्ञ हँसे जन, भक्ति मेरी मचलती है।।

ॐ ह्रीं याचितार्थ प्रतिपादन शक्ति सहिताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः।

गुरु के दर पे आकरके यहाँ हम सब महकते हैं,
गुरु के गीत गाकर के यहाँ हम सब चहकते हैं।
गुरु काबा, गुरु हज हैं गुरु चलता हुआ तीरथ,
गुरु को हम खुदा का रूप धरती पर समझते हैं।।

सर्व क्षुद्रोपद्रव-निवारक

त्वत्संस्तवेन भव-सन्तति सन्निबद्धं,
पापं क्षणात्क्षय-मुपैति शरीरभाजाम्।
आक्रान्त लोक-मलि नील-मशेष-माशु,
सूर्यांशु-भिन्न-मिव शार्वर-मन्धकारम्।।7।।

चौपाई

जो भवि भव में पाप कमाते, क्षण में उनके दुख मिट जाते,
जो तव भक्ति हृदय से गाते, ऐसा मानतुंग बतलाते।
रात्रि सारा समय लगाये, तब वह अन्धकार बन पाये,
सूर्य किरण जब इक आ जाये, सारा अंधकार मिट जाये।।7।।

बीज बुद्धीनृषीन् बीजा–क्षराज्जाताखिलागमान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं बीजबुद्धिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज – सोलह कारण पूजन

1. त्वत् भक्ति में मन रम जाय, सर्व जगत के बंध छुड़ाय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।
आदीश्वर गाऊँ गुणगान, वंदूँ पाने शिवपुर थान।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।337।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. संकटहारी हे जिनराय! भव्यों को शिवडगर दिखाय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेष जगत गुरु हो।।आदीश्वर...।।338।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. अस्त न होवे कभी प्रभाव, भवि का प्रभु जी पुण्य बढ़ाव।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।आदीश्वर...।।339।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. वेग अहं का तुरत मिटाय, निरहंकारी वेद बताय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।340।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. नभ में करते प्रभु विहार, देव करें सब जय जयकार।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।341।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. भवि को भय से मुक्ति दिलाय, निर्भय दु:खहारी जिनराय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।342।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. वन्दन से बंधन मिट जाय, हे प्रभु! तुम निर्बन्ध कहाय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।343।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. संस्तुति प्रभु की भवि सुखदाय, भवि को प्रभु सन्मार्ग दिखाय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।
आदीश्वर गाऊँ गुणगान, वंदूँ पाने शिवपुर थान।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।344।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. तमहर उज्ज्वल ज्योति जगाय, जो उर प्रभु तस्वीर लगाय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।345।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. तिरना है यदि भवि संसार, ध्यालो प्रभु हैं गुण आगार।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।346।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. सच्ची लगन लगी जिनपाद, बेड़ी कट गईं करते याद।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।347।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. सन्निधि पाये जो जिननाथ, आत्म निधि हो आतम साथ।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।348।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. बध बंधन के कष्ट अनेक, प्रभु भक्ति से मिटें क्षणेक।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।349।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. सिद्धं बुद्धं परम विशुद्ध, आदि प्रभु हैं जग में शुद्ध।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।350।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्धं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. पावन है जिननाथ जहान, पतित को पावन करे गुणगान।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।351।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. पंकज कीचड़ में खिलजाय, प्रभु दर्शन से भवि खिल जाय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।352।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. क्षय क्षण में हों कर्म अनंत, दर्शन से आदि भगवंत।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।
आदीश्वर गाऊँ गुणगान, वंदूँ पाने शिवपुर थान।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।353।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. हैं निष्णात् स्वयं में नाथ, पर का करते कभी न साथ।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।354।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्णात्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. क्षण-क्षण में मिटती पर्याय, प्रभुवर जीवन क्षणिक बताय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।355।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. यम भी आकर करे प्रणाम, जो जपता जिनवर का नाम।
परम गुरु हो जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।356।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मुख्य गौण दो भेद बताय, दिव्य ध्वनि जब खिरि जिनराय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।357।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. पैठे जब आतम को ध्याय, सिद्धालय पहुँचे क्षण जाय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।358।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तिल में ज्यों है तेल समाय, त्यों निज में भगवान बताय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।359।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. शरण चरण की जो भवि पाय, वो निज आतम में रम जाय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।360।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. रीछ सिंह वानर सब आएँ, समवशरण प्रभु भक्ति रचाएँ।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।361।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "री" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. रज अरि रहस हैं रहित जिनेश, सुरपति करें चरण की सेव।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।
आदीश्वर गाऊँ गुणगान, वंदूँ पाने शिवपुर थान।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।362।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भामण्डल शोभित जिनराय, भवि के सातों भव दिख जायं।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।363।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. जाम्बुनद सी द्युति तन सोह, मेरु पे जैसे रवि मोह।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।364।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. आया सुन महिमा आदीश, मुझे छुड़ाओ दुःख से ईश।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।365।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "आ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. क्रांति हुई जीवन में आज, हृदय समाये श्री जिनराज।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।366।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्रां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तड़-तड़ ताले टूटत जायँ, भोज नृपति अचरज में आयँ।।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।367।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. लोचन से नहिं दिखते आप, लोकालोक निरखते नाथ।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।368।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. कला बहत्तर पुरुष बताय, जामें इक भवपार कराय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।369।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मन इन्द्रिय वश में कर लीन, शिवरमणी वरने में लीन।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।
आदीश्वर गाऊँ गुणगान, वंदूँ पाने शिवपुर थान।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।370।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. लिखा विधि ने कर्म विधान, प्रभु भक्ति से मिटे निशान।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।371।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. नील कमल सम नयन विशाल, श्रेष्ठ जगत में प्रभु का भाल।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।372।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. लगन लगी दर्शन की नाथ, भक्त की होगी पूरी आश।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।373।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मणि मुक्ता के थाल सजाय, भक्तिभाव से चरण चढ़ाय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।374।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. शेष रहा ना काम जिनेश, कामदेव पड़े चरण महेश।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।375।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. षट्कर्मों का दे उपदेश, भवि को निर्भय किया जिनेश।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।376।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मात-पिता में हर्ष अपार, अँगना खेलें आदिकुमार।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।377।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. शुभ संगम के हेतु बुलायें, दुन्दुभि नभ में देव बजायें।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।
आदीश्वर गाऊँ गुणगान, वंदूँ पाने शिवपुर थान।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।378।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. सूर्य उदित ज्यों नभ में भाय, तरु अशोक तल तुम तन भाय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।379।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. आठों याम् करूँ गुणगान, हृदय विराजो प्रभु तुम आन।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।380।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. शुद्धातम का अनुभव होय, अवगम स्वातम का ही होय।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।381।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. भिन्न लखूँ जड़ चेतन भाव, स्वातम संवेदन का चाव।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।382।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नमन करें ऋषिगण जिनपाद, फिर निज आतम में रम जात।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।383।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मिली शान्ति लख श्री जिनराज, शांति सरोवर के महाराज।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।384।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. वमन किए दुर्भाव जिनेश, रमण करें निज आत्म महेश।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।385।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. शार्दूल सम हो तुम ऋषिराज, अतुल शक्ति के हो सरताज।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।386।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शार्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वर दे दो ऐसा जिनराज, सर्व विकल्पों का हो नाश।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।
आदीश्वर गाऊँ गुणगान, वंदूँ पाने शिवपुर थान।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।।387।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रहते लोक शिखर परमेश! मुझे बुला लो पास जिनेश।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।388।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षसंयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. मंत्र तंत्र नहिं आते काम, जब हो जाये जीवन शाम।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।389।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. धन्य हुआ मम जनम सु आज, समवशरण पाया जिनराज।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।390।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. काम विजेता हैं जिनदेव, करूँ सदा चरणों की सेव।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।391।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. रंक बने प्रभु राव समान, जो श्रद्धा से करता ध्यान।
जगत गुरु हो, जय वृषभेश जगत गुरु हो।। आदीश्वर...।।392।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

रात्रि भर का तम, सूर्य किरण लख, क्षण भर में नश जाता है।
तब सच्ची भक्ति, अर्घ दे व्यक्ति, भव भव अघ मिट जाता है।।

ॐ ह्रीं सकलपाप फल कष्ट निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं झ्रौं झ्रौं नमः।

सर्वारिष्ट योग-निवारक

मत्वेति नाथ! तव संस्तवनं मयेद-
मारभ्यते तनु-धियापि तव-प्रभावात्।
चेतो हरिष्यति सतां नलिनी-दलेषु,
मुक्ताफल-द्युति-मुपैति ननूद-बिन्दुः।।8।।

चौपाई

अल्प बुद्धि है फिर भी प्रभुवर, शुरू करूँ थुति तेरी सस्वर,
यदि ये सबका चित्त हरेगी, इसमें है प्रभाव तव प्रभुवर।
जल की बूँद कमलिनी पर हो, मोती जैसी लगती वह हो,
इसमें जल का नहीं प्रभाव, यह प्रभाव पत्ते का ही हो।।8।।

गुण अनन्त के धाम तुम, शक्ति अपरम्पार।
आदिनाथ भगवान को, नमहूँ बारम्बार।।

पदानुसारिप्राप्तर्द्धीन्, ज्ञात सर्व पदान् पदान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं पदानुसारिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज–चौबीसी पूजा

1. महामंत्र का जाप महान, हरता अघ सारे,
पा जाता शिवपुर थान, जो उर में धारे।
युग के प्रभु आदि जिनेश, शरण खड़े तुमरी,
प्रभु काटो क्लेश महेश, दे दो शिवनगरी।।393।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. सत्वेषु मैत्री जिनेश, मम उर में भरना।
जो सर्व मलों को धोय, बन समता झरना।। युग के...।।394।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. तिहुँ लोक तिलक जिनराज, राजें शिवपुर में।
श्रद्धा से पूजूँ आज, बैठे निज घर में।। युग के...।।395।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. नाशे सब भाव विभाव, पाय स्वभाव प्रभु।
दुःख देते हैं दुर्भाव, इनको आज तजूँ।। युग के...।।396।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. थर थर काँपे यमराज, प्रभु तव सुमिरन से।
हो जाय अमर भविराज, प्रभु पद पर्शन से।। युग के...।।397।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. तरते हैं भव्य हमेश, नाम मंत्र जपके।
प्रभुवर हो आप विशेष, भवि निज सम करते।। युग के...।।398।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. वचनावलि तुम अनुपम, गणधर ने झेली।
बनी अगम सिंधु जग में, भक्त करें केली।। युग के...।।399।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. हो संस्कृती के दूत, तुम संयम दाता।
हे परम कृपालु नाथ! भर दो सुख साता।।
युग के प्रभु आदि जिनेश, शरण खड़े तुमरी,
प्रभु काटो क्लेश महेश, दे दो शिवनगरी।।400।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "संस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. तव धार दिगम्बर रूप, समता मन भायी।
होकर शुद्धात्म स्वरूप, बने मुक्ति राही।। युग के...।।401।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. वन में पहुँचे जिननाथ, बनने को भगवन्।
वनवासी जिन कहलाय, विधि का किया हनन।। युग के...।।402।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. नंदन मरुदेवी नाथ, नंत कष्ट नाशे।
भवि चरण पड़े हैं आय, गुण नहिं लिख भाखें।। युग के...।।403।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. मनहर तुम रूप जिनेश, तन से मुक्त अहो।
नमूँ शुद्ध सिद्ध जिनदेव, अक्ष प्रत्यक्ष रहो।। युग के...।।404।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. येन स्व के ही बोध, असि मसि उपदेशा।
आश्वासित करके लोक, भवि को संबोधा।। युग के...।।405।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. दश दिश में हर्ष अपार, प्रभु ने जन्म लिया।
दश अतिशय धरें महान, शचि ने गोद लिया।। युग के...।।406।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. माणिक मोती ले थाल, देव करें अर्चा।
सब हाथ जोड़ सिर नाय, भक्ति की चर्चा।। युग के...।।407।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. रक्षण करते जिनदेव, कर्म शत्रु गण से।
इक मात्र शरण है नाथ, मैं आया दर पे।। युग के...।।408।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. आरभ्य किया गुणगान, जो नहिं पूरा है।
नहिं सक्षम है मम ज्ञान, जो कि अधूरा है।।
युग के प्रभु आदि जिनेश, शरण खड़े तुमरी,
प्रभु काटो क्लेश महेश, दे दो शिवनगरी।।409।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तेरह विधि चारित धार, यथाख्यात पाया।
कर त्रेसठ प्रकृति का नाश, जिन पद को पाया।। युग के...।।410।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तप से तप कर जिनराज, दिव्य रूप पाया।
तव महिमा का आगाज, कोई न कर पाया।। युग के...।।411।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. नुत नित नत नम्रित हैं, सुरगण चरणों में।
भक्ति का फल पाने, आतुर हैं जग में।। युग के...।।412।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. सुधि ली निज की जिनराज, विधि का हनन किया।
मैं पाने बोधि समाधि, तुमरा शरण लिया।। युग के...।।413।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. यात्रा शिवपथ की नाथ, कठिन डगर स्वामी।
मम कर लो कर दो साथ, बनूँ तुम अभिरामी।। युग के...।।414।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. पिया भक्ति सुधा प्याला, अजर अमर बनने।
सबका प्रभु रखवाला, भवि निज सम करने।। युग के...।।415।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तन पिंजर से यह देह, कब छोड़ूँ स्वामी।
वर दो वह शक्ति जिनेश, हे अन्तर्यामी!। युग के...।।416।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वर लीना प्रभू स्वभाव, तज दुर्भाव प्रभो।
जिनवर सन्निधि इक नाव, बैठूँ पार करो।। युग के...।।417।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रकटाया प्रभु स्वभाव, निज धर्मा बनकर।
मम होवे प्रकट स्वभाव, तव भक्ति रमकर।।
युग के प्रभु आदि जिनेश, शरण खड़े तुमरी,
प्रभु काटो क्लेश महेश, दे दो शिवनगरी।।418।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भाया अब तक न निजात्म, अज्ञानी ही रहा।
प्रभु नंत ज्ञान की खान, गुण अब पूज रहा।। युग के...।।419।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. कर स्वात्म तत्त्व का ज्ञान, तत्त्व प्रकाश दिया।
किया नष्ट सर्व अज्ञान, हम जिन शरण लिया।। युग के...।।420।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वात्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. चेतो चेतन अब जाग, सबको जगा रहे।
हैं धन्य प्रभु अवतार, शिव पथ दिखा रहे।। युग के...।।421।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तोरण के द्वार बँधाए, दीप सजा लीने।
नयना रहे राह निहार, जिनवर जी दीखें।। युग के...।।422।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. हरि करते जहाँ विहार, सर्व सुभिक्ष रहे।
सब भक्त करें जयकार, भक्ति अमर रहे।। युग के...।।423।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. रितु छह के सब फल फूल, साथ खिलें स्वामी।
जहाँ बैठ जायें मुनिनाथ, हे अन्तर्यामी!। युग के...।।424।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. शिष्य भूल जाये सब बात, पर यह नहिं भूले।
गुरु दें शिवपुर सौगात, पाकर नहिं फूले।। युग के...।।425।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तिमिरान्ध हटाते देव, पूर्ण ज्ञानधर हो।
हे ज्ञानादित्य जिनेन्द्र! मुझमें ज्ञान भरो।। युग के...।।426।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. सम्पूर्ण लोक के नाथ, आश्रय के दाता।
सेवक कर लें निज साथ, शिव पथ दें साता।।
युग के प्रभु आदि जिनेश, शरण खड़े तुमरी,
प्रभु काटो क्लेश महेश, दे दो शिवनगरी।।427।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. जड़तां हरता जिनदेव, प्रभुता के दायक।
कीजे प्रभु आत्म समां, शिवता के नायक।। युग के...।।428।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. नमते ऋषिगण जिनपाद, फिर निज में रमते।
महिमा प्रभु की सुरराज, मुख नहिं गा सकते।। युग के...।।429।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. लिम्पित है मम आतम, नोकर्म भाव द्रव से।
तुम प्रकट किया शुद्धात्म, निज स्वभाव वर के।। युग के...।।430।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. नीलांजन की लख मृत्यु, मन वैराग्य बढ़ा।
तन मन धन का तज नेह, पद वनवास धरा।। युग के...।।431।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. दलितों का कर उद्धार, शिवमारग दीना।
बन आत्म स्वभावी नाथ, हुए निज में लीना।। युग के...।।432।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लेकर नाना विध भाव, करूँ चरणों अर्पण।
प्रभु दूर किया दुर्भाव, पाऊँ निज का धन।। युग के...।।433।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ले" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. गुणिषु लख प्रमुदित भाव, नंत गुणी हो तुम।
पुलकित होते मम भाव, दर्श किया जब तुम।। युग के...।।434।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मुक्ति अँगना वर ली, ध्यान विशुद्ध किया।
पाया शिव शुद्ध स्वरूप, ऋजु गति गमन किया।। युग के...।।435।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तारे तुमने जिनराज, अगणित भव्य यहाँ।
मुझको भी तारो नाथ, जलनिधि डूब रहा।।
युग के प्रभु आदि जिनेश, शरण खड़े तुमरी,
प्रभु काटो क्लेश महेश, दे दो शिवनगरी।।436।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. फल पाकर होता वृक्ष, नम्रीभूत यहाँ।
हे शिवफलदायी नाथ! भवि उपदेश दिया।। युग के...।।437।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "फ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. लघुता प्रभुता का हेतु, मम लघु भाव करो।
चरणों नत होऊँ विनम्र, विमल मती वर दो।। युग के...।।438।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. द्युति लख तन की जिनराज, नयन सहस्र किये।
लख इन्द्र तृप्त नहिं होय, मुहु मुहु मुख निरखे।। युग के...।।439।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तिर जाता वह संसार, मोह मगर से भरा।
करते हैं प्रभु उद्धार, जो भक्ति में खरा।। युग के...।।440।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. मुनि नाथ पुकारें आप, सहस्रनाम लेकर।
है हर इक नाम में सार, जपो भक्ति भरकर।। युग के...।।441।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. पैनी छैनी बुधि नाथ, अन्तर भेद करे।
जो पाये यह विज्ञान, शिव फल सौख्य वरे।। युग के...।।442।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. तिरस्कार जिनराज, भव भव में पाया।
पायी तव शरणा आज, भक्ति से आया।। युग के...।।443।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. नवनिधि पायी ऋषिराज, कर्मबली को हन।
तव दर्श से हर्ष अपार, चरणों अर्पित मन।। युग के...।।444।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. नूतन छवि है पुरुदेव, भेष दिगम्बर में।
तव चिदानन्द है देश, मगन रहे उसमें।।
युग के प्रभु आदि जिनेश, शरण खड़े तुमरी,
प्रभु काटो क्लेश महेश, दे दो शिवनगरी।।445।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. दल बल देवी सब देव, क्षण भंगुर स्वामी।
जीवन पानी की बूँद, बतलाया स्वामी।। युग के...।।446।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. बिंदु को बना दो सिंधु, शरण तेरी आया।
सब मिटें कुमति के बिंदु, भाव बना लाया।। युग के...।।447।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. दुख दीने कष्ट अपार, मोह रिपु ने जिन।
हूँ द्वार खड़ा स्वामिन्, भव दुख हरिये मम।। युग के...।।448।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छन्द)

जल बिंदु पत्ती पै, लगे मोती है, सज्जन मन का हरण करे।
जिनवर की स्तुति, अर्घ की प्रस्तुति, कर प्राणी शिव सौख्य वरे।।

ॐ ह्रीं अनेक संकट संसार दुःख निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदाणुसारीणं झ्रौं झ्रौं नमः।

अभीप्सित फलदायक

आस्तां तव - स्तवन-मस्त-समस्त दोषं,
त्वत्-संकथापि जगतां दुरितानि हन्ति।
दूरे सहस्र - किरणः कुरुते प्रभैव,
पद्मा-करेषु जलजानि विकास-भाञ्जि।।9।।

चौपाई

दूर रहे थुति तेरी प्रभुवर! कथा दोष बिन हो तव प्रभुवर!
जग के सारे दुःख मिटाती, ऐसा कहते हैं सब गुरुवर!
देखो सूरज रहे दूर पर, एक किरण पड़ती कमलों पर,
खिल जाते सब कमल यहाँ पर, रवि की महिमा कितनी सुन्दर।।9।।

ऋषीन् संभिन्नश्रोत्रर्द्धीन्, सर्वशब्द प्रकाशकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं सभिन्नश्रोतृभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज–चाल शेर–हे दीनबंधु ....

1. आस्था से होवे वास्ता, हो शुद्ध आतमा।
आदि प्रभु को ध्यायें, पायें शाश्वता यहाँ।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद, जगत्पाल जी।
हम आये शरण नाथ, प्रभु करो पार जी।।449।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "आस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. तांडव किया था सुरपति, जब जन्म हुआ था।
सबने मनाया हर्ष, पाप कर्म धोया था।। हे नाभिनंद...।।450।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. तम को हराने वाला, प्रभु ज्ञान आपका।
सब गम को मिटाता है, केवलज्ञान आपका।। हे नाभिनंद...।।451।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. वन में भवन में मैं रहूँ, करूँ ध्यान आपका।
कुछ भी नहीं सहाई है, इक नाम आपका।। हे नाभिनंद...।।452।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. है अस्त मेरा जीवन, प्रशस्त करो नाथ।
वंदन चरण में है प्रभु, अब बंध हरो नाथ।। हे नाभिनंद...।।453।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. वश करके इन्द्रियों को, महामोह जीता था।
जिसने भी भक्ति आपकी की, तम तोम रीता था।। हे नाभिनंद...।।454।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. नहिं भक्ति की है शक्ति, गुरु मानतुंग सम।
बुद्धि नहीं गुण गाने की, ना देवगुरु* सम।। हे नाभिनंद...।।455।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*बृहस्पति

8. मन मोहती छवि आपकी, सुख शांति की दाता।
भवि को लगाती पार, छवि मुक्ति की दाता।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद, जगत्पाल जी।
हम आये शरण नाथ, प्रभु करो पार जी।।456।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. नहिं अस्त होता तेज प्रभु, दिव्य तेज हो।
जड़ मूल से ही नाश दिया, कर्म वेग को।। हे नाभिनंद...।।457।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. समता के पुष्प खिल रहे हैं, आत्मज्ञान में।
समकित मणि की कान्ति है, अनुपम जहान में।। हे नाभिनंद...।।458।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मद के विजेता नाथ, जीतमदन कहाते।
उसके प्रभाव का अभाव, आप में पाते।। हे नाभिनंद...।।459।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. निरस्त किये कर्म के, षड़यन्त्र आपने।
प्रभु बैठे गुफा ज्ञान की, लगे कर्म भागने।। हे नाभिनंद...।।460।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. दो नाथ शरण आज मुझे, चाह बस यही।
तप अग्नि में कर्मों को जला, पाऊँ शिव मही।। हे नाभिनंद...।।461।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. कोषं गुणों के बन गये, ऋषिराज बताते।
दोषं को नशाया प्रभु, निर्दोष कहाते।। हे नाभिनंद...।।462।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. त्वत् भक्ति से ही भक्तजनों, के मिटे संकट।
सब पाप कर्म क्षरण हों, लख रूप निष्कंटक।। हे नाभिनंद...।।463।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. संसार की असारता को, नाथ दिखाया।
सब राज भोग छोड़ के, मन वन में समाया।। हे नाभिनंद...।।464।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. करुणा निधान आपके, गुण का करूँ बखान।
बस नाथ कथा आपकी, कर देती है कल्याण।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद, जगत्पाल जी।
हम आये शरण नाथ, प्रभु करो पार जी।।465।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. थापा हृदय पे आपको, जिसने कमल बना।
वो पा गया अमरत्व को, वसुकर्म को हना।। हे नाभिनंद...।।466।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "था" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. कोऽपि नहीं शत्रु यहाँ, सब सोऽपि मित्र हैं।
इस भाव से ही नाथ यहाँ, जग प्रसिद्ध हैं।। हे नाभिनंद...।।467।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. जन्माभिषेक मेरु गिरि, पर किया जिनम्।
श्रद्धा बही जलधारा बनके, पद किया नमन्।। हे नाभिनंद...।।468।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. गति आगति से रहित हो के, हुए हैं अचल।
वृषभेश के दर्शन को, यहाँ मन रहे मचल।। हे नाभिनंद...।।469।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. जितांत हो प्रभु आप, मृत्यु के हो विजेता।
जो नाम का सुमिरन करे, हो कर्म विजेता।। हे नाभिनंद...।।470।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. दुखदायी तृषा इन्द्रियों की, शांत ना हुई।
जब स्वात्मरस का पान किया, स्वतः बुझ गई।। हे नाभिनंद...।।471।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रिपुराज आगमन से आज, हृदय खिल उठा।
ऐसे वचन मिले हृदय, श्रद्धा से भर उठा।। हे नाभिनंद...।।472।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तारा उसी को नाथ जिसने, आज पुकारा।
बड़भागी है वो प्राणी, जिसने पाया सहारा।। हे नाभिनंद...।।473।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. नित भक्तिवश मुनीश, सहस्रनाम से जपें।
पाकर सुबुद्धि को वही, शिवलोक में बसे।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद, जगत्पाल जी।
हम आये शरण नाथ, प्रभु करो पार जी।।474।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. हंता तुम्हीं हो कर्म के, अब दर्श दीजिए।
कब हंस उड़े पिंजरे से, प्रभु मार्ग दीजिए।। हे नाभिनंद...।।475।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्रारय अर्घ्यं...।

28. तिर्यक् कहा है लोक जो, उसमें विराजते।
हे आदि! भरत क्षेत्र के, भरतार भासते।। हे नाभिनंद...।।476।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. दूरं हो जाके बस गये प्रभु, सप्त राजू त्वम्।
आकर हृदय विराजो, सुनो हेलो* नाथ मम।। हे नाभिनंद...।।477।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. रे प्राणी! अब तो ध्यान, लगा ले प्रभु चरण।
जीवन में मिले दृष्टि, साध्वी खिलें चमन।। हे नाभिनंद...।।478।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. सज धज के तेरी मौत की, शहजादी आये कब?
कहते हैं प्रभु आदि जी, दीपक जलाले अब।। हे नाभिनंद...।।479।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. हर पल ही कर्म बाँधता, हँसकर यहाँ पे तू।
कहते प्रभू सँभल जा, आत्मध्यान करले तू।। हे नाभिनंद...।।480।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. सहस्रबार है नमन, प्रभु! नाशने करम।
बढ़ता चलूँ पद चिह्न, पाऊँ शाश्वता परम।। हे नाभिनंद...।।481।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. कितना है प्यारा द्वार, प्रभु आपका शुभम्।
कट जाए सारा जीवन, नाथ आपकी शरण।। हे नाभिनंद...।।482।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*पुकार

35. रम जाऊँ नाथ आपके, सम आत्म तत्त्व में।
अज्ञानी बन भटकता रहा, सर्व जगत में।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद, जगत्पाल जी।
हम आये शरण नाथ, प्रभु करो पार जी।।483।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. हितैषिण: जगत के प्रभु, कहते हैं गणनाथ।
है नाम जैसा काम वैसा, करते हो मुनिनाथ!।। हे नाभिनंद...।।484।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. कुज्ञान का विनाश किया, ज्ञान का प्रकाश।
हे धर्मसूर्य! वंदते हम, करते हैं विश्वास।। हे नाभिनंद...।।485।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रुद्ध है मम चेतना, अविरुद्ध तव स्वरूप।
दो नाथ हाथ मैं भी पाऊँ, परम पद अनूप।। हे नाभिनंद...।।486।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तेरा औ बीस पंथ ने, बाँधा है जगत को।
निर्ग्रन्थ बनूँ आप सम, त्यागूँ ममत्व को।। हे नाभिनंद...।।487।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. प्रतिभा प्रभा है आपकी, शशि भानु से भी तेज।
द्युतिमान वस्तुओं की चमक, आप से निस्तेज।। हे नाभिनंद...।।488।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. भैक्ष्य शुद्ध से हो मन, शुद्धि अरु वचन।
पाऊँ मैं भाव शुद्धि नाथ, चरण में नमन।। हे नाभिनंद...।।489।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वन खण्ड में जाकर किया, क्षय मोह मल्ल का।।
पाया अखण्ड राज्य प्रभु, लोक शिखर का।। हे नाभिनंद...।।490।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. पद्म के आसन से आदि, मोक्ष पधारे।
हम आज भक्ति भाव से, प्रभु तुमको पुकारें।। हे नाभिनंद...।।491।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. जो मानथंभ मानी का , है मान मिटाता।
इसमें प्रभाव आपका, मद स्वयं गलाता।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद, जगत्पाल जी।
हम आये शरण नाथ, प्रभु करो पार जी।।492।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. करके कषाय दु:ख महा, पाता है प्राणी।
प्रभु निष्कषाय हो तभी तो, दिव्य है वाणी।। हे नाभिनंद...।।493।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रेखा कषाय शैल मिट्टी, बालु जल कही।
इनसे रहित हो आप, पायी आठवी मही।। हे नाभिनंद...।।494।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सत्वेषु मैत्री भाव, गुणिषु प्रमोद हो।
करुणा बहे दुखी में, गलत माध्यता विभो।। हे नाभिनंद...।।495।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जग का स्वभाव जान हो, वैराग्य भाव सम।
संवेग और निर्वेद का हो, परम भाव मम।। हे नाभिनंद...।।496।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. लख कर अताम्र नयन, कहें क्रोध का अभाव।
तज कर विभाव सारे, प्रभु पाया है निज स्वभाव।। हे नाभिनंद...।।497।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. जाला बिछाया कर्मों ने, फँस रोया आत्मा।
काटूँ प्रभो ये जाल, दे दो ज्ञान साधना।। हे नाभिनंद...।।498।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. निज में निमग्न हो प्रभु, आनन्द रस दिया।
हमने भी भक्ति भाव से, प्रभु दर्श तव किया।। हे नाभिनंद...।।499।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विधि से अनेक वर्ण की, माला बनायी है।
गुरु मानतुंग जी ने, भक्ति भर के गायी है।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद, जगत्पाल जी।
हम आये शरण नाथ, प्रभु करो पार जी।।500।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. काव्य बनाया श्रेष्ठ है, मंत्र हर अक्षर।
भक्तों को अमर कर दिया, है नाम भक्तामर।। हे नाभिनंद...।।501।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. समदृष्टि थे गुरु मानतुंग, नृप पै न कुपित थे।
कर्मों का उदय जान, भक्ति में निमग्न थे।। हे नाभिनंद...।।502।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. भांति भुवन के सब पदार्थ, विमल ज्ञान में।
करता हूँ चरण वंदना, बनूँ ज्ञानवान मैं।। हे नाभिनंद...।।503।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. जिनदेव की वाणी का, जो भी पान करेगा।
भव रोग दूर कर वो, मुक्ति कांत बनेगा।। हे नाभिनंद...।।504।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

रवि रश्मि से यूँ, कमल खिलें ज्यों, अघ नशते हैं भक्ति से।
प्रभु कथा आपकी, हरे पाप की, अर्घ चढ़ाऊँ भक्ति से।।

ॐ ह्रीं सकलमनोवांछित फलदात्रे क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिण्ण सोदाराणं झ्रौं झ्रौं नमः।

उन्मत्त-कूकर विष निवारक

नात्यद्भुतं भुवन-भूषण! भूतनाथ!
भूतै-र्गुणै-र्भुवि भवन्त - मभिष्टु-वन्तः।
तुल्या भवन्ति भवतो ननु तेन किं वा,
भूत्याश्रितं य इह नात्म समं करोति।।10।।

चौपाई

हे भूषण! जो गुण को गाते, वे सब तुम जैसे बन जाते,
अचरज की यह बात नहीं, जो गाते हैं वो ही पाते।
निजको तुमको सौंप दिया है, अपना सब कुछ छोड़ दिया है,
निज सा उनको नहिं कर लेते? कर लेते कई बार किया है।।10।।

स्वयं बुद्धान् परिप्राप्तान्, मुनीन धर्म श्रुत्रैर्विना।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं स्वयंबुद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रेखता छंद (तुम्हारे दर्श बिन स्वामी)

1. ना चाहत संपदा स्वर्गी, ना भोगों की ही अभिलाषा।
जिनेश्वर दर्श मिल जायें, यही भक्तों की अभिलाषा।।505।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. नित्य द्वारा खुला जिनका, दर्श जिनका परम हितकर।
शिवालय धाम है जिनका, सुभव्यों को हैं क्षेमंकर।।506।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्यद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. भुवि के भूषणं जिनवर, प्रथम जिन हो युगादि के।
नंत गुण के हो कोषागर, नाश कर्ता हो व्याधि के।।507।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्र अर्घ्यं...।
4. तंत्र विद्या के धारी हो, मंत्र नामा पुरूदेवं।
बनाया यंत्र जीवन को, किया पुरुषार्थ जिनदेवं।।508।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. भुलाकर नाथ तुमको हम, अनंतों दुःख पाते हैं।
नंत उपकारी हो जिनवर, भक्ति से सिर झुकाते हैं।।509।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. वल्लभा मुक्ति परणी तुम, हुए शिवनारी के स्वामी।
प्रार्थना भक्त की सुन लो, जगत तीनों के अभिरामी।।510।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. नरक पशु गति से बचता वो, जो श्रद्धा से नमन करता।
धरे संयम मनुज गति में, वो पाता वृष की संपत्ता।।511।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भूतकाल में हो गये जो, औ होंगे नंत भावि में।
सम्प्रति के प्रथम जिनवर, नमन आदि के चरणों में।।512।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. षट्पदी गूँजते ज्यों हैं, महकते पुष्प लखकर के।
भ्रमर बन भक्त गुण गायें, जिनेश्वर आदि जिनवर के।।513।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. णमो वृषभेश वृषधारी, मंत्रों के नाथ अधिकारी।
परम विख्यात हो जिनवर, भविक के आप भरतारी।।514।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. भूतों के नाथ हैं जिनवर, भुवन के श्रेष्ठ आभूषण।
करें कीर्तन गुणों का हम, करो सब दूर भव दूषण।।515।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. तपो धन हो जिनेश्वर जी, तमो हर्ता ऋषीश्वर जी।
धन्य गुरु मानतुंग जी, करें भक्ति गणेश्वर जी।।516।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. नाभिनंदन जिनेश्वर तुम, ललन मरुदेवी कहलाते।
शरण में आ पड़ा जो भी, उसे भव पार करवाते।।517।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. थम गया भू गगन भगवन्, आपकी दिव्य आभा लख।
करें सुरगण प्रभु सेवा, स्वर्णमयी कमल चरणों रख।।518।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. भूतली के तिलक प्रभुवर, आप सा और नहिं धीमान्।
आपको पूजते निशदिन, सुरगुरु और सब श्रीमान्।।519।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. त्रतैर्वन्द्य हो जगत पूजित, प्राप्त शिव की है रजधानी।
सिद्ध शाश्वत विशुद्ध हो, निजातम के हो अभिरामी।।520।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रैर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. गुणों से तुम लबालब हो, दोष का लेश नहिं जिन में।
अतः मुनिगण निरखते हैं, अक्षि अनिमेष कर भव में।।521।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. ज्ञान किरणींभांति जिन, ज्ञान रश्मि के तुम कुंजर।
शरण में आ गये हैं हम , आपकी नाथ हे अघहर!।522।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. भुजंगं मोह का लिपटा, दंशने को है आतुर जो।
प्रभुवर भक्ति स्तुति से, शीघ्र निर्विष हो जाता वो।।523।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. विभु! तव ज्ञान दर्पण में, विश्व सारा झलकता है।
अगम सिंधु हो अनुयोगी, भक्त चरणों में नमता है।।524।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. भगत के वश में होते हैं, यहाँ भगवन् जगत कहता।
निभा दो रीति अब यह ही, भक्त ये चरण में नमता।।525।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. वंदना है हे वृषभेश्वर! भक्तिमय भाव मेरा हो।
नमन करता झुका कर सिर, मेरे जीवन सवेरा हो।।526।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तपन तन की मिटा दो अब, मिटा दो मन की चंचलता।
निकटता आज पायी है, दिला दो आत्म निर्भरता।।527।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. महाप्रभु हो सहारा तुम, भव्य अगणित को तारा है।
प्रणेता हो धरम तीरथ, तुमसे जीवन सितारा है।।528।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. भिन्न हैं देह से जिनवर, विदेही जिन कहाते हो।
स्व पर का ज्ञान देकर के, स्वदेही तुम बनाते हो।।529।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. तोष्टुमः वयं कहते हैं, सूरि भगवन् जी जिनसेन।
करते हैं भक्ति भावों से, गिनें नहिं दिन हो या हो रैन।।530।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्टु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. वंदना करते मुनिगण हैं, बिना द्रव ले भाव से ही।
सजाकर थाल वसु द्रव्य का, पूजते भाल नत हो भी ।।531।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. स्वतः परतः न है जिनमें, आत्मरततः है जिनवर में।
हुए जयवन्त इस जग में, विराजें सिद्ध चक्रम् में।।532।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तुम गुणों को न लिख पाऊँ, बनाऊँ भूमि सब कागज।
कल्पतरु की कलम लेकर, बनालूँ स्याही सब सागर।।533।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. कल्याणां धाम हो जिनवर, जगत कल्याण करते हो।
पाँच अरु तीन दो होते, सिद्धि शिवकान्त वरते हो।।534।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. भद्र परणामी जो होता, शीघ्र सम्यक्त्व पाता है।
हृदय में धार श्री भगवन्, तुरत सिद्धत्व पाता है।।535।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वंदना करता रुचि धरकर, वही वंदनीय होता है।
भक्तियुत पूजता जिनवर, भक्ति से पूज्य बनता है।।536।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तिमिर हर्त्ता ज्ञान कर्त्ता, सौख्य वरता जिनेश्वर जी।
पाप हर्त्ता पुण्य कर्त्ता, मोक्ष धरता महेश्वर जी।।537।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. भटकते हैं वही भव में, जो जिनवर को न ध्याते हैं।
महकते हैं वही भव में, जो हृदयांगन बिठाते हैं।।538।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. वर्द्धता कर विभावों की, व्यथाओं को बढ़ाया है।
प्रभु ने बोध देकर के, मेरा सब दुःख नशाया है।।539।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तोष को प्राप्त करते वो, चरण सामीप्य जो पाते।
मिटाकर तम ही जीवन का, ज्ञान दीपक जला जाते।।540।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. नयन से लखते जिनवर को, नमन तब हो ही जाता है।
नमा जिनदेव जो मन से, सहज सम्यक्त्व पाता है।।541।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. नुति करती नचें सुरियाँ, बाँध पाँवों में नूपुर को।
नृत्य करते नहीं थकतीं, प्रभु महिमा को लख कर वो।।542।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तेल बाती बिना दीपक, जले कैसे ये जगती पर।
आप बिन तेल बाती जल, प्रकाशित करते भू अम्बर।।543।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. नमन का भाव रखता जो, वही चरणों में झुकता है।
झुका वृषभेश चरणों में, वही ऊर्द्धत्व पाता है।।544।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. अकिंचन हो प्रभु जी तुम, न किंचित् राग है तुममें।
देह से न्यून किंचित् तुम, विराजित नाथ शिवपुर में।।545।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वातरसना के स्वामी जिन, वायु सम हो निःसंग बहते।
पाऊँ जिनवर सी निस्पृहता, भाव एकत्व धर कर के।।546।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. भूल होना स्वाभाविक है, अनंतों बार की होगी।
क्षमा के आप सागर हो, क्षमा दो सुन अरज मेरी।।547।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. त्याग के प्रभु महासागर, क्षणिक जग जान सब त्यागा।
निःसंगी बन जगत घूमे, आप सा रंग अब भाया।।548।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. श्रिया नमती चरण आकर, श्री लक्ष्मी के अधिपति हो।
चतुष्टय तुम नंत धारी, मुक्ति अंगना के प्रभु पति हो।।549।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तं जिनेशं वृषेशं त्वं, सुरेशं नृप नमन करते।
सुधीशं त्वं ऋषीशं त्वं, चरण की भक्ति हम करते।।550।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. यशः कीर्ति की चाहत में, अनेकों कार्य कर लीने।
न कीना आत्म हित मैंने, गुरु उपदेश बहु दीने।।551।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. इष्ट मेरा सुनो स्वामिन्, आप सम सिद्धवासा हो।
नहीं कुछ और मैं चाहूँ, सर्व कर्मों का नाशा हो।।552।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "इ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. हमारी चेतना स्वामिन्, चरण रज पाके हर्षित है।
भक्त को आप सम करते, ये महिमा जग में वर्णित है।।553।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. ना दें वरदान रागी बन, ना बन द्वेषी श्राप देते।
राग अरु द्वेष बिन जीते, आत्मरस को सदा पीते।।554।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. आत्म निज तत्त्व के ज्ञायक, ज्ञानभानु को विकसाते।
आपके दर्श को पाकर, भक्त कमलांश खिल जाते।।555।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. सकल वांगमय के ज्ञाता भी, सकल गुण को न गा पायें,
अगम गुण गण जिनेश्वर के, कैसे हम अब इन्हें गायें।।556।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. मंद मुस्कान जिनवर की, लगे मूरत ये मनहारी।
करातीं दर्श अन्तर्मन, जगत में एक सुखकारी।।557।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. करूँ अपर्ण हृदय कलशा, भरा कर नीर श्रद्धामय।
चरण त्रयधार देकर के, नशाऊँ रोग मैं भी त्रय।।558।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रोम पुलकित हुए भवि के, शांत छवि देख वृषभेश्वर।
नयन जलधार देकर के, धुलाए पाद परमेश्वर।।559।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तिकाली शुद्ध जिनवर जी, तत्त्व आतम तुम्हारा है।
अतः मति शुद्ध कर दीजे, शरण में आ पुकारा है।।560।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु सम हो जाते, गुण से गाते, भक्त बने भगवान यहाँ।
सच्चे मालिक तुम, पूज रचें हम, अर्घ चढ़ा मिले ज्ञान महां।।

ॐ ह्रीं अर्हज्जिन-स्मरण-जिनसम्भूताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं ह्रौं ह्रौं नमः।

गुरु को हम यहाँ पूनम का खिलता चाँद कहते हैं,
गुरु को हम यहाँ भक्तों की अंतस् जान कहते हैं।
जो अपनी जान से ज्यादा गुरु को प्यार करता हैं,
उसी को हम यहाँ जीता हुआ इंसान कहते हैं।।

आकर्षण बढ़ाने वाला

दृष्ट्वा भवन्त-मनिमेष-विलोकनीयं
नान्यत्र तोष-मुपयाति जनस्य चक्षुः।
पीत्वा पयः शशिकर-द्युति-दुग्ध-सिन्धोः,
क्षारं जलं जलनिधे-रसितुं क इच्छेत्।।11।।

चौपाई

अपलक जिसने देखा प्रभु को, उसने उर से चाहा तुमको,
अन्य कहीं संतोष न पाता, तेरे चरणों झुक-झुक जाता।
क्षीर सिंधु का जल पाया है, जिसकी स्वच्छ कांति काया है,
खारा जल उसको मिल जाये, उसको कभी नहीं भाया है।।11।।

ऋषीन् प्रत्येक बुद्धान् सन्, निमित्ताल्लब्ध संयमान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रत्येक बुद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानोदय छंद

1. दृष्टि सम्यक् किए बिना प्रभु, मुक्ति न मिलती है जग में।
नाथ बताया मार्ग आपने, भविक जनों को जीवन में।।561।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दृष्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. दृष्ट्वा ऋषिगण नाथ भवन्तम्, अहो भाव मन में लाते।
गुणवारिधि के गुण को गिनने, भक्ति सुमन बिखरा जाते।।562।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ट्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. भक्ति भाव से गुण स्तोत्र रच, हृदय के पट खोले हैं।
वृहद् वाङ्मय रचकर मुनिवर, आदि प्रभु जय बोले हैं।।563।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. वंदनीय हो गये धरा पर, वंदन करते अगणित वन्द्य।
अर्चन पूजन भक्ति भाव से, कट जाते भव-भव के बन्ध।।564।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. तज विकार भावों को स्वामिन्, रूप दिगम्बर धारा है।
जग की नश्वरता का सबको, दिग्दर्शन करवाया है।।565।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. मत्त हुआ यह प्राणी जग में, मोही मदिरा पीकर के।
मृत सा जीवन बिता रहा है, विषय भोग में जीकर के।।566।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. निमित्त पाकर जिन चरणों का, अब तो चेतो हे चेतन!
भक्ति का आश्रय लेकर के, जीवन जी लो रे चेतन!।।567।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मेरू पर्वत के सम अविचल, हृदय आपका अडिग रहा।
लीला ललित दिखा कर भी मन, छल ना पायी सुर ललना।।568।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. षट् कर्तव्य का बोध कराया, असि मसि कृषि उपदेश दिया।
कला सिखायी जीवन जीना, मरण कला को दिखा दिया।।569।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. विविध वर्ण के मुक्ता लाकर, सुन्दर हार बनाया है।
वृषभेश्वर चरणों अर्पित कर, भाक्तिक भाव सजाया है।।570।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. लोकालोक निरखते जिनवर, ना लोचन से दिखते हो।
ध्यान योग से लखते ऋषिवर, ध्यान गम्य ही रहते हो।।571।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. कर विहार आकाश मार्ग से, भव्यों को उपदेश दिया।
समवशरण की रचना कर हरि, निज का जीवन श्रेष्ठ किया।।572।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. नील अंजना को मृत लखकर, मृत्यु बोध हुआ जिनवर।
पंच मुष्टि लौंचन करके प्रभु, आत्म शोध पाया मुनिवर।।573।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. स्वयं बोध पाकर हे प्रभुवर!, हुए स्वयंभू धरती पर।
केवलज्ञान प्रकट होते ही, पंच सहस धनु थे ऊपर।।574।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. नाम आपका सर्वश्रेष्ठ है, तीर्थंकर में ज्येष्ठ प्रभो।
श्रेष्ठ रहे परमाणु जग में, जिन से तव तन रचा विभो।।575।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. अन्य न कोई अपर आप सम, सकल विश्व में हे स्वामिन्!
श्रद्धा भक्ति और समर्पण, जीवन अर्पित है स्वामिन्।।576।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. त्रय रत्नों को धारण करके, तीन लोक में पूज्य हुये।
सर्व ऋषीगण ध्यान लगाते, मुक्तिवधु के भूप हुये।।577।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तोष न पाता भक्त कहीं भी, वीतराग के दर्शन कर।
वृषभेश्वर सम वीतरागता, अन्य देव में नहिं हरि हर।।578।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. षट्कायिक जो जीव जगत में, आदि प्रभु करुणा धारी।
मोक्षमार्ग में चलते भवि ने, निज जीवन में है धारी।।579।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. मुक्ति अँगना वाट जोहती, कब आदीश्वर वर लेंगे।
आत्म ध्यान में बैठे जिनवर, कर्मों का क्षय कर लेंगे।।580।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. पल्यंकासन बैठ जिनेश्वर, योगों को था थाम दिया।
ह्रस्व पंच अक्षर के क्षण में, सिद्ध शिला आराम किया।।581।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. याद सताती नाथ आपकी, हर क्षण अब तो जीवन में।
दर्श दिखा दो एक बार तुम, दिव्य ज्योति हो जीवन में।।582।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तिर जाता वह प्राणी भव में, तीर्थंकर की शरण जिसे।
करें अर्चना हम भावों से, भव भव का अब भ्रमण मिटे।।583।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. जन्म मरण का दौर यहाँ पर, अब तक मिटा नहीं पाया।
लक्ष्य बनाया सिद्ध शिला का, बिन प्रभु कोई न पा पाया।।584।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. नमन किया नहिं अब तक मैंने, जिसमें मन ही नम जाये।
प्रभुवर चन्द्र प्रभा सम छवि तव, मन में ही अब बस जाये।।585।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. तस्य किया उद्धार जिनेश्वर, यस्य हृदय अंकित कीना।
शिव रहस्य को पाया उसने, शिवरमणी को वर लीना।।586।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. चहक उठा मन मयूर जिनवर, चंद्रकांति सी लख मुद्रा।
पक्षी चहके आत्म बाग में, दूर हुई भ्रम की तन्द्रा।।587।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. चक्षुः उन्मूलित ही रहते, जिन मूरत ना दिखे जिसे।
रवि की किरण पड़े न सरवर, पंकज सुप्त बने रहते।।588।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षुः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. पीकर जिन भक्ति का प्याला, भक्त झूमने लगते हैं।
सम्यक् पुष्प हृदय में खिलता, जन्म महकने लगते हैं।।589।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. भुक्त्वा भोगों को जीवन भर, स्वयं भोग बन गया हूँ मैं।
भाव बनाया योगों का अब, वृषभेश्वर की शरण हूँ मैं।।590।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. पतित हुआ था प्राणी अब तक, पावन उसको बना दिया।
नाथ आपने अनुरागी को, गुणानुरागी बना दिया।।591।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. यः भवि चरण कमल की अर्चा, पुलकित मन से करता है।
सः पा अतिशय वीतरागता, परम आप्त पद वरता है।।592।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. शत शत नमन करूँ हे जिनवर!, निज का घर अब पाना है।
बना रहूँ बस दास आपका, हनुमत सा बन जाना है।।593।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. शिष्य अनेकों हैं तव जग में, मम गुरु आप एक ऋषिवर।
भक्त अनेकों हैं इस जग में, भगवन् एक आप जिनवर।।594।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. कर्म वर्गणाएँ हे जिनवर!, तुमरे पास न आती हैं।
विभाव परिणति में जो रत हैं, उनकी वे हो जातीं हैं।।595।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. रहस रहित हो यह रहस्य भी, आज समझ में आया है।
अत: आपके चरणों आकर, आज बोध को पाया है।।596।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. द्युतिमान सब वस्तु जगत की, तव द्युति के आगे फीकीं।
वृषभेश्वर की चरण धूलि के, आगे कांति हैं खोतीं।।597।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तिर जाते हैं वे नर पशुगण, एक बार दर्शन करते।
समवशरण की देख छटा वे, निज आतम दर्शन करते।।598।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. दुग्ध गाय का सिंह शिशु अरु, बछड़ा शेरनी पान करे।
ऐसा अतिशय आप जिनेश्वर, बैर छोड़ सब मित्र बने।।599।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दुग्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. धर्म रहे धर्मी के अंदर, धर्मी के संघ धर्म सदा।
वैसे ही मम हृदय बसो प्रभु, भक्त चरण में रहे सदा।।600।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. सिंह कहाता वन का राजा, वन में एकल करे भ्रमण।
आदीश्वर प्रभु जग के राजा, आत्म वतन में करें रमण।।601।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. सिन्धो: करुणा के आगर प्रभु, अब मुझ पर करुणा कर दो।
भक्त खड़ा चरणों में आकर, कर्म मलों को अब हर दो।।602।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धो:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. क्षार समां जल है अधर्म यह, कोई पान न कर पाये।
जिनवर कथित धर्म क्षीरोदधि, पीने को मन ललचाये।।603।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. रं बीजाक्षर का ही चिंतन, ध्यान अग्नि प्रज्ज्वलित करे।
कर्म नशाना कहते जिनवर, बीजाक्षर हैं गुण से भरे।।604।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. जलनिधि है रत्नों का आगर, त्यों प्रभु गुण के रत्नाकर।
गुण अनंत के धारी जिनवर, हम गुण पाने को आतुर।।605।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. लम्बा है रस्ता शिवपुर का, चलने का प्रभु संबल दो।
थक कर बैठ न जाऊँ प्रभु मैं, ऐसा मुझको निज बल दो।।606।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. जपता प्रभु का नाम हृदय से, जो भी प्राणी आदीश्वर।
फहराती यशकीर्ति जगत में, चहुँ गति का मिट जाय सफर।।607।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. लगी लगन है जिन चरणों से, मुक्ति पथ को अपनाऊँ।
शक्ति अनंत भरी आतम में, निज आतम में रम जाऊँ।।608।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. निज पद का अभिलाषी जिनवर, आप निरंजन परमातम।
तुम सम ही बन जाऊँ भगवन्, पाऊँ बस निज का आतम।।609।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. धेनु जब धन को बरसाती, काम धेनु कहलाती है।
आदि प्रभु सुख को बरसाते, शंकर छवि हो जाती है।।610।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. रत्नों में प्रभु महारत्न हो, रत्नत्रय के धारी जिन।
लोक शिखर के चूड़ामणि जिन, मुक्तिवधु भरतारी जिन।।611।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. सिद्धि प्रसिद्धी को तजकर प्रभु, स्वयं शुद्धता को पाया।
वीतरागता वर ली निज में, पूर्ण बुद्धता को पाया।।612।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. तुंग उतंग पाँच सौ धनु की, स्वर्ण समां प्रभु की काया।
मुखाकृति लगती अति सुन्दर, जग में दूजी नहिं छाया।।613।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कनक कमल की रचना नभ में, दो सौ पच्चीस बिछे यहाँ।
भक्ति बढ़ाई रचकर सुरपति, नभ तव पद प्रभु रखे जहाँ।।614।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. इक्ष्वाकु वंश के नृप आदि, इक्षू रस का किया आहार।
धन्य हुए नरपति श्रेयांस जी, देव करें सब जय जयकार।।615।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "इक्ष्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. उच्छेत् किया है सब कर्मों का, विबुधार्चित हो गये विभो।
नंत गुणों के स्वामी जिनवर, जग में चर्चित हुए प्रभो।।616।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "छेत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु क्षीर समां हैं, क्षार नहीं हैं, इकटक दर्श के योग्य कहे।
श्री वीतरागी की, शरण प्राप्त की, अर्घ चढ़ा शिवसौख्य वरे।।

ॐ ह्रीं सकलतुष्टि-पुष्टिकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

मैं रहता जिस्म में हूँ पर जिस्म में जान हैं गुरुवर,
मेरी आवाज है लेकिन सुरीली तान हैं गुरुवर।
गुरु का हाथ हो सर पर तो मिल जाये उसे मंजिल,
तुम्हें गुरु हों यहाँ कुछ भी हमें भगवान है गुरुवर।।

वांछित रूप प्रदायक

यैः शान्त-राग रुचिभिः परमाणुभिस्त्वं,
निर्मापित - स्त्रिभुवनैक - ललामभूत!
तावन्त एव खलु तेऽप्यणवः पृथिव्यां,
यत्ते समान-मपरं न हि रूप-मस्ति ।।12।।

चौपाई

वीतराग परिणाम बनाया, अणु को अपने पास बुलाया,
जितने अच्छे अणु थे भू पर, उनसे निर्मित तेरी काया।
ऐसा सच गुरु ने फरमाया, तर्क बुद्धि से उसे दिखाया,
इसका यही प्रमाण दिखा है, तुम सा दूजा नहिं दिख पाया।।12।।

जो प्रभु का सुमिरन करें, पाते शिवसुख धाम।
तीर्थंकर जिनराज को, करूँ "विनम्र" प्रणाम।।

मुनीन् बोधित बुद्धाख्यान्, गुरोर्निर्वेदधारिणः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं बोधितबुद्धेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द–दोहा

1. अन्यैः आप न जानते, अज्ञ न देखें आप।
ज्ञान चक्षु के गम्य प्रभु, योगी देखें मात्र।।617।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. शान्त हुए परिणाम जब, निज से कीनी बात।
अमिट प्रभावी हे प्रभो! वंदूँ आदिनाथ।।618।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. तन जिनसे निर्मित हुआ, परमाणु अभिराम।
उतने ही थे वे जगत, अन्य न उनका धाम।।619।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. राग द्वेष में हे प्रभो! बीता काल अनंत।
इनसे नाथ बचाइए, चरण पड़ा भगवंत।।620।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. गण के ईश तुम्हीं जिनम्, भव्यों के सुखधाम।
कर्म बंध निरवारिये, चरणन् करूँ प्रणाम।।621।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. रुधिर वृषभ का धवल है, धवल रहा परिणाम।
मुझे धवलता दीजिए, निज में लूँ विश्राम।।622।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. चिन्तन जिन गुण का करूँ, निज गुण का अभिप्राय।
जीवन मंगल कर सकूँ, वंदूँ हे जिनराय!।।623।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. सुरभिः युक्त जिनदेव तन, दुरभिः न तन में लेश।
समवशरण में राजते, पूजें चरण सुरेश।।624।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भिः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. परम तत्त्व को पा लिया, तलस्पर्शी ज्ञान।
महाबोध धारी जिनम्, हरो मेरा अज्ञान।।625।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रत्नमयी निज आत्मा, आत्मबोध जयघोष।
जो धारण कर ले हृदय, पाये तब संतोष।।626।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मान यहाँ तज दो सभी, मृदुता हृदय सवाँर।
समझाया वृषभेश ने, विनय मोक्ष का द्वार।।627।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. अणु सा भक्त हूँ आपका, आप मेरु भगवान।
चरणों में रख लीजिए, करूँ आत्म कल्याण।।628।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. दुन्दुभिस्वनः नाम जिन, गुरु जिनसेन बताय।
सहस्रनाम स्तोत्र तव, गुरु बड़भागी गाँय।।629।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भिस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. त्वं निर्मित जिनसे हुए, भू पर वे परमाणु।
तुम में वे सब समा गये, बचा न इक परमाणु।।630।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. निर्भय होता वह मनुज, जिस पर जिन की छाँव।
समस्त विश्व में घूम कर, पहुँचे निज के गाँव।।631।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्निः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मानो मनमानी तजो, जिनवाणी मन लाय।
वाणी वृषभ जिनेश की, मानतुंग बतलाय।।632।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. पिच्छीधारी श्री गुरु, मानतुंग ऋषिराज।
बिगुल बजाया धर्म का, घोष किया जिनराय।।633।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राध अर्घ्यं...।

18. तस्कर चोर बना दिया, मोह लोभ ने आज।
दुम दबाकर भग गया, नमन किया जिनराज।।634।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. त्रिकालदर्शी हे प्रभु! चरण जजूँ त्रयकाल।
प्रतिपल भाव सँवारता, सजग रहे मम भाल।।635।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भुज्यमान आयु यहाँ, प्रतिपल घटती नाथ।
भरो नयन में रौशनी, कभी न छूटे साथ।।636।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वसुधा बरसायी सुधा, निज आतम रस देव।
करूँ पान वचनामृता, सुध पाऊँ निज टेव।।637।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नैगम अरु संग्रह सहित, तत्त्व बताये सात।
जीवन में जो धार ले, पाये निज का साथ।।638।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. कथा काम अरु भोग की, करी अनंतों बार।
एक विभक्ती की कथा, नहिं कीनी इक बार।।639।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. लख इकटक आदीश को, हुआ आत्म का बोध।
शोध किया निजतत्त्व का, नाश दिया प्रतिशोध।।640।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. लाल न लोचन आपके, मरुदेवी के लाल।
क्षमा भाव प्रकटात हैं, तव चरणों नत भाल।।641।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. महिमा है तीर्थेश की, सर्व हितैषी नाथ।
विघ्न हरण मंगल करन, सदा रहो मम साथ।।642।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भूमण्डल के भानु तुम, आत्म शांति के दूत।
पूजन करने आ गया, नाथ आपका पूत।।643।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तप से तपन मिटा सभी, ध्यान से कर्म विनाश।
केवलज्ञान प्रकट किया, सिद्ध शिला पर वास।।644।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तारे अगणित हैं गगन, चंद्र मात्र है एक।
अगणित भविजन भक्त हैं, आदीश्वर प्रभु एक।।645।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्ताय श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. वंदित जिनके हैं चरण, अघहर वचन सुहाय।
तमहर जिनका ज्ञान है, मुख सौरभ सुखदाय।।646।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तलस्पर्शी ज्ञान त्वम्, वीतराग विज्ञान।
महाबोध का दान प्रभु, दीजै आप महान।।647।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. एक तुम्हीं भव सिंधु से, प्रभु हो तारणहार।
आप समां कोई नहीं, कर दो भवदधि पार।।648।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ए" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. वयन नहीं लखते प्रभु, पाते भवि सम दृष्टि।
वंदन करते ही जिनम्, बदल जाती सब सृष्टि।।649।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. खण्ड मोह करके प्रभु, क्षीण मोह हुए आप।
अनंत ज्ञानी हो गये, किये घातिया नाश।।650।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. लुब्ध रहे प्राणी विषय, जो हैं अति दुखदाय।
तीव्र पुण्य संयोग है, जैन धर्म हम पाय।।651।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तेरह विधि चारित कहा, मुनी धर्म में आप।
आप कृपा वर दीजिए, धारण कर लूँ नाथ।।652।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. जाप्य जपें जिन नाम की, जो प्रभु आठों याम।
नश्वर तन को वे तजें, पा जावें शिव धाम।।653।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. णमोकार महामंत्र के, पहले पद में आप।
आप्त दशा को प्राप्त हैं, तव पद में मम माथ।।654।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. गुरवः शिवपथ पर चलें, जिनवर अनुभवते।
वीतराग शासन तले, भविक कर्म क्षयते।।655।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. पृथक हमेशा से रहे, देह जीव अरु कर्म।
नाथ उपाय बताय कर, दिया धर्म का मर्म।।656।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. थिरता मन की प्राप्त की, वो ही थिर पद पाय।
हे प्रभु! थिरता आप सम, पाऊँ निज घर जाय।।657।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. पृथिव्यां अष्टम् जिनम्, बसे जाय आदीश।
वचन अगोचर सुख वहाँ, सेवत हैं जगदीश।।658।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्यां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. यत्न मुक्ति का प्रभु किया, षट् कर्तव्य दिखाय।
खड्ग ध्यान से ही प्रभु, कर्मन दिया नशाय।।659।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तेज आपका लख प्रभु, रवि शशि भी शरमायँ।
तारों की तो बात क्या, चरणों पुंज चढ़ायँ।।660।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. समतामय जीवन परम, समयसार का सार।
जीवन में चरितार्थ कर, पाया ध्यान का सार।।661।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. माना मैंने हे प्रभु! निज शरीर को आत्म।
अतः आज तक प्राप्त न, कर पाया परमात्म।।662।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. नव प्रभात आया जगत, शरण मिली आदीश।
जब तक घट में प्राण हैं, मिले प्रभु आशीष।।663।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मन में प्रभु के वचन का, चिंतन हो चिरकाल।
प्रभु पूजा होवे सफल, मनुज देह मम भाल।।664।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. पर पदार्थ पाने यहाँ, भागा हूँ दिन रात।
अणु भी मेरा है नहीं, प्रभु समझायी बात।।665।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. रंग महल में भी प्रभु, रास न आया रंग।
जग की नश्वरता दिखी, राग लगा बेरंग।।666।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. नभ में करें विहार जब, जग जीवन के नाथ।
देव करें जयकार सब, हो गये आज सनाथ।।667।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. हित मित प्रिय जिन के वचन, जीवन को सुखदाय।
हृदयंगम प्रभु मैं करूँ, जन्म सफल हो जाय।।668।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. रूपातीत स्वरूप तव, अति सुन्दर तुम रूप।
त्याग दिया जग अथिर को, तीन लोक के भूप।।669।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. परम पुनीत है तीर्थ यह, हे गुणसागर! धाम।
तव प्रवाह में बह सकूँ, बन जाऊँ निष्काम।।670।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. मयंक में तो दाग है, आदीश्वर बेदाग।
उपमातीत मयंक से, कर लूँ मैं अनुराग।।671।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. नास्तिक आस्तिक बन गया, श्रद्धा से परिपूर्ण।
वृषभेश्वर महिमा अगम, वज्र कर्म हों चूर्ण।।672।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छन्द)

अणु सुन्दर भू पर, रचे प्रभूवर, देह आप सम और नहीं।
अनुपम तनधारी, हे त्रिपुरारि, अर्घ चढ़ा लूँ मोक्ष मही।।

ॐ ह्रीं वांछित रूपफलशक्तये क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

करोड़ों मुख से गुरुवर के गुणों को गा नहीं सकता,
जहाँ गुरुदेव पहुँचे हैं वहाँ मैं जा नहीं सकता।
गुरु ने हाथ खुश हो दिल से सर पे रख दिया जिसके,
हजारों गर्दिशों में भी वो ठोकर खा नहीं सकता।।

श्लोक नं. 13

लक्ष्मी सुख दायक

वक्त्रं क्व ते सुर - नरोरग - नेत्र - हारि,
निःशेष - निर्जित जगत् - त्रितयोपमानम्।
बिम्बं कलंक - मलिनं क्व निशाकरस्य,
यद्-वासरे भवति पाण्डु-पलाश-कल्पम्।।13।।

चौपाई

हे प्रभु! कहाँ आप मुख मण्डल, ऐसा जैसे हो पावन जल,
नर-इन्द्रों के नेत्र हरे जो, सारी उपमा जीतीं निर्मल।
दाग चन्द्रमा में होता है, दिन में रंग फीका होता है,
इसकी उपमा नहिं भाती है, यह तो फीकी पड़ जाती है।।13।।

यतीनृजुमतीन् सूक्ष्म, पदार्थानेकसंविदः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं ऋजुमतिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

1. वक्ता श्रेष्ठ कहाते हो जग में प्रभु,
खिरते मंगल वचन वाणी से हे विभु!
करता भक्ति जिनेश आपकी मैं सदा,
दीजै निजपद नाथ भूलिये नहीं कदा।।673।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वव" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. तंत्रं मंत्रं यंत्र रुप जिनवर कहे,
जो भी नयनों से लख ले वो भव तिरे। करता भक्ति...।।674।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. क्वचित् कदाचित स्यात् सहित बोले प्रभो,
कोई न वचनों का खंडन कर सके विभो। करता भक्ति...।।675।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. तेरह विधि चारित से तन भूषित किया,
गुणस्थान तेरह को प्रभु ने पा लिया। करता भक्ति...।।676।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. सुर नर किन्नर भी आकर भक्ति करें,
चिर जन्मों के सकलपाप क्षण में हरें। करता भक्ति...।।677।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. रसना इन्द्रिय के वश होकर के अलि,
पुष्प बंद होकर दी प्राणों की बलि। करता भक्ति...।।678।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. नरपति सुरपति आदि प्रभु पूजें चरण,
आय शरण में पड़े पाप करने क्षरण। करता भक्ति...।।679।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. रोमांचित हो उठता है सारा वदन,
पुण्य कथा प्रभु की जो सुनता है सु-मन।
करता भक्ति जिनेश आपकी मैं सदा,
दीजै निजपद नाथ भूलिये नहीं कदा।।680।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. रमता जोगी बहता पानी है यहाँ,
जग ने उत्तमता की श्रेणी में कहा। करता भक्ति...।।681।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. गर्हा निंदा करते अपने दोष की,
वे ही श्रेणी में आते निर्दोष की। करता भक्ति...।।682।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. नेत्रेन्द्रिय के वशी पंतगा जलमरा,
दीप शिखा पर जीवन अर्पण है करा। करता भक्ति...।।683।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. त्रय छत्रों की शोभा मन को मोहती,
तीन लोक के ईश्वरता को बोधती। करता भक्ति...।।684।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. हार बनाया भक्ति सुमन को गूँथकर,
जिनवर अग्र चढ़ाया मन से पूजकर। करता भक्ति...।।685।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. रिमझिम रिमझिम मंद सुगंधित पवन से,
मन आनंदित होता है जिन भजन से। करता भक्ति...।।686।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. निःसृत जिनवर के मुख से जो वाणी है,
भव्यों को सुख शांति मंत्र की खानि है। करता भक्ति...।।687।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. शेष न कुछ भी करने को अवशेष है,
कृतकृत्य हो पाया निज का देश है। करता भक्ति...।।688।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17 षट् दर्शन के ईश काय षट् की दया,
षट् लेश्या से रहित प्रभु उनको तजा।
करता भक्ति जिनेश आपकी मैं सदा,
दीजै निजपद नाथ भूलिये नहीं कदा।।689।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. निर्निमेष प्रभु रहते पलकें ना झपें,
अतिशय केवलज्ञान का गणधर जी कहें। करता भक्ति...।।690।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. जिनवर जग में श्रेष्ठ सर्व ही विश्व में,
आन बसो प्रभु मेरे उर के देश में। करता भक्ति...।।691।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तव गुण में तन्मयता यूँ ही बनी रहे,
धर्माराधन की विधि भी चलती रहे। करता भक्ति...।।692।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. जग जीवन के हितु आप वृषभेश जी,
कृपा आपकी हम पर रहे हमेश जी। करता भक्ति...।।693।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. जगत्पति ऋषभेश्वर चरणों वंदना,
श्रद्धा सुमन चढ़ाकर करता अर्चना। करता भक्ति...।।694।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. त्रिजगत्पति जी त्रय गुप्ति के नाथ हैं,
इन्द्र सुरेन्द्र चरण में नमते माथ हैं। करता भक्ति...।।695।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तपोनिधि हे! वर्ष सहस्री तप किया,
क्षायिक श्रेणी माँड़ घातिविधि क्षय किया। करता भक्ति...।।696।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. योग निरोध किया गिरि जब कैलाश पर,
शिवपुर पहुँचे जाय कर्म सब नाश कर। करता भक्ति...।।697।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. परमेष्ठी पद में प्रभु आप विराजते,
नाम मात्र से भवि पवित्र हो जावते।
करता भक्ति जिनेश आपकी मैं सदा,
दीजै निजपद नाथ भूलिये नहीं कदा।।698।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. माया ने इस जग को नाच नचा दिया,
आदीश्वर ने उस माया को तज दिया। करता भक्ति...।।699।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नंदनीय हैं वचन आप श्रीनंद के,
नंदनवन में केलि करें आनंद से। करता भक्ति...।।700।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. बिंब आपका स्वर्णमयी मनमोहता,
अद्भुत वीतराग ऊर्जा को छोड़ता। करता भक्ति...।।701।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. बंधन भवि के पलभर में कट जाएँगे,
जो अंतस् से जिन भक्ति कर जाएँगे। करता भक्ति...।।702।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. कविवर ऋषिवर तव महिमा को गा रहे,
फिर भी सारे गुणों को नहिं कह पा रहे।। करता भक्ति...।।703।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. लंघन करते वो जो सम्यक् नहिं वरें,
घोर तपस्या करके तन को कृश करें। करता भक्ति...।।704।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. कण्ठ मेरा तब तक न प्रभु अवरूद्ध हो,
नाम निरन्तर जपूँ आदि मन शुद्ध हो। करता भक्ति...।।705।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मन मयूर जिन दर्शन करके झूमता,
प्रभु भक्ति करने में नाहिं चूकता। करता भक्ति...।।706।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. लिम्पित जग में किंचित् नहिं प्रभु आप हो,
जैसे जल से कमल भिन्न प्रभु आप हो।
करता भक्ति जिनेश आपकी मैं सदा,
दीजै निजपद नाथ भूलिये नहीं कदा।।707।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. नंद आपके भरत ने आ भक्ति करी,
सहस्र स्तोत्रों से स्तुति मुख उच्चरी। करता भक्ति...।।708।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. पक्व किए सब कर्म दशा परिपक्व से,
उदय काल से पूर्व किए सब नष्ट वे। करता भक्ति...।।709।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. निर्झर समता सौरभ के प्रभु आप हो,
सरल सौम्य छवि लखते ही क्षय पाप हो। करता भक्ति...।।710।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. शासन आदीश्वर का बड़ा महान है,
आनन्दित हो सुख से जिए जहान है। करता भक्ति...।।711।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. कलश हृदय श्रद्धा भरके हम लाये हैं,
भक्ति का शुभ नीर चरण में चढ़ाये हैं। करता भक्ति...।।712।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. रवि शशि से भी अधिक प्रकाशी तुम जिनम्,
किरणावलियाँ करतीं भवि को उज्ज्वलम्। करता भक्ति...।।713।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. हे उपास्य! मैं लघू उपासक आपका,
कदम कदम पर साथ चाहिए नाथ का। करता भक्ति...।।714।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. यशोगान योगीजन करते नित्य हैं,
शत इन्द्रों से जो निशदिन संस्तुत्य हैं। करता भक्ति...।।715।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. द्वार जिनेश्वर हाथ जोड़कर खड़े सदा,
द्वादशांग के पाठी चरणों झुके सदा।
करता भक्ति जिनेश आपकी मैं सदा,
दीजै निजपद नाथ भूलिये नहीं कदा।।716।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. समभावी जिन मेघ समां बरसे नगर,
भेद रहित सर्वत्र जगत में इधर-उधर। करता भक्ति...।।717।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रे प्राणी! मोही निद्रा को छोड़कर,
भेदज्ञान के इस प्रबोध को प्राप्त कर। करता भक्ति...।।718।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. भवि को जिनवर ने यह बोध करा दिया,
अशुभ बोलना देख-सोचना है बुरा। करता भक्ति...।।719।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वसुन्धरा भी प्रभु आगमन से यहाँ,
पुलकित होना सबको सिखलाती जहाँ। करता भक्ति...।।720।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिरते नाथ कला तिरने की देत हैं,
जीवन सूत्र तथा निर्वाण समेत हैं। करता भक्ति...।।721।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. पांतु पाद जिनेश्वर रक्षा कीजिए,
इस बालक को चरणों में रख लीजिए। करता भक्ति...।।722।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. डुबा रही अज्ञान की आँधी भँवर में,
उपादान कमजोर करम के समर में। करता भक्ति...।।723।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "डु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. परमोत्कृष्ट विभूति जिनेश्वर पायके,
आतम भी परमातम हो शिर नायके। करता भक्ति...।।724।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. लाख एक योजन का जम्बूद्वीप है,
दक्षिण दिश में भरत क्षेत्र संदीप्त है।
करता भक्ति जिनेश आपकी मैं सदा,
दीजै निजपद नाथ भूलिये नहीं कदा।।725।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. शक्र शक्तिशः आकर तुमको पूजते,
स्वयं करें भक्ति अरु पुरजन झूमते। करता भक्ति...।।726।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. कल्पकाल की महाप्रलय झकझोरती,
हे अपूर्व दीपक! तुमसे न बोलती। करता भक्ति...।।727।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. पंक पाप में पड़ा जीव दुःख भोगता,
पा जाये सुख मुख पापों से मोड़ता। करता भक्ति...।।728।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छन्द)

उपमायें जीतीं, हैं सब फीकीं, तव अनुपम मुख नेत्र हरे।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ, महिमा गाऊँ, लक्ष्य रहा शिव सौख्य अरे।।

ॐ ह्रीं लक्ष्मीसुख-विधायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजु मदीणं झ्रौं झ्रौं नमः।

कश्मकश हैं बड़े दिलकश नज़ारे ही नज़ारे हैं,
कहीं खुशियों की लहरे हैं कोई नज़रों के मारे हैं।
समन्दर के किनारों पर बुझाते प्यास अपनी पर,
वही प्यासे नज़र आते जो दरिया के किनारे हैं।।

श्लोक नं.14

आधि-व्याधि नाशक

संपूर्ण-मण्डल-शशांक-कला कलाप,
शुभ्रा गुणास्- त्रिभुवनं तव लंघयन्ति।
ये संश्रितास्-त्रिजगदीश्वर! नाथमेकं,
कस्तान् निवारयति संचरतो-यथेष्टम्।।14।।

चौपाई

पूर्ण मास का इन्दू आये, सारी कला साथ में लाये,
तीन भुवन को रोशन करता, उज्ज्वल कान्ति यहाँ बिखराये।
प्रभु तेरा जो आश्रय पाता, उसको रोक न कोई पाता,
भ्रमण करे इच्छा अनुसार, उसका तो है प्रभु से नाता।।14।।

ऋषीन् विपुलमत्याख्यान्, मन:पर्यय विद्युतान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं विपुलमतिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द–नाराच

तर्ज–श्री पार्श्वनाथ देव सेव...

1. सम्बन्ध आपसे बना तो बंध नाश हो गया,
नाथ भव्य जीव को ये विश्वास हो गया।
श्री आदिनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा,
दीजिए सुज्ञान बोधि भूलिये नहीं कदा।।729।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. पूर्ण चन्द्र के समान आपका वदन कहा,
ज्ञान चाँदनी बना सर्व लोक भासता। श्री आदिनाथ...।।730।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पूं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. णमो णमो णमो नाथ शिव शंकरं णमो,
हरो हरो हरो नाथ लोक पीड़ा हरो। श्री आदिनाथ...।।731।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. मण्डलं रचाके आदि अर्चना कराइये,
पाप खंड करके सुख शांति पा जाइये। श्री आदिनाथ...।।732।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. डगमग डोल रही नाव तार दीजिए,
हे दया के सिन्धु! मेरा उद्धार कीजिए। श्री आदिनाथ...।।733।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ड" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. लक्ष्य नाथ एक बस आप सम बन सकूँ,
छवि वीतरागी लख आत्मरस चख सकूँ। श्री आदिनाथ...।।734।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. शमन कर डाली नाथ सब कषाय आपने,
दमन इन्द्रियों का कर पद जितेन्द्र पावने। श्री आदिनाथ...।।735।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. शांति छवि देख नाथ भावना हृदय धरूँ,
पाय कर विदेह पद आत्म शांति को वरूँ।
श्री आदिनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा,
दीजिए सुज्ञान बोधि भूलिये नहीं कदा।।736।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. कनक सम देह प्रभु सर्व मन हर रही,
बोलती नहीं कभी भी भक्त को बुला रही। श्री आदिनाथ...।।737।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. कर्मशूर धर्म शूर नाथ शूर वीर हैं,
काम क्रोध को नशाय आप क्षमा धीर हैं। श्री आदिनाथ...।।738।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. लालसा नहीं कि नाथ चक्रधर मैं बनूँ,
प्रार्थना यही कि दर्श जन्म–जन्म कर सकूँ। श्री आदिनाथ...।।739।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. कर्म करूँ भक्ति करूँ नाथ वर दीजिए,
शुद्ध आत्म बोध वरूँ हाथ धर दीजिए। श्री आदिनाथ...।।740।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. लालसा है एक प्रभु आप प्रत्यक्ष हों,
आप दर्श पायकर जन्म सारे नष्ट हों। श्री आदिनाथ...।।741।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. पलक पाँवड़े बिछा बाट जोहता प्रभु,
अश्रुधार से हृदय कमल धोवता विभु। श्री आदिनाथ...।।742।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. शुभाशुभ कर्म की बेड़ियाँ हैं पाँव में,
रोकती हैं नाथ आवने को आत्म गाँव में। श्री आदिनाथ...।।743।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. भ्रान्ति का नाश हो शांति का वास हो,
नित्य आत्म तत्त्व की प्रतीति का प्रयास हो। श्री आदिनाथ...।।744।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. गुरु मानतुंग जी ने भक्ति कीनी आपकी,
बेड़ियाँ टूट पड़ीं साँकलें भी पाप की।
श्री आदिनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा,
दीजिए सुज्ञान बोधि भूलिये नहीं कदा।।745।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तृष्णा: न शांत हुई पर द्रव्य पायकर,
तब शांत छवि देखी नाथ द्वार आयकर। श्री आदिनाथ...।।746।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. त्रि जगत ईश आप शीश चरणों धरूँ,
आदिनाथ स्तोत्र से भक्ति आपकी करूँ। श्री आदिनाथ...।।747।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भुजबल नाहिं प्रभु आत्म बल महान है,
अंतरंग शत्रुओं को नाशने प्रधान है। श्री आदिनाथ...।।748।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वरदान वीतरागी आप देत नहिं कभी,
राग द्वेष नहिं किसी से पालते कदा कभी। श्री आदिनाथ...।।749।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नंद राय नाभि के जिनंद हो जगत्पति,
कोटिश: नमन चरण में दो मुझे भी शुभमति। श्री आदिनाथ...।।750।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तत्त्वज्ञान भासते सुज्ञेय तत्त्व हो प्रभु,
आत्म तत्त्व आपका जगत प्रसिद्ध है विभु। श्री आदिनाथ...।।751।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. वसु कर्म नाश के अकर्म आप हो गये,
सुधर्म का प्रकाश कर आप सिद्ध हो गये। श्री आदिनाथ...।।752।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. लंघते हैं तव सुगुण नाथ तीनों जगत,
आपका भक्त भी निडर हो घूमता जगत। श्री आदिनाथ...।।753।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. घनघोर तम मोह छा रहा है यहाँ,
ज्ञान आदित्य बन नाथ चमके जहां।
श्री आदिनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा,
दीजिए सुज्ञान बोधि भूलिये नहीं कदा।।754।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. यंत्र तंत्र मंत्र नाथ हो स्वतंत्र आप ही,
भक्त शरण में पड़ा सु गाये मंत्र जाप ही। श्री आदिनाथ...।।755।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तिलक लोक भाल पर सज रहे हैं जिनवरम्,
त्रिलोक चूड़ामणि कहे हैं ऋषि मुनिवरम्। श्री आदिनाथ...।।756।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. येन स्वयं बोध से सुबोध को है पा लिया,
बोध मुक्ति मार्ग का जिनेन्द्र देव ने दिया। श्री आदिनाथ...।।757।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सन्मार्ग पर स्वयं चले हो भव्य साथ ले,
सहस दस नृपति संयम धरा साथ में। श्री आदिनाथ...।।758।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. श्रिया भी नाथ आपकी ही आश्रिता बनी यहाँ,
आपका समीप पा के स्वाश्रिता रही जहां। श्री आदिनाथ...।।759।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. त्रातारस्त्वमेव नाथ भव्य हृदय राजते,
ध्यान आपके से सारे कर्म रिपु नाशते। श्री आदिनाथ...।।760।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तास्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. त्रिलोक की जो संपदा है नाथ चरण चूमती,
हे आदि! प्रभु भोगिए ले भाव यही घूमती। श्री आदिनाथ...।।761।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जगत द्वन्द में फँसा हूँ नाथ मुक्ति दीजिए'
मीत एक आप ही हैं मुझे प्रीति कीजिए। श्री आदिनाथ...।।762।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. गणीन्द्र व फणीन्द्र नाथ चरण में झुकें सदा,
कोटि भानु से भी तेज दीप्ति आप में सदा।
श्री आदिनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा,
दीजिए सुज्ञान बोधि भूलिये नहीं कदा।।763।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. हे दीन बंधु! श्रीपति दया निधान आप ही,
छोड़ जग असारता है आपकी शरण गही। श्री आदिनाथ...।।764।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शाश्वता के धाम नाथ मोक्ष में विराम है,
मुझे भी शाश्वता मिले अतः चरण प्रणाम है। श्री आदिनाथ...।।765।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रहे समाये एक में अनंत सिद्ध साथ ही,
अनंत सुख का करें सुभोग नित्य वे सभी। श्री आदिनाथ...।।766।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. नाथ एक आप हैं अनेक नाम के धनी,
ऋषीश हैं पुकारते सुनाम से महागुणी। श्री आदिनाथ...।।767।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. थकत नहिं नयन प्रभु आपके ही दर्श कर,
आप ज्येष्ठ प्रथमेश मुक्तिदूत तीर्थकर। श्री आदिनाथ...।।768।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मेरु पर्वतों में उच्च मानते यहाँ मुनी,
जिनवरों में श्रेष्ठ वृषभेश की ध्वनि सुनी। श्री आदिनाथ...।।769।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. कंपता न मेरु ज्यों हवा प्रलय की चले,
मन सुमेरु आपका न अंगना हिला सके। श्री आदिनाथ...।।770।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. कस्ती है मझधार नाथ कीजिए सु पार,
झुका चरणों में माथ प्रार्थना है बार-बार। श्री आदिनाथ...।।771।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. कस्तान् समर्थ नाथ करने गुणानुवाद,
कौन पार सिंधु करे नाथ अपने ही हाथ।
श्री आदिनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा,
दीजिए सुज्ञान बोधि भूलिये नहीं कदा।।772।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. निर्गमन किया स्व में कषायों का किया वमन,
निष्कषाय आप देव खड़ा आपकी शरण। श्री आदिनाथ...।।773।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. वात वलय में रहे विराज प्रभु जिनवरम्,
मध्यलोक से मेरा करा दो प्रभु निर्गमन। श्री आदिनाथ...।।774।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. रज चरण की मिले तो मन की कलियाँ खिलें,
दिव्य ध्वनि श्रवण से ज्ञान सम्यक् मिले। श्री आदिनाथ...।।775।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. यश प्रताप आपका जिनेश फैले सर्वदा,
आपकी सुवाणी फैले जैसे बहे नर्मदा। श्री आदिनाथ...।।776।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिरती है नाथ नाव धार तेज हो जलम्,
जो आप नाम लेके बैठे नाव पार हो भवम्। श्री आदिनाथ...।।777।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. संपदा ज्ञान की हे जिनेश! प्राप्त की,
बाह्य अंत लक्ष्मी ने आपकी शरण ली। श्री आदिनाथ...।।778।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. चरण कमल पूजते जो भाग्य उनके बनें,
भव्य उन आत्मा के सर्व संकट मिटे। श्री आदिनाथ...।।779।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रम्यक् लगे वो थल चरण पड़ें आपके,
मम हृदय बसो प्रभु आन के सुदास के। श्री आदिनाथ...।।780।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. तोड़ जगत के सुबंध स्वयं से किया संबंध,
नाथ आदीश ने फैलायी जग में है सुगंध।
श्री आदिनाथ देव सेव आपकी करूँ सदा,
दीजिए सुज्ञान बोधि भूलिये नहीं कदा।।781।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. यति ऋषि मुनि गण के ध्येय तुम बने प्रभो,
ध्यान ध्येय ध्याता का ऐक्य हो तुम्हीं विभो।। श्री आदिनाथ...।।782।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. थे आप जगत में विशिष्ट शिष्टता सिखायी नाथ,
इष्ट महामोक्ष की प्रशिक्षता करायी नाथ। श्री आदिनाथ...।।783।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. इष्टं तथा अनिष्ट का भी भेद नाशिया,
पंथ मुक्ति का दिखा स्वत: ही मोक्ष पा लिया। श्री आदिनाथ...।।784।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्टं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

नहिं रोके कोई, शरण जो लेई, आदीश्वर के चरणों की।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ, गुण को गाऊँ, चाह मेरी शिव वरने की।।

ॐ ह्रीं भूतप्रेतादि-भयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं झ्रौं झ्रौं नम:।

न कोई सार दिखाता है हमें मिट्टी के ढेले में,
न कोई पार दिखता है हमें दुनियाँ के रेले में।
न जाने भूलवश किस किसको हम अपना यहाँ कहते,
हमें अब गम नज़र आता इसी दुनियाँ के मेले में।।

श्लोक नं.15

सम्मान-सौभाग्य संवर्द्धक

चित्रं-किमत्र यदि ते त्रिदशाङ्गनाभिर्,
नीतं मनागपि मनो न विकार-मार्गम्।
कल्पान्त-काल मरुता चलिताचलेन,
किं मंदराद्रि-शिखरं चलितं कदाचित्।।15।।

चौपाई

मद से देवी भर भर जायें, राग दिखाकर तुम्हें लुभायें,
अचरज क्या इसमें है भाई, हे प्रभु! तुमको डिगा न पायें।
प्रलय काल की चलें हवाएँ, अचल पहाड़ उखड़ते जायें,
लेकिन मेरु शिखर नहिं हिलती, प्रभु का मन मेरू बतलायें।।15।।

दशपूर्वधरान् विश्व, सिद्धान्ताब्धिप्रपारगान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं दशपूर्वेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अर्द्ध नरेन्द्र छंद (नगरी नगरी)

1. चित्त लगा प्रभु गुण चिंतन में, निशदिन प्रभू करें गुणगान।
पावनता की नाथ खान हैं, तीर्थंकर पद कहा महान।।785।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. तंत्रं मंत्रं कार्य करें शुभ, नाम आपका जुड़ने से।
श्रद्धा भक्ति से जाप करे जो, कार्य सिद्धि हो जपने से।।786।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. किरण आदि जिन सूर्य की जिस पर, पड़े प्रफुल्लित हो जाये।
मिथ्यातम में सोयी आत्मा, प्रभु सन्निधि से जग जाये।।787।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. महिमा देखी समवशरण में, अतिशयकारी महामहिम।
अन्य हरि हरादिक देवों की, सभा फीकी रहती हरदम।।788।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. त्रस्त हो रहे जीव जगत में, त्रास मिटा नहिं पाये हैं।
शुद्ध सिद्ध पर्याय प्राप्त हो, यही आश ले आये हैं।।789।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. यम अरु नियम का पाठ पढ़ाया, घूम घूम कर सब जग को।
परमातम का रूप दिखाया, बोध दिया भवि जीवन को।।790।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. दिग् दिगन्त में दुन्दुभि बाजे, घोष करे प्रभु आगम का।
प्रभू समागम कर लो प्यारे, नाश करो भव कानन का।।791।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. तेरी करुणा महामहिम, जग को भर देती साता से।
दिव्य ध्वनि सर्वांग खिरी जो, हमें बचाती असाता से।।792।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. त्रिभुवन के हे तिलक शिरोमणि!, त्रिनेत्रों के धारी जिन।
अक्षरशः हम ग्रहण करेंगे, प्रभुवर तेरे दिव्य वचन।।793।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. दश धर्मों का सार बताकर, दश प्राणों का किया बखान।
धर्मरूप जिन प्राण रहित हैं, अनंत सुख का करते पान।।794।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. शांत छवि मन मोहनी मूरत, बालक सम है रूप जिनम्।
निष्कषाय निर्द्वन्द जिनेश्वर, रूप आपका है अनुपम।।795।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. गर्भ विराजे मरुदेवी के, सर्वार्थसिद्धि से चय करके।
आँगन रत्न गिराये सुरगण, प्रभु भक्ति से भर करके।।796।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. नाना वस्त्राभूषण लाकर, देवी तन शृंगार करे।
भक्ति भाव से हर्षित होकर, तांडव नृत्य सौधर्म करे।।797।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. अंगनाभिर् तव मन को रिझाने, नृत्यगान नित करतीं हैं।
अचल मेरू सम मन जिनवर का, कभी रिझा नहिं सकती हैं।।798।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भिर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. नील मणी की वृहद शिला पर, समवशरण की रचना की।
जिनवर का ऐश्वर्य दिखाकर, शत इन्द्रों ने वंदना की।।799।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. तं प्रथमं वृषभेश्वर जी ने, अष्ट कर्म का किया हनन्।
अष्टम भू पर जाय विराजे, अन्तर्मन से करूँ नमन्।।800।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. महाश्रमण श्रम मुक्त हुए हैं, युक्त नंत गुण धारी हैं।
अर्घ चढ़ाकर अनर्घ पद की, मन में की तैयारी है।।801।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. नाथ आप अविचल अविकारी, अशरीरी कहलाते हो।
कर्म उपद्रव रहित हुए हो, ज्ञान सूर्य कहलाते हो।।802।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. गहरी नदियाँ नाव भँवर में, कर्मों की आँधी झकझोर।
नाम आपका एक सहारा, देख लिया मैंने चहुँओर।।803।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. पिछले पहर रात्रि में माता, मरुदेवी देखे सपने।
महापुण्य का उदय हुआ है, तीर्थंकर उर पा अपने।।804।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. ममतामई निद्रा में माँ को, सुला शची ले चली बालक।
आदीश्वर की छवि को निरखे, इन्द्र महाशय भी अपलक।।805।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नो कर्म अरु द्रव्य भाव से, रहित हुए हैं वृषभेश्वर।
कर्म नाशकर निक्कमा बन, ईषत् भू ठहरे जाकर।।806।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नर से नारायण बनने का, नाथ मार्ग है बतलाया।
शुद्ध बुद्ध पर्याय प्राप्ति के, पथ पर चलकर दिखलाया।।807।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. विमुख हो गये पर द्रव्यों से, स्व सम्मुख हो गये प्रभु।
शुद्ध आत्म ही द्रव्य परम है, उसमें ही खो गये विभु।।808।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कारागृह जब भोजराज ने, मानतुंग को डाला था।
तव भक्ति के ही प्रसाद से, टूटे बंधन ताला था।।809।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. रवि शशि भी झुक गये चरण में, अतिशय तेज पुंज धारी।
तव चरणों की करे वंदना, जो है पुण्य का अधिकारी।।810।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. मार्ग आपने जो बतलाया, सब जग से वो न्यारा है।
राग द्वेष का लेश न जिसमें, सबको जगत किनारा है।।811।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. गम्य नहीं हे अगम्य जिनवर! योगीजन अवगम करते।
ध्यान गम्य हो रहे आप ही, ध्यानी जन अनुभव करते।।812।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. कल्प काल नंतों बीते हैं, अब तक दु:ख का अंत नहीं।
इसीलिए जिन चरण पड़ा हूँ, तुम जैसा कोई संत नहीं।।813।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पांडु पत्र सम फीकी जग में, जितनी कांतिमान वस्तु।
नाथ आपके मुखमण्डल की, कांति महान नम: अस्तु।।814।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तरुण अवस्था राज्य किया फिर, वैरागी पद धार लिया।
भवि को शिव का पथ दिखलाकर, स्वकर्मों का क्षार किया।।815।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. काल अनंत भ्रमा हूँ जग में, काल लब्धि नहिं आ पायी।
आज पुण्य से मिले हो स्वामिन्, अंतकाल की सुधि आयी।।816।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. लवण सिंधु का जल है खारा, पान करे नहिं कोई पुमान्।
क्षीरोदधि के क्षीरोदक से, न्हवन हुआ था श्री भगवान।।817।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मन से प्रभु गुण चिंतन करता, बुद्धि विकास वही करता।
जो विकल्प जालों में फँसता, कभी विमुद न हो सकता।।818।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रुद्ध न होता प्रभाव जिसका, बादल काले आ जायें।
ऐसे दिव्य सूर्य जिनवर की, भक्ति प्रकाशित कर जायें।।819।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तारण तरण जहाज जिनेश्वर, स्वयं तिरें पर को तारें।
उनका जीवन होता उज्ज्वल, जो जिन गुण को उर धारें।।820।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. चरण कमल का ध्यान करूँ नित, हृदय कमल में पधराऊँ।
हृदयासन पर राजो जिनवर, क्षय कर्मों का कर जाऊँ।।821।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. लिखने की जो कला सिखाई, पुत्री ब्राह्मी को जिनवर।
लिपि ब्राह्मी जग प्रसिद्ध है, मुझे ब्राह्मी कर दो प्रभुवर।।822।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. तारे नभ में टिम टिम करते, सूर्य प्रकाशित जगत करे।
हम बालक तारे सम जिनवर, आप दिवाकर तम को हरें।।823।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. चक्र चलाया शुक्ल ध्यान का, कर्म चक्र का हनन् किया।
सिद्धचक्र में जाय विराजे, काल चक्र ने नमन् किया।।824।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लेकर आये पुष्प चरण में, श्रद्धा से भरकर जिनवर।
नर भव सफल करें तव चरणों, जीवन चरणों अर्पित कर।।825।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ले" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नहिं रोगों का नहिं भोगों का, नहिं व्याधि का धाम जिनम्।
बंध मोक्ष अरु राग द्वेष नहिं, नमूँ चिदानन्दमयी शुभम्।।826।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. किंचित् भी नहिं परिग्रह जिनके, धर्म आकिंचन् के धारी।
किंचित् न्यून देह से शोभित, वर ली प्रभु ने शिवनारी।।827।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मंगल में उत्तम मंगल हैं, प्रथम जिनेश्वर वृषभेश्वर!।
मंगलमय हो मेरा जीवन, अतः नमूँ हे परमेश्वर!।।828।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. दल बल देवी खड़े रहें सब, जब आता यम का वह दूत।
शरण आपकी आन पड़े जो, मृत्युञ्जयी होता वह भूप।।829।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रागी ही बनता वैरागी, तव चरणों में आकर के।
नीर क्षीर सम हो जाता है, क्षीर समागम पा करके।।830।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. ज्ञानाद्रि निर्झर से निकली, द्वादशांग वाणी गंगा।
पान किया जिसने ज्ञानामृत, हुआ वही आतम चंगा।।831।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. शिथिल हुई कर्मों की बेड़ियाँ, कर्म और नो कर्मों की।
बिन अस्त्रों शस्त्रों के टूटीं, मानतुंग श्री गुरुवर की।।832।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. खम्मामि सव्व जीवाणं का, पाठ द्वेष का क्षरण करे।
क्षमा प्रेम हो सब जीवों से, आदीश्वर जी वचन कहें।।833।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. रंग मंच संसार सर्वदा, शृंगारों से भरा हुआ।
अध्यातम शृंगार सजाया, परम शांति से सजा हुआ।।834।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. चतुरंगुल कमलों के ऊपर, गगन गमन करते वृषभेश।
नभ में जय जयकार करें सुर, हर्ष भाव से नमें गणेश।।835।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. लिप्त हुआ मैं कर्म मलों से, प्रभु निर्लिप्त कमल सम हैं।
जल में रहूँ न जल हो मुझमें, बने यहाँ मम जीवन है।।836।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. तंत्र मेरा परतंत्र बना है, स्वतंत्रता का भान नहीं।
आतम द्रह के राजहंस प्रभु, बंध छुड़ा दो अभी यहीं।।837।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. करुणा सागर हे गुण आगर! करुणा की वर्षा कर दो।
अवगाहन हो सुखसागर में, आनंदामृत से भर दो।।838।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. दाता प्राण प्रदाता जिनवर, नीर मीन को हैं जग में।
मुनियों के अध्यात्म जगत में, क्षीर नीर सम जीवन में।।839।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. चित् चैतन्य स्वरूपी जिनवर, चमत्कारी श्री आदीश्वर।
तरुण तपस्वी विमल मनस्वी, अमल बना दो वृषभेश्वर।।840।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चित्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

वह प्रलयंकारी, पवन दुःखारी, मेरु शिखर न हिला पाती।
सुर ललना चंचल, अडिग प्रभु मन, श्रद्धा अर्घ चढ़ा जाती।।

ॐ ह्रीं मेरुवन्मनोबलकरणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वियाणं ह्रौं ह्रौं नमः।

हमें सौ काम तजकर के यहाँ स्नान करना है,
हजारों काम से पहिले हमें भोजन करना है।
हो लाखों काम पर पहिले गुरु आज्ञा यहाँ पालो,
करोड़ों काम तज करके प्रभु गुणगान करना है।।

श्लोक नं.16

सर्व विजय दायक

निर्धूम - वर्ति - रपवर्जित- तैल - पूरः,
कृत्स्नं जगत्-त्रयमिदं प्रकटी करोषि।
गम्यो न जातु मरुतां चलिताचलानां,
दीपोऽपरस्त्व-मसिनाथ! जगत् प्रकाशः।।16।।

चौपाई

हे प्रभु! तुझमें धूम न बाती, तेल बिना है जलती जाती,
सर्व लोक को करे प्रकाश, ऐसी ज्योति ज्ञान से आती।
पेड़ पहाड़ उखड़ते जाएँ, ऐसी चलें प्रचण्ड हवाएँ,
इसमें तेरी ज्योति न बुझती, तुम अपूर्व दीपक बतलाए।।16।।

धूम-तेल-बाती बिना, प्रभुवर ज्योति महान।
ऋषभदेव भगवान को, करूँ "विनम्र" प्रणाम।।

चतुर्दश महापूर्वान्, धरान् विद्याविशारदान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं चतुर्दशपूर्वेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीतिका छन्द (नव देवता पूजन)

1. निर्धूम ध्यानाग्नि में जिनवर, कर्म ईंधन दह दिया।
वसु कर्म मल का क्षरण करके, शिव महल में पग दिया।।
प्रथमेश श्री वृषभेश की, जो भक्ति से अर्चा करें।
जग दंद फंद छुड़ाय कर, आनंद मंगल विस्तरें।।841।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निर्" बीजाक्षर संयुक्त श्रीवृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं ...।

2. धूप घट में धूप खेकर, कर्म धूप उड़ाऊँ मैं।
जग का विभव कुछ भी न चाहूँ, आप सम बन जाऊँ मैं।।प्रथमेश...।।842।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. मयंक में है कलंक किंतु, जिन मयंक अकलंक है।
अनुराग हो मम जिनधरम में, जो सदा निकलंक है।। प्रथमेश...।।843।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. वर्ति बिन अरु सर्पि बिन, करते प्रकाशित लोक को।
हे नाथ! आरति आपकी कर, जाऊँ क्षय निज मोह को।। प्रथमेश...।।844।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. तिर्यंच नारक भव कभी, जिन भक्त को मिलता नहीं।
देव अरु नर जन्म भवि को, प्राप्त होता हर कहीं।। प्रथमेश...।।845।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. रसना प्रभु का नाम रटती, पलक नहिं झपकायीं हैं।
कब आओगे प्रभु दर्श देने, अक्षि* मम पथरायीं हैं।। प्रथमेश...।।846।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. पल्यंक आसन से जिनेश्वर, बैठ शिवपुर पा लिया।
अन अंत गुण का हे ऋषीश्वर! साम्राज्य भी पा लिया।। प्रथमेश...।।847।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

* आँखें

8. वर्चस्व त्रिभुवन में जिनेश्वर, आपका भारी रहा।
अस्तित्व पाने निज महेश्वर, आपकी शरणा गहा।।
प्रथमेश श्री वृषभेश की, जो भक्ति से अर्चा करें।
जग दंद फंद छुड़ाय कर, आनंद मंगल विस्तरें।।848।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. जित हर्ष मद अरु द्वेष को, जीता कषायों को प्रभु।
जीता जनम अरु मरण को, अमरत्व पाया हे विभु!। प्रथमेश...।।849।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तत्त्व द्रव्यों को बताया, नाथ गुण पर्याय को।
श्रोता श्रवण कर ग्रहण करते, प्राप्त हों सद्ज्ञान को।। प्रथमेश...।।850।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. तैयार भक्ति को हुआ, मुक्ति का लेकर भाव मैं।
हूँ भक्त नन्हा सा तुम्हारा, बिठा लो निज छाँव में।। प्रथमेश...।।851।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. लखता जिनेश्वर स्वप्न में, लिखता तभी निज कलम से।
इक बार सम्यक् दर्श दो प्रभु, छूटूँ मैं भव कदम* से।। प्रथमेश...।।852।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. पूर्ण होवे स्वप्न मम, जब नाथ का हो दर्श सम।
सब रोग मोह रहित बनूँ, हे नाथ! हर दो भव भ्रमण।। प्रथमेश...।।853।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. किंकरः मैं शंकरः प्रभु, शम का वर अब दीजिए।
सब क्लेश कल्मष को हटाऊँ, शक्ति से भर दीजिए।। प्रथमेश...।।854।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. कृत् कारि अरु अनुमोदना का, जीव फल पाते यहाँ।
इन तीनों का प्रभु त्याग करके, हो गये कृतकृत्य जहां।। प्रथमेश...।।856।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कृत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. कृत्स्नं ये कल्मष नाश करके, आप अविनश्वर हुए।
मैं भी न भवगामी बनूँ, पथगामी नयनों के हुए।। प्रथमेश...।।855।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

* कीचड़

17. जगदीश तुम जिन श्रेष्ठ जिनवर, ऋषीगण कहते यहाँ।
सर्वोत्कृष्ट त्रिलोक पूजित, पुरुष तिरेसठ में महां।।
प्रथमेश श्री वृषभेश की, जो भक्ति से अर्चा करें।
जग दंद फंद छुड़ाय कर, आनंद मंगल विस्तरें।।857।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. गति लाख चौरासी भटकता, जगत्पाल से दूर जो।
पंचम गति से भेंट करता, चरण रज से पूर जो।। प्रथमेश...।।858।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. त्रय छत्र की सुषमा मनोहर, त्रय जगत्पति बोधती।
त्रय इन्दु सम गुण सिंधु ऊपर, छाया कर मन मोहती।। प्रथमेश...।।859।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. यमराज भी डरता यमीश्वर, के निकट आता नहीं।
जो शरण ले जगपाल की, उससे भी वो मिलता नहीं।। प्रथमेश...।।860।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मिलता समय का सार जीवन, भक्ति जो करता जिनम्।
मुनि मानतुंग ने पा लिया है, भक्ति का वह फल परम्।। प्रथमेश...।।861।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. दंभी बना सारा जगत, चहुँ ओर बस इक स्वार्थ है।
मुझको बिठा लो प्रभु चरण में, जहाँ बस परमार्थ है।। प्रथमेश...।।862।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. प्रण है हमारा नाथ बस इक, प्राण जायें ही भले।
पथ जो दिखाया आपने, निर्बाध उस पर ही चलें।। प्रथमेश...।।863।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. कर्तापने का भाव दुख है, सुख यहाँ कर्तव्य में।
मैं पूजता हूँ दुखहरण को, नाथ धर दो सुक्ख में।। प्रथमेश...।।864।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. टीका समां प्रभु सोहते, त्रैलोक्य के सिर मौर पर।
हे ज्ञेय! ज्ञायक! मोक्षनायक! दृष्टि कीजै गौर कर।। प्रथमेश...।।865।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "टी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. कर्माष्ट को प्रभु नाश कीना, अष्ट गुण प्रकटाए हो।
हो नंत गुण के ईश प्रभु, जगनामी तुम कहलाए हो।।
प्रथमेश श्री वृषभेश की, जो भक्ति से अर्चा करें।
जग दंद फंद छुड़ाय कर, आनंद मंगल विस्तरें।।866।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रोम रोम हुआ है पुलकित, आदि जिनवर आए हैं।
भवचक्र मिट जाए भविक का, जगत पूज्य बताए हैं।। प्रथमेश...।।867।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. कृषि और असि मसि आदि का, उपदेश दीना आदि ने।
पहले करो शुभ कर्म फिर, जीवन सफल कर बाद में।। प्रथमेश...।।868।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. गणना सिखाई सुन्दरी को, ब्राह्मी को अक्षर लिपी।
ब्राह्मी लिपी के नाम से, जग में प्रसिद्ध हुई लिपी।। प्रथमेश...।।869।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. जन्म्यो मर्‌यो बहुबार जग में, दुःख पाये अति घने।
प्रभु आप अव्याबाध गुण से, परम आनंदी भये।। प्रथमेश...।।870।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नयना बहुत अकुलाए हैं, प्रभु दर्श पाने आपके।
आँसू बहें प्रक्षाल करने, पाद पंकज आपके।। प्रथमेश...।।871।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. जागा प्रभु जो बोध अब है, सुप्त न हो चेतना।
ऐसा प्रभु वरदान मागूँ, गिरते से मुझे रोकना।। प्रथमेश...।।872।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तुष मास भिन्न समां कहे, तन मेरा अरु चेतन प्रभो।
इनको पृथक कर गहूँ निज को, शाश्वता पाने विभो।। प्रथमेश...।।873।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मलयागिरि का चंदनं, तन का मिटाता ताप है।
संसार ताप मिटाए भवि का, आदि प्रभु का जाप है।। प्रथमेश...।।874।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रुधिर बहता देह में, कर्मास्रवों से हे विभो!
निर आस्रवी तुम सा बनूँ, कुछ यत्न ऐसा हो प्रभो।।
प्रथमेश श्री वृषभेश की, जो भक्ति से अर्चा करें।
जग दंद फंद छुड़ाय कर, आनंद मंगल विस्तरें।।875।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तांता लगा है तांत्रिकों का, तंत्र सब जग पर करें।
सम्मोहिनी मूरत प्रभु की, मन सभी का वश करें।। प्रथमेश...।।876।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. चरितार्थ जीवन कर दिखाया, भव्य को चारित्र ले।
प्रभु मोक्ष मग में पग दिया जब, सिद्ध प्रभु का नाम ले।। प्रथमेश...।।877।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. लिपिबद्ध तुमको कर सके न, कोई भी शब्दांश से।
प्रभु आपके गुण गम्य होते, नाथ केवल ध्यान से।। प्रथमेश...।।878।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. ताले खुले श्लोक रूपी, मंत्र से ध्याया तुम्हें।
श्री मानतुंग अबंध हो गये, भक्ति से गाया तुम्हें।। प्रथमेश...।।879।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. चकचूर कर डाला प्रभु ने, कर्म रूपी शैल को।
उस ही समय निर्माण कीनी, धर्म रूपी गैल को।। प्रथमेश...।।880।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लाया प्रभुवर भक्त कलियाँ, भाव की सुंदर सजा।
भव जलधि से तारो जिनेश्वर, भक्ति का आये मजा।। प्रथमेश...।।881।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. साधुनां दर्शन ही पुण्यं, साधु चलता तीर्थ है।
पुण्य फल दे उदय में ही, सद्य साधू मीत है।। प्रथमेश...।।882।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. दीपक जलाया आपने प्रभु, मोह तम को नाश कर।
मोह अँधियारा मिटा दो, ज्योति से मम जोड़कर।। प्रथमेश...।।883।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. पोषण किया भवि जीव का, शोषण भवोदधि कर दिया।
हे नाथ! पोषण करूँ चेतन, आपको धरिके हिया।।
प्रथमेश श्री वृषभेश की, जो भक्ति से अर्चा करें।
जग दंद फंद छुड़ाय कर, आनंद मंगल विस्तरें।।884।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. दीपोऽपरः हो नाथ जग में, तेल बाती बिन जलें।
शुद्धात्म के संवाहकेश्वर, आपके चरणों पलें।। प्रथमेश...।।885।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽप" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. जिनने निरस्त किया सभा को, भावना चिंतन किया।
वैराग्य उमड़ा आदि जिन, लोकान्तिकः अनुमोदिया।।प्रथमेश...।।886।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. समत्व धारण कर जिनेश्वर, तज दिया है ममत्व को।
समभाव मैं भी प्राप्त कर लूँ, पाय निज के तत्त्व को।। प्रथमेश...।।887।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मरुदेवी नंदन चरण वंदन, भक्ति से अभिनंदनं।
हे नाथ! हो ऐसा प्रबंधन, नशें भव के फंदनम्।। प्रथमेश...।।888।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. सिद्धान्त तव प्यारा जिनेश्वर, नय प्रमाण विवेचना।
सिद्धि दिलाता है यहाँ पर, कर स्वयं अवलोकना।। प्रथमेश...।।889।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नाभि तनुज नाभेय जिनवर, पितु भरत के हो तुम्हीं।
जो मदन चक्री प्रथम गणधर, के पिता प्रभु हो तुम्हीं।। प्रथमेश...।।890।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. थम गई सृष्टि हुई वृष्टि, नमी दृष्टि जगत की।
जन्मे जिनेश्वर हे वृषेश्वर! मेरु गिर अभिषिक्त जी।। प्रथमेश...।।891।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. जगदीश कहते आपको, नमते चरण में माथ को।
हे सहज! सरल सुसौम्य जिनवर, काटते हो पाप को।। प्रथमेश...।।892।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. गत्यानुपूर्वी से रहित थी, ऋजुगति प्रभु आपकी।
पंचम गति में जा बिठाया, शिवावस्था आपकी।।
प्रथमेश श्री वृषभेश की, जो भक्ति से अर्चा करें।
जग दंद फंद छुड़ाय कर, आनंद मंगल विस्तरें।।893।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. प्रत्यक्ष दर्शी पूर्ण ज्ञानी, निरभिमानी देव की।
हम करें नित अर्चन सुवंदन, नाथ श्री वृषभेश की।। प्रथमेश...।।894।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. काल के भी गाल को, प्रभु नष्ट कीना आपने।
निज ध्यान भाल से भेद दीना, कालजयी को आपने।। प्रथमेश...।।895।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. शतशः नमन है प्रभु हमारा, नाम हमको नाव है।
प्रभु चरण में मन रमण है, जगती के तट ये भाव है।। प्रथमेश...।।896।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

नहिं धूम रु बाती, न हवा बुझाती, अनुपम दीप जगत्रय में।
तिहुँ लोक प्रकाशें, जगत विकासें, अर्घ चढ़ाऊँ प्रभु पद में।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्य-लोकवशंकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वियाणं ह्रौं ह्रौं नमः।

अगर हो पुण्य सत्ता में तो मिलते है गुरु दर्शन,
हो गर पुरुषार्थ हाथों में तो मन खुद ही बने दर्पण।
उसी पर हो प्रभु आशीष गुरुओं की कृपा यारो,
तहेदिल से जो खुद दिल को समर्पण से करे अर्पण।।

श्लोक नं.17

सर्व रोग निरोधक

नास्तं कदाचि-दुपयासि न राहु-गम्यः,
स्पष्टी-करोषि सहसा युगपज्जगन्ति।
नाम्भोधरोदर - निरुद्ध महा - प्रभावः,
सूर्यातिशायि-महिमासि मुनीन्द्र! लोके।।17।।

चौपाई

राहु से तुम ग्रस्त न होते, और कहीं भी अस्त न होते,
युगपत् प्रकट करें इस जग को, फिर भी इक क्षण पस्त न होते।
सूरज को बादल ढक जाये, राहू जिस पर ग्रहण बनाये,
प्रभु पर कोई न हो बाधाएँ, ऐसी महिमा प्रभु की गाएँ।।17।।

अष्ट महानिमित्तांग, कुशलान् सन्मुनीश्वरान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं अष्टांगनिमित्त कुशलेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज–सोलहकारण पूजन

1. नास्तिकता को जो तज जाय, सम्यग्दर्शन वो भवि पाय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।
भक्तामर स्तोत्र महान जो ध्याये पाये शिवधाम।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।897।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नास्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. तंत्र मंत्र कुछ काम न आय, कोई मरण से नहिं बच पाय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।898।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. कनक कामिनी लुभा न पाय, जिनवर की जो छवि लख जाय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।899।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. दाता तुमसा कोई न और, जिनवर के बिन कहीं न ठौर।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।900।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. चिंतामणि हो जिनवर आप, चिंतन से कटते सब पाप।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।901।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. दुर्गति से वो बचता नाथ, जिसके सिर पर है तव हाथ।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।902।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. पल्यंकासन से जिनदेव, मुक्ति पाकर हुए अदेह।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।903।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. याचक दर पर जो आ जाय, झोली अपनी भर कर जाय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।
भक्तामर स्तोत्र महान जो ध्याये पाये शिवधाम।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।904।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. सिद्ध शिला पर राजित आप, नाम जपत ही कटते पाप।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।905।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. नव जीवन उसको मिल जाय, जो आदीश्वर शरण में आय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।906।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. राजर्षि ब्रह्मऋषि कहाय, निज आतम में तिष्ठे आय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।907।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. हुआ अचानक अचरज आज, जिनवर आये स्वप्न में आज।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।908।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. गम्य न राहु से प्रभु होय, तीनों जगत प्रकाशित सोह।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।909।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. यः स्मरेत् जिनेश्वर जोय, मिटे दुःख पावे वह सौख्य।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...910।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. स्पष्ट झलकते सभी पदार्थ, शोभित केवलज्ञान के साथ।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।911।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. संतुष्टी होती प्रभु जोय*, और न कोई सुहाये मोय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।912।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्टी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*देख

17. कर्म भूमि से पहले नाथ, जन्मे शिवपुर पहुँचे नाथ।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।
भक्तामर स्तोत्र महान जो ध्याये पाये शिवधाम।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।913।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. रोग राग से मुक्ति पाय, जिन वचनामृत पान कराय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।914।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. हर्षित हो जिन दर्शन पाय, पाप मैल को वो धुलवाय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।915।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. सहज सौम्य तव छवि जिनराय, रोम रोम पुलकित कर जाय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।916।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. हजार नेत्र देवेन्द्र बनाय, अपलक प्रभु को देखत जाय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।917।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. साहस संबल शक्ति होय, हृदय जिनेश्वर भक्ति जोय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।918।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. युग आदि में प्रथम जिनेश, मुक्ति पट खोले परमेश।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।919।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. गन्धोदक की वृष्टि महान, समवशरण की बनती शान।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।920।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. पज्जुवास करता जिनदेव, जनम जनम करूँ चरणन् सेव।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।921।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पज्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. जग में जीने की नहिं आश, महाजलोदर भी हो नाश।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।
भक्तामर स्तोत्र महान जो ध्याये पाये शिवधाम।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।922।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. गंध सुगंधित पवन सुहाय, जिनवर के चरणा छू आय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।923।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तिरता जलनिधि में जलयान, श्रद्धा से गाये गुणगान।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।924।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. भव्यानां करते कल्याण, कल्याणों के जिनवर धाम।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।925।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. भोग और उपभोग को त्याग, जिनवर धारा परम विराग।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।926।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. धरती नववधु के सम सोह, जब विहार जिनवर का होय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।927।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. रोग शोक नहिं भाव विकार, जिनवर हैं जीवन आधार।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।928।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दर्श आदि का अति सुखकार, जो करता होता भवपार।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।929।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रमता जोगी बहता पानी, कहती आदीश्वर की वाणी।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।930।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. निराबाध निर्बन्ध स्वरूप, वृषभेश्वर त्रिभुवन के भूप।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।
भक्तामर स्तोत्र महान जो ध्याये पाये शिवधाम।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।931।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. रुद्ध हुआ है कर्म का बंध, आदि जब बैठे निर्द्वन्द्व।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।932।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. सिद्ध नमः करके उच्चार, पंच मुष्टि से केश उखाड़।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।933।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मनवांछित दाता जिनराज, नाम जपे हो पूरण काज।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।934।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. हा मा धिक् का कर उच्चार, दण्ड व्यवस्था दई संभार।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।935।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. प्रकट किया प्रभु केवलज्ञान, नशे घातिया कर्म महान।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।936।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. भाव पंचयुत हैं जिनराज, अष्टम भू के तुम सरताज।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।937।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वः हम सबको देना धर्म, कर्म काट सब पायें शर्म।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।938।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. सूर्य समां प्रभु दीप्ति महान, करते सब जग का कल्याण।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।939।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. यामिनि* सम जो मोहान्धकार, दर्शन कर हो क्षण में क्षार।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।
भक्तामर स्तोत्र महान जो ध्याये पाये शिवधाम।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।940।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तिरते और तिराते नाथ, भवि जीवों के हो पितुमात।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।941।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. शासन जिनवर का सुखदाय, सब जग इसकी महिमा गाय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।942।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. अतिशयधारी जिनवर आप, चौंतिस अतिशय हरते ताप।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।943।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मदन विजेता प्रभुवर आप, कामदेव है दास सु आप।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।944।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. हिमगिरि पर किया ध्यान जिनेश, वसु कर्मों का नाम न लेश।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।945।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. माया काया को दुत्कार, शिवरमणी के हुए भरतार।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।946।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सिद्ध शिला जिनका है धाम, उन जिनवर को करूँ प्रणाम।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।947।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. मुकुट मणि चमके अधिकाय, सुरगण नत हो चरणों आय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।948।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*रात्रि

53. नीलांजना का मरण सुजान, उर उपजा वैराग्य महान।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।
भक्तामर स्तोत्र महान जो ध्याये पाये शिवधाम।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।।949।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र जिनेन्द्र, तव चरणा पूजें धरणेन्द्र।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।950।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. लोकालोक विलोकित आप, फिर भी नहिं उपजे संताप।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।951।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. केवलज्ञान सूर्य प्रकटाय, जगत चराचर अनुभव आय।
परम गुरु हो, मानतुंग सम भक्ति हो।। भक्तामर स्तोत्र...।।952।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "के" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

जिनदेव अस्त नहिं, राहु ग्रसे नहिं, बादल भी नहिं ढक पायें।
तिहुँ लोक प्रकाशें, सूर्य समां हैं! अर्घ चढ़ा हम झुक जायें।।

ॐ ह्रीं पापान्धकार-निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग महाणिमित्त कुसलाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

करम अच्छा अगर अपना तो किश्मत खुद बदलती है,
तभी दुनियाँ की ये दौलत हमारे संग चलती है।
गुरु को खुश रखें हर दम तमन्ना है दिले क्योंकि,
हमारी हर खुशी यारों गुरु चरणों में पलती है।।

श्लोक नं.18

शत्रु-सैन्य स्तम्भक

नित्योदयं दलित - मोह - महान्धकारं,
गम्यं न राहु-वदनस्य न वारिदानाम्।
विभ्राजते तव मुखाब्ज-मनल्प-कांति,
विद्योतयज्-जग-दपूर्व-शशांक-बिम्बम्।।18।।

चौपाई

मोह महातम करे विनाश, उदित रहे नित करे प्रकाश,
बादल राहु नहीं ग्रस पाते, प्रभुवर की यह महिमा गाते।
अद्वितीय शशि सा मुख जग में, कांति अनंत सुशोभित जग में,
प्रकट करें संसार यहाँ पर, ऐसा ज्ञान प्रभु का मग में।।18।।

विक्रियार्द्धिपरिप्राप्तान्, संयतान् सुरपूजितान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं विक्रियार्द्धिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सखी छन्द

1. निर्द्वन्द्व हो गये स्वामी, निज आत्म सुपथ अनुगामी।
जा लोक शिखर पर राजे, हम भक्ति करें महाराजे।।953।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. नित्योदित रहते जिनवर, रोके प्रभाव न जलधर।
निज साम्य भाव में रहकर, द्युति है रवि शशि से बढ़कर।।954।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. दमकें प्रभु सूर्य से बढ़कर, शीतलता देते शशिकर।
जिन सौम्य छवि अति प्यारी, हम सब चरणों बलिहारी।।955।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. हृदयंगम जो जिन कीना, वो ही भवि परम प्रवीणा।
वैराग्य हृदय बढ़ जाये, फिर शिवमग कदम बढ़ाये।।956।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. दश धर्म आत्म के लक्षण, जिनदेव बखाने प्रवचन।
जो भी इनको अपनाये, वो निश्चित शिवपुर पाये।।957।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. लिम्पित होते न तन से, ज्यों कमल लिप्त न जल से।
हो निर्विकार अभिरामी, हम करते चरण नमामि।।958।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. तन की परवाह नहीं है, मन में कोई आश नहीं है।
हे निर्विकल्प! गुणधारी, है नितप्रति धोक हमारी।।959।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मोही तो कर्म उपाये, निर्मोही बंध छुड़ाये।
हे क्षीणमोह जिनराज! बने सर्व जगत सरताज।।960।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. हर्ता दु:ख के प्रभु आप, कर्ता सुख के जिनराज।
हम आये शरण तुम्हारी, प्रभु पूर्ण करो मम काज।।961।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. मद को निर्मद करके प्रभु, बने आप जगत के हो विभु।
फिर दोष अठारह नाशे, प्रभु केवलज्ञान प्रकाशे।।962।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. महान् मनीषी जग के, सब बंध छुड़ाओ भव के।
पुरुदेव शरण हम आये, बंधन मुक्ति हो जाये।।963।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. धनपति कुबेर की रचना, नगरी अरु रत्न बरसना।
स्वर्गों सम सुख दिखलाए, जब आदि जिनेश्वर आये।।964।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. काया थी पाँच शतक धनु, कहलाते जिनवर हैं मनु।
कुलकर क्रम से कहलाये, जिनसेन स्वामी जी गाये।।965।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. रम्भा सी नन्दा सुनन्दा, त्यागी तुमने हे जिनन्दा!
सब राज भोग हैं त्यागे, निज आतम में मन पागे।।966।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. गहरा शुभ ध्यान लगाया, शिव रमणी को है ध्याया।
किए कर्म नष्ट हैं आठ, बने मोक्षपुरी सम्राट।।967।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. गम्यं नहिं अज्ञ के होते, ज्ञानीजन अवगम करते।
हे विज्ञजनों के ईश्वर! हमें ज्ञान वरो ज्ञानेश्वर।।968।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. नमता चरणों में आकर, ममता छोड़ूँ प्रभु पाकर।
हे अचिन्त्य महिमा धारी! करूँ मोक्ष की अब तैयारी।।969।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. राजा क्या रंक कवीवर, प्रभु कृपा बरसती सब पर।
जो ध्यान प्रभु का करता, वो मनवांछित फल वरता।।970।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. हुआ न्हवन मेरु जिनराजा, सब देव बजाते बाजा।
करें नृत्यगान फिर नभ में, उत्सव भारी था जग में।।971।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वक्री जो बुद्धि धरते, कभी आत्म सौख्य नहिं वरते।
प्रभु नाम आपका लेवें, तो कभी न दुःख को सेवें।।972।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दर पर आकर के जो प्रभु, स्तोत्र पढ़े आदि विभु।
वह धन संपत्ति बढ़ाता, इक दिन निज धन को पाता।।973।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नयना निमेष नहिं करते, प्रभु की छवि शांत निरखते।
गाम्भीर्य वदन से झरता, भवि को आनंदित करता।।974।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. सर्वस्य समर्पित चरणों, प्रभु ज्ञान कलश को भरणों।
बिन ज्ञान सदा दुःख पाये, लख चौरासी भरमाये।।975।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. नभ में विहार जब करते, सुरगण कमलों को रचते।
दो सौ पच्चीस रचाते, प्रभु चरण को छू नहिं पाते।।976।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वाचाल बहुत है करती, प्रभु भक्ति मन में मचलती।
करता प्रभु का गुणगान, हँसे विज्ञ न कुछ भी भान।।977।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. रितु रितु के फल लग जाते, जिस ओर प्रभु जी जाते।
धरती होती खुशहाल, हो जाती मालामाल।।978।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. दाता दूजा नहिं तुम सा, जो रूप दिला दे निज सा।
भक्तों को मुक्ति दिलाते, श्रद्धा से शीश झुकाते।।979।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. साधूनां दर्शन पुण्य, साधुगण तीर्थ के तुल्य।
हे महासाधु वृषभेश्वर! दीजै पुनः दर्श महेश्वर।।980।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. विज्ञान भानु उपजाया, सब मोह विनशता पाया।
प्रभु केवलज्ञान उपाया, तिरेसठ प्रकृति विनशाया।।981।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. भ्रामरी वृत्ति से मुनिवर, लेते आहार हैं निजकर।
लें होकर खड़े अहारा, करते फिर ध्यान अपारा।।982।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. जल से ज्यों भिन्न जलज है, त्यों आप भिन्न कल्मष हैं।
निर्लेप महा वैरागी, हम आप गुणों के पागी।।983।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तेरह प्रकार चारित से, अरु तेज युक्त हैं तन से।
फिर भी तन से नहिं राग, हे आतम ब्रह्म विराग!।984।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. तन की कछु सुध नहिं लीनी, बस आत्म संवेदन कीनी।
निज में निजपर करें राज, हे आदिनाथ जिनराज!।985।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. वनिता वैभव सुत दारा, इन सबसे किया किनारा।
प्रभु वृषभदेव के लार, दीक्षित नृप चार हजार।।986।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मुनि बन जब बैठे ध्यान, श्री आदिनाथ भगवान।
देखा देखी व्रत धारा, नहिं सधा तो किया किनारा।।987।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. खाया फल फूल उठाकर, धारा बल्कल निज तन पर।
वृषभेश दिया उपदेश, फिर धरा श्रमण का भेष।।988।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. मुखाब्ज प्रभु की शोभा, लज्जित आदित्य भी होता।
शोभा वरणूँ क्या तन की, वृषभेश प्रथम श्री जिन की।।989।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब्ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मन का मयूर झूमे है, प्रभु ज्ञान मेघ बरसे हैं।
भक्तों का मन है डोला, जयकार प्रभु का बोला।।990।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. नहिं राज्य संपदा चाहूँ, कब मुनि बन वन को जाऊँ।
कर्मों की धूलि उड़ाऊँ, फिर तुम सम ही बन जाऊँ।।991।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. कल्पान्त काल आयेगा, सब दृश्यमान विनशेगा।
मम श्रद्धा भक्ति बचाना, अविनश्वर पद दिलवाना।।992।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल्प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. कांति प्रताप प्रभु न्यारा, दे भवि को जगत किनारा।
प्रभु शरण आपकी आया, दर्शन करके सुख पाया।।993।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. तिहुँ लोक जगतपति स्वामी, मैं पूजूँ अन्तर्यामी।
परमारथ सुख के दाता, हम शरण खड़े हे त्राता!।994।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. विकसा सुन हृदय कमल है, प्रभु वाणी निर्मल जल है।
जिसने रसपान किया है, अपना कल्याण किया है।।995।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. द्योतित होता जग सारा, प्रभु का है तेज अपारा।
जिसने भी लिया सहारा, वह पाया जगत किनारा।।996।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तप त्याग भरा जीवन था, आनन्द हेतु भवि जन का।
प्रभु निजाधीन सुख पाते, हम अहनिशि ध्यान लगाते।।997।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. परित्यज्य योग्य सब त्यागा, निज में निज आतम पागा।
फिर ध्यान अग्नि का ईंधन, जिसमें वसु कर्मन दागा।।998।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यज्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. जग जीवन को हितकारी, प्रभुवर हैं परोपकारी।
स्व-पर का ज्ञान कराया, भवि को भगवान बनाया।।999।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. गलती भव-भव मैं कीनी, प्रभु भक्ति चित नहिं दीनी।
बड़ा पुण्य उदय में आया, हमें शरण मिली जिनराया।।1000।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. दश दिश में खुशियाँ छाईं, मरुदेवी को देवे बधाईं।
वृषभेश्वर जन्म लिया है, मेरु पर न्हवन किया है।।1001।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. पूर्वा पर नहीं विरोध, जो करता आतम शोध।
समकित पाता जीवन में, नहिं रागद्वेष हो मन में।।1002।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पूर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वसु कर्म नहीं जिनवर के, अठदश भी दोष न जिनके।
शास्ता उत्कृष्ट कहाये, भवि को शिवमार्ग दिखाये।।1003।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. शस्त्रों का नहीं प्रयोग, कर्मों का किया वियोग।
प्रभु क्रोध रहित हो तुमने, जपा शांति मंत्र को मन में।।1004।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. शांति का नहीं ठिकाना, जिसने आतम पहिचाना।
सब राग द्वेष निरवारा, निज का निज में ही सहारा।।1005।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कमलन को रवि बस इक है, रवि को हैं कमल अपारा।
वैसे ही एक जिनेश्वर, नंतों भवि के हैं सहारा।।1006।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. बिम्बं जिन का निकलंक, शशि बिम्ब दिखे सकलंक।
छवि शांत सौम्य सुखदायी, प्रभु शरण आपकी पायी।।1007।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. बंधन टूटे सब मुनि के, स्तोत्र पढ़ा तन मन से।
यह पाठ महा सुखदायी, पढ़ सुनकर भक्ति बढ़ाई।।1008।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

हैं उदित हमेशा, मुदित महेशा, राहु न बादल ढकें जिनम्।
पूर्णार्घ चढ़ाऊँ, कर्म नशाऊँ, अपूर्व चंद्र हैं श्री भगवन्।।

ॐ ह्रीं चन्द्रवत्-सर्वलोकोद्योतनकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।

खुदा को गर पिता माना तो तुम फिर भीख माँगोगे,
अगर माता उसे समझा तो पालन को पुकारोगे।
खुदा को जानना तुमको तो इक बालक सा जानो तुम,
अगर बालक सा जानोगे तो तुम कुछ भी न माँगोगे।।

उच्चाटनादि रोधक

किं शर्वरीषु शशि-नाह्नि विवस्वता वा?
युष्मन् - मुखेन्दु-दलितेषु तमस्सु नाथ!
निष्पन्न शालिवन-शालिनि जीव - लोके,
कार्यं कियज्-जलधरै-र्जल-भार नम्रैः?।।19।।

चौपाई

तेरा मुख शशि तम हर लेता, चारों ओर ज्योति भर देता,
दिन में रवि का निश में शशि का, कोई काम नजर नहिं देता।
चावल खेतों में पक जाएँ, तब बादल पानी को लाएँ,
खेतों पर वे झुक-झुक जाएँ, लेकिन कोई काम न आएँ।।19।।

विद्याधरान् प्रलब्धर्षीन्, विश्वतत्त्वोपदेशकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं विद्याधरेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज–सोरठा

1. किंचित् न्यून है देह, चरम शरीर से हे जिनम्!
सुख है लेश न न्यून, अनंत सुख धारी प्रभु।।1009।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. शमाता है सोम, सौम्य छवि लख आदि की।
करता भाव विभोर, गुण चिंतन मंथन सदा।।1010।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. वर्धन सुख का होय, सब दुःख कल्मष धोत है।
चिंतन गुण आदीश, प्रकटाता है आत्म धन।।1011।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. रीति सिखायी प्रीति, सब प्राणी से जगत में।
बनना सबके मीत, यही विशुद्धि को करे।।1012।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "री" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. गुणिषु प्रमुदित भाव, रहे नित्य यही भावना।
ईर्ष्या मद नहिं होय, ऐसा दो वरदान प्रभु।।1013।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. शत इन्द्रों से नित्य, वंदनीय जिनदेव हैं।
समवशरण में आय, प्रभु भक्ति करते सदा।।1014।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. शिव रमणी के साथ, केलि करें जिनदेव जी।
बीते काल अनंत, सुख में बाधा नहिं पड़े।।1015।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. नाम मंत्र की जाप, संकट काटे हे प्रभु!
आदि शरण में आज, स्वातम रस प्रकटे विभु।।1016।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. वह्नि ध्यान जिनदेव, कर्मेंधन को खो दिया।
धूम उड़े चहुँ ओर, प्रकटे शुद्ध स्वरूप जिन।।1017।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह्नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. विषय कषाय न लेश, लीन तत्त्व के ज्ञान में।
आदीश्वर जिनदेव, भाग्य सम्भारें भक्त के।।1018।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वस्तु तत्त्व प्रभु लीन, हम सपनों में देखते।
गुण चिंतन नवनीत, करता निर्मल ज्ञान को।।1019।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. वनिता वस्त्र विलास, तज कर ली दीक्षा महां।
किया आत्म रस पान, मैं भी लूँ शिक्षा यहाँ।।1020।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. तारे भव्य अनेक, एक दास प्रभु रह गया।
करिये कृपा जिनेश, मुझे बचालो भँवर से।।1021।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. वादी हुए परास्त, वृषभ ज्ञान के सामने।
मिथ्यातम का नाश, कर सब लोक प्रकाशिया।।1022।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. युष्मन् मुख जिननाथ, सर्व पाप को नाशता।
विश्व प्रभु गुण गाय, अर्घ चढ़ाऊँ भक्तिभर।।1023।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "युष्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. मंत्र नाम का जाप, जपता उसके मन बसे।
कटता सब संताप, भक्ति की शक्ति महां।।1024।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. मुरज समां निरपेक्ष, प्रभु शास्ता जगत के।
दिया धर्म उपदेश, धारे जो कल्याण हो।।1025।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. खे* में होय विहार, सुरगण कमल रचावते।
पग तल दिए सजाय, जिनवर पद न छू सकें।।1026।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. इन्दु समां मुख देव, ऋषिगण ग्रन्थ उचारते।
देते उपमा अनेक, तन शोभा वर्णन करें।।1027।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. दम्भ महा दुःख देत, आतम शांति को हरे।
निमित्त दोष से दूर, ज्ञानीजन रहते सदा।।1028।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. लिया प्रभु का नाम, आतम गुण की कलि खिले।
नंत गुणाकर देव, सिद्ध गुणी शिव जा मिले।।1029।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तेरा-मम का फेर, भव के बंध बढ़ावता।
भगवन् अरु बस मैं, मेरी तो दुनियाँ यही।।1030।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. क्लिष्टेषु जो जीव, उन पर करुणा भाव हो।
दो मम शक्ति ऋषीश, कष्ट निवारूँ प्राणी सब।।1031।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तरुवर पा सान्निध्य, शोक रहित होता प्रभु।
काल लब्धि को पा, तरु भी जिनपद पावता।।1032।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. मस्त सजाया नाथ, मम उर आँगन हे प्रभु!
तोरण द्वार बँधाय, आदीश्वर आओ विभु।।1033।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*आकाश

26. सुरभित जल बरसायें, सुरगण प्रभु के चरण में।
उत्तम वाद्य बजाएँ, भक्ति से नाचें प्रभु।।1034।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. नाथ आपका मुख, करता तम को नाश जब।
तब रवि शशि का देव, काम रहा क्या जगत में।।1035।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. थर थर काँपे काम, मदन विजेता सामने।
चरणन् करूँ प्रणाम, मैं भी जितकामी बनूँ।।1036।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. निष्णात् हुए जिननाथ, सिद्धालय पट खोलने।
त्याग भरा था भाव, युग आदि में प्रथम जिन।।1037।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निष्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पन्थी बन कर नाथ, चलूँ मोक्ष के पाथ पर।
नाथ थाम लो हाथ, अविचल मैं बढ़ता चलूँ।।1038।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नव्य गव्य नैवेद्य, सद्य सजाये थाल में।
चरण चढ़ाऊँ देव, क्षुधा नशाऊँ नाथ मैं।।1039।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. शान्त छवि लख देव, हृदय शान्ति पाता प्रभु।
आत्म निधि वर दो, गुणनिधि चरणों में पड़ा।।1040।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. लिख सकता है कौन, नंत गुणों को हे प्रभु!
शब्द यहाँ संख्यात, गुण अनंत प्रभु आपके।।1041।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. वर्ण व्यवस्था देव, आप बनायी तीन विध।
क्षत्रिय वैश्य रु शूद्र, जगतवंद्य हैं सद्गुरु।।1042।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. नव निधि ही मिल जाय, नाथ आप जब दर्श हो।
जग में होय सनाथ, अनाथ था प्रभु जो जहां।।1043।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. शास्ता हो उत्कृष्ट, शासन निज पर ही किया।
भवि को दे उपदेश, निज सम ही प्रभु कर लिया।।1044।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. लिप्त निजातम होय, शान्ति का निर्झर बहा।
ऋषिगण डूबें आय, समता का आनन्द लहा।।1045।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. नित्य निरंजन नाथ, निराकार तुम रूप है।
ज्ञानादिक गुणधार, बैठे ऊरध लोक में।।1046।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जीत रहे जिनदेव, तिहुँ जग की उपमाओं को।
भक्त करें तित सेव, सुगति गमन कर जाय वो।।1047।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. वर दो श्री वृषभेश, बैठूँ कृपा की छाँव मैं।
समता मुझमें आय, अनुकूल प्रतिकूल में।।1048।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. लोकालोक निहार, मग्न रहें प्रभु आप में।
कर्म मिटायें पाप, जो प्रभु को अवलोकते।।1049।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. केन्द्र बना है मेरु, मध्यलोक विस्तार का।
नाभि सम तन सोह, करें प्रदक्षिण ज्योतिषी।।1050।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "के" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. कार्य कहाँ जिनदेव, रत्नों की इस राशि का।
तम का किया विनाश, नाथ आपके ज्ञान ने।।1051।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कार्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्वयं आप आदीश, स्वातम भोगी बन गये।
दिया भव्य को स्वाद, आतम अनुभव का यहाँ।।1052।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. किरण सूर्य की एक, जग का सब तम नाशती।
ज्ञान किरण जिनदेव, मिथ्यातम को हानती।।1053।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. यज्ज्योतिर्मय नाथ, आप हुए इस जगत में।
पूर्ण ज्ञान परकाश, फैलाया तिहुँ लोक में।।1054।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यज्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. जय-जय करते देव, पुण्य करें संचित महां।
आदीश्वर जिनदेव, जयवन्तों जग में सदा।।1055।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. लगी ललक वृषभेश, समवशरण में दर्श की।
करके दर्श जिनेश, जिन चरणन् का पर्शन करें।।1056।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. धर्मामृत का पान, करके भवि संतृप्त हो।
गणधर करें प्रणाम, मानें अपने प्राण तुम।।1057।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नरैनुति जिनदेव, गुण महिमा गाते महां।
वाद्य बजाकर के, मणि रत्नों से पूजते।।1058।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. जगत्पति जिनदेव, भवि जीवों को बोधते।
पहिचानो निज आत्म, परमातम पाओ सहज।।1059।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. ललचाया मन आज, एक बार निज दर्श हो।
ऋषियों के ऋषिराज, दर्शन दोगे कब प्रभु।।1060।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. भाग्यहीन जिननाथ, तव दर्शन नहिं कर सके।
जैसे धृष्ट उलूक, दिनकर को नहिं देखता।।1061।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. रसास्वाद निज का, जो भवि आतम कर सके।
निजानंद में लीन, जिनवर की सी छवि लहे।।1062।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नमन करें विद्वान्, प्रभु पद में झुकते सदा।
विनयवान गुणवान, वे सिद्धालय में बसे।।1063।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. नम्रैः लिख जिनदेव, मानतुंग नत चरण में।
आदिनाथ के दर्श, कारागृह में भी हुए।।1064।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म्रैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

पक चुके जो चावल, झुके हों बादल, काम नहीं कुछ जलधर का।
रवि शशि क्या काम, तम हर नाम, अर्घ चढ़ाऊँ रत्नों का।।

ॐ ह्रीं सकल-कालुष्य-दोषनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं ह्रीं ह्रीं नमः।

खुशी से दे दिया जिसने खुशी से उसको देता है,
जिसे देने में गम होता उसे दुख देके देता है।
नहीं देता यहाँ कुछ भी उसे कुछ भी नहीं मिलता,
जो देते को मना करता वो उसका छीन लेता है।।

संतान सम्पत्ति सौभाग्य प्रदायक

ज्ञानं यथा त्वयि विभाति कृतावकाशं,
नैवं तथा हरि हरादिषु नायकेषु।
तेजो महा-मणिषु याति यथा महत्त्वं,
नैवं तु काच-शकले किरणा-कुलेऽपि।।20।।

चौपाई

हे प्रभु! तुझमें ज्ञान महान्, जिसकी अजब निराली शान,
वैसा ब्रह्मा विष्णु न ज्ञान, जैसा प्रभु में केवल ज्ञान।
एक तरफ मणि का विस्तार, एक तरफ है काँच अपार,
मणि सा काँच कभी नहिं होता, सबका ऐसा यहाँ विचार।।20।।

जिनके दर्शन से यहाँ, हो संतोष अपार।
आदिनाथ भगवान को, नमहूँ बारम्बार।।

यतीन्द्रांश्चारणान् पोत, समान नृणां भवार्णवे।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं चारणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज–हे दीनबंधु श्रीपति

1. ज्ञायक स्वरूपी देव तुम, चरणों करूँ वंदन।
काटे सभी क्लेश तव, चरणों का अभिनंदन।।
हे आदिदेव! जिनवर, कहें मानतुंग जी।
प्रभु काटो मेरे बंधन, है आश अब जगी।।1065।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्ञा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. नंदा–सुनंदा के बने, भर्तार आप ही।
भव तारने की राह प्रभु, उनको दिखा दी।। हे आदिनाथ..।।1066।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. यमराज भी नत मस्तक, हो जाता नाथ तब।
जिस पर कृपा का हाथ, तुम रख देते माफ कर।। हे आदिनाथ..।।1067।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. थाह नहीं पाता कोई, गुण आपके अनंत।
ज्यों रत्नराशि सागर की, होती नहीं अंत।। हे आदिनाथ..।।1068।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "था" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. तत्त्व अरु अतत्त्व का, प्रभु भेद बताया।
त्यागा ममत्व इनका, सच्ची दृष्टि को पाया।। हे आदिनाथ..।।1069।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. कायिक धरम का कार्य कर, धर्मी हुए जिनम्।
धारा धरम त्रियोग से, ध्यानी हुए जिनम्।। हे आदिनाथ..।।1070।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. विज्ञान महासिंधु, लहराता है आप में।
गुणमय अनंत मीन प्रभु, शोभें हैं आप में।। हे आदिनाथ..।।1071।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भाषा है अर्द्धमागधी, भवि सुनते हैं वचन।
निज का स्वभाव पायकर, तरते उदधि सघन।।
हे आदिदेव! जिनवर, कहें मानतुंग जी।
प्रभु काटो मेरे बंधन, है आश अब जगी।।1072।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. तिनका समां परिग्रह, नहिं धारते प्रभो।
प्रभु आपके अनुगामी बनें, हम यहाँ विभो। हे आदिनाथ..1073।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. कृतघ्न हो रहा है जगत, आप हैं कृतकृत्य।
प्रभु आपके गुण पाने यहाँ, भक्ति करें नित्य।। हे आदिनाथ..1074।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. तारक हो नाथ उनके, जिनने किया है नमन्।
कहलाते हो प्रभु लोक में, तारण तुम्हीं तरण।। हे आदिनाथ..।।1075।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. वरदान मांगूँ आज मैं, वर दो मुझे शरण।
सम्यक् प्रकार से हो मम, सल्लेखना मरण।। हे आदिनाथ..।।1076।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. काल अनंत खो दिये, पर आप नहिं मिले।
मिथ्या तमा छाया रहा, नहिं ज्ञानघट जले।। हे आदिनाथ..।।1077।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. शंकादि दोषों के बिना, जिनराज आप हैं।
गुणगान करने से प्रभु, मिटते जु पाप हैं।। हे आदिनाथ..।।1078।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. नैया मेरी मझधार, उसे पार कीजिए।
बालक के सिर पे नाथ, निज का हाथ दीजिए।। हे आदिनाथ..।।1079।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. वंदन है सर्व सिद्ध को, वंशज उन्हीं का मैं।
फिर भी जगत में घूमता, मैं भूलकर उन्हें।। हे आदिनाथ..।।1080।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तन्मय हुआ वही कि जिसने, ध्यान कर लिया।
अनुभूति जो हुई भगत को, फल ही मिल गया।।
हे आदिदेव! जिनवर, कहें मानतुंग जी।
प्रभु काटो मेरे बंधन, है आश अब जगी।।1081।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. थामा था हाथ आपने, गुरु मानतुंग का।
पहरा हटा चरण में पड़ा, भोज राज था।। हे आदिनाथ..।।1082।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "था" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. हर प्रश्न का हल मिलता, नाथ भक्ति से तेरी।
दु:खों से मुक्ति पाय, लगे सुख की ही झरी।। हे आदिनाथ..।।1083।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. रिमझिम बरसती बूँदें हैं, सुगन्धी से भरी।
हे नाथ! तव प्रभाव से, भक्तों पै भी पड़ीं।। हे आदिनाथ..।।1084।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. हर बार मैंने गलती की, प्रभु आप दी क्षमा।
प्रभु आपको सब सौंप दिया, कीजै निज समां।। हे आदिनाथ..।।1085।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. राजाओं के भी राज हैं, जिननाथ आप ही।
करता हूँ नाथ प्रार्थना, दो आठवीं मही।। हे आदिनाथ..।।1086।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. दिन रात का भी भेद नहीं, समवशरण नाथ।
होता प्रकाशमान भविक, जग में हो सनाथ।। हे आदिनाथ..।।1087।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. जीवेषु नित कृपा परत्व, भाव सिखाते।
चलते स्वयं शिव मार्ग पर, भव्यों को चलाते।। हे आदिनाथ..।।1088।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।।

25. नासाग्र दृष्टि आपकी, लगती मनोहारी।
निज आत्म तत्त्व बोध, कराती है वो प्यारी।। हे आदिनाथ..।।1089।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. यथार्थ तत्त्व की, विवेचना करी प्रभु।
भव्यों को दे उपदेश, मुक्तिपुर गये विभु।।
हे आदिदेव! जिनवर, कहें मानतुंग जी।
प्रभु काटो मेरे बंधन, है आश अब जगी।।1090।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. केयूर हार बाजूबन्द, से सजी शची।
जिनदेव की भक्ति से, भरी थी रची पची।। हे आदिनाथ..।।1091।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "के" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. गुणिषु प्रमोद भाव, बढ़ाना सिखा दिया।
गुणवान के गुणगान कर, गुण पाना ही जिया।। हे आदिनाथ..।।1092।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तेजो मयी है आपकी, आभा हे जिनवरम्!
जो आ गया शरण में, वो पाये परम धरम।। हे आदिनाथ..।।1093।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. जो साधना में लीन, स्वयं गुप्त साधना।
होकर स्वयं ही सिद्ध, फल पाता आराधना।। हे आदिनाथ..।।1094।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मणियों से सजा धूलिशाल, कोट है महा।
जिनदेव से बारह गुणा, ऊँचा है ये कहा।। हे आदिनाथ..।।1095।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. हारा वो कामदेव बना, आप चरण दास।
रति राग त्याग करके, बैठे आत्मा के पास।। हे आदिनाथ..।।1096।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. महा पूजा यज्ञ करते हैं, वे इन्द्र ध्वज यहाँ।
भव-भव के रोग राग को, नशते हैं वो यहाँ।। हे आदिनाथ..।।1097।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मणि रत्नों का प्रकाश, मोह अंध नहिं हरे।
क्षण में हो प्राप्त रौशनी, सामीप्य जो गहे।। हे आदिनाथ..।।1098।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. जीवेषु सर्व जगत, मेरी मित्रता रहे।
संसार में न कोई मेरा, बैरी बन रहे।।
हे आदिदेव! जिनवर, कहें मानतुंग जी।
प्रभु काटो मेरे बंधन, है आश अब जगी।।1099।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. याचक हूँ नाथ आया, आज द्वार आपके।
उर भर दो वीतरागता, प्रभु पास राख के।। हे आदिनाथ..।।1100।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तिल मात्र लेश शेष, न रहे कर्म आप में।
पल भर में कर विखण्ड, हो अखण्ड आप में।। हे आदिनाथ..।।1101।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. यहाँ धार यथाजात, वेष मानतुंग जी।
बंदी बने ताले पड़े, की भक्ति आपकी।। हे आदिनाथ..।।1102।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. था नाथ आपका ही, सहारा जिन्हें परम।
उपसर्ग जयी गुरु महा को, करते हम नमन।। हे आदिनाथ..।।1103।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "था" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. महिमा महान आपकी, कैसे करूँ गुणगान।
है ज्ञान अल्प मुझ में, नहिं शब्दों की पहिचान।। हे आदिनाथ..।।1104।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. हत्या करे हमेशा जो, प्रभु पास आये तो।
बन जाये अहिंसक, परम पद को भी पाये वो।। हे आदिनाथ..।।1105।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. त्वन्नाम मंत्र स्मरण, भव को है नाशता।
इक बार करे दर्श तो, कुछ भी न भासता।। हे आदिनाथ..।।1106।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. नैया पड़ी भँवर में, वो डगमग है डोलती।
पतवार थाम लो प्रभु, भक्ति ये बोलती।। हे आदिनाथ..।।1107।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. वंदूँ मैं नाथ आपको, कर आपका ही ध्यान।
बंधन मेरा मिटा दो प्रभु, हे दयानिधान!!
हे आदिदेव! जिनवर, कहें मानतुंग जी।
प्रभु काटो मेरे बंधन, है आश अब जगी।।1108।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तुस मास के समान, भिन्न जीव देह हैं।
प्रभु आपके वचन ये, जगत में प्रसिद्ध हैं।। हे आदिनाथ..।।1109।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. कारज हूँ मैं प्रभु तो आप, उसके हो कारण।
शिव का प्रभु दे दान, करो मोह निवारण।। हे आदिनाथ..।।1110।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. चहुँ दिश में चतुर्मुख, दिखे हैं समवशरण में।
बारह सभाएँ दर्श कर, हरषे हैं चरण में।। हे आदिनाथ..।।1111।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. शत बार वंदना करें, प्रभु अर्चना करें।
शत इन्द्र आपके चरण में, शीश को धरें।। हे आदिनाथ..।।1112।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. कहता हूँ नाथ आपसे, ये दुख भरी कथा।
सर्वज्ञ नाथ आप हैं, क्या क्या कहूँ व्यथा।। हे आदिनाथ..।।1113।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. लेश मात्र कष्ट नहीं, कर्म नाश से।
तव भक्ति करके भक्त, मुक्त होय पाप से।। हे आदिनाथ..।।1114।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ले" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. किन किन को नहीं पूजा, मैंने चैन नहिं मिला।
हे देव! आप जैसा दूजा, वैन नहिं मिला।। हे आदिनाथ..।।1115।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रख लीजै नाथ लाज अब, विनती मेरी यही।
हारा हूँ मैं संसार से, बस आसरे तुम्हीं।। हे आदिनाथ..।।1116।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. णाणं णरस्स सार कहके, ज्ञान प्रकाशा।
उस सार को पाया प्रभो, निज ज्ञान विकासा।।
हे आदिदेव! जिनवर, कहें मानतुंग जी।
प्रभु काटो मेरे बंधन, है आश अब जगी।।1117।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. कुज्ञान को मिटा दो प्रभु, ज्ञान उर भरो।
प्रभु आप के बिन कौन मेरा, ध्यान तो धरो।। हे आदिनाथ..।।1118।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. लेश्या कषाय मिल के, योग वृत्ति कहाती।
लेश्या रहित तव मूर्ति, कल्मष को है धोती।। हे आदिनाथ..।।1119।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ले" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. स्वप्नेऽपि न भूलूँ प्रभु, दो ऐसी स्मृति।
जग है ये सारा झूठा, इससे क्या करूँ प्रीति।। हे आदिनाथ..।।1120।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

रागी द्वेषी जो, काँच समां वो, जिनवर पूर्ण ज्ञानधारी।
मणि सम जो चमकें, जग में दमकें, पूज रचाऊँ सुखकारी।।

ॐ ह्रीं केवलज्ञान-प्रकाशित-लोकालोक स्वरूपाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

न ऊपर स्वर्ग दिखता है न नीचे नर्क दिखता है,
ये पंडित और पुरोहित का हमें बस तर्क दिखता है।
नरक गम है स्वर्ग सुख है जमीं पर ही नजर आता,
समझने का हमें दिल में जरा सा फर्क दिखता है।।

सर्व सौभाग्य प्रदायक

मन्ये वरं हरि - हरादय एव दृष्टा,
दृष्टेषु येषु हृदयं त्वयि -तोषमेति।
किं वीक्षितेन भवता भुवि येन नान्यः,
कश्चिन् मनो हरति नाथ! भवान्तरेऽपि।।21।।

चौपाई

हे प्रभु! तेरा दर्शन पाया, तब मन ये संतोषी पाया,
ब्रह्मा, विष्णु महेश देखकर, संतोषी मन को नहिं पाया।
जिसने वीतराग को देखा, उनको ही अनुभव में लेखा,
उसका मन ऐसा हो जाये, अन्य देव मन हर नहिं पाये।।21।।

ऋषीन् प्रज्ञाश्रमणाख्यान्, सर्वप्रज्ञा गुणान्वितान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं प्रज्ञाश्रमणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नव देवता पूजन

1. मन्मथ विजेता आप श्री, जिनराज शील स्वरूप हैं।
दुर्भाव का है अभाव जहाँ, तिहुँ लोक के जो भूप हैं।।
मरुदेव नंद जिनंद की जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नव निधि ऋद्धि, मंगल पाय शिव ललना वरें।।1121।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. मन्ये जिनं जिनचन्द्र जिनवर, दया धर्म के मूल हैं।
मैं भी लखूँ जिनधर्म के, इस मर्म को जो कूल हैं।। मरुदेव नंद...।।1122।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. वर ली यहाँ शिवनारि जिनने, अष्ट कर्म नशाय के।
अवगाह निज में कर रहे जो, मही अष्टम जाय के।। मरुदेव नंद...।।1123।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. रंगमंच इस संसार में, यह जीव नाटककार है।
वृषभेश ने इस मंच से, कर लीना अबके किनार है।। मरुदेव नंद...।।1124।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. हलधर गदाधर चक्रधर, जिनदेव को नित पूजते।
निजधर्म को अनुभूत कर, फिर भव भ्रमण से छूटते।। मरुदेव नंद...।।1125।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. रिपु राग द्वेष विमोह ने, नहिं आत्मरस चखने दिया।
प्रभु मोह नाश अमोह बन, निज आत्म अमृत रस पिया।। मरुदेव नंद...।।1126।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. हर्षित हृदय होता प्रभु, निरखत मुखं जिनदेव का।
होता पवित्र ये आत्मा, निज आत्म लख वृषभेश सा।। मरुदेव नंद...1127।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. राजित सभा बारह यहाँ, प्रभु समवशरण विशाल है।
नर देव इन्द्र पशु जहाँ, करते चरण नत भाल हैं।।
मरुदेव नंद जिनंद की जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नव निधि ऋद्धि, मंगल पाय शिव ललना वरें।।1128।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. दर्पण में ज्यों न विकार हो, प्रतिबिम्ब वस्तु का पड़े।
त्यों दिव्यध्वनि खिरते समय, जिन मुख सदा निर्मल रहे।। मरुदेव नंद...।।1129।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. यत्न पूर्वक क्रिया करना, मुनि जनों का कार्य है।
उपदेश दीना प्रथम जिन, हिंसा का कर परिहार है।। मरुदेव नंद...।।1130।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. एकत्व ही जग में निराला, आतमा इक सार है।
निज आतमा में जो रमा, होता भविक वह पार है।। मरुदेव नंद...।।1131।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ए" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. वर्तन किया निज में प्रभुवर, वर्तमान प्रथम जिनम्।
पुरुषार्थ कीना मोक्ष का, फल पाया सम्यक् है जिनम्।। मरुदेव नंद...।।1132।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. दृष्टान्त देकर आपने, नय तत्त्व समझाया यहाँ।
दृष्टि हुई साध्वी उसी की, जिस हृदय माया यहाँ।। मरुदेव नंद...।।1133।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. टालते हो सब अमंगल, मंगलं जिनदेव तुम।
अघ को गला सुख को बुला, धरते धरम में हैं जिनम्।। मरुदेव नंद...।।1134।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "टा" बीजाक्षर संयुक्त श्री ववृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. दृष्टि अगोचर सिद्ध भगवन्, चक्षु से दिखते नहीं।
फिर भी प्रसिद्धि आपकी, भवि जीव से छिपती नहीं।। मरुदेव नंद...।।1135।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. टेरे यहाँ बालक प्रभु, इक बार तो आओ यहाँ।
शिवकान्त नाथ जिनंद तव जिन, ध्यान धारूँ नित यहाँ।। मरुदेव नंद...।।1136।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "टे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. शीलेषु नाथ सहस्र अठदश, शील के स्वामी कहे।
प्रभु शील झील में तैर कर, भव पार गामी हो रहे।।
मरुदेव नंद जिनंद की जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नव निधि ऋद्धि, मंगल पाय शिव ललना वरें।।1137।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. येन स्वयं के बोध से, इस लोक को बोधित किया।
असि मसि कृषि को आदि ले, षट् कर्म उपदेशित किया।। मरुदेवनंद...।।1138।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. महिलादिषु का राग कर, जीवन विकल्पों से भरा।
धारण करूँ तप साधना, जीवन बनाऊँ मैं खरा।। मरुदेव नंद...।।1139।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. हृदयासना सूना पड़ा, जिनदेव आन विराजिये।
मन जाये न यूँ विभाव में, स्वभाव में ही रमाइये।। मरुदेव नंद...।।1140।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. दश धर्म का उपदेश दे, बारह तपों से हैं तपे।
परीषह सभी के जीतकर, निज ध्यान में जो रम रहे।। मरुदेव नंद...।।1141।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. व्यंजन अनेक प्रकार के, भोगे प्रभु मन नहिं भरा।
डायिन क्षुधा ने रोक दीना, एक भी व्रत नहिं करा।। मरुदेव नंद...।।1142।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. त्वम् नाथ रत्नाकर कहाते, रत्न त्रय से शोभते।
इन रत्नों का न स्वरूप जाना, इसलिए दुःख भोगते।। मरुदेव नंद...।।1143।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. अतिशायि जिनवर दर्श है, शिव शर्म का द्योतक कहा।
सब भव्य जन के शोक हरता, तरु अशोक समां महा।। मरुदेव नंद...।।1144।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तोता यहाँ रोता रहा, जिनवाणी को ना पान कर।
जीवन भला खोता रहा, निजवाणी पर अभिमान कर।। मरुदेव नंद...।।1145।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. षट्काय जीवों को बचाया, नाथ निजसम जानकर।
करुणा दिखायी आपने, वृषभेश हम पर की महर।।
मरुदेव नंद जिनंद की जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नव निधि ऋद्धि, मंगल पाय शिव ललना वरें।।1146।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. मेरु समां निष्कम्प जिनवर, प्रलयकाल से नहिं हिलें।
मन मेरु आप अकंप प्रभु, लीला विलास से न डिगें।। मरुदेव नंद...।।1147।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तिरता स्वयं भव सिंधु से जो, वही भवि को तारता।
जो स्वयं समझा आतमा को, अन्य को समझावता।। मरुदेव नंद...।।1148।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. किंचित् नहीं है संग जिनके, नाथ आकिंचन कहे।
है देह किंचित् न्यून जिनकी, नाथ वृषभेश्वर कहे।। मरुदेव नंद...।।1149।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "किं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. वीक्षित यहाँ पर शोक जिनका, रोग शोक रहित प्रभो।
करते अशोक निजाश्रितों को, युग प्रथम आदि विभो।। मरुदेव नंद...।।1150।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. क्षिप्र हो दर्शन प्रभु का, नयन मेरे तरसते।
कब दोगे दर्शन हे जिनेश्वर! रात दिन ये बरसते।। मरुदेव नंद...।।1151।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तेरा रहा जो पंथ जिनवर, मैं भी उस पथ पर चलूँ।
जो आज है भगवन् तुम्हारा, वैसा ही मैं कल बनूँ।। मरुदेव नंद...।।1152।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. नयनाभिराम स्वरूप जिनका, नासा दृष्टि है परम।
अनुपम है जिनका ध्यान, दिखते ही मिटे सारे भरम।। मरुदेव नंद...।।1153।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. भव दुःख से भयभीत हूँ मैं, अभय जिनवर दीजिए।
हे मीत! आया शरण तेरी, प्रीति से भर दीजिए।। मरुदेव नंद...।।1154।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. वन्दन से बन्धन नाश होते, दिव्य वाणी में खिरा।
वंदूँ प्रभु चरणाम्बुजों को, आपकी शरणा पड़ा।।
मरुदेव नंद जिनंद की जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नव निधि ऋद्धि, मंगल पाय शिव ललना वरें।।1155।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. ता थेई थेई पग धरत हैं, व्यंतरीं भक्ति भरीं।
छम छम छमा छम बजत घुँघरु, नाथ की भक्ति करी।। मरुदेव नंद...।।1156।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. भुवि शोभती है नववधू सम, नाथ के आगमन से।
तिहुँ लोक में उत्सव मना, आदीश के अवतरण से।। मरुदेव नंद...।।1157।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. विश्वास मुझको है जिनेश्वर, टूटने नहिं दोगे तुम।
मझधार मेरी पड़ी नैया, डूबने नहिं दोगे तुम।। मरुदेव नंद...।।1158।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. येन केन प्रकार से प्रभु, आपका दर मिल गया।
मानो मुझे त्रैलोक्य की नव, निधि का गुच्छा मिल गया।। मरुदेव नंद...।।1159।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. नमता अनंतों बार चरणों, नाथ ये ही भावना।
चिंतन करूँ चिंतामणि का, पूर्ण हो मम साधना।। मरुदेव नंद...।।1160।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. नाभि कहे उदयाचलं, मरुदेवी प्राची दिश समां।
जिन रुपी सूर्य उदित हुआ, आनंद छाया है जहां।।मरुदेव नंद...।।1161।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. अन्यः नहीं इस जगत में, प्रभु आप सम भूपति यहाँ।
सारे जगतवासी नमें, त्रययोग से वंदन कहा।। मरुदेव नंद...।।1162।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. कश्ती मेरी मझधार है, पतवार जिनवर थामिए।
करता हूँ प्रभु मैं प्रार्थना, जग जलधि से ही उबारिए।। मरुदेव नंद...।।1163।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कश्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. चिन्मय सु चेतन ज्ञान में, चिन्मय सुदेश जहान में।
प्रभु मगन हैं शुद्धात्म में, क्षायिक सु शक्ति महान में।।
मरुदेव नंद जिनंद की जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नव निधि ऋद्धि, मंगल पाय शिव ललना वरें।।1164।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. मन को किया वश में यहाँ, महा वृक्ष मोह उखाड़ कर।
मन्मथ विजेता हे प्रभु! मारा उसे भी पछाड़ कर।। मरुदेव नंद...।।1165।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. नो कर्म हैं वस्तु सभी, संसार में जो दीखतीं।
प्रभु आपने उनको हटाया, कर्म को जो खींचतीं।। मरुदेव नंद...।।1166।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. हरिए प्रभु दुःख जाल मेरा, मैं फँसा जंजाल में।
हे नाथ! करुणा के धनी, तुम बिन रहा कंगाल मैं।। मरुदेव नंद...।।1167।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. रत्नों की खान अवधपुरी, जहाँ आदि प्रभु अवतार है।
वह ही अनेक महापुरुष, जननी बनी धरि भार है।। मरुदेव नंद...।।1168।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिमिरान्ध नाशक जग प्रकाशक, आदि जिन आदित्य हो।
कुछ रश्मियाँ वर दो प्रभु, जीवन मेरा उद्योत हो।। मरुदेव नंद...।।1169।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नाभि तनुज तुम कल्पवृक्षं, कल्पना पूरण करो।
छाया तुम्हारी बैठता मैं, मोक्ष महाफल को वरो।। मरुदेव नंद...।।1170।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. थलचर, गगनचर और जलचर, जीव जग में हैं घने।
प्रभु नाम का सुमिरन करत ही, सौख्य सब पाते सुने।। मरुदेव नंद...।।1171।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. भर्ता तुम्हीं शिवनारी के, कर्ता जगत उद्धार हो।
स्वर्गावतार के क्षण जिनेश्वर, सद्योजात पुकार हो।। मरुदेव नंद...।।1172।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. वांछित स्वरूप प्रदान करते, जो वृषभ भक्ति करे।
प्रभु अर्चना ही एक केवल, अतुल शक्ति को वरे।।
मरुदेव नंद जिनंद की जो, भक्ति से अर्चा करें।
सब सिद्धि नव निधि ऋद्धि, मंगल पाय शिव ललना वरें।।1173।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तज दिया माया मोह को, नहिं क्लेश भाव का शेष है।
है शांत निर्मल भाव जिनका, साम्य भाव अशेष है।। मरुदेव नंद...।।1174।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रे आत्मन्! अब सोच तूने, नंतकाल से क्या किया।
पाकर स्व अन्तर्बोध को, निज आत्मा को शोधिया।। मरुदेव नंद...।।1175।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. स्वनान्तरेऽपि न नाथ मुझको, आप सम जिनवर मिला।
हे नाथ! छूटे हाथ न अब, मुक्ति तक चले सिलसिला।। मरुदेव नंद...।।1176।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

जिनवर को देखा, मन संतोषा, अन्य देव नहिं तोष करें।
प्रभु श्रेष्ठ आप हो, नाम जाप हो, अर्घ चढ़ा हम बोध वरें।।

ॐ ह्रीं सर्वदोषहर शुभदर्शनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्ण समणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

गुरु ने पथ दिया सच्चा गुरु मंजिल दिखाएँगे,
बुझे से दिल में आकर के मेरा दीपक जलाएँगे।
गुरु का हर इशारा ही हमें ईश्वर दिखाता है,
तहेदिल से हमेशा हम गुरु के गीत गायेंगे।।

भूत-पिशाच बाधा निरोधक

स्त्रीणां शतानि शतशो जनयन्ति पुत्रान्,
नान्या सुतं त्वदुपमं जननी प्रसूता।
सर्वा दिशो दधति भानि सहस्र-रश्मिं,
प्राच्येव दिग्जनयति स्फुर-दंशु-जालम्।।22।।

चौपाई

पुत्र जनें सौ-सौ माताएँ, फिर भी तुमसा जन न पाएँ,
इक माँ तीर्थंकर की होती, जो सुत में देती उपमाएँ।
सर्व दिशा में तारे आते, अंधकार वे मिटा न पाते,
सूरज पूर्व दिशा से आता, जग में उजियारा फैलाता।।22।।

आकाशगामिनो धीरान्, कृत्स्न सत्त्व हितोद्यतान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं आकाशगामिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रेखता छंद (पुनः दर्शन पुनः दर्शन)

1. स्त्री पर्याय इस जग में, जिनेश्वर निंद्य कहलाती।
प्रभूवर आपकी माता, स्त्री रत्ना कही जाती।।1177।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त्री" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. गुरुणां जगत स्वामी जी, जगत्पति नाथ कहलाते।
ऋषिजन ध्यान में ध्याते, गुरुजन शीश हैं नाते।।1178।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. शक्तिमानं बने जिनवर, जिनेश्वर शान्त रहते हैं।
इसी कारण सभी बुधजन, चरण में माथ धरते हैं।।1179।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. तार्किक शक्ति जिनवर की, कोई भी तर्क नहिं पाया।
कहा जो आपने भगवन्, कोई भी काट नहिं पाया।।1180।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. निरन्तर जाप जपते जो, आदीश्वर नाम मंत्र की।
उन्हीं के पाप सब कटते, बनी संतति जो भव भव की।।1181।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. शर्म से झुक रहा हूँ मैं, कर्म मल से मैं गंदा हूँ।
ज्ञान चक्षु न खुल पाये, अनादि से मैं अंधा हूँ।।1182।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. तत्त्वज्ञानी जिनेश्वर जी, मेरे उर में समा जाओ।
हैं तोरण द्वार बँधवाये, हृदय आँगन में आ जाओ।।1183।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. शोक से रहित है तरुवर, सन्निधि आपकी पाकर।
काल लब्धि के आते ही, वो तरु भी होता है जिनवर।।1184।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. जलज खिलते सरोवर में, सूर्य की रश्मि को पाकर।
भव्य खिल जाते क्षणभर में, आपकी सौम्य छवि लखकर।।1185।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. नखों की कान्ति से भगवन्, मुकुट मणियाँ दमकती हैं।
चरण का परस पाकर के, उर की कलियाँ महकती हैं।।1186।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. यन्त्र अरु तंत्र भी जिनवर, न जिनके काम आते हैं।
आपका नाम रूपी मंत्र, मृतक में प्राण भरते हैं।।1187।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. तिरा जाता है जिस भू से, उसे ही तीर्थ कहते हैं।
तीर्थ का जो करें प्रचलन, उन्हें तीर्थेश कहते हैं।।1188।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. पुराण हो पुमान् हो, महापुण्यवान भी तुम हो।
गणीश्वर भी करें वंदन, महागुणवान भी तुम हो।।1189।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. जन्म पुत्रान् को जग में, सैकड़ों नारियाँ देतीं।
मात मरुदेव के सम तो, कोई भी हो नहीं सकतीं।1190।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रों" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. नाथ नायक हो तीर्थ के, बने ज्ञायक स्वभावी हो।
हरो अज्ञान अब मेरा, ज्ञान की आप चाबी हो।।1191।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. न्याय अद्भुत् प्रभु का था, हा-मा-धिक् मात्र उच्चारा।
विवेकीजन सजग रहते, पाप से करते किनारा।।1192।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. सुवासित नाथ की वाणी, वचन मुक्ता सी मनहारी।
अठारह सात सौ भाषा, सुनें सुर नर पशु प्राणी।।1193।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तं जिनं नाथ वृषभेशं, धीर गम्भीर गण ईशं।
आत्म अध्यात्म के नायक, सर्व गुण धारी जगदीशं।।1194।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. त्वम् शुभम् दर्शनं पाकर, अन्य का दर्श नहिं रुचता।
क्षीर सागर पयम् पीकर, किसे लवणं जलं रुचता।।1195।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. दुराचारी हूँ, दुष्टी हूँ, दुरभिमानी की हूँ मूरत।
वाणी प्रभु आप कल्याणी, दिखा दी पाप की सूरत।।1196।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. पतित को कर रहा पावन, आदि का आदि जिनशासन।
सदा जयवन्त होता है, करे अनुगमन जो भविजन।।1197।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. मंगलों में महामंगल, आदिश्वर नाम है मंगल।
अमंगल दूर करता है, काटता पाप का जंगल।।1198।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. जगत जननी है जिनवाणी, गणी वृषसेन पहिचानी।
मागधी देव फैलायी, सभा बारह ने सुन जानी।।1199।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. नवोढ़ा स्त्री का जो श्वास, सुगंधित होता है जैसा।
सुगन्धित गंध कुटि प्रभु की, बताते हैं गुरूदेवा।।1200।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. नीर अरु क्षीर को भाजित, कर सके हंस मतवाला।
देह अरु जीव को विगलित, कर सके आदि मतवाला।।1201।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रदक्षिण देत ही जानें, सभी जन सात अपने भव।
ऐसा भामण्डलं जिनवर, करे तिरस्कृत सूर्य वैभव।।1202।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. सूर्य की कांति को लज्जित, कर रहा आप सिंहासन।
मानो मेरु स्वयं आकर, भक्ति करे आपकी भगवन्।।1203।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. ताप सूरज का रोका है, तीन छत्रों ने आकर के।
त्रिलोकीनाथ हैं जिनवर, बतायी महिमा गाकर के।।1204।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. सर्व सक्षम है हर चेतन, करे अनुकूल पौरुष तो।
जिनागम का कथन यह है, प्राप्त करता परम पद वो।।1205।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. वाणी जिनवर की है अनुपम, हितैषी जो बनी भवि को।
बाह्य भूति है बतलाती, आपकी योग्यता सबको।।1206।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दिगम्बर रूप अम्बर को, प्रकाशित आप करते हो।
अनूपम हो प्रभु दिनकर, धर्म के राज वरते हो।।1207।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. शोक तमको हरा जिनने, सुशोभित है अशोक वन।
पत्र मरकत मणियों के, लुभाते हैं भविक का मन।।1208।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दग्ध कर दी सभी आशा, मिटा डाला है तृष्णा को।
बिना अग्नि औ ईंधन के, जला डाला करम वन को।।1209।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. धर्म के रूप तुम ही हो, धर्म के भूप भी तुम हो।
वृषभ रूपी समन्दर हो, नमन वृषभेश को मम हो।।12010।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तिर गए प्राणी इस जग में, तीर्थंकर की शरण पाकर।
अर्चना हम करें निशदिन, चरण की छाँव में आकर।।1211।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. भावना है यही भगवन्, भाव मन को मिटा दूँ मैं।
करूँ भक्ति यहाँ ऐसी, स्वयं तुम मैं मिला दूँ मैं।।1212।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. निगोद से यहाँ तक की, यात्रा जो करी भवि ने।
परम गुरु की कृपा ही है, जो मुक्ति भी वरी उसने।।1213।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. सहज सम्यक्त्व होता है, परम मुनि कुन्द वचनों से।
धरम का बीज उगता है, आदि जिन चरण वंदन से।।1214।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. हर्ष से रोम हैं पुलकित, दर्श जिनने जिनम् पाया।
द्रव्य अरु भाव रागादिक, मल को उसने यहाँ धोया।।1215।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. स्रग्वी* पत्र को ज्यों लोक, में पावन मनुज मानें।
आपकी गी को गणनायक, परम पावन यहाँ जानें।।1216।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. रमणी के राग में पड़कर, भव अनंतों गँवाए हैं।
आदि चरणों से कर प्रीति, भवों के अघ नशाए हैं।।1217।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. रश्मिं कैवल्य जिनवर की, जगत उद्योत करती हैं।
ज्ञान भानु को प्रकटाकर, भविक का मोह हरती हैं।।1218।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्मिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. प्राच्येव जगति तल पर, सूर्य को ही है प्रकटाती।
आपकी सौम्य छवि जिनवर, हृदय सम्यक्त्व उपजाती।।1219।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्राच्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

* तुलसी

44. येन स्तोत्र जिनवर की, स्तुति देव करते हैं।
वो मनहारी वचन सबके, हृदय आनंद भरते हैं।।1220।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. वरं व्रत को धारता जो, परम पद प्राप्त करता है।
न धरता व्रत नियम संयम, न तुम सा रूप वरता है।।1221।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. दिग्दिगंतों तलक फैली, आपके यश की खुशबू जो।
तीन लोकों के जीवों को, नेत्र उत्सव ही करती वो।।1222।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दिग्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. जगत के जड़ पदार्थों में, मोह कर व्यर्थ भव खोये।
बड़े सौभाग्य से गुरुवर ने ही, उर के पटल खोले।।1223।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. न धन की चाहना मुझको, न भय निर्धन ही होने का।
बनाऊँ कर्म को ईंधन, जलाऊँ वन ही कर्मों का।।1224।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. यशोधरा नाम है उसका, महायशवान वह धरती।
आदि प्रभु जन्म उत्सव में, स्वर्ग की कांति को हरती।।1225।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तिरस्कृत करती कांति तव, सभी कांतिक पदारथ की।
शांति मन में यहाँ बसती, ज्ञान की बन इमारत सी।।1226।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. स्फुरन् देह में होता, भक्ति रसपान करता जो।
हृदय पुलकित सदा रहता, निरखता निज में आदि को।।1227।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्फु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रमता जोगी बहता पानी, जगत में शुद्ध कहलाता।
रमण निज में किया प्रभु ने, जगत गुण इनके है गाता।।1228।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. दंत की पंक्ति मोती सम, सुमन सुन्दर से बिखराती।
बाल्यावस्था में माता देख, मंद-मंद होय मुस्काती।।1229।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. शुद्ध है आपका चेतन, शुद्ध हैं आपके सब गुण।
शुद्धता पाने को जिनवर, मचलता है मेरा यह मन।।1230।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. जाप जपता यहाँ निशदिन, आपके सद्गुणों की जो।
पाप नशता खान बनता, यहाँ निर्मल गुणों की वो।।1231।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. लम्पटी था मैं विषयों का, आज लिम्पित चरण से हूँ।
नाथ वर दो मुझे ऐसा, मुक्तिरमणी वरण कर लूँ।।1232।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

पूर्व दिशा सम, नाथ मात त्वं, जिनपति को जनने वाली।
हम अर्घ चढ़ाएँ, भक्ति बढ़ाएँ, मुक्ति पथ देने वाली।।

ॐ ह्रीं अद्भुतगुणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय
श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगास गामीणं झ्रौं झ्रौं नमः।

नज़र भरकर तुझे देखूँ तो इक तश्वीर बनती है,
मेरे दिल से नई अक्सीर बन करके निकलती है।
उसी अक्सीर को किरदार में कर दे उज़ागर तो,
नई तकदीर बन करके नई तासीर बनती है।।

शिरोरोग-नाशक

त्वा-मामनन्ति मुनयः परमं पुमांस-
मादित्य-वर्ण-ममलं तमसः परस्तात्*।
त्वामेव सम्य-गुपलभ्य जयन्ति मृत्युं,
नान्यः शिवः शिव-पदस्य मुनीन्द्र! पन्थाः।।23।।

चौपाई

मुनिजन तुमको कहें महान, काया स्वर्णमयी शुभधाम,
अंधकार बिन निर्मल हो तुम, तुमको करूँ विनम्र प्रणाम।
जो तुमको सच में पा जाते, उनके जन्म जरा मिट जाते,
मृत्युजयी वे हो जाते हैं, फिर अनुक्रम से शिवपुर पाते।।23।।

* पुरस्तात्

आशीर्विषर्द्धि सम्पन्नान्, समर्थान् क्षमयाचलान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं आशीर्विषेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सखी छन्द

1. नत्वा दर्शन जिनराज, हों सफल सभी मम काज।
तुम ज्ञानानन्द शरीरी, वंदन तुमको ऋषिराज।।1233।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. माता मरुदेवी रोकें, रणवास रानियाँ रोवें।
जब उर वैराग्य समाया, सारा वैभव ठुकराया।।1234।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. मन को मंदिर है बनाया, जिसमें प्रभु आदि सजाया।
गुणगान करूँ जिनराया, हमको तव रूप सु भाया।।1235।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. नंदा देवी व सुनंदा, करतीं मन को आनंदा।
उनको संबोधित करके, चमके जग में बन चंदा।।1236।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. तिरते हैं और तिराते, तीर्थंकर वे कहलाते।
श्रद्धा से उर में धरते, वे भवि भवजल से तरते।।1237।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. मुनि मानतुंग धन्य आज, करते वंदन जिनराज।
हुआ समयसार मय जीवन, मिली भक्ति की संजीवन।।1238।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. नभ में सुरगण उच्चारें, प्रभु आदि नाम जयकारें।
धनु पंच सहस हैं ऊपर, करते विहार वृषभेश्वर।।1239।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. यः सर्वज्ञ हितङ्कर, जिनवर हैं प्रथम तीर्थंकर।
है भू अम्बर सा अंतर, हम चरणों नमें निरन्तर।।1240।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. पर्वत सा चारित्र धारा, जो मेरु सम है न्यारा।
तेरह प्रकार बतलाया, आदि प्रभु ने विस्तारा।।1241।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रग-रग बहे ज्ञान की धारा, अविरल अविचल नहिं पारा।
हम भक्तों के उर आना, निज ज्ञान धार में बहाना।।1242।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मंत्रों में मंत्र प्रवर है, प्रभु आदि नाम सुखकर है।
जिसने श्रद्धा उर धारा, भव जल से मिला किनारा।।1243।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. पुण्य पाप दोय हैं बेड़ी, लगवाती भव-भव फेरी।
आदि प्रभु दोनों छोड़ीं, निज आतम से लौ जोरी।।1244।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. माम् रक्ष-रक्ष जिनदेवा, करता नित चरणन् सेवा।
प्रभु आप गुणों की मेवा, पा जाऊँ जो सुख देवा।।1245।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. सब वसुधा धन्य हुई है, जिनवर की ध्वनि खिरी है।
भवि जीव किया रस पाना, किया आतम का कल्याणा।।1246।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. माही समुद्र तारण को, गुण खानि रत्न धारण हो।
उत्कृष्ट दया से चिह्नित, समीचीन धर्म में स्थित।।1247।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. दिव्यादि सुधा बरसाते, भक्तों के उर विकसाते।
करें भव समुद्र से पारा, वंदूँ मैं बारम्बारा।।1248।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. नित्यानित्य सर्व पदारथ, दीना उपदेश यथारथ।
श्री आदिनाथ जिनराया, जग का कीना निस्तारा।।1249।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. वर्णन कीना जिनवर तन, शत अष्ट सहित गुण लक्षण।
हे अतिशय युक्त जिनेश्वर! करिये किरपा परमेश्वर।।1250।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. गुण रत्नों आप सजे हो, भवि अन्तर्तम नशते हो।
हे नंत गुणाकर स्वामी! तव चरणों में प्रणमामि।।1251।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. मत मिथ्या मोह को भजना, चाहे कालकूट विष भखना।
मिथ्या में दु:ख घनेरे, बुद्धिवंत तिन्हें निरवेरे।।1252।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. ममतामयी इस वसुधा पर, हुए मानतुंग जी गुरुवर।
"सूरि विनम्र" लघुनंदन, सारा जग करता वंदन।।1253।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. लम्पट नहिं जो विषयों में, लिप्पित हैं जिन चरणों में।
ऐसे गुरुओं की भक्ति, श्रद्धा उर में दे शक्ति।।1254।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तन्मय होकर जो ध्याये, मन वांछित फल पा जाये।
यही भक्त को मिली विभूति, पायी आतम अनुभूति।।1255।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. मथ दिये दर्प को भू पर, कहलाये दर्पमथनाकर।
वसुगुण प्रभु ने प्रकटाये, अवगुण अगुणी में पाये।।1256।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. स: पावे यश गरिमा को, य: गावे प्रभु महिमा को।
पूजक को पूज्य बनाया, प्रभु यही रूप तव भाया।।1257।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. पद्मासन योग लगाया, परमात्म परम पद पाया।
प्रभु नंत गुणों के धारी, तुम पद है धोक हमारी।।1258।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रस्ता सस्ता कर दीना, जिस पर प्रभु पग धर दीना।
मैं भी उस पर चल जाऊँ, अरु मुक्ति मंजिल पाऊँ।।1259।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. हे तात्! आप कहलाते, हम बालक हृदय बुलाते।
इक बार विराजो प्रभुवर, हृदयाँगन हो मम सुखकर।।1260।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तात्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. गत्वा सहस्र धनु पंच, शोभित है जिनवर मंच।
चारों निकाय सुर आते, भक्ति से महिमा गाते।।1261।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. मेरा मन अब यह चाहे, बतलाओ प्रभु शिव राहें।
जग वैभव को नहिं चाहूँ, बस वीतरागता पाऊँ।।1262।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. वज्रजंघ रूप थे आप, थीं श्रीमती जी साथ।
चारण मुनि को दे आहार, वरी भोगभूमि सुखकार।।1263।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. सम् शब्दों में संबोधा, ऋषिवर ने मन संशोधा।
सम्यक्त्व दिलाया स्वामी, बन गये आप जगनामी।।1264।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. यम भी आदि से डरता, नहिं निकट कभी आ सकता।
मृत्यु को जीता जिनवर, पाया पद फिर अजरामर।।1265।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. गुप्ति दिलवाती युक्ति, प्रकटाती है निज शक्ति।
मुक्ति की ताली दिलाती, कर्मों के बंध नशाती।।1266।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. परमाणु रंच न अपना, क्यों देखें खोटा सपना।
पर से ममत्व निरवारो, स्व में नित श्रद्धा धारो।।1267।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. उपलभ्य जिनेश्वर वाणी, अंतर में आनंद दानी।
सद् भक्तों के रखवारे, हैं आदि जिनेश हमारे।।1268।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लभ्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. यम नियम और संयम से, पालन करते तन मन से।
वे ही अविचल पद पाते, प्रभु आदीश्वर बतलाते।।1269।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. जब करते गुणों प्रशंसा, मन में कोई न शंसा।
तब यश कीर्ति बढ़ जाती, जन जन के मन को भाती।।1270।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. यन्निर्वाण समय में सुर नर, झुकते चरणों में आकर।
वे अग्निकुमार जु आके, नख केश भस्म कर जाते।।1271।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तिहुँ लोक चराचर दिखते, प्रभु ज्ञान गगन बिच रहते।
स्व पर का भेद प्रकाशा, निज में निज को ही भासा।।1272।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मृत्यु से जो घबराते, नहिं मृत्यु महोत्सव पाते।
तुम मृत्युंजयी जिनेश्वर, हो अजर अमर परमेश्वर।।1273।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मृत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. मृत्युं को मृत्यु दिखायी, यमराज है धाराशायी।
प्रभु जन्म मरण से रीते, चेतन प्राणों से जीते।।1274।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "युं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. ना आगम ज्ञान कराता, नहिं श्रद्धा संयम दाता।
जब आत्मज्ञान नहिं होई, तो साधकता भी रोई।।1275।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. अन्यः नहिं अपना होई, चाहे लाख जतन कर लेई।
प्रभु निज से निज में खोये, तब भव वन में न रोये।।1276।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. शिवनगरी के जो राजा, निज आत्म तत्त्व से साजा।
इक साथ अनन्तों रहते, स्वातम रसपान हैं करते।।1277।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. वर्चस्व आपका भारी, भवि जीवों को हितकारी।
प्रभु हो अनंत गुणधारी, भव्यों को हो सुखकारी।।1278।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. शिशु का वह प्रेम अपारा, मृगी छोड़ के सभी सहारा।
मृगपति से आन लड़ी है, निज शक्ति भूल खड़ी है।।1279।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वर पद्मराग मणियों से, सज्जित मुक्ता लड़ियों से।
वह सिंहासन अति प्यारा, जिस पर जिन रूप निहारा।।1280।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. परछाईं कभी न पड़ती, अद्भुत आभा तन सजती।
तन परमौदारिक धारी, तव चरणों धोक हमारी।।1281।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. दल दिया मोह मिथ्या को, क्षय कर पाया सम्यक् को।
फिर क्षायिक ज्ञान उपाया, चारित्र से रूप सजाया।।1282।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. यस्य प्रभु गुण गाते, प्रभु उनके भाग्य सजाते।
जिन चरण शरण जो आता, निज का वैभव वो पाता।।1283।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. मुझ बालक की सुन लीजै, हे नाथ! कृपा कर दीजै।
साक्षात्कार करवाओ, इक बार चरण में बिठाओ।।1284।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. नींदों में सपने देखे, सपनों में अपने लेखे।
नहिं पूर्ण स्वप्न कर पाया, प्रभु! हाहाकार मचाया।।1285।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नीं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. द्रव्य तत्त्व पदार्थ बताये, दश धर्म भी हैं सिखलाये।
प्रभु निज में धर्म उतारा, फिर धर्ममयी तनधारा।।1286।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. पंचेन्द्रिय दमन किया है, हमने उन्हें नमन किया है।
पंच परमेष्ठी सुखकारी, जग में हैं मंगलकारी।।1287।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. थाती चरणों में अर्पण, मन जीवन नाथ समर्पण।
हे आदि! अनंत जिनेश्वर, मम पूँजी दो परमेश्वर।।1288।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

मुक्ति पथ दर्शक, निर्मल तैजस, ज्योतिर्मय मुनिजन मानें।
प्रभु परम पुरुष हो, मृत्युञ्जयी हो, अर्घ चढ़ा हम गुण गायें।।

ॐ ह्रीं मनोवांछित-फलदायकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसी विसाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

गुरु का दर्श करने को तरसती हैं मेरी आँखें,
चरण पक्षाल करने को बरसती हैं मेरी आँखें।
गुमानी बनके गुरुवर की अगर गीबत कोई करता,
तो शोला बनके उस पर ही गरजती हैं मेरी आँखें।।

बुद्धि-वृद्धि प्रदायक

त्वा-मव्ययं विभु-मचिन्त्य-मसंख्य-माद्यं,
ब्रह्माण-मीश्वर - मनंत - मनंग - केतुम्।
योगीश्वरं विदित-योग-मनेक-मेकं,
ज्ञानस्वरूप-ममलं प्रवदन्ति सन्तः।।24।।

चौपाई

तुम हो अव्यय! आदि! अनंत! हो अचिन्त्य! विभु! केतुअनंग!
तुम असंख्य! ब्रह्मा! हो ईश्वर! एक! अनेक! विदित योगीश्वर!
निर्मल ज्ञान स्वरूप तुम्हारा, मुनिजन को लगता है प्यारा,
जो प्रभुवर को शीश झुकाए, बुद्धि बढ़ाए मुक्ति पाए।।24।।

तुम हो अव्यय! आदि! जिन! विभु! अविनाशी! धाम।
योगीश्वर! हे आदि जिन! तुम्हें "विनम्र" प्रणाम।।

दृष्टि विषर्द्धि योगीन्द्रान्, सर्वकोपातिगान् क्षमान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं दृष्टिविषेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा छन्द

1. त्वाम् जिन मेघ मयूर मैं, गरजो बरसो नाथ।
चित चैतन्य हो चित खड़ा, ऊपर करके माथ।।1289।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. महिमावंत महान हो, मरुदेवी के लाल।
महाभाग्य मैं हो गया, चरण झुकाया भाल।।1290।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. व्यय कर दीना कर्म का, अव्यय आप जिनंद।
अविनाशी पद पा लिया, जय जय जय भगवंत।।1291।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. यंत्र समां भगवंत हैं, तंत्र रूप त्वं रूप।
मंत्र बना प्रभु नाम है, जिनवर जग के भूप।।1292।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. विधि बतलायी मुक्ति की, अत: विधाता आप।
सर्व जगत को बोधकर, पहुँचे शिवपुर आप।।1293।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. भुवि के भूषण हो जिनम्, भक्तों के सरताज।
कृतकृत्य प्रभु हो गये, मम मन के हमराज।।1294।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. मनचाहा न होत है, फिर भी चाह करे।
शिव की राह चले नहीं, भव वन में भटके।।1295।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. चिंतन श्री जिनराज का, देता चेतन धाम।
चिर जीवित करता यहाँ, चित्त धरूँ दिन शाम।।1296।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. मर्त्यलोक के नाथ तुम, मृत्युञ्जयी जिनदेव।
सफल करो शिवकाज मम, करूँ चरण की सेव।।1297।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. मगन भक्तगण हैं यहाँ, चरणों नमन करें।
लिपट रहे प्रभु चरण से, जिन पथ गमन करें।।1298।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. सन्मति देकर नाथ ने, अमिट दिया वरदान।
श्रद्धा से नत हो गया, छोड़ा सकल जहान।।1299।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. असंख्य अक्षय हैं प्रभु, एक अनेक स्वरूप।
सर्व जगत में व्याप्त हैं, फिर भी ब्रह्म है रूप।।1300।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. मानो जिनवाणी वचन, गुरूदेव बतलायें।
उर में धारो जिनचरण, मुक्तिपुरी पहुँचायें।।1301।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. उद्यं करता जो यहाँ, पाता है वह अर्थ।
पुरुषारथ करता पुरुष, पाता है परमार्थ।।1302।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. ब्रह्मचर्य धारा महा, बने ब्रह्म जगदीश।
नमन करे सारा जगत, चरण झुकाए शीश।।1303।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. ब्रह्मा कहलाते प्रभु, रहे आत्म में लीन।
आत्म करूँ अवलोक निज, बनूँ स्वयं स्वाधीन।।1304।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह्मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. णमोकार है मंत्र महां, तंत्र बनाता देह।
जो इसमें डूबा यहाँ, स्वयं रूप परिणेय।।1305।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. मीन प्यासी ज्यों नीर में, चेतन तन में अचेत।
चेत चेत अब चेत जा, जिनवर करें सचेत।।1306।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. विश्व पटल पर नाम तुम, हुआ अटल जिनदेव।
अविचल धाम विराजते, करें चरण सुर सेव।।1307।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. रहित सप्त भय आप हो, भवि को अभय करेय।
वीतरागता युत जिनम्, शुभ विराग मम देय।।1308।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. महा प्रलय की वायु जो, कँपा रही सब सृष्टि।
आदि प्रभु निष्कम्प हैं, करते धर्म की वृष्टि।।1309।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नंद नाभि के हो तुम्हीं, जग को आनंद देत।
निजानंद के कारणे, वंदन करूँ जिनेश।।1310।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तत्त्व अतत्त्व प्रकाशते, आत्म तत्त्व में लीन।
ज्ञान ज्ञेय ज्ञायक प्रभु, हैं स्वतत्त्व लवलीन।।1311।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. महामोह को नाशकर, ज्ञान भानु प्रकटाय।
समवशरण में राजते, अमृत वचन सुनाय।।1312।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. नंत मिली पर्याय जो, किया उन्हीं का अंत।
करके नष्ट कषाय को, बने आप भगवंत।।1313।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. गङ्गा आयी हो यहाँ, ऐसा बहा समीर।
आदि प्रभु का न्हवन कर, नीर हो गया क्षीर।।1314।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. केशपाश में बाँधती, सुर ललना चित चोर।
नाभिनंद के सामने, चला न कुछ भी जोर।।1315।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "के" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तुंग धनुष शत पञ्च तनु, आभा स्वर्णिम देह।
समचतुरस्र संस्थान से, सजी आदि की देह।।1316।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. योग निरोध किया प्रभो, चौदह दिन जब शेष।
पंचाक्षर लघु के समय, नाशे कर्म अशेष।।1317।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. गीत गजल अरु भजन में, जिनवर के गुण गाय।
गुण को पाने के लिए, पुष्पांजलि चढ़ाय।।1318।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. अश्व गजों ने भी किया, निज आतम उद्धार।
आदि प्रभु का साथ पा, पाया निज का सार।।1319।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. रंग भक्ति का भर गया, जीवन था बेरंग।
रूप रंग को छोड़ कर, चलूँ जिनेश्वर संग।।1320।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. विद्या धन सबसे बड़ा, पूज्य बनाये लोक।
करे यहाँ उपयोग जो, पहुँचे ऊरध लोक।।1321।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. दिया यहाँ यदि दान तो, मिले ज्ञान सम्मान।
भोगों का उपभोग कर, योग धार निर्वाण।।1322।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तप धारो तन मनुज पा, करो कर्म को चूर।
आदि प्रभु धारण किया, बने धर्म के शूर।।1323।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. योजन बारह का वृहद्, समवशरण जिनराज।
भक्ति आकर जो करे, पाये सौख्य समाज।।1324।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. गगन गमन करके प्रभु, कीना धर्म प्रचार।
भवि जीवों ने बोध पा, पाया निज का सार।।1325।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मन से तन से वचन से, चेतन में अब डूब।
आदीश्वर बतला रहे, आप्त कला यह खूब।।1326।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. नेह किया पर से यहाँ, पर ने किया सदेह।
नेह करो वृषभेश से, बन जाओगे विदेह।।1327।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. कर पर कर को धर लिया, करना नहिं कुछ और।
आदि प्रभु दिखला दिया, कर्तव्यों का छोर।।1328।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. मेरा तेरा कर यहाँ, डेरा बना संसार।
तेरा तुझको सौंप कर, आदि हुए भव पार।।1329।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. कंत बने मुक्ति वधु, किया कर्म का अंत।
आदि प्रभु जयवंत हो, मुझे बनाओ संत।।1330।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. ज्ञान और वैराग्य से, खुले मुक्ति का द्वार।
तीर्थंकर ने कह दिया, मनुज जन्म का सार।।1331।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्ञा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. नयन नीर भर आये जब, देख परायी पीर।
नमन करूँ जिनदेव को, आप बँधाया धीर।।1332।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. स्वर्ण है शुद्ध स्वभाव ज्यों, त्यों ही आतम शुद्ध।
शुद्ध बुद्ध जिनदेव तुम, दर्शन कर भवि मुग्ध।।1333।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रूप आपका देखकर, निज स्वरूप की चाह।
आदिम तीर्थंकर प्रभो, शिवपुर की दी राह।।1334।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. पर दे दो ऐसे प्रभो, उड़ जाऊँ आकाश।
अविरल बढ़ता ही रहूँ, पाऊँ पद निर्बाध।।1335।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मत डर मत डर मरण से, मरण मोक्ष सोपान।
आदिनाथ जिनदेव ने, दिया सभी को ज्ञान।।1336।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. मर मर कर मरते फिरे, मरण न पाया छोर।
आदि गुणों में रमण कर, पाया भव का कोर* ।।1337।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. लंगड़ा भी सुरगिरि चढ़े, चील उड़े इक पाँख।
तीर्थंकर जिनदेव ने, देख लिया जिसे आँख।।1338।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. प्रलयकाल की पवन चले, मेरु को न डिगाय।
ऐसा जिनवर देव मन, मृगनयनी न चलाय।।1339।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वन जाकर के तप करो, करो न ढीला शील।
आत्म सरोवर में रमो, यही ब्रह्म की झील।।1340।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*किनारा

53. दंद फंद से रहित जिन, मंद मंद मुस्कान।
बंध मिटाये जगत के, आदिनाथ भगवान।।1341।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तिहुँ जग की पीड़ा हरें, कल्पवृक्ष सम आदि।
भविजन गुण के ध्यान से, हरें करोड़ों व्याधि।।1342।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. संकल्पित हूँ आज मैं, विकल्प का कर त्याग।
जिन प्रभु को उर में सजा, जड़ का तजकर राग।।1343।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. अतः आदि के पद कमल, पूज्य पाद कहलाएँ।
जो पूजे श्रद्धा सहित, अजर अमर पद दाय।।1344।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

अव्यय विभु आदिक, नाम जिनाधिप, ज्ञानरूप सज्जन कहते।
अठ सहस जु नाम, करें प्रणाम, अर्घ बना चरणों धरते।।

ॐ ह्रीं सहस्र-नामाधीश्वराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठि विसाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

तहे दिल से खुदा को जो न माने भार ढोता है,
ये दुनियाँ में सभी पाकर करोड़ों बार रोता है।
भँवर के बीच फँस करके गुरु पर ही भरोसा है,
उसी बंदे का तूफां में सफ़ीना पार होता है।।

दृष्टि-दोष निरोधक

बुद्धस्त्व-मेव विबुधार्चित-बुद्धि-बोधात्,
त्वं शंकरोऽसि भुवन-त्रय-शंकरत्वात्।
धातासि धीर! शिवमार्ग-विधे-र्विधानात्,
व्यक्तं त्वमेव भगवन्! पुरुषोत्तमोऽसि।।25।।

चौपाई

बुद्ध तुम्हीं हो केवलज्ञान, देवों से पूजित भगवान,
तुम ही शंकर तुम्हीं विधाता, मार्ग विधेयक शिवसुख दाता।
पुरुषारथ को व्यक्त किया है, अर्हत् पद को प्राप्त किया है,
तुम ही प्रभु पुरुषोत्तम जग में, सबने तेरा मान किया है।।25।।

गृहीत तपसोऽत्यक्तान्, यतीनुग्रतपोयुक्तान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं उग्रतपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानोदय छन्द

1. बुध पा विमल बोध से जिनवर, सुधा निरन्तर पीता है।
तृष्णा उसको नहीं सताती, सुखमय जीवन जीता है।।1345।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. क्रुद्धः युद्ध में होकर के गज, करता है चिंघाड़ यहाँ।
शुद्ध भाव से नाम जपे प्रभु, द्विप* भय से फिर डरे कहाँ।।1346।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्धः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. अस्त न होता त्वत् प्रभाव है, मस्त रहें निज आतम में।
प्रशस्त भाव से भरकर के प्रभु, व्यस्त रहें परमातम में।।1347।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. मेला है यह सारा जग ही, बड़ा झमेला फैल रहा।
भक्त अकेला आन खड़ा है, प्रभु को इक टक देख रहा।।1348।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. वसनाभूषण आभरणों से, अब तक तन शृंगार किया।
जिनवर की छवि लाकर उर में, अब मन का शृंगार किया।।1349।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. विमल सलिल सा निर्झर झरता, लगता सबको मनहारी।
चौंसठ चँवर ढुरें जब ऊपर, शोभा प्रभु की है न्यारी।।1350।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. बुद्धि नहीं प्रकट कर पाये, बुद्धू बनकर जिये यहाँ।
आदीश्वर की भक्ति कर लो, बुद्धि ऋद्धि को वरो जहां।।1351।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*हाथी

8. धारा यहाँ मनुज तन दुर्लभ, दुर्लभ जिन गुरु पा शरणा।
हे जिनवर! वर दो मुझे ऐसा, बोधि दुर्लभ को वरना।।1352।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. अर्चित हैं आबाल वृद्ध से, वंदित शत इन्द्रों से जिन।
चर्चित हो प्रभु सकल विश्व में, अर्पित चरणों में तन मन।।1353।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र्चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. तत्त्वों के श्रद्धान से देखो, अंजन बना निरंजन है।
भंजन करके सब कर्मों का, बना सुआतम रंजन है।।1354।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. बुद्धि मुझमें नहीं है भगवन्, फिर भी गुण को गाता हूँ।
श्रद्धा से भरपूर हुआ हूँ, चरणों शीश झुकाता हूँ।।1355।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. शुद्धि मन की सिद्धि प्रदायी, अनुभव को प्रकटाती है।
शुद्ध भावना वर दो जिनवर, जो उपयोग रमाती है।।1356।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. बोध कराता शोध जगत में, मन का क्रोध मिटाता है।
आदीश्वर जिन शोध कर लिया, जो निज बोधि प्रदाता है।।1357।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. क्रोधात् नहिं मिले शांति, बोध नशाता भ्रान्ति को।
जिनवर का उपदेश मिले तो, प्रकाश मिलता कान्ति को।।1358।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धात्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. त्वं जिन सूरज इस जगती के, लोकालोक प्रकाश करो।
मम उर में प्रगटो हे जिनवर! आतम तत्त्व विकाश करो।।1359।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. शंखनाद होता भवनों में, घंटे बजते कल्पों में।
जब जन्मे आदीश्वर स्वामी, बजे नगाड़े व्यन्तरों में।।1360।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. कनक कामिनी कंचन जग में, अधोगति के कारण हैं।
नाथ आपने त्रैविध से इन, कीना यहाँ निवारण है।।1361।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. रोक सकें न बाँध सकें प्रभु, अपने शब्दों से तुमको।
अव्याबाध के गुण से भूषित, कौन नाप सकता प्रभु को।।1362।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि लोरी, जिनको मात सुनाती है।
वे होते निर अंजन जग में, महिमा गौरी* गाती है।।1363।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽसि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भुवनपति, भुवनेश्वर जिनवर, आप हृदय में आ जाओ।
भगवत्पद जो तुमने पाया, मुझको नाथ दिला जाओ।।1364।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वर थे नंदा और सुनंदा, फिर भी शिवनारी वर ली।
द्वैतभाव को त्याग जिनेश्वर, प्रीति अद्वैता से कर ली।।1365।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नमोऽस्तु पद है बीज रूप जो, लाखों फल देने वाला।
अगणित फल तो नाशवान हैं, अविनश्वर फल दे डाला।।1366।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. त्रय योगों को वश में करके, अयोग का प्रभु लक्ष्य बना।
योगों में प्रभु अचल मेरु सम, धरा बन गये धार क्षमा।।1367।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. यथा शक्ति अरु यथा भक्ति से, दान पात्र को देता है।
जिनवर कहते वह भवि प्राणी, भोग भोग सुर बनता है।।1368।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. शंकालु प्राणी जीवन में, सदा व्याकुल रहता है।
निःशंकित होता भवि जब भी, मुक्ति पथ पर चलता है।।1369।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*जिनवाणी

26. कवलाहार रहित जिनवर जी, केवलज्ञान सहित शोभे।
जो भी भविजन करे पासना*, वे आहार रहित होते।।1370।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रत्नत्रय से हुए विभूषित, त्रय जग में प्रभु पूज्य हुए।
शुद्ध उपयोगी ज्ञान शरीरी, तुम सम नहिं कोई दूज हुए।।1371।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. वात्सल्य का निर्झर झरता, ज्ञान की अविरल धारा में।
वीतरागमय भाव झलकता, आत्मज्ञान की काया में।।1372।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वात्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. धारण कर समभाव प्रभुवर, राग भाव है तज डाला।
इन्द्रिय विषयों के ऊपर ही, लगा दिया तुमने ताला।।1373।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. ताज नहीं कोई जिनके सिर, जग सरताज कहाते हैं।
ज्ञान सरोवर प्रभु आपके, भविजन खूब नहाते हैं।।1374।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. सिखा दिया प्रभु पाठ अहिंसा, जीव दया का दे उपदेश।
दया भावना भर दी उर में, नहीं किसी से बैर महेश।।1375।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. धीजन करते ध्यान गुणों का, शोधन निज के अवगुण का।
आदि जिनेश्वर का आराधन, बोध कराये निज गुण का।।1376।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. रसिक धर्म का जो भी प्राणी, युगल चरण का दास बने।
आदीश्वर की कृपा पात्र वह, शीघ्र ही सारे कर्म हने।।1377।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. शिथिल हुए कर्मों के बन्धन, निर्बन्धन के सुमिरन से।
फणिन् बंध ढीले पड़ जाते, सुन शिखण्डि के शब्दन् से।।1378।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*उपासना

35. वन भी उपवन सा खिल जाता, जहाँ आपके चरण पड़ें।
भक्तों का मन भी खिल जाता, हृदय आपका वरण करें।।1379।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मार्ग दिखाया तुमने शिवपुर, हे मुक्तिपुर! के वासी।
चलने का पुरुषार्थ जगाया, हुआ पथिक वो सन्यासी।।1380।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मार्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. गहरी जितनी प्यास है जिसकी, वह उतना ही तृप्त हुआ।
ढूँढ़ा प्रभु को भव-भव भटका, निज अंदर प्रभु दर्श किया।।1381।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. विज्ञ जनों से सेवित जिनवर, अज्ञ जनों से दूर रहें।
निज चेतन के ज्ञान सघन वन, में ही प्रभुवर भ्रमण करें।।1382।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. विधेर्विरत हैं शाश्वत प्रभुवर, देह रहित जिन भास्वत हैं।
भक्त आपका चाहे मुक्ति, जो अक्षय अरु शाश्वत है।।1383।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धेर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. विराग हो तुम अमूर्त भी हो, अनुभव के हो जन्य यहाँ।
धन्य जिनेश्वर तुम हो किंतु, भक्त आपका धन्य कहा।।1384।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. धारक धर्म के धर्मेश्वर तुम, हो सुखधाम जिनेश्वर जी।
तव थुति को मैं करूँ निरंतर, धर्म जगे द्रुत मम उर ही।।1385।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नाद् सिंह का हुआ अचानक, सिंह वृत्ति जिनवर जन्मे।
ज्योतिष मण्डल उमड़ पड़ा तब, गिरि मेरु जिनवर पहुँचे।।1386।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नाद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. व्यर्थ गँवाया अब तक जीवन, केवल अर्थ संजोने में।
केवलिजिन दर्शन अब पाया, समय न खोना सोने में।।1387।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. व्यक्तं करके पुरुषारथ को, परमारथ का लक्ष्य बना।
व्यक्त किया सब मोह जाल को, प्राप्त किया निज सार घना।।1388।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. सत्त्व नाशकर सर्व कर्म का, तत्त्व स्वरूप को प्राप्त किया।
हे करुणाकर! शरणागत को, परमतत्त्व का दान दिया।।1389।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मेरा तेरा करके जग में, बहु मिथ्यात्व बढ़ाया है।
जिनवर ने तज दिया युगल को, अरु निज तत्त्व को पाया है।।1390।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. वश में निज के रहता प्राणी, वह शिवपुर को जाता है।
परवश में जो पड़ा यहाँ पर, आदि दर्श नहिं पाता है।।1391।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. भव्य कमल विकसित होते जब, जिनवर सूर्य की किरण पड़े।
क्षण भर में क्षय होते कल्मष, ज्यों आदिश्वर दर्श मिले।।1392।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. गण के स्वामी गुण अभिरामी, तव आगम निर्भ्रान्त रहा।
हे जिनवर! तव चरण समागम, सुर सुख शिवसुख शान्त रहा।।1393।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. वन् में हो या भवन में स्वामिन्, सुख में हो या दुःख विभो।
नाथ आपके सुमिरन का ही, काम हो आठों याम प्रभो।।1394।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. पुरुषों में तुम पुरुष श्रेष्ठ हो, परमेष्ठी पद के धारी।
परम ब्रह्म में आप रमे हो, मुक्ति पद के अधिकारी।।1395।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रूप तुम्हारा सबसे न्यारा, अनुपम बोध कला उर में।
आप सहारा जग में प्यारा, भव्यों के बसते उर में।।1396।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. षोडस भावन का फल पाया, तीर्थंकर की प्रकृति महां।
सर्व जगत का वैभव आकर, चरणों में झुक गया यहाँ।।1397।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. वित्त में चित्त लगाया जिसने, चिदानन्द नहिं पाया है।
चित् चैतन्य प्रभु जिन ध्याया, परमानन्द उपाया है।।1398।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. मोक्षमार्ग के आप विधाता, मोह के अपहर्ता जिनवर।
परीषहों पर विजय प्राप्त कर, कर्म क्षरण कर्ता प्रभुवर।।1399।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि जिनवर, निरंजनोऽसि आप महान।
जिन गुण से परिपूरित प्रभुवर, वो पाने करता गुणगान।।1400।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽसि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

हो बुद्ध विधाता, शम के दाता, पुरुषोत्तम कहलाते हो।
श्रद्धा से गायें, अर्घ चढ़ायें, उन्हें मोक्ष पहुँचाते हो।।

ॐ ह्रीं षड्दर्शन-पारंगताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्ग तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

अगर मेरे हृदय में प्रेम का संचार हो जाता,
तो दुनियाँ से यहाँ कबका मेरा उद्धार हो जाता।
गुरु के बिन भटकता ही रहा ठोकर कई खाई,
गुरु इक बार मिल जाते तो बेड़ा पार हो जाता।।

अर्द्ध-शिर पीड़ा विनाशक

तुभ्यं नमस् - त्रिभुवनार्ति-हराय नाथ!
तुभ्यं नमः क्षिति-तलामल-भूषणाय।
तुभ्यं नमस्-त्रिजगतः परमेश्वराय,
तुभ्यं नमो जिन! भवोदधि-शोषणाय।।26।।

चौपाई

त्रिभुवन के दुःख हरने वाले, नमन् तुम्हें भव तिरने वाले,
क्षितितल के निर्मल आभूषण, नमन् तुम्हें गुण वरने वाले।
तीनों जग के परमेश्वर हो, मन से तन से तुम्हें नमन् हो,
भव सागर को शोषण करते, हे प्रभु! तुमको सदा नमन हो।।26।।

प्रदीप्त तपसा संयुक्तान्, रवितेजोऽधिकप्रभान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं दीप्ततपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छन्द

1. तुम गुण अनंत के धारी, प्रभु शुद्ध उपयोग विहारी।
दुर्जय रिपु मोह हराया, वंदन तुमको जिनराया।।1401।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. तुभ्यं पद कमल नमन है, तव गुण में चित्त मगन है।
धारा रत्नत्रय प्यारा, प्रभु तुम में ज्ञान अपारा।।1402।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. नहिं राग द्वेष तुम मन में, वैराग्य भरा जीवन में।
शास्त्रज्ञ पूज्य गणनायक, हम पूजें भाग्य विधायक।।1403।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. मस्ती में झूमें नाचें, भक्ति में तव गुण याचें।
चउ आराधन के स्वामी, पद पूजें हे अभिरामी!।1404।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. त्रिपुरारि नाथ कहाते, रत्नत्रय हृदय सजाते।
हे ज्योतिर्मयी! जिनेश्वर, हम पूजें पद परमेश्वर।।1405।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. भुवि के निर्मल आभूषण, नहिं रंच है जिनमें दूषण।
जिन आगम के सरताजा, जयवंत रहो जिनराजा।।1406।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. वर्णन गुण कैसे गाऊँ, वाणी में वर्ण ना पाऊँ।
बस इकटक रूप निहारूँ, तव छवि को उर में धारूँ।।1407।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. नार्त्त ध्यान को करते, भवि धर्म ध्यान में रमते।
प्रभु शुक्ल ध्यान के धारी, तव चरणों धोक हमारी।।1408।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नार्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. तिरछी है चाल व दृष्टि, नहिं श्रेष्ठ कभी हो सकती।
प्रभु वचनों को उर लाओ, सम्यग्दृष्टि बन जाओ।।1409।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. हम भक्त द्वार पर आये, भगवान से नेह लगाये।
जग है स्वारथ का मेला, प्रभु मैं हूँ भक्त अकेला।।1410।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. रागादिक भाव नशाए, प्रभु वीतरागता पाए।
प्रभु तुम हो नाथ अनाथ, हम चरण नवाएँ माथ।।1411।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. यशकीर्ति आप सहेली, चारों दिश में है फैली।
दश दिश करतीं तव वंदन, हे नाभिराय के नंदन!।1412।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. नागेन्द्र ध्यान हैं धरते, अघ बंधन उनके कटते।
इक नजर है जिस पर डाली, उस भवि ने पायी शिवाली।।1413।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. थम गया समय भी उस पल, जब जन्म हुआ प्रभु भूतल।
संपूर्ण लोक सुख छाया, नरकों में आनंद आया।।1414।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. तुम प्रतिमा खड़ी विशाल, मांगीतुंगी के भाल।
दर्शन करते नर नारी, अरु पुण्य कमाते भारी।।1415।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. अभ्यं करता पद वंदन, हे मरुदेवी के नंदन!
तुम मात पिता हो भ्राता, देते जीवों को साता।।1416।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. नमना चाहूँ त्रययोग, तजना चाहूँ भव भोग।
जब हो जीवन की शाम, पा जाऊँ मैं शिवधाम।।1417।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. नमः सिद्ध उच्चारण कीना, पण मुट्ठी लुंचन कीना।
दीक्षा ले तप को धारा, छह मास का योग सँवारा।।1418।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. क्षितितल के निर्मल भूषण, मम दूर हटाओ दूषण।
शिव अंगना वरने वाले, हम भक्तों के रखवाले।।1419।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तिरते जो स्वयं तिराते, अरु धर्म तीर्थ हैं चलाते।
वे तीर्थंकर कहलाते, उन आदि चरण सिर नाते।।1420।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तपकर लोहा ज्यों जल को, आकर्षित करता तल को।
त्यों प्रभु आपका तप भी, आकर्षित करता भवि को।।1421।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. लागी है लगन मुझे भी, पाऊँ निज धाम प्रभु जी।
अब चाह नहीं तन मन की, मैं राह चलूँ चेतन की।।1422।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. मन हर्षे दान को देकर, वह दाता है श्रेयस्कर।
दानी सुख सम्पत्ति पाये, क्रम कुलकर शिवपुर जाये।।1423।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. लखकर प्रभु लक्ष्य बनाया, हमने पुरुषार्थ बढ़ाया।
निष्कर्म हो आदि जिनेश्वर, हम चरण आये परमेश्वर।।1424।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. भूखा निज भूख मिटाता, नहिं काल कूट विष खाता।
दर्शन जिनदेव का प्यारा, नहिं अन्य देव मन हारा।।1425।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. षड् अंश दान जो देता, वह बीज सुखों के बोता।
कहती जिनगुरु की वाणी, होवे नहिं कोष की हानि।।1426।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. णाणं णरस्स का सारो, यह वाक्य हृदय में उतारो।
कहते हैं आदि जिनेश्वर, तुम बनो ज्ञान परमेश्वर।।1427।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. यशगान करे जो प्राणी, ख्याति पाये जग नामी।
शुभ गान यहाँ हम गायें, आतम ख्याति को पायें।।1428।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तुम पद हैं मानसरोवर, भवि हँस बसें कमलाकर।
हो नीर क्षीर सम ज्ञान, करते आतम कल्याण।।1429।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. तुभ्यं मुनीन्द्र वंद्यं हो, बैरी कुकाम हंतं हो।
गुणसागर आप जिनेश्वर, सुख मिला आज परमेश्वर।।1430।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. नमूँ मन वच काय जिनेश्वर, नमते हैं संत सुरेश्वर।
स्तुति है आप निराली, कट जाये मेरी भवाली।।1431।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. मस्ती में मस्त हुआ जो, दुर्गति में त्रस्त हुआ वो।
त्राता की शरण में आओ, भव भव के दुःख मिटाओ।।1432।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. त्रिञ्शत त्रेसठ मत सारे, हैं ये जिनमत से न्यारे।
प्रभु का मत है भव तारक, भवि जीवों को सुखकारक।।1433।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जन्मत त्रय ज्ञान थे पाये, दीक्षा ले चतुर उपाये।
फिर केवलज्ञान को पाया, जो है केवल असहाया।।1434।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. गणना के योग्य नहीं गुण, अगणित गुणधारी हे जिन!
हो गया जन्म मम धन्य, प्रभु पाये त्रिभुवन वंद्य।।1435।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. धन्य: जिनेन्द्र जहाँ पाँव, सुरगण तहाँ कमल रचाव।
प्रभुवर हैं गगन विहारी, द्वय चरणों धोक हमारी।।1436।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. पद हैं द्वय कमल से कोमल, पाकर धुल जाता सब मल।
चरणों की रज को पाया, अपना सौभाग्य बनाया।।1437।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रखते प्रभु चरण जहाँ पर, तीरथ बन जायें वहाँ पर।
जग जीवन के उद्धारक, हे देव! महा सुखकारक।।1438।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. मेरा मन आप में रमता, जैसे अलि पंकज थमता।
कमलाक्ष नेत्र हैं प्यारे, शोभें केशर को धारें।।1439।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. स्वजन भी कभी स्वजन थे, रिश्ते भी उनसे बने थे।
प्रभु रिश्ते सभी मिटाये, रस्ता शिवपुर का दिखाये।।1440।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. राजा अरु रंक समां हैं, प्रभु समवशरण की सभा है।
चरणों में आकर प्राणी, हो तृप्त सुने प्रभुवाणी।।1441।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. यम भी जिनसे भय खाता, नहिं निकट आपके आता।
मृत्यु को जीत लिया प्रभु, अजरामर पद पाया विभु।।1442।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तुमसे ही मिली यश मेवा, मैंने न करी कुछ सेवा।
जिनवर की महिमा अपार, मम नमन करो स्वीकार।।1443।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तुभ्यं मम नमन हजार, मुझ पर कीना उपकार।
पाया तव दर्श जिनेश्वर, मम स्वप्न हुआ साकार।।1444।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नर सुर करते जयकार, प्रभु शिवनारी भरतार।
सब आधि व्याधि मिटाकर, अनुपम सुख के बने आगार।।1445।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मोही सब जीव जगत के, करते क्रन्दन भव फँस के।
प्रभु आप मोह निरवारा, भवनिधि से किया किनारा।।1446।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. जिनका सौभाग्य जगा है, उनने प्रभु ध्यान किया है।
शुद्धोपयोग का हार, उनके ही कण्ठ सजा है।।1447।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. नहिं चाहे सुर संपत्ति को, जड़ मानें सदा विपति को।
लेते निज निधि का सहारा, वे पाते भव का किनारा।।1448।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. भव संतिति को निरवारा, भगवत्ता को उर धारा।।
फिर श्रेणी आरोहण से, अरहंत परम पद पाया।।1449।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सर्वोत्तम धर्म तुम्हारा, करता जीवन उजियारा।।
प्रभु दया धर्म के धारी, चरणों में धोक हमारी।।1450।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. दर्शन जो भी कर जाए, वह दर्शनीय बन जाये।
निज दर्शन लक्ष्य हमारा, दे दो प्रभु जी उपहारा।।1451।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. धिक्कार है उस जीवन को, जिसमें न प्रभु वंदन हो।
भोगों में समय गँवाया, कर्मोदय में भरमाया।।1452।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. शोषक हो भव सिंधु के, पोषक हो भवि बंधु के।
नैया के तुम्हीं खिवैया, प्रभुवर हो मम रखवैया।।1453।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. षट् रस का त्याग किया है, इक्षुरस पान किया है।
पंचाश्चर्य देव कराये, श्रेयांस नृपति हर्षाये।।1454।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. णाणी निज ज्ञान गुहा में, रहते निमग्न समता में।
पर परिणति को नहिं चिंतें, निजज्ञान सिंधु में नंदें।।1455।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. यश प्राप्ति हेतु अज्ञानी, करते रहते मनमानी।
खाई समान है ख्याति, ऐसा जिनवाणी बताती।।1456।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

हरते दु:ख दूषण, जग आभूषण, त्रिभुवन के परमेश्वर हो।
भवदधि के शोषक, भविजन पोषक, सविनय अर्घ समर्पण हो।।

ॐ ह्रीं नाना दु:ख विलीनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्त तवाणं झ्रौं झ्रौं नम:।

गुरु के नाम की माला सभी अज्ञान हरती है,
मिले वरदान वाणी को तो किश्मत काम करती है।
तहे दिल से जो हो अर्पण तो सारे काम बनते हैं,
उसी की नाव सागर में किनारा प्राप्त करती है।।

श्लोक नं.27

शत्रु-उन्मूलक

को विस्मयोऽत्र यदि नामगुणै-रशेषैस्-
त्वं संश्रितो निरवकाश-तया मुनीश।
दोषै-रुपात्त - विविधाश्रय - जात-गर्वै:,
स्वप्नान्तरेऽपि न कदाचि-दपीक्षितोऽसि।।27।।

चौपाई

अच्छे गुण को तुमने पाया, अवगुण एक नजर नहिं आया,
इसमें क्या अचरज है भाई, गुणियों में गुण पिण्ड समाया।
अहंकार प्रभु में नहिं पाये, स्वप्न समय भी दिख नहिं पाये,
अवगुण अवगुणियों में जाते, हे प्रभु! तुझमें गुण भरमाए।।27।।

विडादि रहितान् धीरान्, मुनींस्तप्त तपोऽन्वितान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं तप्ततपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

1. कोटि सूर्य की कांति भी फीकी पड़ी,
जब जिनवर के भामण्डल की द्युति खड़ी।
आदिनाथ की गुण महिमा हम गा रहे।
निज अंतस् के भक्ति सुमन विकसा रहे।।1457।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "को" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. विस्मय ऐसा कहीं न देखा हे जिनम्!
सुंदर परमाणु से निर्मित तव तनम्।। आदिनाथ...।।1458।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "विस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. मरण समाधि का अंतर में भाव ले।
आया शरण तुम्हारी यह प्रस्ताव ले।। आदिनाथ...।।1459।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. योजन बारह तक सुभिक्ष फैला परम।
केवलज्ञान का अतिशय दिखलाया जिनम्।। आदिनाथ...।।1460।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. कोऽत्र जगत में सुखी दीखता प्राणी है।
धर्म धरा जीवन में, सुनि जिनवाणी है।। आदिनाथ...।।1461।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽत्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. यमी दमी उद्यमी हुये विधि शांत कर।
धन्य आप संसार मिटाया ध्यान कर।। आदिनाथ...।।1462।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. दिशाबोध दे दशा सुधारी भव्य की।
करुणा के सागर की हमने भक्ति की।। आदिनाथ...।।1463।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. नाम कर्म का नाम मिटाया आपने।
गुण सूक्ष्म को प्रकटाया प्रभु आपने।।
आदिनाथ की गुण महिमा हम गा रहे।
निज अंतस् के भक्ति सुमन विकसा रहे।।1464।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. मनुज लोक से पूजूँ प्रभु को रात दिन।
मुक्ति कैसे मिले प्रभु जी आप बिन।। आदिनाथ...।।1465।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. गुरुओं के भी गुरुवर आदि जिनेश जी।
गुप्ति समिति व्रतधारी हे परमेश जी!। आदिनाथ...।।1466।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. क्षणै-क्षणै मैं भक्ति जिनवर की करूँ।
गुण महिमा का हरपल ही सुमिरण करूँ।। आदिनाथ...।।1467।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. रग-रग में जिनदेव हमारी बस रहे।
रोम-रोम को देखो पुलकित कर रहे।। आदिनाथ...।।1468।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. शेर हिरण आदिक पशु बैठे साथ हैं।
समवशरण में जिनवर लख हर्षात हैं।। आदिनाथ...।।1469।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. अशेषैस्त्वं आश्रित गुण होकर रहें।
ऐसा अचरज देख भविक भक्ति करें।। आदिनाथ...।।1470।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षैस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. त्वं गुण की चाकरी करेंगे हर जनम्।
जन्म मरण का दौर मिटा दो हे जिनम्!। आदिनाथ...।।1471।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. संग त्याग कर ऋषिगण बैठे हैं परम।
समवशरण में आदि बताया है धरम।। आदिनाथ...।।1472।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. श्रित आश्रित रहते हैं भविजन जो चरण।
मुक्तिश्री को शीघ्र करेंगे वे वरण।।
आदिनाथ की गुण महिमा हम गा रहे।
निज अंतस् के भक्ति सुमन विकसा रहे।।1473।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तोल-मोल कर बोल सिखाया आपने।
वच में मिश्री घोल सुनाया आपने।। आदिनाथ...।।1474।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. निक्कम्मा हो आप विराजे सिद्ध शिला।
अष्ट गुणों के धारी करते जग भला।। आदिनाथ...।।1475।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. रसिक आत्म के आत्मानन्दी देव हैं।
शतक इन्द्र भी करें चरण की सेव हैं।। आदिनाथ...।।1476।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वर्धित धन-वैभव को करती भक्ति है।
कर्म नाश का हेतु निजातम शक्ति है।। आदिनाथ...।।1477।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. कामदेव भी दास बने शिवनाथ के।
कर्म विजेता नेता हो शिवपाथ के।। आदिनाथ...।।1478।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. शरद पूर्णिमा का शशि भी शरमात है।
आदि जिनेश्वर की आभा सौगात है।। आदिनाथ...।।1479।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तन्मय हो लखते स्वातम के वेश को।
वैरागी बन चाहें शिवपुर देश को।। आदिनाथ...।।1480।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. यात्रा कर पाया जब निज के देश को।
सिद्ध शिला पर जा बैठे अखिलेश हो।। आदिनाथ...।।1481।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. मुखरित होते हैं भविजन के भाग्य से।
जिनवाणी का पान करूँ सौभाग्य से।।
आदिनाथ की गुण महिमा हम गा रहे।
निज अंतस् के भक्ति सुमन विकसा रहे।।1482।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्र अर्घ्यं...।

27. नीति नियम बतलाये युग के आदि से।
चले नियम अनुसार बचे वो व्याधि से।। आदिनाथ...।।1483।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. शक्र पुरन्दर आदि आदि के चरण जजें।
भक्ति कर सम्यक्त्वादि गुण को जचें।। आदिनाथ...।।1484।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. दोष अठारह रहित जिनेश्वर आप हैं।
गुण छियालीस से युक्त नशें संताप हैं।। आदिनाथ...।।1485।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. दोषैः से भर कर्म बंध हमने किया।
निर्दोषी के चरण बैठ कहता जिया।। आदिनाथ...।।1486।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. रुका उसी का कर्म बंध जो झुका चरण।
जिनवर के चरणों में हो सम्यक् मरण।। आदिनाथ...।।1487।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. पामर हूँ मैं परम भक्ति वर दीजिए।
पावन करके निज सम शक्ति दीजिए।। आदिनाथ...।।1488।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. चित्त हमेशा मेरा चंचल ही रहा।
थिर उपयोग बिना भव में भ्रमता रहा।। आदिनाथ...।।1489।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. विष भक्षण से भूख मिटाना नहिं कभी।
अन्य देव के चरणों जाना नहिं कभी।। आदिनाथ...।।1490।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. विस्मय आदि दोष अठारह मुक्त हैं।
जिन रवि किरणों से विकसित भवि पुष्प हैं।।
आदिनाथ की गुण महिमा हम गा रहे।
निज अंतस् के भक्ति सुमन विकसा रहे।।1491।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. धाम आपका सिद्धालय जो श्रेष्ठ है।
अगणित रहते सिद्ध न कोई ज्येष्ठ है।। आदिनाथ...।।1492।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. श्रवण करूँ जिन वचन सार्थक कर्ण हों।
सुनूँ न निंदा करूँ प्रशंसा वर्ण हों।। आदिनाथ...।।1494।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. यत्न मुक्ति का नहीं किया बीता समय।
प्रभु की भक्ति दिखाती मुझको स्वसमय।। आदिनाथ...।।1495।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जागो जगा रहे तुमको जिनराज जी।
त्यागो मोह चँदरिया कहें ऋषिराज जी।। आदिनाथ...।।1496।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. तपधारी मुनिराज कर्म को नाश कर।
पहुँचे शिवपुर धाम ज्ञान की आँख धर।। आदिनाथ...।।1496।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. गर्भ समय के पूर्व रत्न बरसाये हैं।
सुर गण भी सुन करके बहु हरषाये हैं।। आदिनाथ...।।1497।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. सर्वैः इन्द्रैः जिनवर की पूजा करें।
भाव बनायें ऐसे एक ही भव धरें।। आदिनाथ...।।1498।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. स्वर पाया शुभ योग तो प्रभु गुण गाइये।
गाकर गुण को स्वयं गुणी बन जाइये।। आदिनाथ...।।1499।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. स्वप्नांतर में दोष न छू पायें चरण।
गुणग्राही बनने को मचले है ये मन।।
आदिनाथ की गुण महिमा हम गा रहे।
निज अंतस् के भक्ति सुमन विकसा रहे।।1500।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तत्त्व द्रव्य का राज बताया आपने।
मुक्ति का सरताज बनाया आपने।। आदिनाथ...।।1501।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. रे प्राणी! सुन ले जिनवर ने जो कहा।
पर परिणति को छोड़ सु आतम है महां।। आदिनाथ...।।1502।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सोऽपि रतिपति देख आपको भग गया।
जिनवर की छवि लख करके भवि जग गया।। आदिनाथ...।।1503।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. नर से नारायण बनने का सूत्र दिया।
आदीश्वर ने जिन भक्ति का बोध दिया।। आदिनाथ...।।1504।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. कर्म महा दुःख देत तजे जिनराज जी।
कर्म नाश कर सिद्ध हुए शिवदाय जी।। आदिनाथ...।।1505।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. दाता और विधाता जग में श्रेष्ठ हो।
भक्तों का हित करने में प्रभु ज्येष्ठ हो।। आदिनाथ...।।1506।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. चित चैतन्य चमत्कारी आदीश जिन।
सुरगुरु भी भक्ति न करे प्रभु आप बिन।। आदिनाथ...।।1507।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. दयानिधि दलितों के उद्धारक प्रभो।
प्रतिपल वंदन करता भवतारक विभो।। आदिनाथ...।।1508।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. पीर हरो भव तीर चरण वंदन करूँ।
हूँ अधीर जिनवर चरणों क्रंदन करूँ।।
आदिनाथ की गुण महिमा हम गा रहे।
निज अंतस् के भक्ति सुमन विकसा रहे।।1509।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. क्षिति तल के सुन्दर आभूषण हो जिनम्।
केवलज्ञानी हुए किये दूषण क्षरन।। आदिनाथ...।।1510।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. तोरण द्वार सजाये प्रभु की आश में।
पलक पाँवड़े बिछा दिये प्रभु राह में।। आदिनाथ...।।1511।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. शुद्धोऽसि जिनदेव महा महिमा घणी।
महिमा लिखी न जाये समन्दर की मसी।। आदिनाथ...।।1512।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽसि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

शरणागत गुणगण, पाया आश्रय, अवगुण गये अभिमानी में।
निर्दोष आदि हैं, हरें व्याधि हैं, अर्घ चढ़ा शिवगामी बनें।।

ॐ ह्रीं सकलदोष-विनिर्मुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

मेरे गुरुदेव मुझको तुम निजातम रस पिला देना,
बुझा दिल का मेरा दीपक इसे गुरुवर जला देना।
न चाहूँ मैं यहाँ दुनियाँ न दौलत की तमन्ना है,
मेरे दिल में मेरी शौहरत गुलों जैसी खिला देना।।

सर्व-मनोरथ पूरक

उच्चै-रशोक-तरु-संश्रित-मुन्मयूख-
माभाति रूप-ममलं भवतो नितान्तम्।
स्पष्टोल्लसत् किरण-मस्त-तमोवितानं,
बिम्बं रवे-रिव पयोधर-पार्श्ववर्ति।।28।।

चौपाई

ऊँचा वृक्ष अशोक महान, फल-फूलित अति शोभावान,
उसके नीचे विराजमान, काया प्रभु की स्वर्ण समान।
नभ में ज्यों बादल छा जाएँ, सूरज उसमें से आ जायें,
ऐसे ही प्रभु शोभित होते, जैसे नभ में सूरज आये।।28।।

निज को निज में पायकर, पाया मोक्ष निधान।
उन प्रभु आदिनाथ को, करूँ "विनम्र" प्रणाम।।

महातपोयुतान् षण्मा–सादि प्रोषधकारकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं महातपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

छन्द–नरेन्द्र

1. उच्च देशना देकर भवि को, किया नंत उपकार यहाँ।
अतः आदि के गुण को गाता, ये सारा संसार यहाँ।।1513।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "उच्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. चित् चैतन्य रूप के धारी, चेतनता का दो वरदान।
आत्म बोध को प्राप्त करूँ मैं, ऐसा मुझको होवे ज्ञान।।1514।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. रमण करे प्रभु निज आतम में, निजानुभव का करते पान।
आत्म शान्ति के भूप जिनेश्वर, देते सबको निर्मल ज्ञान।।1515।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. शोभित होते समवशरण में, रवि शशि की कांति फीकी।
तेज पुञ्ज हो हे वृषभेश्वर! जग की सब उपमा जीतीं।।1516।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. करते हैं दुष्कर्म प्रताड़ित, मुझे बचालो हे भगवन्!
महाबली हे आदि जिनेश्वर! किए आपने सब अघ हन।।1517।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. तप्त दीप्त ऋद्धि से जिनवर, आकर्षित करता तव मन।
ऋषिगण निशदिन करें वंदना, आप गुणों में रहें मगन।।1518।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. रुकता कभी प्रभाव न जिसका, छिपता नहीं किसी से जो।
कुछ नहिं छिपा है जिससे जग में, ऐसा ज्ञानी ध्यानी वो।।1519।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. सम्मति से सन्मति देकर प्रभु, भव का भ्रमण मिटाते हो।
श्रद्धा से भर आन खड़ा हूँ, अपने दोष मिटाने को।।1520।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. श्रियापति हो भूपर जिनवर, निज आश्रित के आश्रय हो।
भक्त खड़ा है हाथ जोड़कर, जिसके तुम श्रद्धालय हो।।1521।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तड़क गये बंधन मुनिवर के, भक्ति आपकी करने से।
नृप आकर पड़ गया चरण में, हुआ धर्ममय भक्ति से।।1522।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. मुण्डन किया केश का किन्तु, क्लेश मिटा नहिं लेश यहाँ।
बीते नंत काल पर में भी, मिला न चिन्मय देश यहाँ।।1523।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. मन जो चाहे कभी न होता, फिर भी चाह करे प्राणी।
चाह बढ़ी तो राह भूलता, कहती सबसे जिनवाणी।।1524।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. मयूर मन का झूम उठा है, जिनवर के दर्शन पाकर।
वाणी का रस पान करूँ मैं, हो जाऊँ अब अजरामर।।1525।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. खगधर हलधर और गदाधर, जिनवर का गुणगान करें।
शांत जिनेश्वर की छवि लखकर, निज आतम का ध्यान करें।।1526।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. मान महाविष रूप यहाँ पर, जिनवर ने बतलाया है।
विनय भाव से जो भी झुकता, सिद्धालय को पाया है।।1527।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. भावों से भगवान बना भवि, भाव–भासना बिन नहिं ज्ञान।
अर्थ सहित भावों से पढ़कर, मनवांछित पा जाता ज्ञान।।1528।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तिर्यक् लोक में द्वीप समुद्र, असंख्यात जिनवर बोलें।
ढाई द्वीप में मानव रहते, मोक्ष महल के पट खोलें।।1529।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. रूप आपका सबसे न्यारा, निज स्वरूप का परिचायक।
निज गुण के अभिलाषी जन को, राह दिखाता अघ नाशक।।1530।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. परम शांति मिलती है जिनवर, जब चरणों में आता हूँ।
जनम-मरण का चक्र मिटाने, सत्पथ तुमसे पाता हूँ।।1531।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. मरुदेवी माँ महादेवी हैं, महादेव की जननी है।
महाभाग्य से दर्शन पाया, कर्मों की गति हरनी है।।1532।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. ममता की माला को तोड़ा, मगन हुए प्रभु आतम में।
समतारस का पान करें जिन, सघन हुए अध्यातम में।।1533।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. लंघन करते जीव अज्ञानी, देखा देखी तप करते।
कर्म निर्जरा नहिं कर पाते, जन्म मरण के दुःख सहते।।1534।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. भगवन् मुझको पूर्ण भरोसा, मुझको भव से तारोगे।
बालक चरणों आश लगाये, कैसे मुख को मोड़ोगे।।1535।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. वशीकरण नहिं करते जिनवर, फिर भी सब जग वश में है।
जिसने स्व को किया है वश में, पर भी उसके वश में है।।1536।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. तोड़ दिए कर्मों के बंधन, निर्बंधन को प्राप्त हुए।
बंध छुड़ाने आया भगवन्, बड़े पुण्य से प्राप्त हुए।।1537।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. निर्ग्रन्थों के चूड़ामणि प्रभु, ग्रन्थि का कुछ लेश नहीं।
आप मिले हो बड़भागी हूँ, अब कुछ पाना शेष नहीं।।1538।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. वृतान्त सुनकर आदि प्रभु का, हृदय कमल है खिल जाता।
अनुपम सौम्य छवि को लखकर, मम मन पुलकित हो जाता।।1539।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तं प्रणमामि जिनेश्वर चरणों, तम का मेरे हरण करो।
दिखती नहीं छवि मुझको निज, परमातम हमें दर्शन दो।।1540।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. स्पन्दन होता हैं अपूर्व इक, जब वृषभेश्वर उर बसते।
हृदयांगन पुलकित हो जाता, जब दिनकर दर्शन होते।।1541।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. इष्टोपदेश ने आदि प्रभु के, भवि जीवों को तारा है।
कर्मोदय से आये विघ्न को, पल भर में निरवारा है।।1542।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्टो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. उल्लासित हो जाता है मन, जिनवर स्तुति करने से।
मन मयूर सा झूमे भगवन्, दिव्यध्वनि को सुनने से।।1543।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल्ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. सत्स्वरूप दिखलाया भगवन्, जिससे मैं अनजान रहा।
अनुपम कृपा आज की प्रभुवर, निज आतम पहिचान रहा।।1544।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. किस-किस कौन-कौन से दर पर, ढूँढा नहीं मिले भगवन्।
मानतुंग के भक्तामर में, मिल गये आदिनाथ भगवन्।।1545।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रचा भक्ति से भर कर गुरुवर, भक्तामर का पाठ महान।
भक्तजनों के उपकारी गुरु, गाता इसको सकल जहान।।1546।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. णमोकार सम श्रद्धा रखकर, भक्त सभी जन गाते हैं।
आधि व्याधि को दूर भगाते, भक्ति का फल पाते हैं।।1547।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. महिमा देखो आदि प्रभु की, मानतुंग ऋषि गाते हैं।
श्रद्धा से धरते जो उर में, अजर अमर पद पाते हैं।।1548।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. मस्त हुआ जो प्रभु चरणों में, अघ भी उसके अस्त हुए।
वीतरागी चरणों को छोड़ा, तो जीवन भर त्रस्त हुए।।1549।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तन्मय हो जो भक्तामर के, ऋद्धि मन्त्र का जाप करे।
मंत्रों से आकर्षित होकर, मुक्ति वधु उसे वरण करे।।1550।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. मोक्ष मार्ग पर चलना दुर्लभ, जिनवर ने बतलाया है।
भक्ति करता जो भवि मन से, रत्नत्रय को पाया है।।1551।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. विज्ञानी केवलज्ञानी प्रभु, भक्त सभी गुणगान करें।
जिन शासन की ध्वज फहराकर, निज का ही सम्मान करें।।1552।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. ताला खोला मोक्ष महल का, शुक्लध्यान की ताली से।
निज अनुभव की बगिया महकी, आदि प्रभु वनमाली से।।1553।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नंतानंत हुए जो सिद्ध, अरु आगे भी होवेंगे।
जिनवर सम निज अनुभव पाकर, कर्म कालिमा धोवेंगे।।1554।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. बिम्ब जिनेश्वर दर्शन करके, सम्यग्दर्शन हो जाता।
काल अनंतों का मिथ्यातम, क्षण में क्षय ही हो जाता।।1555।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. बंध समय में सब ही प्राणी, पूर्ण स्वतंत्र हुआ करते।
किंतु उदय में वे ही प्राणी, हो परतंत्र रोया करते।।1556।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. रमण किया रमणी के संग में, नंतों जन्म गँवाए हैं।
शिवरमणी से राग हुआ न, भव भव में दुःख पाये हैं।।1557।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. वेदों और पुराणों में भी, आदि जिनेश्वर नाम लिखा।
रसना सार्थक मानी उनकी, जिनने प्रभु का नाम जपा।।1558।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. रिक्त हुए प्रभु राग द्वेष से, सब रिश्तों को त्याग दिया।
स्वारथ के हैं रिश्ते जग में, जिनवर ने उपदेश दिया।।1559।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वर्ण व्यवस्था बतलायी प्रभु, स्वयं वर्ण से मुक्त हुए।
वर्णातीत जिनेश्वर हो तुम, हम वर्णों से युक्त हुए।।1560।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. परमानन्द को प्राप्त हुआ हूँ, भक्तामर को गाकर के।
गुण गाने में तन नहीं थकता, भक्ति ताल* नहा करके।।1561।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. योगीजन भी योगीश्वर का, नितप्रति ध्यान लगाते हैं।
शुद्धोपयोग को पाने भगवन्, शुभ उपयोग बनाते हैं।।1562।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. धर्म भाव को धारण करके, धवल भाव को पाते हैं।
जो भवि चरणों में आ जाते, धवल गुणों को पाते हैं।।1563।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रणनीति में आदि प्रभु जी, अति निष्णात् कहाते हैं।
पल भर में रिपु मोहनीय का, पूर्ण विनाश कराते हैं।।1564।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*हाथ सरोवर

53. पार्थ हो गये पूत* पान* मम, चरणों का पर्शन करके।
रसना होती पावन प्रभुवर, तव गुण का वर्णन करके।।1565।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पार्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. पार्श्व भाग या अग्र भाग में, कहीं भी बस जाओ प्रभुवर।
भक्त तुम्हारा खोज निकाले, भक्ति करने को मन भर।।1566।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. वसुधा पावन हुई जिनेश्वर, जहाँ आपके चरण पड़े।
मम हृदयांगन आओ भगवन्, हाथ जोड़ हम शरण खड़े।।1567।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. कीर्ति आपकी फैली लोक में, फिर भी आप स्वयं में लीन।
वीतरागता धन्य आपकी, क्षण में अघ को करती क्षीण।।1568।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र्ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

तरु अशोक नीचे, जिनवर दीखें, ज्यों मेघों में रवि चमके।
शुभ प्रातिहार्य है, श्रेष्ठ कार्य है, अर्घ चढ़ा भवि शिव पहुँचे।।

ॐ ह्रीं अशोकतरु-विराजमानाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो महा तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

ज़माने भर की बातों से दिले आँसू बहाओगे,
करोगे जिंदगी नाशाद पर कुछ भी न पाओगे।
खुशी का गर खज़ाना खोजना तो मान ले मेरी,
ज़माने में न भटको तुम खुशी घर में ही पाओगे।।

*पवित्र *हाथ

नेत्र-पीड़ा विनाशक

सिंहासने मणि-मयूख-शिखा-विचित्रे,
विभ्राजते तव वपुः कनकावदातम्।
बिम्बं वियद्-विलस-दंशुलता-वितानं,
तुङ्गोदयाद्रि-शिर-सीव सहस्र-रश्मेः।।29।।

चौपाई

मणि की आभा से सिंहासन, शोभित होता सोने के सम,
उस पर प्रभु हैं विराजमान, जिनको करते सभी प्रणाम।
ज्यों सुमेरुपर्वत चोटी पर, उदित हुआ हो सूरज आकर,
किरण लताओं को बिखराता, जैसे हो प्रभु सिंहासन पर।।29।।

त्रिकालयोगिनो घोर, तपस्यार्पितमानसान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं घोरतपोभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सखी छन्द

1. सिंहासन शोभित आप, तन कांति हरे संताप।
रवि शशि भी प्रभु गुण गाते, हो विनम्र शीश झुकाते।।1569।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. हारा प्रभु तुमसे काम, कीना है काम तमाम।
प्रभु मदन विजेता कहाते, जन जन के मन को भाते।।1570।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. सहस्राठ लक्ष के धारी, जीतीं जग उपमा सारी।
प्रभु केवलज्ञान जगाया, सब ही पदार्थ दिखलाया।।1571।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. नेता प्रभु मुक्तिमग के, उपदेशक हैं भविजन के।
दश दिग् वंदन करतीं हैं, प्रभु अभिनंदन करतीं हैं।।1572।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. मन चाहा नहिं हो जग में, फिर भी चाहत हो मन में।
शिवपथ की चाह जगी है, आदि प्रभु लगन लगी है।।1573।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. णिक्कम्मा कहलाते प्रभु, सब कर्म नशाते हो विभु।
अविनाशी अविचल धाम, मैं करूँ विनम्र प्रणाम।।1574।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. महिमा है मोह अपारा, तिसका प्रभु कीना संहारा।
प्रभु मोहजयी कहलाते, भवि का भी मोह छुड़ाते।।1575।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मयूर मेघ को देखे, भवि आदि प्रभु को लेखे।
भक्ति कर कटते पाप, भविजन जपते हैं जाप।।1576।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. खगधर हलधर भी नमते, प्रभु आठों याम हैं जपते।
जिनवर मूरत मनहारी, है भव्यों को हितकारी।।1577।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. शिवरमणी चल कर आयी, जिनदेव उसे परणायी।
है वीतरागमय रूप, कहलाता है जग भूप।।1578।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. खाली नहिं कोई जाता, जो जिनवर के दर आता।
भक्ति का फल है पाया, झोली भर कर है लाया।।1579।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. विश्वदृष्ट हे विश्व के नायक! प्रभु आप हैं भाग्य विधायक।
ऋषिगण कहते हैं अनंत, हो आप विश्व भगवन्त।।1580।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. चिर स्थायी है ज्ञान, मुनिगण करते हैं ध्यान।
जिनवर हैं ईश निराले, काटो कर्मों के ताले।।1581।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. त्रेता सब के हो रक्षक, युग आदि प्रथम हो शिक्षक।
स्वात्मस्थ हो अक्षय आप, क्षय करते भवि के पाप।।1582।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. विज्ञान भानु प्रकटाया, सब लोक अलोक दिखाया।
तन आतम किया विभाग, बन गये प्रभु जग सरताज।।1583।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. भ्रामकता किया विनाश, सम्यक् दृग किया विकास।
भव में भटके मोही को, प्रभु दीना सदा प्रकाश।।1584।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. जय दिव्य ध्वनि जिनराज, सब श्रवण करी है समाज।
प्रभु समयसार बतलाया, भव्यों को बोध कराया।।1585।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तेरा पथ एक सहायी, जिस पर चल मुक्ति पायी।
प्रभु तुम जग भाग्य विधाता, जनमों नहिं छूटे नाता।।1586।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तन मन से करता सेवा, जिनवाणी जिन गुरुदेवा।
वो पाता शिवफल मेवा, कही समवशरण जिनदेवा।।1587।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वर्ण गंध न रस है जिसमें, हैं फंद हटाये भव में।
अशरीरी जिसका रूप, वह तीन लोक का भूप।।1588।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वज्रजंघ की थी पर्याय, लिये युगल मुनि पड़गाय।
भोगभूमि स्वर्ग को पाये, आगे चल आदि कहाये।।1589।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. रिपुः दमन किया जिनराज, जो अंतर रहे विराज।
सारे विकार को तजकर, मुक्ति पायी निज भजकर।।1590।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पुः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. करुणा सागर है नाम, करुणा ही जिनका काम।
सद्दर्शन पाठ पढ़ाया, भवि का भव भ्रमण मिटाया।।1591।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. नमता श्रद्धा से भर कर, त्रय योगों को प्रभु इक कर।
पाऊँ अविनश्वर धाम, वृषभेश्वर चरण प्रणाम।।1592।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. काम बंध की यहाँ कथा जो , की बार–बार विकथा जो।
मिला अब संयोग जिनेश्वर, निज कथा कहूँ परमेश्वर।।1593।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. वधू दया के साथ सजे हो, बिन वाहन नाथ चले हो।
आगम को अक्षि बनाया, मुनिवर को शिवपद भाया।।1594।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. दान देते जो मन हर्षे, पंचाश्चर्य रत्न जु बरसे।
दानी जग के सुख पाये, संतति से शिवपुर जाये।।1595।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तं जिनवर प्रणमूँ नित्यं, करे नाश जो वृत्ति भृत्यं।
प्रभु निजसम उसे बनाते, जो चरण की छाँव में आते।।1596।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. बिम्ब आपका अति मनहारी, जीतीं हैं उपमा सारी।
जो भवि छवि हृदय बसाता, सम्यक् दृष्टि को पाता।।1597।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. बंधन भव जेल कराता, आतम स्वभाव नहिं पाता।
प्रभु बंधन मुक्त हुये हैं, संसार से सिद्ध हुये हैं।।1598।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. विनय मोक्ष का द्वार, है मान महाविष धार।
झुकता पाता शिवधाम, आदीश्वर सा हो नाम।।1599।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. यद् विद्या तुम में भगवन्, वह मेरा बन जाये धन।
अब ख्याति लाभ नहिं चाह, प्रभु ने दिखलायी राह।।1600।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. विनयं परिपूरित मन हो, जिन भक्ति उर में भर दो।
हो वीतरागता भान, कर दूँ कर्मों की हान।।1601।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्रीवृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. लख लख कर के लिख दीना, भक्तामर एक नगीना।
सब भक्तों की जान बना है, भक्ति इतिहास रचा है।।1602।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. सब जगत के प्रभुवर स्वामी, जगती पर हैं अभिरामी।
त्रय योग से वंदूँ नाथ, कर दो मुझे आज सनाथ।।1603।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. दंद फंद छोड़ सब जग के, नेता बने मुक्तिमग के।
सब जगत चराचर जानें, ऋषिगण सर्वज्ञ हैं मानें।।1604।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शुक्लध्यान के चउ हैं पाये, आदि अधिकार जमाये।
कृतकृत्य हुये फिर जग में, लौटे ना फिर इस भव में।।1605।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. लगी लगन प्रभु चरणों की, बेड़ी काटो कर्मों की।
प्रभु वीतराग हैं हितैषी, किये क्षमा सर्व ही दोषी।।1606।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. ताले नृप ने थे लगाये, बाहर पहरे थे बिठाये।
सुन मानतुंग की भक्ति, भक्ति ने दिखायी शक्ति।।1607।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. विघटन करती हैं कषायें, चहुँगति में भ्रमण करायें।
प्रभु तुमने सबको जीता, कटा मोक्ष महल का फीता।।1608।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तार जुड़े नाथ जो तुमसे, मन वीणा झंकृत तबसे।
भक्ति की लगन लगी है, मुक्तेश्वर शरण गही है।।1609।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. नम्बर पहले तीर्थंकर, हो जग के नाथ हितंकर।
प्रभु नाम मंत्र की जाप, हर लेती कल्मष पाप।।1610।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तुंग पाँच शतक धनु तनु है, पंद्रहवें आप मनु हैं।
कुलकर कुलधर पहिचान, करूँ आपकी महिमा गान।।1611।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. गोम्मटेश बाहुबली स्वामी, प्रभु आप पुत्र जगनामी।
वर्ष एक योग था धारा, तिन चरणों नमन् हमारा।।1612।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. दर्पान्ध बना इस जग में, पग बड़ा न मम शिव मग में।
हे दया मूर्ति! करुणाकर, गुण से भर दो मम गागर।।1613।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. याद करे जो प्रभु को उर में, नित ध्यान करे निज घर में।
वह गुणधारी है बनता, जिनवर के गुण में पगता।।1614।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. इन्द्रिय सुख चाह नहीं है, मुक्ति की राह गही है।
परमातम पद पा जाता, वह मोक्षमहल को जाता।।1615।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. शिक्षा दीनी बहिनों को, ब्राह्मी सुंदरी रत्नों को।
ब्राह्मी को अक्षर ज्ञान, अंक सुंदरि की पहिचान।।1616।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. जो रसिक गुणों का होता, दिन-रात भक्ति में खोता।
गुणसागर का गुणगान, गुण गा बनता गुणवान।।1617।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. सीमातीत आपका सुख है, नहीं रंच मात्र भी दुःख है।
अक्षय हो आप अनंत, सुख खान कहे भगवन्त।।1618।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वन में जा करी तपस्या, उपजी नहिं कोई समस्या।
प्रभु पाया केवलज्ञान, किया घाति कर्म का हान।।1619।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. सब जग को छोड़ के आया, प्रभु की शरणा को पाया।
मन चाहा फल पा जाऊँ, प्रभु चरणों ध्यान लगाऊँ।।1620।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. हम में तुममें यह भेद, तुम पूज्य मैं पूजक भेद।
ऐसा वर दो जिनराज, हटे भेद हो एक समाज।।1621।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. स्रष्टा जग के कहलाते, जीवन जीना सिखलाते।
प्रभु जगत्पिता कहलाते, भू अंबर चरणों नाते।।1622।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रश्मि जब सूर्य की आती, तम को है तभी नशाती।
प्रभु पूर्ण ज्ञान की किरणें, बिखराओ सूने घर में।।1623।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रश्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. ज्ञान रश्मेः पूर्ण रश्मियाँ, विकसातीं उर की कलियाँ।
प्रभु लोक प्रकाशित करते, होकर विनम्र हम नमते।।1624।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मेः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

उदयाचल ऊपर, चमके दिनकर, सिंहासन पर जिनवर जी।
प्रभु अधर विराजें, सुरगण नाचें, अर्घ चढ़ायें भविजन भी।।

ॐ ह्रीं मणिमुक्ता-खचित-सिंहासन-प्रातिहार्य-युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर तवाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

जिसे तुम जिंदगी कहते वो पलभर का गुजरना है,
तो जन को कह रहे अपना वो चलता सा खिलौना है।
न जाने कब कहाँ पर जिंदगी की शाम हो जाये,
हो जितना जल्द हो उतना हमें गम से निकलना है।।

श्लोक नं.30

शत्रु-स्तम्भक

कुन्दावदात् - चल - चामर - चारु-शोभं,
विभ्राजते तव वपुः कलधौत-कान्तम्।
उद्यच्छशांक - शुचि - निर्झर - वारिधार-
मुच्चैस्तटं-सुर-गिरे-रिव शातकौम्भम्।।30।।

चौपाई

चौसठ चँवर ढुरें प्रभुवर पर, शोभा जिनकी अति ही सुन्दर,
स्वर्ण समां तन वाले जिनवर, चन्द्रकांति सम श्वेत हैं चामर।
सुरगिरि पर बहती जलधार, पावन शशि सम कांति अपार,
गिरती तब अतिसुन्दर लगती, जिसकी महिमा अपरम्पार।।30।।

मुनीन् घोर गुणान् शक्तान्, परीषह विनिर्जये।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं घोरगुणेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

1. कुन्दन जैसी देह आपकी जिनवरा,
दोष अठारह रहित कहें योगीश्वरा।
भक्त आपके मिलकर के गुण गा रहे,
अपना रूप निरखने को ललचा रहे।।1625।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. दाता आप अनूपम देते ज्ञान हो।
वरें आपके गुण को नित सम्मान हो।। भक्त आपके...।।1626।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. वनितादि सुख नश्वर है यह जान के।
छोड़ा राज्य धरा तप वन में जाय के।। भक्त आपके...।।1627।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. दारुण दुख नरकों में पाये जीव ने।
जन्म आपके लेते ही क्षण सुख मिले।। भक्त आपके...।।1628।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. तर्क बिना नहिं ज्ञान किसी का पूर्ण हो।
ज्ञान होत ही कर्म बंध सब चूर्ण हों।। भक्त आपके...।।1629।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. चरम शरीरी नाथ चरण वंदन करूँ।
भव-भव के अघ संचित क्षण में परिहरूँ।। भक्त आपके...।।1630।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. लगन लगी है आदीश्वर के नाम की।
चाहत है हे जिनवर! शिवपुर धाम की।। भक्त आपके...।।1631।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. चामर चौंसठ प्रभु के ऊपर ढुर रहे।
क्षीर सिंधु की लहरों सम मन भर रहे।।
भक्त आपके मिलकर के गुण गा रहे,
अपना रूप निरखने को ललचा रहे।।1632।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. महापुरुष का दर्शन महिमावन्त है।
सफल होय सब काज बताते सन्त हैं।। भक्त आपके...।।1633।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. रसिक भक्त दिन रात प्रभु भक्ति करें।
जिनवर का कर ध्यान सहज मुक्ति वरें।। भक्त आपके...।।1634।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. चाह मेरी हर जन्म प्रभु दर्शन मिले।
दर्शन पाकर सम्यक् मम बगिया खिले।। भक्त आपके...।।1635।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. रुचि सम्यक्त्व प्रभु मेरे उर आ बसे।
तत्त्व रुचि से आत्मबोध अंतस् जगे।। भक्त आपके...।।1636।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. शोभा समवशरण की देख हृदय खिले।
जन्मजात बैरी पशु आकर के मिले।। भक्त आपके...।।1637।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. भंजन होय मनोरंजन का दर्श से।
रंजन होवे आत्म तत्त्व में पर्श से।। भक्त आपके...।।1638।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. विद्या ज्ञान विवेक का वर प्रभु दीजिए।
गुरु भक्ति से हृदय पूर्ण भर दीजिए।। भक्त आपके...।।1639।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. भ्रान्ति का हो नाश हृदय शान्ति बसे।
भक्त हृदय में आप रूप कान्ति लसे।। भक्त आपके...।।1640।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. जन जन का कल्याण किया प्रभु आपने।
स्वर्ग और अपवर्ग दिलाया आपने।।
भक्त आपके मिलकर के गुण गा रहे,
अपना रूप निरखने को ललचा रहे।।1641।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तेज पुंज के धाम अनूपम रूप हैं।
इक टक देखे सहस्राक्ष सुर भूप है।। भक्त आपके...।।1642।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. तव पद हिय में धार भवोदधि भवि तरें।
जिनवर हो निस्वार्थ नंत उपकृति करें।। भक्त आपके...।।1643।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. वसुधा पर वर्चस्व आपका ही रहा।
भक्तों को सर्वस्व आदि प्रभु हैं महा।। भक्त आपके...।।1644।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वर्णन न निज वाणी शक्ति से कर सकें।
वतन आपका शुद्ध नंत सिद्धा बसें।। भक्त आपके...।।1645।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. वपुः रिपुः तज दिये विनश्वर जानिके।
आत्म तत्त्व को माना निज पहिचानिके।। भक्त आपके...।।1646।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पुः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. करें भक्त अरदास प्रभु कर जोड़ के।
करो मुक्त संसार से निज प्रभु जोड़ के।। भक्त आपके...।।1647।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. ललक नाश न होय प्रभुवर दर्श की।
जन्म-जन्म में चाहत है प्रभु पर्श की।। भक्त आपके...।।1648।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. धौत करें मम अश्रु पद श्री आदि के।
होवे गालन किये पूर्व सब पाप के।। भक्त आपके...।।1649।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. तन मन धन से आज प्रभू वंदन करूँ।
आश मेरी बस एक कर्म खंडन करूँ।।
भक्त आपके मिलकर के गुण गा रहे,
अपना रूप निरखने को ललचा रहे।।1650।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. कांचन सम है देह प्रभु को प्रीति ना।
पाकर चिन्मय गेह राग की रीति ना।। भक्त आपके...।।1651।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. स्तम्भ लगाये चउराधन मण्डप बना।
मुक्ति वधु से आकर के प्रभु ब्याह रचा।। भक्त आपके...।।1652।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. उच्चनीच दोउ गोत्र जिनेश्वर नाशिते।
लोक शिखर पर जाकर नाथ विराजिते।। भक्त आपके...।।1653।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "उ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पद्य रचे गुरुवर ने अड़तालीस जहाँ।
ताले टूटे तड़-तड़ भूप खड़ा वहाँ।। भक्त आपके...।।1654।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. आच्छति है मम ज्ञान कर्म के उदय से।
मिटे आज अज्ञान प्रभु की विनय से।। भक्त आपके...।।1655।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च्छ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. शांत होय मन आदि प्रभु की जाप से।
आतम होवे शुद्ध सकल संताप से।। भक्त आपके...।।1656।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. कर्म कलंक को नाश प्रभु निकलंक हो।
कल्मष हर्ता नाथ जगत में वंद्य हो।। भक्त आपके...।।1657।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. शुद्ध विशुद्ध विबुद्ध आप शुभ नाम हैं।
जो भी जपता नाम बनें सब काम हैं।। भक्त आपके...।।1658।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. चिर संचित भविजन के पाप नशा दिए।
नाथ आपके दर्शन का फल पा लिए।।
भक्त आपके मिलकर के गुण गा रहे,
अपना रूप निरखने को ललचा रहे।।1659।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. निर्बल भवि को आदीश्वर संबल मिला।
भव सागर से पार हेतु भुजबल मिला।। भक्त आपके...।।1660।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. झरे ज्ञान का नीर वाणी गिरि से प्रभो।
होवे भक्त अधीर पान करने विभो।। भक्त आपके...।।1661।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "झ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रवि शशि की भी कांति प्रभु लज्जित हुई।
तीन लोक की उपमाएँ फीकी हुईं।। भक्त आपके...।।1662।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वादिराज मुनिराज आप स्तुति करें।
तन हो स्वर्ण समां भक्त अचरज करें।। भक्त आपके...।।1663।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रिक्त हुए पर भाव स्वभाव को पायके।
भक्त हुए समभाव दर्श को पायके।। भक्त आपके...।।1664।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. धान्यादिक से पूर्ण होय वसुधा प्रभो।
जब विहार करते हो जिस नगरी विभो।। भक्त आपके...।।1665।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. रत्न दीप का सजा थाल हम लाये हैं।
जिनवर की आरति करने हम आये हैं।। भक्त आपके...।।1666।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मुदित हुआ मन नाथ आपकी भक्ति से।
परिपूरित हो भक्त आपकी शक्ति से।। भक्त आपके...।।1667।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. उच्चैस्तट से निर्झर झरने से लगें।
सुरगण द्वारा चौंसठ चँवर सदा ढुरें।।
भक्त आपके मिलकर के गुण गा रहे,
अपना रूप निरखने को ललचा रहे।।1668।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च्चैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तपन रोकते छत्र तीन सिर शोभते।
इन्दु समां छवि धारे जग मन मोहते।। भक्त आपके...।।1669।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. टंकोत्कीर्ण स्वभाव आपका प्रकट हुआ।
सब दुर्भाव नशे शाश्वतता उदय हुआ।। भक्त आपके...।।1670।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "टं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. सुयश आपका भू अम्बर भी गा रहे।
तव गुण का नहिं पार कोई भी पा रहे।। भक्त आपके...।।1671।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. रक्षा करते देव आदि के भक्त की।
करते चरण की सेव चरण अनुरक्त की।। भक्त आपके...।।1672।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. गिरि कैलाश से कर्म नाश शिवपुर गये।
श्रद्धा युत हम हाथ जोड़कर वंदन करें।। भक्त आपके...1673।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. रे आत्मन्! तू तन मन से प्रभु भक्ति कर।
प्रभु चरणों में जीवन को जीवन्त कर।। भक्त आपके...।।1674।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. रिमझिम गंधोदक की वृष्टि शुभं कही।
मंद सुगंधित वायु मनोहर बह रही।। भक्त आपके...।।1675।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वहम् अहम् दो चोर आत्मगुण घातते।
मोह महातम फैला शिवमग बाधते।। भक्त आपके...।।1676।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. शासन शुभ्र त्वमेव मुक्ति का पाथ है।
भक्तों को शिव हेत सुगुण सौगात है।।
भक्त आपके मिलकर के गुण गा रहे,
अपना रूप निरखने को ललचा रहे।।1677।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तन्मय होकर भव्य भक्ति पूजा करें।
पूजक बनकर अंत मोक्ष लक्ष्मी वरें।। भक्त आपके...।।1678।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. कौम्कुम का उपयोग राग जीवन भरे।
चंदन का उपयोग भक्त का मन हरे।। भक्त आपके...।।1679।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कौं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. भंजन कर मद नाथ निरंजन हो गये।
वंदन करके आदि चरण में सो गये।। भक्त आपके...।।1680।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

निर्झर से झरते, चँवर जो ढुरते, चौंसठ जिनवर पर सुखदाय।
पुरु पद की महिमा, सबसे कहना, अर्घ चढ़ा भवि शिवपुर जाय।।

ॐ ह्रीं चतु:षष्टि-चामर-प्रातिहार्य युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर गुणाणं झ्रौं झ्रौं नम:।

मुझे वो प्यास मत देना बुझा जो तुम नहीं सकते,
नहीं वो भूख ही देना मिटा जो तुम नहीं सकते।
मेरे यारब मुझे उतना ही देना है मेरी कुव्वत,
मुझे वो ज्ञान मत देना पचा जो हम नहीं सकते।।

राज्य सम्मान दायक

छत्र-त्रयं तव विभाति शशांक कान्त-
मुच्चै: स्थितं स्थगित-भानुकर-प्रतापम्।
मुक्ताफल - प्रकर - जाल-विवृद्ध-शोभं,
प्रख्यापयत् त्रिजगत: परमेश्वरत्वम्।।31।।

चौपाई

चन्द्रकांति सम शोभावान, मोती जड़े छत्र त्रय शान,
रवि का ताप रोकते हैं जो, प्रभु के सिर पर लगे महान।
केवलज्ञान हुआ है जिनको, सब लोगों ने गाया उनको,
बता रहे हैं छत्र सभी को, तीन भुवन के स्वामीपन को।।31।।

कर्मारिघातनेऽत्यन्तो–द्यतान् घोर पराक्रमान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं घोर पराक्रमेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गीता छन्द (तर्ज–नवदेवता पूजन)

1. छदमस्थ हूँ प्रभु आपके, गुण पूर्ण गा सकता नहीं।
बनकर पुजारी आया हूँ, पूजक क्या बन सकता नहीं।।
तिहुँ लोक पति वृषभेष की जो, मन वचन अर्चा करें।
आनन्द अमृत पान कर, निज आत्मरस केलि करें।।1681।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "छ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. त्रय रोग नाशक हो प्रभुवर, जल समर्पित चरण में।
हे प्रथम तीर्थंकर! जिनेश्वर, मन ये अर्पित चरण में।। तिहुँ लोकपति...।।1682।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. त्रय छत्र शोभित आपके सिर, जगत का मन मोहते।
त्रय इन्दु सम आकर गगन में, समवशरणे शोभते।। तिहुँ लोकपति...।।1683।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. यन्मोहमल्ल को जीत करके, महाबलि कहलाये हैं।
उनके चरण में आज हम, भक्ति का मन ले आये हैं।। तिहुँ लोकपति...।।1684।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. तत्त्वज्ञ हो प्रभु आप ही, शिव सौख्य के करतार हो।
प्रभु आप्त हो जग व्याप्त हो, मुक्तिरमा भरतार हो।। तिहुँ लोकपति...।।1685।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. वन भवन में समभाव धारा, जीव में आतम दिखा।
निज ज्ञानकक्ष निवास करते, स्वात्म रस का रस चखा।। तिहुँलोकपति...।।1686।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. विश्वेश प्यारे भवि पुकारे, दर्श दो आदीश्वरम्।
हम आये हैं दर पर तुम्हारे, पर्श दो जीवन परम।। तिहुँ लोकपति...।।1687।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भावना मैं रोज भाऊँ, आप सम बन जाऊँ कब।
सिर फल चढ़ाऊँ भाव भाऊँ, मन समर्पित करूँ अब।।
तिहुँ लोक पति वृषभेष की जो, मन वचन अर्चा करें।
आनन्द अमृत पान कर, निज आत्मरस केलि करें।।1688।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. तिरते तिराते नाथ भवि को, अब तो मुझको तार दो।
ले लो शरण की छाँव प्रभु जी, संकटों को टार दो।। तिहुँ लोकपति...।।1689।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. शबरी समां भक्ति करूँ, प्रभु राम जी घर आयेंगे।
भक्ति सुमन सम बेर खाकर, शक्ति दो तर जायेंगे।। तिहुँ लोकपति...।।1690।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. शांत मुद्रा आपकी प्रभु, मनोहारी है यहाँ।
दुखहारी छवि जिनवर तुम्हारी, जगतकल्याणी जहां।। तिहुँ लोकपति...।।1691।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. करता प्रणाम जो चरण आकर, कष्ट उसके दूर हों।
बंधन कटे मुक्ति लहे, गुण अष्ट से भरपूर हों।। तिहुँ लोकपति...।।1692।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. कान्ति प्रभु की शान्ति देती, है अनूपम शोभती।
परम औदारिक जो काया, जगत के दुख सोखती।। तिहुँ लोकपति...।।1693।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. तप से तपा कर देह को प्रभु, भाव कुंदन कर लिया।
जिनने भी ध्याया आतमा में, झाँक वंदन कर लिया।। तिहुँ लोकपति...।।1694।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. मुनिगण नमन करते चरण में, आप गुण को गावते।
गुण लखें आतम में यहाँ तो, आप सम बन जावते।। तिहुँ लोकपति...।।1695।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. उच्चैः सुदर्शन मेरु जाकर, जिन न्हवन सुरगण करें।
क्षीरोदधि का नीर लाकर, भक्ति कर कलशा ढुरें।। तिहुँ लोकपति...।।1696।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "उच्चैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. स्थिर हुए जब आप में प्रभु, क्षपक श्रेणी पर चढ़ें।
ध्याकर निजातम को जिनेश्वर, सकल कर्मों को दहें।।
तिहुँ लोक पति वृषभेष की जो, मन वचन अर्चा करें।
आनन्द अमृत पान कर, निज आत्मरस केलि करें।।1697।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्थि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तं वंदना करके ऋषीवर, रत्न गुण पाऊँ यहाँ।
त्रय रत्न को धारण करूँ अरु, सर्व जग छोड़ूँ जहाँ।। तिहुँ लोकपति...।।1698।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. आत्मस्थ रहकर हे प्रभुवर! राज करते भक्त पर।
हो नाथ सबके आप ही तो, नाज करते आप पर।। तिहुँ लोकपति...।।1699।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. गिरि मेरु पर होता उदित, आदित्य ज्यों है शोभता।
त्यों आपका अनुपम वदन, सिंहासने मन मोहता।। तिहुँ लोकपति...।।1700।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तजकर विभाव स्वभाव लखकर, सिद्ध पद पाया प्रभो।
पद मोक्ष की आशा को लेकर, भक्त यह आया विभो।। तिहुँ लोकपति...।।1701।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. भावों का जग में खेल है, भावों से जग में जेल है।
भावों से कटते बंध भव के, भाव से ही मेल है।। तिहुँ लोकपति...।।1702।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नुपुर सजे ललना चरण में, झुनझुनाते हैं यहाँ।
जब भक्ति में प्रभु आपकी, सुर अंगना झूमे यहाँ।। तिहुँ लोकपति...।।1703।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. करते जगत उद्धार जिनवर, जगतपति ही आप हो।
भवि जीव के प्रभु दुःख हर्ता, आप ही का जाप हो।। तिहुँ लोकपति...।।1704।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. रमते रमा में जो यहाँ, वे दुःख का वर्धन करें।
मुक्ति रमा में रमे आदि, सौख्य का अनुभव करें।। तिहुँ लोकपति...।।1705।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. प्रथमेश श्री वृषभेश जी, गुण नंत के भंडार हैं।
पूजूँ सदा तव गुण जिनेश्वर, जो यहाँ अविकार हैं।।
तिहुँ लोक पति वृषभेष की जो, मन वचन अर्चा करें।
आनन्द अमृत पान कर, निज आत्मरस केलि करें।।1706।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तारा सभी को आपने, जो शरण आया आपकी।
आया हूँ मैं भी तव चरण में, तार दो प्रभु आप ही।। तिहुँ लोकपति...।।1707।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. पंडित मरण को प्राप्त कर, समता से तज दूँ देह को।
आतम लखूँ निज में रमूँ, तज दूँ यहाँ पर नेह को।। तिहुँ लोकपति...।।1708।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. मुक्तिपुरी के नृप जिनेश्वर, भवि अभय देते प्रभु।
नहिं आप सा कोई है स्वामी, आप सम करते विभु।। तिहुँ लोकपति...।।1709।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. वक्ता अलौकिक शास्ता, रखते न हो प्रभु वास्ता।
मुरजा समां उपदेश दे, दिखलाते मुक्ति रास्ता।। तिहुँ लोकपति...।।1710।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. फल को चढ़ाकर पाऊँ शिवफल, आपसे यह प्रार्थना।
परमार्थ को याचूँ जिनेश्वर, जगत की नहिं चाहना।। तिहुँ लोकपति...।।1711।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "फ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. लगन लागी है चरण से, नयन तरसें दरश को।
यह हृदय आतुर हो रहा प्रभु, आपके ही परश को।। तिहुँ लोकपति...।।1712।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. प्रत्यक्ष दिखते सब पदारथ, आपके शुभ ज्ञान में।
तिहुँलोक होते हैं प्रकाशित, ज्यों जगत के भानु में।। तिहुँ लोकपति...।।1713।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. करके करण तीनों यहाँ, क्षय किया है प्रभु मोह का।
क्षय किया चारित मोह का तो, लब्धि नव पायी यहाँ।। तिहुँ लोकपति...।।1714।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रति राग से हटकर जिनेश्वर, वीतरागी हो गये।
जग के सभी परभाव त्यागे, ध्यान पागी हो गये।।
तिहुँ लोक पति वृषभेष की जो, मन वचन अर्चा करें।
आनन्द अमृत पान कर, निज आत्मरस केलि करें।।1715।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. जाना नहीं निज आतमा, ज्ञानी घने हो गये जहां।
ध्याया नहीं निज आतमा, ध्यानी हुये तो क्या यहाँ।। तिहुँ लोकपति...।।1716।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. लम्बा है रस्ता मोक्षपुर का, नाथ देना साथ तुम।
संबल सदा देना प्रभु, भटके न पथ पर नाथ हम।। तिहुँ लोकपति...।।1717।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. विद्या के दाता विधि विधाता, चरण में वंदन करें।
गुरु मानतुंग ने जो करी, वैसी चरण भक्ति करें।। तिहुँ लोकपति...।।1718।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. वृषभेश जग के ईश हो, धारक धरम दश ईश हो।
प्रभु जन्म धन्य बना लिया, मुक्तिवधु के मीत हो।। तिहुँ लोकपति...।।1719।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. सिद्ध हो प्रभु शुद्ध हो, तुम ही जगत प्रसिद्ध हो।
त्रय विध करम को नाश करके, आप ही तो विशुद्ध हो।। तिहुँ लोकपति...।।1720।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. शोभा लगे मनहारी प्रभु जी, समवशरणे आपकी।
चउविध सुरासुर भक्तगण, महिमा जु गाते नाथ की।। तिहुँ लोकपति...।।1721।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. भंडार भर दीने भगत के, आप रत्नत्रय धनी।
जो शरण प्रभु की पा गया, बिगड़ी उसी की है बनी।। तिहुँ लोकपति...।।1722।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. प्रज्ञा कला के सिंधु जिनवर, तत्त्व के मर्मज्ञ हो।
मम हृदय में आकर विराजो, ज्ञान मम तत्त्वज्ञ दो।। तिहुँ लोकपति...।।1723।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. ख्याति प्रभु नहिं चाहता, नहिं लाभ की आशा मुझे।
बस भावना इक है जिनेश्वर, मुक्ति का वर दो मुझे।।
तिहुँ लोक पति वृषभेष की जो, मन वचन अर्चा करें।
आनन्द अमृत पान कर, निज आत्मरस केलि करें।।1724।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. परिवार संग सुरेन्द्र आते, अर्चना प्रभु की करें।
भक्ति में वे सब झूम गाते, गुणों की पूजा करें।। तिहुँ लोकपति...।।1725।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. यत्न करने से ऋषीवर, सफल होते काज हैं।
मेरा प्रयास प्रथम जिनेश्वर, भक्ति का ही राज है।। तिहुँ लोकपति...।।1726।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. त्रिभुवन तिलक हे सुख प्रदायक! आपके दर आये हैं।
सम्यक्त्व गुण को पा सकें, यह भाव उर में लाये हैं।। तिहुँ लोकपति...।।1727।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जयघोष होता जब गगन में, भागते सब भक्त हैं।
प्रभु के समागम का अनूठा, आज आया वक्त है।। तिहुँ लोकपति...।।1728।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. गति चार में भटका जिनेश्वर, ठौर न पाया कहीं।
पंचम गति की भावना ले, शरण आया मैं तेरी।। तिहुँ लोकपति...।।1729।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. यतः ततः प्रभु जग-चराचर, में न मन मेरा लगे।
प्रभु तुम विदेही हम हैं नेही, आप ही में मन रमे।। तिहुँ लोकपति...।।1730।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. परमोत्कृष्ट जु पद जिनेश्वर, आपने ही पा लिया।
करके क्षरण कर्मों का प्रभुवर, मोक्ष घर है बना लिया।। तिहुँ लोकपति...।।1731।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रक्षक भविक जन के वृषेश्वर, पाप से रक्षा करें।
महिमा जु सुनकर के ऋषीवर, पाद की अर्चा करें।। तिहुँ लोकपति...।।1732।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. मेरु ऊँचा लाख योजन, जहाँ जिन का न्हवन हो।
उससे भी ऊँचे आप पहुँचे, मुक्ति महल में गमन को।।
तिहुँ लोक पति वृषभेष की जो, मन वचन अर्चा करें।
आनन्द अमृत पान कर, निज आत्मरस केलि करें।।1733।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. हे मुनीश्वर! जगत ईश्वर, आपकी भक्ति करूँ।
पूजत ही मन का सुमन खिलता, सु मन अर्पण मैं करूँ।। तिहुँलोकपति...।।1734।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रत्नत्रयामृत से विभूषित, ज्ञान के उपयोग में।
जिनदेव रहते हैं हमेशा, आतमा के योग में।। तिहुँ लोकपति...।।1735।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. वंश इक्ष्वाकु प्रभु का, जगत में जो प्रसिद्ध है।
मैं भी हूँ वंशज आपका, मेरी भी मुक्ति सिद्ध है।। तिहुँ लोकपति...।।1736।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

त्रय छत्र मनोहर, सूर्य तापहर, त्रिभुवनपति के सूचक हैं।
प्रभु शाश्वत सुख दो, अनर्घ पद हो, अर्घ चढ़ा हम पूजत हैं।।

ॐ ह्रीं छत्रत्रय-प्रातिहार्य युक्ताय क्ष्वीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर परक्कमाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

खुदा खुद में दिखे यारो उसे ही ध्यान कहते हैं,
जो खुद में डूबकर बैठा उसे भगवान कहते हैं।
कुरानों में पुराणों में नहीं है ज्ञान वेदों में,
खुदा सब में दिखा दे जो उसे ही ज्ञान कहते हैं।।

ग्रहण-संहारक

गम्भीर-तार-रव-पूरित-दिग्-विभागस्-
त्रैलोक्य-लोक-शुभ-संगम-भूति-दक्षः।
सद्-धर्मराज-जय-घोषण-घोषकः सन्,
खे दुन्दुभि-र्ध्वनति ते यशसः प्रवादी ।।32।।

चौपाई

गूँज रही हैं सभी दिशाएँ, दूर हुई हैं सब बाधाएँ,
तीन लोक की भूति दिलाती, शुभ संगम की हैं चर्चाएँ।
दुंदुभि नभ में घोषित होती, तीर्थंकर जय घोषण करती,
यशोगान की शान निराली, जिनवर का संपोषण करती।।32।।

समवशरण में देवगण, करते नित गुणगान।
आदिप्रभु जिनदेव को, करूँ "विनम्र" प्रणाम।।

स्व्युपसर्गसहिष्णून्, अघोरगुण ब्रह्मचारिण:।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं अघोरगुणब्रह्मचारिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

रेखता छन्द (तर्ज–तुम्हारे दर्श बिन स्वामी)

1. गंगा सम मन यहाँ निर्मल, जिनेश्वर का ही पाया है।
यही कारण कि शिवरमणी ने, सर अपना झुकाया है।।1737।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. भीत को मत रखो मन में, प्रीति से तुम सजाओ मन।
प्रीति जिनराज से करके, मीत बन जाओ तुम जन जन।।1738।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. रत्न के दीप लेकर के, इन्द्र भी तव करें आरति।
चरण में नत हो जिनवर के, गान करती है माँ भारति।।1739।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. तारते भव्यों को तुम हो, भक्त जन के सहारे हो।
मोह के अंधसागर में, डूबते को किनारे हो।।1740।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. रति करता चरण से जो, अरति संसार से होती।
आदि प्रभु की ही महिमा है, भगत को तार जो देती।।1741।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. रक्त बहता हो आँखों से, उठाये फण खड़ा है जो।
भक्त के आगे अहि* आये, नाम से भागता है वो।।1742।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. वसतिका आपकी प्यारी, नंत सिद्ध जिसके अधिकारी।
देह से मुक्त हो करके, विदेही बने वो अनगारी।।1743।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

* सर्प

8. पूजता नाथ चरणों को, वचन तन और मन से मैं।
जगत पूजित जिनेश्वर को, करूँ जीवन समर्पण मैं।।1744।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. अरि रज रहस क्षय करके, मुक्ति रमणी को परिणाया।
जहाँ सिद्धों का आलय है, वही स्थान तुम पाया।।1745।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. तत्त्व अरु द्रव्य का तुमने, जिनेश्वर सार बतलाया।
सुना सुनकर अमल कीना, वही कल्याण कर पाया।।1746।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. दिग्दिगंतर में जिनवर जी, आपकी कीर्ति फैली है।
मैं आया हूँ चरण प्रभुवर, मेरी चादर तो मैली है।।1747।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दिग्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. विनत हूँ आप चरणों में, मुझे पावन बना देना।
ये जीवन आपको सौंपा, इसे सावन बना देना।।1748।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. भावना है मेरी भगवन्, तुम्हारे गीत गाऊँ मैं।
करूँ हर साँस को अर्पण, बनाकर मीत जाऊँ मैं।।1749।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. गति चारों फिरा प्रभुवर, पुण्योदय आज आया है।
मुक्ति दाता जिनेश्वर का, दर्श भी आज पाया है।।1750।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. शस्त्रैवस्त्र से निर्मुक्त, आप जिनराज जग में हो।
रहा शत्रु न अब कोई, आप हमराज सबके हो।।1751।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त्रै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. लोक आलोक के ज्ञाता, किया लोकाग्र में वासा।
मैं भी लोकाग्र बस जाऊँ, यही है भक्त की आशा।।1752।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. वाक्य ऐसा बना जाऊँ, कि सारे गुण को लिख पाऊँ।
बनूँ गुणग्राही जिनवर का, गुणों के गीत मैं गाऊँ।।1753।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. लोकान्तिक देव आये थे, दीक्षा उत्सव मनाने को।
करके अनुमोदना स्वामी, बड़े निज धाम जाने को।।1754।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. कर्म का बंध दुखकारी, जीव फल चाहे सुखकारी।
जो करनी है वही भरनी, यही जिनवर की है वाणी।।1755।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. शुद्ध उपयोग को पाया, जिनेश्वर ध्यान निज ध्याया।
ज्ञान केवल को पाया तो, सकल ब्रह्माण्ड नजराया।।1756।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. भरत के आप पितु स्वामी, हो तीनों जगत में नामी।
मुक्ति पथ आप दिखलाया, बनूँ चरणों का अनुगामी।।1757।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. संग का त्याग कर डाला, भाव संयम को वर डाला।
तभी अनुरक्त हो करके, मुक्ति वधु डाली वरमाला।।1758।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. गगन में गूँजती देखो, देव दुन्दुभि जो मनहारी।
आओ कर लो समागम तुम, जिनेश्वर जी हैं उपकारी।।1759।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. मन्द मुस्कान जिनवर की, वचन सुमनों से मनहारी।
किया आत्मसात् जिनने भी, तर गये लाखों नर नारी।।1760।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. भूत में जो हुए सिद्ध हैं, भविष्य में आगे होवेंगे।
हृदय में रत्नत्रय की माल, धारण करके शोभेंगे।।1761।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. तिगिंछ केशरि से निकली जो, सीता सीतोदा नदियाँ हैं।
विदेह को बाँटा है जिनने, बना द्वात्रिंश नगरियाँ हैं।।1762।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. दया का भाव उर लाओ, स्वर्ग के सुख को तुम पाओ।
गुरूवर कहते हैं भक्तो, मनुज भव सफल कर जाओ।।1763।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. दक्षः शिव पाने में जिनवर, निजातम ध्यान में प्रभुवर।
मुझमें भी दक्षता आये, यही उर भावना ऋषिवर।।1764।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. सद् असत् जिसने बतलाया, वही सर्वज्ञ कहलाया।
भवोदधि का दिखाया तट, वो तीर्थंकर है मन भाया।।1765।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. धर्म के मर्म पाने को, जिनेश्वर दर पे आया हूँ।
आपकी अर्चा करने को, द्रव्य का थाल लाया हूँ।।1766।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. महामर्मज्ञ जिनराजा, आप सब कर्म के ज्ञाता।
धर्म सिखलाते जिनवर जी, पंथ दिखलादो हो साता।।1767।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. राग अरु द्वेष दुःखदायी, जिनेश्वर ने है बतलायी।
विभावों को हटा करके, स्वभावी रीत सिखलायी।।1768।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. जय जिनेन्द्र बोल कर वाणी, बढ़ाओ प्रीति हर प्राणी।
यही कहती है जिनवाणी, प्रेम रस घोलती ज्ञानी।।1769।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जहाँ जिनवाणी का वाचन, वहाँ जिनदेव का अर्चन।
साथ गुरुओं का हो प्रवचन, मिला हमको अनूपम धन।।1770।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. यदि यमराज आये तो, उसे हमराज जानो तुम।
विधि की हो कृपा ऐसी, कि नूतन रूप पाओ तुम।।1771।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. घोषणा देव करते हैं, गमन जिनदेव जब करते।
हृदय आँगन सजा करके, भव्यजन दर्श तब करते।।1772।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. षड् गुणस्थान वाले हैं, गुरु मानतुंग निराले हैं।
प्रभु भक्ति में रम करके, बँधे जो तोड़े ताले हैं।।1773।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38 प्राण पन से करें भक्ति, भविक जन आदि जिनवर की।
कभी प्रण को न तोड़ें वे, लगे डोरी है तन मन की।।1774।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. घोर अंधकार छाया है, विधि की सारी माया है।
जिनेश्वर की कृपा जिस पर, वही मुक्ति को पाया है।।1775।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. षट्पदी गूँजता भी है, सुमन को चूमता भी है।
मेरी भक्ति भी गूँजेगी, जिनेश्वर चरण चूमेगी।।1776।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. कः ब्रह्मा पूछते भविजन, आदि ब्रह्मा नमें ऋषिजन।
परम ब्रह्मा को पाने को, आत्मब्रह्म में रमें बुधजन।।1777।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. संतजन कर्म को काटें, भव के संताप को नाशें।
भक्तजन भक्ति में नाचें, साम्य गुण को वे अभिलाषें।।1778।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. खेत खलिहान मुस्काते, जगत्पति जिस तरफ जाते।
भव्य जन हर्ष से गाते, देवगण रत्न बरसाते।।1779।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. दुंदुभि नभ में गुँजाए, भक्त सुन दौड़कर आएँ।
देख सब भाव यह भाएँ, प्रभु मम उर में आ जाएँ।।1780।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. दुःख भरी है कथा मेरी, कहूँ किससे व्यथा मेरी।
जिनेश्वर अब कृपा कर दो, लगाओ अब न प्रभु देरी।।1781।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. मुनिभिर्नमित जिनदेवं, सुर असुर नित करें सेवं।
प्रभु महिमा को गाये जो, पाये शिव सौख्य की मेवं।।1782।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भिर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. ध्वजा भूमि में फहरातीं, दश विधि की हैं ध्वजाएँ।
दश दिशाओं में जिनवर की, कीर्ति को जो हैं फहराएँ।।1783।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. न होते सूर्य अरु चंदा, न ज्योतिष मंत्र ही होते।
अगर जिनवर की भक्ति में, झुके मन तंत्र न होते।।1784।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिराती आपकी वाणी, पान करते हैं भवि प्राणी।
निःस्वारथ आप जिनदेवा, करूँ मैं चरण की सेवा।।1785।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तेरा विध चरित को धारा, जगत जिनधर्म परचारा।
मुनीश्वर ने हृदय धारा, आप कीना है उद्धारा।।1786।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. यति करते हैं जिन भक्ति, चाह कुछ भी नहीं रखते।
निकांक्षित हो के तप करते, कर्म की निर्जरा करते।।1787।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. शरण में आया हूँ जिनवर, चरण में आप मुझ रख लो।
अनादि से भ्रमा हूँ मैं, जिनेश्वर हाथ अब धर दो।।1788।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. स: रूपम् जो जिनेश्वर का, मुदित मम चेतना करता।
सोऽहं का ध्यान करने से, निजातम रूप को लखता।।1789।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. प्रतिज्ञा आज करता हूँ, गुरु आज्ञा न टालूँगा।
ध्यान जिनवर का करके मैं, निजातम धाम पा लूँगा।।1790।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. वातरसना ऋषिश्वर गण, बात कहते पते की हैं।
जगत में न पता उनका, सभी को पथ जो देते हैं।।1791।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. दीन दुखियों के बंधु हो, बेचारे के सहारे हो।
वचन के हो अगोचर जिन, तुम्हीं भव के किनारे हो।।1792।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

जय घोष कराती, दिशा गुँजाती, शुभ संगम करवाती है।
मैं अर्घ चढ़ाऊँ, कीरति गाऊँ, दुन्दुभि जिन की पाती* है।।

ॐ ह्रीं त्रैलोक्यआज्ञाविद्यायिने-प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो अघोरगुण बंभयारीणं झ्रौं झ्रौं नम:।

मुझे दुनियाँ में आ करके कभी रोना नहीं आता,
समय उपयोग करता हूँ-उसे खोना नहीं आता।
ख़ता की ज़िंदगी छोड़ी न है अब खौफ गैरों से,
हमेशा जागता हूँ मैं मुझे सोना नहीं आता।।

*संदेश/पत्र

सर्व-ज्वर संहारक

मन्दार- सुन्दर - नमेरु - सुपारिजात,
सन्तानकादि - कुसुमोत्कर वृष्टि-रुद्धा।
गंधोद-बिंदु शुभ-मन्द - मरुत्-प्रपाता*,
दिव्या दिव: पतति ते *वयसां ततिर्वा।।33।।

चौपाई

सुन्दर-पारिजात-मंदार, सुरभित बहती पुष्प बयार,
संतानक हैं पुष्प अनेक, जिनकी महिमा कही अपार।
मंद हवा जल भी गिरता है, दृश्य मनोहारी लगता है,
ऐसा लगता है इस नभ में, झुण्ड पक्षियों का उड़ता है।।33।।

*प्रयाता *वचसां

आमर्द्धीन् नाम संस्पर्द्धीन्, कृत्स्न रुग्नाशकान् जनाम्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं आमर्षौषधर्द्धिप्राप्तयेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सखी-छंद

1. मंगल हैं प्रथम जिनेश्वर, मेरे मन में बसे परमेश्वर।
शिव रमणी आप वरी है, झर-झर सुख शांति झरी है।।1793।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. दाता जो दान सँवारे, वो परम समाधि विचारे।
हुआ आदि मुनीश आहार, अचरज हुए पंच प्रकार।।1794।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. रमता यहाँ ऐसे जोगी, बहता यहाँ जैसे पानी।
यह है अध्यात्म कहानी, कहती जिसको जिनवाणी।।1795।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. सुंदर अरु सत्य शिवं है, वृषभेश रूप अनुपम है।
भक्तों ने तुमको ध्याया, सौभाग्य से प्रभु दर पाया।।1796।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. दर्पान्ध हुआ जो प्राणी, हुई आत्म शांति की हानि।
मैं मद से भरा दुख पाता, निर्मद कर दो हे त्राता!।।1797।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. रत्नत्रय जिसने धारा, मुक्ति पथ वो विस्तारा।
भोगों को त्याग किये बिन, होता नहिं शुद्धातम जिन।।1798।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. नर चतुर्गति जा सकता, नारायण भी बन सकता।
पुरुषारथ सिद्धि दिलाए, ऐसा जिनदेव बताए।।1799।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मेरा अंतिम दिन आवे, जिनदेव शरण मिल जावे।
गुरु का संबोधन प्यारा, हो अंतिम साँस सहारा।।1800।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. रुष्ट जो पर से होता, वह रौद्र ध्यान को करता।
वह दूर धर्म से होकर, चहुँ गति के दुख को वरता।।1801।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. सुरगति में प्राणी जाता, इन्द्रिय सुख में रम जाता।
यदि धर्म ध्यान नहिं करता, वो मनसिज दुःख को भरता।।1802।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. पा गया आदि की शरणा, अब और न कुछ है करना।
देवाधिदेव जिन प्यारे, वंदन मेरा स्वीकारें।।1803।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. रिपु रहा न मेरा कोई, सब विश्व मित्र सम होई
मैं राग द्वेष निरवारा, आतम का लिया सहारा।।1804।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. जागे मम बोध जिनेश्वर, वर दे दो हे परमेश्वर!
दिग्दर्शक आप हमारे, भ्रमितों के आप सहारे।।1805।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. तत्काल है सुख भोगों में, है दुःख अनंत विषयों में।
इसलिए भोग प्रभु त्यागे, अरु शुद्धातम अनुरागे।।1806।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. सन्मति दीजै हे जिनवर! नहिं दुर्विचार हो अन्दर।
प्रभु ने सब दोष निवारे, हम आए शरण तिहारे।।1807।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. तारागण हर्ष मनाएँ, जिन चन्द्र निरख मुस्काएँ।
आतम होवे परमातम, यह भक्त भावना भाएँ।।1808।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. नयनाभिराम जिनवर जी, मम ध्यान धरो प्रभुवर जी।
भव सिंधु से पार करा दो, मेरी नाव भँवर से तिरा दो।।1809।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. काल लब्धि अब आई, शुभ शरण मिली जिनरायी।
मिल गये जिनेश्वर वयना, भव सागर से है तरना।।1810।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. दिव्य ध्वनि जिनकी प्यारी, दिन रात खिरे चौबारी।
ध्यानी को शांति प्रदाता, मैं चरण नवाऊँ माथा।1811।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. कुल चौरासी गणधर थे, जिनवर के जो अनुचर थे।
ध्यानी के हृदय समाते, सब ममता मोह नशाते।1812।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. सुर नर किन्नर हर्षाते, सुर दिव्य सुमन बरसाते।
नीचे डण्ठल मुख ऊपर, पक्षी सी शोभा पाते।।1813।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. उत्तमोत्तम द्रव्य लिया है, जिन गुण का ध्यान किया है।
परिवार सहित सुर आते, जिनवर की पूज रचाते।।1814।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मोत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. कलि माघ चतुर्दशी आयी, जिन शिवरमणी परणायी।
अब सुख अनंत है पाया, अरु भव का भ्रमण मिटाया।।1815।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रमना अब निज में ही है, आदीश्वर शरण गही है।
सुख शांति चरण में मिलती, यह निज अनुभूति कहती।।1816।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वृषभादिक जो तीर्थंकर, कहलाते प्रभु क्षेमंकर।
मैं अर्घ चढ़ा सुख पाऊँ, चौबीसों के गुण गाऊँ।।1817।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. दृष्टि सम्यक् जब होवे, वृष्टि समरस की होवे।
मैं चलूँ डगर शिव स्वामी, प्रभु बनो नयन पथगामी।।1818।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्टि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रुकना नहिं अब है चलना, माँ जिनवाणी का कहना।
बनकर अमूढ़ दृष्टि तुम, निज सम्यक् को दृढ़ करना।।1819।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. श्रद्धा को धार हृदय में, आया जो प्रभु चरणों में।
जपता जो नाम तिहारा, वह पाता जगत किनारा।।1820।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्धा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. गंधोदक का शुभ वंदन, मैंटे भव के सब क्रन्दन।
सब कष्ट नष्ट हो जाते, अपने अभीष्ट को पाते।।1821।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. धो दिया सभी कर्मों को, निज आतम से आतम को।
निर्मलता गुण है पाया, हम चरणन् शीश नवाया।।1822।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दश धर्म का ध्वज फहराया, केशरिया अम्बर छाया।
आदीश्वर की कीर्ति से, सब भूमण्डल महकाया।।1823।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. बिंदु को सिंधु बनाया, ओंकार नाद मन भाया।
निज आत्मशांति का निर्झर, अन्तस् में प्रभु ने पाया।।1824।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दुर्ध्यान का जो सरताज, मिथ्यात्व महा यमराज।
चहुँ गति में भ्रमण कराता, नाना योनि दुख दाता।।1825।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. शुभ अशुभ जो भाव विभाव, इन सबका हुआ अभाव।
प्रभु लीन है आत्म स्वभाव, कर्मों का किया अभाव।।1826।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. भगवन् छोटा बच्चा हूँ, प्रभु आदि भक्त सच्चा हूँ।
जपता हूँ नाम यहीं से, प्रभु कीजै कृपा वहीं से।।1827।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मंदिर मन को है बनाया, जिसमें जिनवर पधराया।
इक कृपा करो करुणाकर, तारो मुझको भव सागर।।1828।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. दर-दर प्रभु मैं भटका हूँ, लख चौरासी अटका हूँ।
अब पल-पल भाव सुधारूँ, तव पद में जीवन वारूँ।।1829।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. मम कर्मजनित दुःख हरना, मुझको शिवरमणी वरना।
भक्तों को शिव सुख देते, सन्ताप कर्म के मैंटे।1830।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जो गुरुत्व आप में दिखता, वैसा कहिं और न लखता।
हे वचन अगोचर स्वामी!, जयवन्तो हे सुखधामी!।।1831।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रुत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. प्रमुदित होता मम चेतन, जब ध्यान धरे प्रभु का मन।
मृग नयन जिनेश्वर प्यारे, प्रभु लोकालोक निहारें।।1832।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. पादाब्ज जिनेश्वर वन्दूँ, धरि ध्यान हिये आनन्दूँ।
देवाधिदेव जिन प्यारे, चरणों में नमन् हमारे।।1833।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. ताकत प्रभु की अनुपम है, दर्शन जिनका न सुगम है।
गुरु कहते प्रभु गुण गाओ, नर भव को सफल बनाओ।।1834।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. दिश-दिश से पंछी आकर, तरुवर पर रैन बिताकर।
उठ निज निज देश को जाते, ऐसा गुरुवर बतलाते।।1835।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. व्यामोह जगत में फैला, संसार बना है मेला।
सब स्वारथ के हैं भाई, प्रभु ने सद् राह दिखाई।।1836।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. दिनकर भी रौशनी माँगे, प्रभु कोटि रवि सम साजे।
आदीश्वर महिमा न्यारी, भवि जीवन को सुखकारी।।1837।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. भुवः स्वयं भूतल के, हुए स्वयं ज्ञान के बल से।
जिनवर की कृपा निराली, है मुक्तिपुर की ताली* ।।1838।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. परिवर्तन पंच प्रकारा, जिनदेव ने उसको टारा।
वर्तन करके आतम में, बैठे निज शुद्धातम में।।1839।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. तज आदि कहाँ मैं जाऊँ, जिन पद में ध्यान लगाऊँ।
तम का कर दिया किनारा, डूबी जो नाव उबारा।।1840।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिल-तिल किए देह के खण्ड, देते दुःख असुर प्रचण्ड।
परिग्रह का भाव न धारो, प्रभु कहते जन्म सुधारो।।1841।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. तेरे दर पर जो आता, अपना वह भाग्य सजाता।
वह तत्त्व ज्ञान को पाकर, तिर जाता है भव सागर।।1842।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. वन्दन है मेरु नंदन, काटो जग के सब फंदन।
जिनधर्म मर्म सिखला दो, शिवपुर का पंथ दिखा दो।।1843।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. यह भक्त दक्षता पाये, चरणों में अर्घ्य चढ़ाए।
प्रभु आप धर्म जिनराजा, भक्तों के हो सरताजा।।1844।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

*चाबी

53. सांसारिक जीव घने हैं, सब राग-द्वेष में सने हैं।
उर में धारे जिनवर जो, पहुँचे वह मोक्ष नगर को।।1845।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तव भक्ति में मन लागे, कहिं और न ये मन पागे।
एकाग्र करूँ मन चंचल, पाऊँ फिर पद में अविचल।।1846।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. तिर्यंच गति में बहु दुख, पाया न इक पल का सुख।
इक श्वाँस में अठदस बार, किये जन्म मरण दुखकार।।1847।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तिर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. वास्तव में सौख्य को पाया, प्रभु केवलज्ञान उपाया।
जिन अर्चा है दुखहारी, वंदूँ जिनवर त्रिपुरारि।।1848।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

पुष्पों की वर्षा, सुरुतरु हर्षा, मंद सुगन्धित जल बूँदें।।
पक्षी सम लगतीं, मन को हरतीं, अर्घ चढ़ा जिनपद पूजें।।

ॐ ह्रीं समस्त-पुष्पजाति-वृष्टि-प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।

गुरु को देखना दिल में तो दिल को साफ रखना तुम।
करो अर्पण हृदय उनको हमेशा साथ रखना तुम।
न मंदिर में न मस्जिद में न है भगवान मूरत में,
गुरु भगवान का दर्पण समझकर याद करना तुम।।

गर्भ-संरक्षक

शुम्भत्-प्रभा-वलय-भूरि - विभा विभोस्ते,
लोक - त्रये द्युतिमतां द्युति-माक्षिपन्ति।
प्रोद्यद् - दिवाकर - निरन्तर - भूरि - संख्या,
दीप्त्या जयत्यपि निशा-मपि सोम-सौम्याम्।।34।।

चौपाई

भामण्डल की शोभा न्यारी, जिसमें रवि-शशि से द्युति भारी,
तीन लोक की उपमा जीतीं, जिनवर की है महिमा प्यारी।
एक साथ कई सूरज आवें, अपनी आभा को फैलावें,
फिर भी कांति भामण्डल की, सारे सूरज दवा न पावें।।34।।

क्ष्वेलर्द्धीन् जगज्जन्तूनां, परोपकारादिकारिणः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्वेलौषधर्द्धिप्राप्तभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा छन्द

1. शुंभत् शिखर समान हैं, आदीश्वर जिनदेव।
अन्तस् मन से मैं जजूँ, करूँ चरण नित सेव।।1849।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. वीभत्स रस से है भरा, नव मल द्वार बहैं।
यह तन मल का पींजरा, जिनवर वयन कहैं।।1850।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. प्रदक्षिणा करते प्रभु, द्वादश गण के जीव।
सप्त रूप दिखते स्वयं, सम्प्रति भावि अतीव।।1851।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री ववृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. भास्कर शर्मिन्दा हुआ, पश्चिम गया है डूब।
आदीश्वर को देखकर, भक्त उठा है झूम।।1852।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. वन्दनीय जिनदेव हैं, तीन लोक शिर मौर।
शरण आपकी आ पड़ा, कहीं न पाया ठौर।।1853।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. लघुता प्रभुता देत है, प्रभुता मदता लाय।
जो मद धारे जानकर, अधोगति में जाय।।1854।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. यथा नाम जिनदेव का, तथा गुणों को धार।
वृषभेश्वर जिन नाम है, वृष का किया शृंगार।।1855।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भूतल के भूपति जिनम्, भूतों के प्रभु नाथ।
तीन भुवन को आपने, कीना नाथ सनाथ।।1856।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. रिमझिम सावन बरसता, दिव्य ध्वनि बिखरेय।
एक चित्त सुनकर भविक, भवदधि पार करेय।।1857।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. विधी बतायी बुद्ध ने, शुद्ध बनो जग जीव।
सिद्धि डगर को पाय कर, होओ कर्म अतीव।।1858।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. भाव भासना हुई नहीं, पढ़ने से क्या काम।
स्वपर भेद नहिं हो सका, ज्ञानी का क्या धाम।।1859।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. विषाद भाव नहिं है प्रभु, ना ही राग रु द्वेष।
वीतरागता वंद्य तव, नहीं आप में दोष।।1860।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. भोगा अब तक भोग को, खुद ही भोग बना।
स्वानुभाव अमृत तजा, विषयामृत को चुना।।1861।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. कस्ते क्षमा हुआ यहाँ, सुरगुरु सम ज्ञानी।
आप गुणों के गान में, बुद्धि है अन्जानी।।1862।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. लोकेश्वर तुममें नहीं, लोक एषणा नाम।
आत्म साधना में सदा, लीन है आतम राम।।1863।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. कला सिखायी आपने, भव तिरने की नाथ।
बिन सीखे आयी कला, धन दौलत ले साथ।।1864।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. त्रय योगों का निरोध कर, हुए अयोगी देव।
सहस आठ दश शील के, स्वामी हुए महेश।।1865।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. ध्येय को पाया आपने, ध्यान योग से नाथ।
ध्यान ध्येय ध्याता नहीं, ज्ञायक हो प्रभु आप।।1866।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. द्युति मनहारी आपकी, सुरगण विस्मित होय।
अपलक आप निहारते, निज की सुध बुध खोय।।1867।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तिल अञ्जलि दी दोष को, भाग खड़े वे होय।
जिनवर की गुण कांति लख, वापिस आये न कोय।।1868।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मन मोहक मूरत प्रभो, आदि जिनालय धाम।
तन मन वच से पूजहूँ, पुनि पुनि करूँ प्रणाम।।1869।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. ताम्बूल भूषण तजे, राजपाठ सब त्याग।
आदीश्वर जग छोड़कर, धारण किया विराग।।1870।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. द्युमनाभि जिनवर प्रभो, नश्वर जग को जान।
शाश्वत पद को पावने, बैठे निज के ध्यान।।1871।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तिन पाया जिन खोजिया, निज में निज का राम।
निज को पाने के लिए, जिन को करूँ प्रणाम।।1872।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. मार्दव गुण धारे मुनि, मानादिक को खोय।
सहज स्वभावी संत जन, अंतस् मृदु गुण होय।।1873।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. क्षिति तल के भूषण परम, क्षितिज नमें पद दोय।
रक्षित हैं प्रभु भक्त तव, जिन पर छाया होय।।1874।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. पंगू पर्वत पर चढ़े, गूँगा स्तुति गाय।
भजन करे जो भाव से, स्वयं प्रभु हो जाय।।1875।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तीक्ष्ण बुद्धि नहिं चाहता, शुद्ध बुद्धि की चाह।
निज आतम को लख सकूँ, श्रद्धा निज अवगाह।।1876।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ती" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. प्रोत्साहन मिल जाय गर, अज्ञ विज्ञ बन जाय।
राग रहित हो जाय तो, द्वेष विलय हो जाय।।1877।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सद्य हुआ दर्शन प्रभु, अद्य सफल हुए नेत्र।
जन्म जन्म मिल जाय यह, हो मम देह पवित्र।।1878।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मुनि उद्दिष्ट को त्याग के, कर में करें आहार।
नीरस भोजन पाय कर, निज में करें विहार।।1879।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वाचस्पति न कर सकें, तव गुण का गुणगान।
अल्प बुद्धि मैं हूँ प्रभु, पुनि पुनि करूँ प्रणाम।।1880।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. कमठ सरीखा बैर भी, तत्क्षण क्षय हो जाय।
जो आये प्रभु की शरण, वो सन्मति को पाय।।1881।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रसना के वश होय कर, बहुत किए दुष्कर्म।
भक्ष्याभक्ष्य लखा नहीं, वचनालाप न शर्म।।1882।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. निरख नयन से दिव्य छवि, वयन कही नहिं जाय।
तुम्हें देखकर हे प्रभु! मन मयूर हरषाय।।1883।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. रंजन मन का त्याग कर, आत्म निरंजन देव।
भंजन मन का मैं करूँ, करूँ चरण की सेव।।1884।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तत्त्व ज्ञान हो जाय तो, निज में रुचि बढ़ जाय।
सदाचरण को पाल कर, निज आतम को पाय।।1885।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रण में भालों से विधे, हृदय जिनेश्वर ध्याय।
विधि से अरि को जीतकर, आत्म स्वरस को पाय।।1886।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. भूमण्डल के भूप तुम, फिर भी बने विदेह।
विश्वनाथ कहलाये हो, चिन्मय रूप अनेह।।1887।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. रिक्त कर दिये कर्म सब, फिर भी परम धनी।
अनुपम वृत्ति है आपकी, मैं हूँ अज्ञानी।।1888।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. संगी मिला न आप सम, बना रहा संसारी।
गुरुवर की किरपा हुई, शरण मिली त्रिपुरारि।।1889।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. ख्याति लाभ पाने प्रभु, श्रमित बना दिन रात।
आत्म शांति नहिं मिल सकी, इक पल हुआ न शांत।।1890।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. दीप्ति आपकी अमिट है, तिहुँ जग हो उद्योत।
इह जग सर्व पदार्थ हैं, जैसे नभ खद्योत।।1891।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दीप्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. त्यागोत्सव में ब्रह्मऋषि, ब्रह्म स्वर्ग से आय।
दीक्षा अनुमोदन किया, प्रभु पद शीश झुकाय।।1892।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. जग ज्योतिर्मय कर दिया, मरुदेवी के लाल।
ज्योति जगे मम ज्ञान की, चरणों में नत भाल।।1893।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. यत्न किया मैंने यहाँ, आत्म शांति के हेतु।
जिनवर की भक्ति बनी, भव सागर का सेतु।।1894।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. यत्र तत्र विचरूँ नहीं, विचरूँ आत्म प्रदेश।
शाश्वत स्वातम देश को, पाऊँ सद्य जिनेश।।1895।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. पिया विषय प्याला यहाँ, दुख को बढ़ा लिया।
वचनामृत प्याला मिला, सुखमय हुआ जिया।।1896।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. नित्य जो भक्तामर पढ़े, महा विधान करें।
भक्तों का मन ये कहे, सारे विघ्न टलें।।1897।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. शासन श्री वृषभेश का, शास्ता श्रेष्ठ जिनेश।
अनुशासन में हम रहें, चरण नमें परमेश।।1898।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. मन मंदिर सूना पड़ा, हृदय कमल है सुप्त।
आकर नाथ विराजिये, रीति रहे यह गुप्त।।1899।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. पिता जगत प्रभु आप हो, करते पाप क्षरण।
अत: तजा सब जगत को, पायी आप शरण।।1900।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. सोना बनता लोह भी, मणि पारस छू ले।
मुक्ति को वह प्राप्त हो, जो विधान कर ले।।1901।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. मन को दर्पण कर लिया, सहज स्वभावी देव।
सन्त सभी मन में धरें, देव करें नित सेव।।1902।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. सौम्य छवि प्रभु आपकी, देती समरस दान।
भटके भक्तों के हृदय, प्रभु बसो अब आन।।1903।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सौं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. यांति ते परमां गतिम्, जो नर करते ध्यान।
अष्ट कर्म का नाश कर, पाते शिवपुर थान।।1904।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

तिहुँ लोक की कान्ति, लज्जित होती, सहस्र सूर्य सम भामण्डल।
भव सात दिखाता, देता साता, अर्घ देत सुर नर मण्डल।।

ॐ ह्रीं कोटि भास्कर-प्रभामंडित-भामण्डल प्रातिहार्ययुक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।

ज़माने की सभी बातें ज़माने में ही रहने दो,
हमें अपने घराने की कोई बातें भी कहने दो।
ज़माने में अगर देखें तो गम ही गम नज़र आते,
खुशी का सिलसिला पाने सभी गम आज सहने दो।।

ईति-भीति निवारक

स्वर्गापवर्ग - गम-मार्ग - विमार्गणेष्टः,
सद्धर्म तत्त्व कथनैक - पटुस्-त्रिलोक्याः।
दिव्यध्वनि - र्भवति ते विशदार्थ - सर्व-
भाषा-स्वभाव-परिणाम-गुणैः प्रयोज्यः।।35।।

चौपाई

स्वर्ग-मोक्ष का मार्ग बताती, सत्य धरम का राज दिखाती,
ऐसी दिव्य ध्वनि है प्यारी, भव्यों का अज्ञान मिटाती।
गुण-पर्यय-द्रव जिसमें सारे, ज्ञान विशद ऋषिवर उच्चारे,
भाषा सर्वमयी प्रभु वाणी, दूर करे तम दे उजियारे।।35

जल्लर्द्धीन् मलतोऽशेष, दुष्टव्याधि क्षयङ्करान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं जल्लौषर्द्धि प्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज–हे दीनबन्धु श्री

1. स्वर्गावतरण के समय सुरगण सभी आते,
जिनदेव की पूजा रचाते थाल सजाते।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद देव हो तुम्हीं।
हम आये शरण आपकी भव तार दो अभी।।1905।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. गाथा दुःखों की मेरी नाथ आप जानते।
क्या क्या सुनाऊँ नाथ ज्ञान सर्व भासते।। हे नाभिनंद...।।1906।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. पल का भरोसा है नहीं नश्वर ये देह है।
कल के भरोसे बैठा ये मानव का मोह है।। हे नाभिनंद...।।1907।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. वर्णन गुणों का कर सकूँ बुद्धि न प्राप्त है।
फिर भी गुणों को गाने का मेरा प्रयास है।। हे नाभिनंद...।।1908।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. गण ईश आप हो प्रभु गणधर जी बताते।
तव वाणी को वचनों में गूँथ सबको सुनाते।। हे नाभिनंद...।।1909।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. गगनांगना में दुन्दुभि बजाके बुलाया।
कर लो प्रभु का दर्श देवों ने है बताया।। हे नाभिनंद...।।1910।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. मन को सजाया मैंने भक्ति भाव से यहाँ।
प्रभु प्रीति उर में धार के घूमूँ मैं सब जहाँ।। हे नाभिनंद...।।1911।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मार्ग में चलूँ सदा ही नाथ मैं भी आपके।
सारे करम के बंध तोड़ दूँ मैं पाप के।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद देव हो तुम्हीं।
हम आये शरण आपकी भव तार दो अभी।।1912।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मार्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. गति चार योनि लाख चौरासी भ्रमण किया।
जो आपने पायी गति पंचम लखे जिया।। हे नाभिनंद...।।1913।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. विज्ञान भानु आपका, जग में अमर प्रभो।
सुज्ञान का प्रकाश किया जगत में विभो।। हे नाभिनंद...।।1914।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. मार्ग कठिन है मुक्ति का जिनदेव चल पड़े।
उस पाथ पे चलना मुझे ऋषिवर जहाँ खड़े।। हे नाभिनंद...।।1915।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मार्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. गणना गुणों की करने में कोई नहीं सक्षम।
प्रभु गान करूँ कैसे मुख से मैं रहा अक्षम।। हे नाभिनंद...।।1916।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. शरणे है आया भक्त आपकी करे पुकार।
निष्पाप बनूँ नाथ मैं ये है मेरी गुहार।। हे नाभिनंद...।।1917।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. कष्टः सहे अनेकों नाथ पुष्ट कीजिए।
आया हूँ तेरे दर पे नाथ ध्यान दीजिए।। हे नाभिनंद...।।1918।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्टः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. सद्ज्ञान सुमन खिलें रहे गुणसूर्य देखकर।
भव्यों के मन मचल रहे जिनसूर्य को लखकर।। हे नाभिनंद...।।1919।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. सद्धर्म का उपदेश दिया नाथ आपने।
वृषमय बनाया जगत को वृषभेश आपने।। हे नाभिनंद...।।1920।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. मत्सर का भाव आपके जीवन से दूर था।
गुणियों का भाव भी यहाँ विमुद जरूर था।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद देव हो तुम्हीं।
हम आये शरण आपकी भव तार दो अभी।।1921।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तत्पर हुआ है नाथ मन भक्ति में आपकी।
हे वीतरागी! बन विरागी नाम जाप की।। हे नाभिनंद...।।1922।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. एकत्व मानता रहा पर द्रव्य में यहाँ।
पृथक्त्व का न भाव जगा घूमा सब जहाँ।। हे नाभिनंद...।।1923।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. कर्मों पे किया ले प्रहार ज्ञान की कुदाल।
निष्कर्म जिनेश्वर के चरण झुक रहा ये भाल।। हे नाभिनंद...।।1924।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. थम जाता है कषाय का उद्वेग नाथ तब।
ज्ञान प्रकाश आत्मसात् होता नाथ जब।। हे नाभिनंद...।।1925।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नैना तरस रहे हैं दरश को बरस रहे।
प्रत्यक्ष आप पर्श पा भविजन हरष रहे।। हे नाभिनंद...।।1926।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. करता हूँ न्हवन भाव से श्रद्धा कलश भरा।
है भक्त की ये भावना हो करूणामयी धरा।। हे नाभिनंद...।।1927।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. पर्वाधिराज सा लगे प्रभु के विधान में।
सुध न रहे तन मन की भक्ति के जहान में।। हे नाभिनंद...।।1928।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. कटुस्वर नहीं सुहाता मिष्ट वचन चाह है।
हितमित प्रभु की वाणी में सुख भी अथाह है।। हे नाभिनंद...।।1929।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "टुम्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. त्रिभुवन के नाथ आप पूर्ण ज्ञान से भरे।
तव सन्निधि को पाके, आत्मज्ञान हम करें।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद देव हो तुम्हीं।
हम आये शरण आपकी भव तार दो अभी।।1930।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. लोकाग्र पे हो राजते लोकेश आप ही।
बनूँ आपका पथगामी पाऊँ आठवीं मही।। हे नाभिनंद...।।1931।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. त्रिलोक्या: सुख दाता नाथ भाग्य विधाता।
बस जाओ मन के मंदिर भर डालो सुख साता।। हे नाभिनंद...।।1932।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्या:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. दिनकर की कान्ति फीकी पड़ी आप सामने।
प्रभु आप जय की ध्वजा फहरी है जहान में।। हे नाभिनंद...।।1933।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. व्यवहार अरु निश्चय का भेद आप बताया।
मुनिगण ऋषिगणों ने है जीवन में उतारा।। हे नाभिनंद...।।1934।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. ध्वज धर्म को फहराया पाठ दया पढ़ाया।
जिन शासन की महिमा को नाथ आप बताया।। हे नाभिनंद...।।1935।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. निर्झर के झरने फूट पड़े अंग अंग से।
कर्मों की कालिमा धुली सब ज्ञान गंग से।। हे नाभिनंद...।।1936।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "निर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. भव भव में नाथ आपकी शरणा मुझे मिले।
इस मुक्ति के उपवन में शाश्वता सुमन खिले।। हे नाभिनंद...।।1937।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. वर माँगता हूँ नाथ आज एक आपसे।
कर दो करम का नाश संग रहूँ आपके।। हे नाभिनंद...।।1938।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तिल में भरा ज्यों तेल फूल में सुगन्ध है।
आतम बसे परमात्म ध्यान में महन्त हैं।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद देव हो तुम्हीं।
हम आये शरण आपकी भव तार दो अभी।।1939।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तेरह नहीं न बीस कोई पंथ आपका।
निर्ग्रन्थ पंथ आपका देता जो शाश्वता।। हे नाभिनंद...।।1940।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. विद्या विनय से आती सिद्धालय है पठाती।
मिलती शरण में आपके गुण को है दिलाती।। हे नाभिनंद...।।1941।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. शची आपकी भक्ति से ऐसा पुण्य कमाती।
अगले ही भव से नाथ वो मुक्ति पुरी जाती।। हे नाभिनंद...।।1942।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. दार्शनिक हो श्रेष्ठ आप केवलदर्श आप में।
निज आत्म दर्श दे दो नाथ शक्ति जाप में।। हे नाभिनंद...।।1943।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दार्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. थक कर हुआ हूँ चूर चतुर्गति भ्रमण से मैं।
अब हार कर आया हूँ आदि प्रभु की शरण में।। हे नाभिनंद...।।1944।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. सर्वप्रथम है वंदना जिनदेव की चरण।
पश्चात् सुन के मगन हूँ जिनवाणी के वचन।। हे नाभिनंद...।।1945।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वसुधा भी खिल खिला उठी कण कण में हर्ष था।
प्रभुवर के जन्म समय में त्रिभुवन विहर्ष था।। हे नाभिनंद...।।1946।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. भाव ये बनाया मैं भगवान बनूँगा।
कर्मों का करके नाश ज्ञानवान बनूँगा।। हे नाभिनंद...।।1947।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. भाषा अठारह महा लघु सात सौ कहीं।
दिव्यध्वनि में आपकी भव्यों को हैं खिरीं।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद देव हो तुम्हीं।
हम आये शरण आपकी भव तार दो अभी।।1948।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. स्वराज्य को जिनदेव आपने है पा लिया।
स्वतंत्र होने को मेरा ललचाया है जिया।। हे नाभिनंद...।।1949।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. भागीरथी के समां प्रभु आप हो निर्मल।
हो ध्यान मगन नाश दी कर्मों की सब किलकिल।। हे नाभिनंद...।।1950।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. वसु कर्म को नशाया औ वसु गुण को पा लिया।
नोकर्म मिटा करके, निज का मर्म पा लिया।। हे नाभिनंद...1951।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. पर द्रव्य में जो भाव गया दुःख का हेतु।
परमार्थ को समझ है मैंने मुक्ति का सेतु।। हे नाभिनंद...।।1952।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. रिक्त हुआ कर्म कोष आपका स्वामी।
फिर भी परम धनी हुए प्रभु आप अभिरामी।। हे नाभिनंद...।।1953।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. णाणं है णेय के प्रमाण आप बताया।
नश जाय मेरा ज्ञानवरण भाव बनाया।। हे नाभिनंद...।।1954।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. महका रही है मन को वीतरागी तव छवि।
तुम सम विरागता को पाने की ललक जगी। हे नाभिनंद...।।1955।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. गुण के ग्रहण का भाव रखूँ मैं सदा यहाँ।
चिन्मय गुणों के स्वाद को चख लूँ मैं कब कहाँ।। हे नाभिनंद...।।1956।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. गुणैः प्रभु ने दोष सब मिटा दिए जहाँ।
विद्वज्जनों ने सिर झुका दिए प्रभु वहाँ।।
हे नाभिनंद! श्री जिनंद देव हो तुम्हीं।
हम आये शरण आपकी भव तार दो अभी।।1957।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. प्रज्ञा को नाथ आपकी सबने नमन् किया।
शिव शर्म पाने आप सम दृढ़ मन को कर लिया।। हे नाभिनंद...।।1958।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. योजन प्रमाण बारह तव समवशरण था।
बारह सभा से शोभता भवि की शरण बना।। हे नाभिनंद...।।1959।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. पूज्यः हुए पद धाम परम देव आप ही।
मैं भक्ति करूँ आपकी भगवान आप ही।। हे नाभिनंद...।।1960।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

त्रय गति के प्राणी, सुनते वाणी, दिव्य ध्वनि है कल्याणी।
सब भाषा में पाओ, अर्घ चढ़ाओ, भवि को है शिव-सुखदानी।।

ॐ ह्रीं जलधर-पटलगर्जित-सर्वभाषात्मक-योजनप्रमाणदिव्यध्वनि-प्रातिहार्य युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।

अमल से जिंदगी बनती है जन्नत भी जहन्नुम भी,
अभी भी कुछ नहीं बिगड़ा बना ले जिंदगी अपनी।
अजब तस्वीर से तासीर हासिल की है यारब ने,
जो है जागीर यारब की वही जागीर हो अपनी।।

लक्ष्मी-प्रदायक

उन्निद्र-हेम नव-पंकज-पुञ्ज-कान्ति-
पर्युल्लसन्-नख - मयूख - शिखाभिरामौ।
पादौ पदानि तव यत्र जिनेन्द्र! धत्तः,
पद्मानि तत्र विबुधाः परिकल्पयन्ति।।36।।

चौपाई

खिले स्वर्णमय कमल बनाते, अन्यदेश जब जिनवर जाते,
जहाँ चरण प्रभु के पड़ जाते, देव वहाँ पर कमल रचाते।
चार कोश का एक कमल है, स्वर्णमयी अत्यन्त विमल है,
जिसकी कांति निराली जग में, सुन्दर कांति महा निर्मल है।।36।।

भू-तल के भूषण तुम्हीं, संकट नाशी नाम।
परमेश्वर हे आदि जिन! तुम्हें "विनम्र" प्रणाम।।

विण्महर्द्धि विसंयोगात्, नरां रोग विनाशकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं विष्ठौषधर्द्धि प्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छन्द

1. उन्मीलित नेत्र हैं जिनके, नहिं धर्म दिखे है तिनके।
प्रभु कर दो नेक उजाला, जीवन न बने फिर हाला।।1961।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "उन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. निरखो प्रभु के अंग अंग को, जो दे उपदेश नि:संग को।
तव वीतरागता न्यारी, जाऊँ इस पर बलिहारी।।1962।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. द्रव्यरु पदार्थ जो गाये, गणधर जी ने समझाये।
गुरुओं ने रचा जिनागम, हम करते हैं हृदयांगम।।1963।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. हे जगत्पूज्य! जिनवर जी, हो वंदनीय वंदन जी।
आया मैं शरण तुम्हारी, भव पार करो मम बारी।।1964।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. मरुनंदन आप कहाते, शत इन्द्र हैं शीश झुकाते।
गणधर भी तव गुण गाकर, भव्यों को महिमा सुनाते।।1965।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. नहिं झपकें पलक जिनेश्वर, है केवलज्ञान का अतिशय।
चर अचर पदारथ जग के, प्रभु के निज ज्ञान में झलकें।।1966।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. वस्तु स्वरूप को जाना, समता के बने खजाना।
मैं अहो भाव से पूजूँ, तव चरणों को नित चूमूँ।।1967।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. पंछी बन उड़ूँ गगन में, प्रभु बैठे आत्म चमन में।
मन मंदिर कर लो वास, प्रभु मुझे बिठा लो पास।।1968।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. करुणाकर हे जिनराज!, मम कल्मष हर दो आज।
जब मिलता प्रभु का दर्श, मिट जाता सब संघर्ष।।1969।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. जननी से अधिक महान, हे उपकारी! भगवान।
माता दे मात्र जनम को, प्रभु नाश करें भव वन को।।1970।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. पुंजादि बना अक्षत के, प्रभु चरण चढ़ाए झुक के।
है पुण्य फला अरहन्ता, पाया तुमने भगवन्ता।।1971।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. जयवंतो आदि जिनेशा, मेंटो मम जनम क्लेशा।
मन की है ये अभिलाषा, प्रभु पूर्ण करो सब आशा।।1972।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. कांति अनुपम जिनवर की, जग की उपमाएँ फीकीं।
हे वंदनीय! जिनदेवा, करते सुरगण तुम सेवा।।1973।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. तिरने की कला सिखाते, प्रभु आप वीर्य दिखलाते।
मैं धरूँ दिगम्बर भेष, पाऊँ निज चिन्मय देश।।1974।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. पर्व समां तव दर्श, पाकर हो मन अति हर्ष।
रात्रि भी लगे प्रभात, जब दर्शन हो साक्षात्।।1975।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. युग के हे आदि जिनेश! तुम्हें नमते इन्द्र खगेश।
हो परम पिता परमातम, पा जाऊँ मैं निज आतम।।1976।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. झल्लरियाँ झिलमिल करतीं, शोभा समोशरणे बढ़ती।
भवि जीवों को सुखदायी, दिव्य ध्वनि श्री जिनरायी।।1977।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल्ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. सन्निकट आओ जिनवर के, दुन्दुभि आकाश में चहके।
सोते को आन जगाये, प्रभु मोक्ष डगर दिखलाये।।1978।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. नयनों से नहिं दिखते हो, होता एहसास यहीं हो।
हो नाथ मेरे ही पास, करते मम उर में वास।।1979।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. खत्म कर दिए दोष, भरा चिन्मयी गुण का कोष।
मैं आया जिनवर द्वार, करिये मेरा उद्धार।।1980।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. महिमा महन्त जन गावें, प्रभु आठों याम् ही ध्यावें।
डूबे जो उन्हें तिरायें, गिरते को प्रभु उठायें।।1981।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. केयूर हार धारण कर, सुर ललना नचे मचलकर।
प्रभु की मूरत अति प्यारी, लखकर हर्षें नर नारी।।1982।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. खड्ग ध्यान की लेकर, सेना दश धर्म सजाकर।
कीना प्रभु तीव्र प्रहारा, हुआ कर्मों का संहारा।।1983।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. शिवपुर पहुँचे जगवन्द्य, कर नाश कर्म के बंध।
गुरुवर का पा निर्देश, भविजन पहुँचे निज देश।।1984।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. खारे जल सम हैं कुदेव, हैं क्षीर सिंधु जिनदेव।
करुणासागर को देख, छोड़े प्रभु द्वार अनेक।।1985।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. भिग रहे भक्तों के नैन, दर्शन पाने नहिं चैन।
कुछ तो उपाय बतला दो, प्रभु अब तो दर्श दिखा दो।।1986।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रागादिक भाव को छोड़ूँ, जिनवर से नाता जोड़ूँ।
मन में प्रभु करो प्रवेश, मिल जाये सिद्ध प्रदेश।।1987।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. मौलिक निधि निज आतम है, त्रिभुवन में श्रेष्ठ वतन है।
शाश्वत प्रभु का है साथ, तुम मात पिता हो भ्रात।।1988।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. पापों का होवे अंत, हो त्रिविध कर्म विध्वंस।
हे कर्मजयी! जिनराज, तुम तारण तरण जहाज।।1989।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. दौलत को नश्वर जाना, अविनाशी निज को माना।
निज पर का भेद बताकर, पहुँचे प्रभु शिवपुर जाकर।।1990।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. पहने गुण के आभूषण, प्रभु दूर हुए सब दूषण।
जग में न्यारी तुम शान, हे आदिनाथ! भगवान।।1991।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. दानव भी मानव बनता, जो आदि प्रभु को नमता।
तव पद में बीते जीवन, मिल जाये नव संजीवन।।1992।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. निज घर पाने की चाह, दे दो मुक्ति की राह।
मम अरज पे दीजै ध्यान, प्रभु भक्त है ये नादान।।1993।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. तन धन में हो आसक्त, मैंने जन्म गँवाए व्यर्थ।
अब समझ आई है बात, भक्ति से हुआ प्रभात।।1994।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. वरदान प्रभु दो आज, हो पूरण मेरा काज।
बुलवा लो अपने आप, मिटे कर्मों का संताप।।1995।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. यमराज देख भय खाये, जो जग जीवों को डराये।
हे मृत्युञ्जयी जिनेश! दीजै हमको निज भेष।।1996।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. त्रस थावर जो पर्याय, धरी नंत बार जिनराय।
प्रभु नहिं अब इनको धारूँ, ऐसा पुरुषार्थ उपाऊँ।।1997।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. जिनमत से हो कल्याण, देते हैं प्रभु वरदान।
प्रभु विपुल गुणों भण्डार, हो नमन् हजारों बार।।1998।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जिनेन्द्र प्रभु का दर्शन, निज का होवे अब पर्शन।
मिट जाते सभी विकार, प्रभु पद देते अविकार।।1999।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नें" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. द्रव्य नहीं कुछ साथ, प्रभु जोड़ खड़ा हूँ हाथ।
मुक्ता मणि का नहिं थाल, श्रद्धा से है नत भाल।।2000।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. धन धान्य आप बरसाते, अगणित भविजन फल पाते।
जिन चरण बिताये काल, जीवन हो उसका निहाल।।2001।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. मत्तः होकर जग घूमा, मदिरा पीकर के झूमा।
हो गया आपसे दूर, दुःख पाये हैं भरपूर।।2002।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. पद्मासन ध्यान लगाया, क्षण में कर्मों को नशाया।
है शुक्ल ध्यान की शक्ति, जिसने है दिलायी मुक्ति।।2003।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. मायादिक शल्य मिटायी, हे महाव्रती जिनरायी!
मैं भी त्रय शल्य मिटाऊँ, प्रभु तुम सम ही बन जाऊँ।।2004।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. निश्चल हो ध्यान में रमते, प्रभु लोकालोक निरखते।
बीते गुणवादन काल, मैं नमन करूँ त्रैकाल।।2005।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तमहर उज्ज्वल तुम ज्योति, प्रभु चरण लगायी प्रीति।
हो दीपक आप अपूरब, हे महामहिम जिन सूरज!।2006।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. त्रय ज्ञान धारी जन्मत ही, अज्ञान निवारी मति थी।
असि मसि दीना उपदेश, फिर धरा दिगम्बर भेष।।2007।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. विज्ञान भानु के धारी, गणधर ने थुति उच्चारी।
भक्ति से आश जगी है, शुद्धातम लगन लगी है।।2008।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. बुद्धि हुई सफल है आज, तव भक्ति से जिनराज।
जिन भक्ति दिलाती चैन, ज्यों अंधे को हैं नैन।।2009।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. वसुधाः हुई वधू समान, किया जिनवर का सम्मान।
जब जन्म हुआ जिनराज, झूमा सब देव समाज।।2010।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. पल-पल मैं करूँ प्रतीक्षा, पाऊँ कब जिनवर दीक्षा।
हे नाथ! हृदय में आओ, मम जीवन सफल बनाओ।।2011।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. गिरि से गिरती जलधार, जिनमुख से अमृत धार।
गणधर ने गूँथी वाणी, जो द्वादश अंग बखानी।।2012।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. कल्मष का होता अंत, संकल्पित हो जब संत।
प्रभु सन्निधि जब मिल जाये, ज्यों निर्धन अति धन पाये।।2013।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. पर पराग भँवरे गूँजें, प्रभु भक्त आपके झूमें।
ज्यों बालक माँ की गोद, होता है मन में प्रमोद।।2014।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. यथाजात जिन भेष, तुम धारा आदि जिनेश।
हम पुण्य से दर्शन पायें, चरणों में अर्घ चढ़ायें।।2015।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. विश्रान्ति जिनवर पायी, कर्मन दीवार गिरायी।
मैं आया तुमरे पास, प्रभु सुनिये मम अरदास।।2016।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

प्रभु करें विहार, हो जयकार, सुरगण स्वर्णिम कमल रचें।
हैं दो सौ पच्चीस, हृदय कमल जित, अर्घ चढ़ा हम चरण जजें।।

ॐ ह्रीं पादन्यासे पद्मश्री युक्ताय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहि पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।

खुदा ने जो भी पाया है वो इक दिन हम भी पा जायें,
ज़माने का हो सच जो भी वो चेहरे से दिखा जायें।
मेरे दिल में हो वो तासीर खुद तद्वीर लिख जाये,
किसी की आँख के आँसू मेरी आँखों में आ जायें।।

दुष्टता-प्रतिरोधक

इत्थं यथा तव विभूति-रभूज्जिनेन्द्र!
धर्मोपदेशन-विधौ न तथा परस्य।
यादृक् प्रभा दिनकृतः प्रहतान्धकारा,
तादृक् कुतो ग्रह-गणस्य विकासिनोऽपि।।37।।

चौपाई

समवशरण में दें उपदेश, वीतरागमय जिनका भेष,
जो विभूति है तुझमें दिखती, वैसी अन्यदेव नहिं लेश।
रवि में जैसी कांति चमकती, वैसी क्या तारों में दिखती,
हे प्रभु! रवि सम आप महान, अन्य देव तारागण जान।।37।।

सर्वौषधर्द्धि संयुक्तान्, निःशेषामय* नाशिनः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्वौषधिर्द्धि प्राप्तेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज–चौबीसी पूजा

1. इत्यादिक कछु इक नाम, सुरपति ने गाये।
महिमा तुम देव महान, कैसे हम गायें।।
वृषभेश्वर नाभि जिनंद प्रभु मंगलकारी।
मैंटो भव भव के फंद, पाऊँ शिवनारी।।2017।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "इत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. स्वस्थं श्री पूर्ण जिनंद, वंदूँ रोग नशें।
हैं पूर्ण निरोगी नाथ, मेरे चित्त बसें।। वृषभेश्वर...।।2018।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. यह तत्त्वों का उपदेश, जो तुमने दीना।
भक्तों ने सुना हमेश, उर में धर लीना।। वृषभेश्वर...।।2019।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. थाली भर हेममयी, दिव्य द्रव्य लेकर।
सुरगण करते अर्पण, भक्ति से भरकर।। वृषभेश्वर...।।2020।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "था" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. तत्त्वों का सुन उपदेश, सुरगण सु–मन खिले।
हुए धन्य आज वृषभेश, श्रवण सु–वचन मिले।। वृषभेश्वर...।।2021।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. वर श्रेष्ठ जगत जिनराज, महिमा मिल गायें।
प्रभु अजब निराली शान, सुरपति दर्शायें।। वृषभेश्वर...।।2022।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. विरले जग में जिनदेव, विशद ज्ञान धारी।
अब सुनिये हमरी टेव, प्रभु मंगल कारी।। वृषभेश्वर...।।2023।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

* सर्वेषामय

8. भूला निज का मैं देश, सब जग में ढूँढ़ा।
दिखलाओ शिवपथ नाथ, हो चला मैं बूढ़ा।।
वृषभेश्वर नाभि जिनंद प्रभु मंगलकारी।
मैंटो भव भव के फंद, पाऊँ शिवनारी।।2024।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. तिमिरान्ध हुआ घनघोर, मोह घटा छायी।
प्रभु ज्ञान सूर्य प्रकटाओ, अब मेरी बारी।। वृषभेश्वर...।।2025।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. रस रूप गंध नहिं वर्ण, परम विदेही जिन।
हम जान न पाये गुण, हे अभिरामी! जिन।। वृषभेश्वर...।।2026।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. भूज्वाला आदि शरीर, त्रस काया धारी।
नहिं मिला कहीं सुख चैन, आया शरण तेरी।। वृषभेश्वर...।।2027।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भूज्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. जिनदेव नाम का मंत्र, भव–भव दुख नाशे।
जो कर ले प्रभु का दर्श, आत्म ज्ञान भासे।। वृषभेश्वर...।।2028।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. रसनेन्द्रिय के वश होय, अति दुख हैं पाये।
हे परम जितेन्द्रिय देव! शरण तेरी आये।। वृषभेश्वर...।।2029।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नें" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. द्रव्य भाव और नो कर्म, रहित जिनेश्वर जी।
शाश्वत पद तुमने पाय, हे परमेश्वर जी!। वृषभेश्वर...।।2030।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. धर्मी को देख प्रमोद, जब मन में उमड़े।
तब ही कषाय के भाव, पल भर में उजड़े।। वृषभेश्वर...।।2031।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. मोचन कषाय कीना, केश लौंचन करके।
कर्मों का क्षय कीना, ध्यान मगन रहके।। वृषभेश्वर...।।2032।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. परिचय पर से करके, भव दुख ही पाया।
स्वातम के परिचय से, आत्म सौख्य पाया।।
वृषभेश्वर नाभि जिनंद प्रभु मंगलकारी।
मैंटो भव भव के फंद, पाऊँ शिवनारी।।2033।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. देखन को रूप जिनेश, सुरगण मिल आये।
लख वीतरागी तुम रूप, सब मन हर्षाये।। वृषभेश्वर...।।2034।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. शक्ति मुझमें नहिं है, तव गुणगान करूँ।
प्रभु नाम मंत्र की जाप, अपने चित्त धरूँ।। वृषभेश्वर...।।2035।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. नयनाभिराम जिनदेव, नैना मम तरसे।
तव दर्शन को परमेश, बरसों से बरसे।। वृषभेश्वर...।।2036।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. विद्या का होय अभाव, तब प्राणी रोता।
जिनदेव विरह में भक्त, अघ मल को धोता।। वृषभेश्वर...।।2037।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. धौत विशुद्ध श्वेत, लेश्या के धारी।
जिनवर जगती के नाथ, जग के उपकारी।। वृषभेश्वर...।।2038।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. नश गये कर्म के बंध, प्रभु निर्बन्ध हुए।
जब से तुम मिले जिनंद, दृढ़ संबंध हुए।। वृषभेश्वर...।।2039।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तन्मय होकर जिनदेव, चरणन् सेव करूँ।
बस लक्ष्य यही वृषभेश, स्वातम नेह धरूँ।। वृषभेश्वर...।।2040।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. थावर त्रस जो पर्याय, नंत काल धारी।
यह आत्मकथा जिनदेव, तुमसे उच्चारी।। वृषभेश्वर...।।2041।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "था" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. पग-पग पर छलता मोह, जग में भरमाता।
खाता धोखा हर बार, आतम फँस जाता।।
वृषभेश्वर नाभि जिनंद प्रभु मंगलकारी।
मैंटो भव भव के फंद, पाऊँ शिवनारी।।2042।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. रवि शशि का यह आकर्ष, कुछ ही पल का है।
प्रभु छवि का ही आकर्ष, शिव सुख देता है।। वृषभेश्वर...।।2043।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. जो रहस्यमयी जिन वाणी, प्रभु ने समझायी।
समदृष्टी समझ गये, मुक्ति अनुयायी।। वृषभेश्वर...।।2044।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. याद आती रहे आदीश, ऐसी मति दे दो।
कभी लौट के आऊँ ना, ऐसी गति दे दो।। वृषभेश्वर...।।2045।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. यादृक् आदीश्वर देव, समवशरण सोहे।
अचरज है नासा दृष्टि, जन जन मन मोहे।। वृषभेश्वर...।।2046।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दृक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. प्रणमामि सदा जिननाथ, मन आनन्दित हो।
लखकर गुणगण की राशि, सुख संपादित हो।। वृषभेश्वर...।।2047।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. भावों से बंध जिनेश, भावों से मुक्ति।
समझाया आप महेश, बतलायी युक्ति।। वृषभेश्वर...।।2048।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. दिग्भ्रमितों को दे बोध, राह दिखाते हैं।
हे दया सिन्धु जिनदेव! हम गुण गाते हैं।। वृषभेश्वर...।।2049।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. नर जन्म मिला जिनदेव, नव निर्माण करूँ।
पा चरण करूँ नित सेव, निज कल्याण करूँ।। वृषभेश्वर...।।2050।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. कृत्रिमाकृत्रिम जिनधाम, में जो प्रतिमा हैं।
उन सबकी पूज रजाऊँ, अगणित महिमा हैं।।
वृषभेश्वर नाभि जिनंद प्रभु मंगलकारी।
मैंटो भव भव के फंद, पाऊँ शिवनारी।।2051।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. सर्वतः तवख्याति जिनेश, तिहुँ जग में फैली।
महिमा सुन आया महेश, भरने निज थैली।। वृषभेश्वर...।।2052।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. प्रमुदित मन आज हुआ, गुण चिंतन करके।
हुई परम शांति अनुभूत, पद वंदन करके।। वृषभेश्वर...।।2053।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. हर पल मन है तैयार, पाप कमाने को।
प्रभु आप शरण मिली आज, पुण्य बढ़ाने को।। वृषभेश्वर...।।2054।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. दुरितां हरता वृषभेश, भव दुख भंजन हो।
तुम विघ्न विनाशी देव, चरणों वंदन हो।। वृषभेश्वर...।।2055।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. धर्मी को देख हमेश, प्रीति उर धरना।
भवि से कहते अखिलेश, समदृष्टि बनना।। वृषभेश्वर...।।2056।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. कारज के कारण आप, मुक्ति पथ नेता।
दुख हरते शिव करते, इन्द्रिय मन जेता।। वृषभेश्वर...।।2057।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. राजाओं के अधिराज, शिव साम्राज्य धनी।
प्रभु तारण तरण जहाज, बिगड़ी आज बनी।। वृषभेश्वर...।।2058।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तामस वृत्ति ने नाथ, तम को बढ़ाया है।
तापस वृत्ति दी आप, भ्रम को नशाया है।। वृषभेश्वर...।।2059।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. तादृक् तुम सम ना जिनेश, या जग के माँही।
वरते शिवपथ की राह, आया तुम ठाँही।।
वृषभेश्वर नाभि जिनंद प्रभु मंगलकारी।
मैंटो भव भव के फंद, पाऊँ शिवनारी।।2060।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दृक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. कुज्ञान विनाशी देव, अब सुज्ञान वरो।
मिट जाय जनम की टेव, अब मम ध्यान धरो।। वृषभेश्वर...।।2061।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तोड़े जग के सब फंद, शिवपुर राह चले।
प्रभु जीवन बना मकरंद, भवि भँवरे मचले।। वृषभेश्वर...।।2062।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. ग्रह सके न राहु जिनेश, ज्ञान सूर्य हो तुम।
हम आये शरण महेश, ज्ञान पूर्ण हो मम।। वृषभेश्वर...।।2063।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. हवा बहती मंद सुगंध, ऐसा लगता है।
प्रभु वृषभ धरा पर आये, मन ये कहता है।। वृषभेश्वर...।।2064।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. गति अगति से मुक्त हुए, शिवपुर वासी जिन।
प्रभु अर्घ चढ़ाऊँ यहाँ, व्याकुल मन तुम बिन।। वृषभेश्वर...।।2065।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. णरस्स सारं णाण, प्रवचन में कहते।
तुम ज्ञान सुधा बरसात, भविजन मन महके।। वृषभेश्वर...।।2066।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. अस्य कस्य करते, कई जन्म गँवाए हैं।
अब पैर थके मेरे, तव दर आये हैं।। वृषभेश्वर...।।2067।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. विज्ञान भानु प्रकटाय, सब जग दर्शाया।
तब यश को सुन जिनराय, चरणों में आया।। वृषभेश्वर...।।2068।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. हे कालजयी जिनराज, जीता तुमने काल।
वह हार गया तुमसे, झुका दिया है भाल।।
वृषभेश्वर नाभि जिनंद प्रभु मंगलकारी।
मैंटो भव भव के फंद, पाऊँ शिवनारी।।2069।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. सिद्धालय वासी जिनेश, नयनों ना दिखते।
तुम नाम से काम बने, हम भक्ति करते।। वृषभेश्वर...।।2070।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. नो कर्म और वसु कर्म, अनुचर से रहते।
है कोई कर्म न श्रेष्ठ, जिनवर जी कहते।। वृषभेश्वर...।।2071।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. कदाऽपि भूलूँ ना, प्रभु ऐसा वर दो।
है नाथ प्रार्थना एक, शिव फल का वर दो।। वृषभेश्वर...।।2072।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

प्रभु आप विभूति, अन्य न होती, धर्मोपदेश की बेला में।
सूरज सम ज्योति, तारों न होती, अर्घ चढ़ा बनूँ चेला मैं।।

ॐ ह्रीं धर्मोपदेशसमये समवशरणादि-लक्ष्मीविभूति विराजमनाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं झ्रौं झ्रौं नमः।

न छोड़ो आप अपना घर न भटको तुम ज़माने में,
बनाओ घर यहाँ गुलशन न रहना कैदखाने में।
ज़माने में सिवा ठोकर के तुम कुछ भी न पाओगे,
इसे अपना बनाना तो लगा ठोकर जमाने में।।

हस्तिमद-भंजक

श्च्योतन्-मदाविल-विलोल-कपोल मूल-
मत्त-भ्रमद् - भ्रमर-नाद विवृद्ध-कोपम्।
ऐरावताभ-मिभ - मुद्धत - मापतन्तं,
दृष्ट्वा भयं भवति नो भव-दाश्रितानाम्।।38।।

चौपाई

कोप भरा ऐरावत हाथी, डर जावें जिससे सब साथी,
भौंरे जिस पर गुंजन करते, महाकाल है जिसकी छाती।
ऐसा सम्मुख गज आ जाये, भय से वह नहिं घबरा पाये,
जिसने हे प्रभु! आश्रय तेरा, लिया वही उससे लड़ जाये।।38।।

मनोबलर्द्धि संयुक्तान्, हृदि सर्वाङ्गचिन्तकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं मनोबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सोरठा छन्द

1. श्च्योतन ज्ञानांजल, जिनमुख गिरि से शुद्ध है।
हृदयांजलि भर पान, करता भाव विशुद्ध हो।।2073।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्च्यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. तन्मय हुए जिनेश, तव गुण महिमा गान में।
मुक्ति का परिवेश, दिया आपने जगत को।।2074।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. ममता हारी नाथ, देख वीतरागी छवि।
पाया शुद्ध स्वभाव, रागादिक का नाश कर।।2075।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. दाता उत्तम आप, दान दिया है ज्ञान का।
जैन धर्म की शान, सब देवों के देव हो।।2076।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. विरागता तुम श्रेष्ठ, गाते वेद पुराण हैं।
मुक्ति दिलाते देव, भक्तों के भगवान तुम।।2077।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. ललक जगी है नाथ, शुद्धातम अनुभव करूँ।
तारण तरण जहाज, सिद्धालय सम्राट् प्रभु।।2078।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. विशिष्ट ज्ञान दिलवाय, तव गुण आराधन प्रभु।
अनुपम सौख्य दिलाय, तव भक्ति निज भक्त को।।2079।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. लोप हुआ है मोक्ष, भरत क्षेत्र में अब यहाँ।
कहते आप जिनेश, सप्तम गुण तक जा सके।।2080।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. लघुता देगी बोध, आगे भूल न हो कदा।
आतम का हो शोध, शिवपथ पाये भवि यहाँ।।2081।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. कथा सुनी पर नाथ, आत्म कथा न सुन सका।
शीघ्र करूँ कल्याण, आतम रुचि जागे प्रभु।।2082।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. पोषण की निज देह, आत्म वतन नहिं पोषिया।
जाना नहिं निज देश, भव वन में भटका किया।।2083।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. लक्ष्यभूत शुद्धात्म, अनुभव करते आप जिन।
पाया सौख्य समाज, भव तारक वृषभेश जिन।।2084।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. मूलभूत रही भूल, भोगों में सुख मानकर।
स्वयं चुने हैं शूल, पर को अपना जानकर।।2085।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. लघु बालक की टेर, सुन लो प्रभु कर दो कृपा।
करो न अब प्रभु देर, शिवपथ दिखला दो यहाँ।।2086।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. महिमाशाली आप, अज्ञ न पावे पार तव।
नमन अनंतों बार, प्रभो विज्ञता दीजिए।।2087।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. चित्त वित्त की ओर, अब तक आकर्षित रहा।
कहीं न पायी ठौर, आप शरण आया प्रभु।।2088।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. भ्रमर वृत्ति से नाथ, मुनिजन कुछ आहार लें।
श्रावक होय सनाथ, भोगभूमि पाये यहाँ।।2089।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. श्रीमद् हो जगदीश, अनंत चतुष्टय के धनी।
मुझे श्री वर दो, श्रीफल अर्पित चरण में।।2090।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. भ्रष्ट हुए वे लोग, आदि देख दीक्षा धरी।
आप ध्यान में लीन, स्वातम रस को चाखते।।2091।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. मरण किया इक श्वास, अठदश बार निगोद में।
बीता काल अनंत, पुण्य योग नर भव मिला।।2092।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रग रग में हो भक्ति, मन में प्रभु का ध्यान हो।
वचनों से हो जाय, निश्चित ही निर्वाण हो।।2093।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. नाम मात्र ही नाथ, पार लगाता भविक को।
प्रभु को हृदय बिठाय, भवदधि तट पाते भगत।।2094।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. दल बल देवी देव, कोई न साथ निभाएगा।
करो आदि पद सेव, भव से पार करें प्रभु।।2095।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. विचित्र यह संसार, निज से है अंजान जो।
पर की रहती चाह, बड़ी महा अज्ञानता।।2096।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वृद्धापन की देह, अर्द्धमृतक सम कहत जिन।
तज दो शीघ्र सनेह, गुरु कहें समझाय के।।2097।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. शुद्ध दशा को पाय, तज दूँ भाव प्रसिद्धि का।
भव तिरने की नाव, यही साधना सत्य है।।2098।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. कोयल कूँके देख, आम्र मंजरी अरु सुरभि।
भक्त चहकते देख, जिनवर की अनुपम छवि।।2099।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "को" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. पंक लिप्त है आत्म, कर्म कलंक न धुल सके।
भक्ति सलिल धुल जाय, यही कहा जिनदेव ने।।2100।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. ऐक्य नहीं पर द्रव्य, रहें सर्वदा भिन्न ही।
चिन्तन करें सुभव्य, परमातम पद पात हैं।।2101।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऐ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. राग रोग की खान, जन्म मरण वर्द्धन करे।
धारो भाव विराग, बंध काट शिवपुर धरे।।2102।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. वस्त्राभूषण त्याग, संयम पथ पर बढ़ गये।
लख नीलांजन मृत्यु, शुक्ल ध्यान पर चढ़ गये।।2103।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. तारा उनको आप, जिसने नाथ पुकारिया।
जिन चरणों में आय, साम्य भाव प्रभु पा लिया।।2104।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. भद्रबाहु सम आप, हे गुरुवर! इस जगत में।
मुझे बना लो दास, बनूँ भद्र परणामी जिन।।2105।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मिलता है शिवसौख्य, आदि शरण में आय के।
पाता है पद ध्रौव्य, जो भक्ति करता चरण।।2106।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. भविक रचे जिन पूज, भव तरणी है अर्चना।
तुम सम कोई न दूज, हे जिनवर! इस जगत में।।2107।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मुक्ता मणि चढ़ाय, दिव्य अर्चना मैं करूँ।
जो शिवपुर पहुँचाय, ऐसी भक्ति करूँ सदा।।2108।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. शुद्ध बुद्ध हो नाथ, परम विश्व के अधिपति।
कर दो नाथ सनाथ, निज गुण का उपहार दे।।2109।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तम क्षय हेतु आग, कर्मेंधन को दहत है।
यही भक्त की आस, करूँ तपस्या देह पा।।2110।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. माला फेरे हाथ, मन संसार में घूमता।
मिले न मुक्ति द्वार, चंचल हो उपयोग जब।।2111।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. परिणति करूँ सुधार, तव होगा उद्धार मम।
बिन सुधरे परिणाम, कैसे मुक्ति पाएँ हम।।2112।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तन्द्रा तज तप साध, कहते हैं आदीश जिन।
करे न वह पुरुषार्थ, तो तन्द्रालु बन फिरे।।2113।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. तं जिन करूँ प्रणाम, येन स्वयं के बोध से।
बोध दिया निष्काम, असिमसि कृषि का जगत को।।2114।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. दृष्टि बनाओ शुद्ध, निज आतम को लख सकूँ।
करूँ कर्म से युद्ध, रत्नत्रय का शस्त्र ले।।2115।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. दृष्ट्वा आदि जिनेश, अन्य देव नहिं मन हरें।
करूँ चरण की सेव, शरण आपकी रहूँ सदा।।2116।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ट्वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. भव-भव में अज्ञान, देता है अति त्रास को।
आप क्षयंकर जान, नाथ लगायी आस अब।।2117।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. नित्यं हे जिनदेव! पूजूँ ले अठविधि दरब।
जानो मन की टेव, निराबाध सुख दीजिए।।2118।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. भटक रहा जिनदेव, लक्ष्य बिना इस जगत में।
मिले आप वृषभेश, आज बना लूँ लक्ष्य निज।।2119।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वक्त है लाया द्वार, प्रभु सान्निध्य को पा लिया।
स्वप्न हुआ साकार, लखी आपकी दिव्य छवि।।2120।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तिमिर हरण का भाव, वरण करूँ शिवनार जिन।
नमूँ आदि जिनराय, दीजै दिव्य प्रकाश मम।।2121
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नो कषाय संग चार, मिलकर भ्रमण करायें भव।
आदि दिखाया सार, इस असार संसार में।।2122।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. भय हर्त्ता जिनदेव, मनुज पशु जिन पूजते।
परमौदारिक देह, पूर्ण ज्ञानधन आप हो।।2123।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. वमन किया है विकार, अविकारी कहलाये प्रभु।
चउगति में तन धार, भटक रहा हूँ मैं प्रभो।।2124।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. दान चार प्रकार, आदीश्वर बतलाये हैं।
दानी कहे पुकार, मुझे अभय वर दीजिए।।2125।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. आश्रित हूँ जिनदेव, कर्म नष्ट कर दीजिए।
अरज करूँ वृषभेश, आत्माश्रित वर दीजिए।।2126।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. ताक रहा अनिमेश, वीतरागता आपकी।
रखिये चरण जिनेश, दूर न निज से कीजिए।।2127।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. गुणानां तीर्थेश, गाऊँ कण्ठ रुके नहीं।
प्रीति आपसे ईश, हृदय बसो विमलेश बन।।2128।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

प्रभु क्रोध भरा मद, उन्मत हो गज, भक्त विजय पा लेता है।
वह नहिं घबराता, आश्रय पाता, अर्घ चढ़ा गुण गाता है।।

ॐ ह्रीं हस्त्यादि-गर्वदुर्द्धर-भयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो मण बलीणं झ्रौं झ्रौं नमः।

मुझे वो प्रार्थना मत दो जिसे तुम सुन नहीं सकते,
मुझे वो आँख मत देना जिसे तुम दिख नहीं सकते।
तुम्हारे ही भरोसे पर मैं दुनियाँ छोड़ आया हूँ,
न ऐसी दो मुझे राहें जहाँ तुम मिल नहीं सकते।।

सिंह शक्ति संहारक

भिन्नेभ कुम्भ गल-दुज्ज्वल-शोणिताक्त,
मुक्ताफल प्रकर भूषित - भूमिभागः।
बद्ध-क्रमः क्रम-गतं हरिणाधिपोऽपि,
नाक्रामति क्रमयुगाचल-संश्रितं ते।।39।।

चौपाई

गज को छिन्न-भिन्न करि डाला, रक्त लसित गजमुक्ता हाला,
भूमि खून से लसित हुई है, जिसमें क्रोध महान विशाला।
ऐसा शेर सामने आये, पूरी ताकत वह दिखलाए,
हे प्रभु! रंच मात्र नहिं डरता, जो तेरे आश्रित हो जाये।।39।।

वचोबलर्द्धि संप्राप्तान्, वाचा विश्वाङ्गपाठकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं वचोबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

तर्ज–जय जय नाथ परम गुरु हो

1. भिन्न-भिन्न जग जीव बताय, भिन्न आप जग से जिनराय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।
आदिनाथ स्तोत्र महान, जो गाये पाये शुभधाम।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।2129।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भिन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. नेक राह पर चलें चलायें, नेता मोक्षमार्ग कहलायें।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2130।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ने" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. भव अटवी में मोह मृगेन्द्र, इससे मुझे बचाओ जिनेन्द्र।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2131।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. कुंठ न हो मम कंठ जिनेश, गाऊँ हर क्षण गुण परमेश।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2132।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. भरतैरावत और विदेह, जहाँ आदि सम बनें अदेह।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2133।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. गर्भ माँहि दुःख सहे अपार, जिन भक्ति से नशें सुमार।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2134।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. लक्ष्य बनाया लक्ष्मी आप, बाह्याभ्यन्तर झुकी सुनाथ।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2135।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. दुर्जय मोह अरि को जीत, तोड़ा सबसे नाता प्रीत।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।
आदिनाथ स्तोत्र महान, जो गाये पाये शुभधाम।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।2136।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दुर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. ज्वलनशील हैं द्रव्य बताय, क्रोध महा बड़वानल गाय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2137।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्व" बीजाक्षर संयुक्त श्रीवृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. लगन लगी चरणों जिनदेव, देव करें तुम चरणन् सेव।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2138।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. शोषक भव सागर के नाथ, पोषक आप गुणों के नाथ।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2139।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. णिव्वाणं पाया आदीश, अर्घ्य चढ़ाय नवाऊँ शीश।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2140।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. तावत् भक्ति करूँ जिनदेव, यावत् निज नहिं पाऊँ देश।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2141।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. भक्त आपका ध्यान लगाय, ध्यान से मिलते हैं जिनराय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2142।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. मुकुट मणि की आभा तेज, हुई झुके जब देव जिनेश।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2143।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. युक्तानंत समय जिनराय, एक आवली आप बताय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2144।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. फणधर हलधर पूज रचायें, भक्ति में झूमें उमगायें।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।
आदिनाथ स्तोत्र महान, जो गाये पाये शुभधाम।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।2145।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "फ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. लता खातिका भूमि सोह, समवशरण में भवि मन मोह।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2146।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. प्रमुदित मन से जो गुण गाय, गुण गागर उसकी भर जाय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2147।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. करुणासागर नाथ जिनेश, सर्व जगत हितकारी भेष।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2148।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रज प्रभु पद की अति सुखदाय, कर्मन की रज चूर्ण कराय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2149।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. भूतल के भूषण जिननाथ, भूत प्रेत भगते नत माथ।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2150।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. ऋषि बनो या कृषि करो, वृषभेश्वर उपदेश अहो।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2151।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तव दर्शन निज दोष दिखाय, संवर निर्जर फिर करवाय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2152।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. भूषण त्रिभुवन के जिनराय, कल्पतरु सम है सुखदाय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2153।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. मिटा मोह मिथ्यात्व महान, समकित पाया सुख की खान।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।
आदिनाथ स्तोत्र महान, जो गाये पाये शुभधाम।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।2154।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भाग्यवान को दर्शन होय, सौ-सौ भाग्य बनाये जोय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2155।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. मृगः मृगेन्द्र खड़े कर जोड़, अभयंकर संग भय को छोड़।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2156।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. बध बंधन तज दिया जिनेश, मुक्तिपुर पाया निज देश।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2157।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. शुद्ध बुद्ध अविचल अभिराम, शरण में बैठूँ आठों याम।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2158।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. क्रम कुल से पाये निर्वाण, जिन आलय का कर निर्माण।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ स्तोत्र...।।2159।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. क्षमः कौन है हे जिनदेव! गुण गाये तव सुर गुरुदेव।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2160।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. क्रन्दन से बँधते हैं कर्म, वंदन करूँ होऊँ निर्बन्ध।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2161।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मम कषाय को कर दो क्षय, निष्कषाय पद दो अक्षय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2162।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. गति होती मति के अनुसार, पंचमगति है सुमति का सार।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।
आदिनाथ स्तोत्र महान, जो गाये पाये शुभधाम।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।2163।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. तंत्र मंत्र इनका क्या अर्थ, मन पवित्र बिन सब है व्यर्थ।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2164।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. हरें सदा अघ का अँधियार, करते हृदय धर्म उजियार।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2165।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. रिमझिम रिमझिम बहे फुहार, गंधोदक की बहती धार।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2166।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. णाणं णरस्स बताया सार, शिवरमणी का है यह द्वार।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2167।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. धिक् कह दण्ड दिया जिनराय, कुलकर ने यह चलन चलाय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2168।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. पोदनपुर के राज कहाय, आप तनुज बाहुबलि गाय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2169।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. सोऽपि मैं कुछ शक्ति न धार, भक्ति आपकी करती पार।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2170।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ऽपि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. नाथ आप हो कीर्तिमान, कर्म नाश पहुँचे शिवथान।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2171।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. आक्रामक हो सर्प जु आय, प्रभु भक्त को नहिं छू पाय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।
आदिनाथ स्तोत्र महान, जो गाये पाये शुभधाम।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।2172।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. मनोयोग से रचूँ विधान, भक्तामर से हो कल्याण।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2173।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तिमिर हारि गुरु तुमसे आश, विनम्र गुरु करें आत्म विकास।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2174।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. चक्रवर्ती तव पुत्र महान, अन्तर्मुहूर्त में उपजा ज्ञान।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2175।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मति श्रुत आदिक हैं जो ज्ञान, केवलज्ञान है सबकी शान।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2176।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. युग आदि में आदि जिनेश, युक्ति बतायी मुक्ति सुरेश।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2177।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. गाथा तव यश गायी ऋषीश, निज कल्याण के हेतु मुनीश।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2178।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. चपल इन्द्रियों के वश होय, प्रभु छवि न दिखी है मोय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2179।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. लखकर जिनवर की छवि आज, शुद्ध नगर हो शिवपुर राज।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2180।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. संवेदन निज का मुझे होय, लोक शिखर पर वासा होय।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।
आदिनाथ स्तोत्र महान, जो गाये पाये शुभधाम।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।।2181।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. आश्रित रहते जो भवि आप, सकल लोक घूमें ले जाप।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2182।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. तंतु पर चल ऋषिवर जायें, चारण ऋद्धि प्रभाव बतायें।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2183।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तेजोमय हो गया हूँ आज, आनन्दित हूँ लख जिनराज।
जगत गुरु हो, हे आदीश! जगत गुरु हो।। आदिनाथ...।।2184।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

तव पद गिरि आश्रय, पा हो निर्भय, सिंह सामने आ जाये।
प्रभु भक्त तुम्हारा, लिया सहारा, अर्घ चढ़ा शिवपुर पाये।।

ॐ ह्रीं युगादि देवनाम-प्रसादात् केशरिभय-विनाशकाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचि बलीणं झ्रौं झ्रौं नमः।

है दिल दिलकश मगर दिल ही नज़र आता बड़ा कातिल,
तभी तो आज तक इसको न नज़राया यहाँ साहिल।
खुदा के नाम ये दिल आज तक हमने न कर पाया,
यही तो थी वजह वरना ये दिल होता यहाँ काबिल।।

सर्वाग्नि-शामक

कल्पान्त-काल-पवनोद्धत-वह्नि-कल्पं,
दावानलं ज्वलित-मुज्ज्वल-मुत्स्फुलिंगम्।
विश्वं जिघत्सु-मिव सम्मुख-मापतन्तं,
त्वन्नाम-कीर्तन-जलं शमयत्यशेषम्।।40।।

चौपाई

हवा चली हो प्रलयकाल सी, दावानल सी आग काल सी,
धूम रहित उज्ज्वलित फुलिंगे, अति विकराल हैं लाल-लाल सी।
ऐसी आग सामने आये, लेकिन भक्त नहीं घबराये,
हर हमेश प्रभु कीर्तन जल से, जो अपने उर को नहलाए।।40।।

ब्रह्मा विष्णु महेश तुम, चाहे कह लो राम।
शंकर हे प्रभु! आदि जिन, तुम्हें "विनम्र" प्रणाम।।

कायबलर्द्धि संपन्नान्, वर्ष्यव्युत्सर्ग धारिणः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं कायबलिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

नरेन्द्र छन्द (नगरी-नगरी द्वारे-द्वारे)

1. कल्पकाल बहु बिता दिए हैं, फिर भी नहिं संकल्प किया।
अगणित भव में दुःख पाये प्रभु, अब तक नहिं सम्यक्त्व लिया।।2185।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. पान्तु-पान्तु चिल्लाया जग में, कोई न आन बचाता है।
जिनवर का है एक सहारा, भवि के दुःख मिटाता है।।2186।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. तजना चाहा सब दुर्गुण को, मैं अवगुण की खान रहा।
निर्ममत्व गुण धारक जिनवर, संबंध तुमसे बना रहा।।2187।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. काल कराल ने दी दस्तक तब, रोया चीखा चिल्लाया।
मृत्यु से कोई बचा सके नहिं, यह जिनवाणी ने गाया।।2188।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "का" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. लज्जा आती तुम्हें नहीं क्यों, माँ जिनवाणी समझाती।
बेटा पर घर में नहिं भटको, निज वैभव को दिखलाती।।2189।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. पथ पाथेय बने प्रभु भक्ति, निज शक्ति उद्धार करे।
भक्ति बिना रहे जो प्राणी, चहुँ गतियों के दुःख वरे।।2190।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. वसुन्धरा भी आज जिनेश्वर, तुम सा सुत पा धन्य हुई।
पद विहार से माटी भी यह, सर्व विश्व में वंद्य हुई।।2191।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. नो कर्मों व द्रव्य कर्म ने, मिल संसार बढ़ाया है।
जिनवर ने त्रय कर्म मलों को, जड़ से यहाँ मिटाया है।।2192।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. शुद्ध ज्ञान मय निज चेतन रम, आनन्दामृत पीते हैं।
नित्य निरंजन निर्विकार प्रभु, तव प्रसाद से जीते हैं।।2193।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. तजकर सब प्रियजन को जिनवर, निर्ममत्व गुण धार लिया।
पर संबंध हटाकर के प्रभु, शुद्ध दशा को प्राप्त किया।।2194।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. वचन आदि त्रय गुप्ति धारी, गुण अनंत के भंडारी।
स्वयं ज्ञान के कर्ता जिनवर, गुप्ति त्रय के अधिकारी।।2195।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. वह्नि जलाये सारा जंगल, पर चेतन न जला पाये।
विषय अग्नि से तप्त हुए हम, प्रभु चरणों दौड़े आये।।2196।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह्नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. कल्पवृक्ष सम मेरे जिनवर, सभी कल्पना पूर्ण करें।
श्रद्धा से भर जो भी पूजे, कर्म कालिमा चूर्ण करें।।2197।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. पंडित-पंडित मरण हो मेरा, ऐसा प्रभुवर वर दे दो।
आत्म तत्त्व में रमण करूँ मैं, सिद्धालय में घर दे दो।।2198।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. दाता आप विधाता जैसा, जग में दूजा कोई नहीं।
स्वात्म ज्ञान में लीन जिनेश्वर, भ्रम जालों का लेश नहीं।।2199।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. वाणी सर्व हितैषी जिनवर, सर्व अंग से खिरती है।
सुखमय झरना झरे गिरि से, आनंद निर्झर दिखती है।।2200।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. नहिं मुझमें कुछ साहस जिनवर, और न मुझमें शक्ति है।
बन जाऊँ तुम जैसा प्रभुवर, अन्तर मन की भक्ति है।।2201।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. लंकेश्वर बिन गुरु के देखो, नरकों में जा अटका है।
जिन गुरु के बिन मिले न समकित, खुले ना मुक्ति फटका है।।2202।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. उज्ज्वल कीर्ति फैले जग में, उज्ज्वल भाव बनाने से।।
निज सम सबको माना जिसने, निज आतम में जाने से।।2203।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. लिप्सा ने ही अब तक मुझको, चहुँगति में भरमाया है।
पर से कुछ भी प्राप्त हुआ ना, जो था पास गँवाया है।।2204।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. तद्भव मोक्षगामी आदि जिन, जन-जन का उपकार किया।
जीवन यापन हेतु जिनवर, षट् कर्तव्य का हार दिया।।2205।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. मा मुज्जह मा रज्जह कहकर, जीवों को है बतलाया।
मोह राग है दुःख का कारण, तजने का पथ दिखलाया।।2206।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुज्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. ज्वर से पीड़ित इस मानव को, मीठा रस कड़वा लागे।
मोह रूप मिथ्या ज्वर से यह, गुरुवाणी कड़वी लागे।।2207।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. लक्ष्य कभी ओझल नहिं होवे, चाहे मन बोझिल होवे।
मोक्षमार्ग पर चलता जाऊँ, अब न दुःख बोझा ढोवे।।2208।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. जिनमुत्तम पद धारी जिनवर, शिवपद के हो अधिकारी।
तव पथ का मैं राही बनकर, बनूँ निजातम हितकारी।।2209।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. स्फुर्ति भव्यों में आती, जब जिनवर छवि दिख जाती।
सौम्य छवि लख आदि जिनेश्वर, निज परिणति मन है भाती।।2210।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्फु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. लिंग तीन मुक्ति के हेतु, बिन जिन लिंग नहीं कुछ भी।
अभिनंदन है जिनलिंगी का, झुकता माथा देख छवि।।2211।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लिं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. गंगा सा निर्मल मन जिनवर, करते शुद्धातम वेदन।
महाऋषि को वंदन मेरा, छूटें भव-भव के बंधन।।2212।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. विनय मोक्ष का द्वार कहा है, बिना विनय नहिं मुक्ति मिले।
विनय भरा दिल जब मिलता है, मुरझायी हर कली खिले।।2213।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. विश्वं कृत्स्नं जाने जो भी, वह सर्वज्ञ कहाता है।
स्व पर का उपकारक है, जो हितोपदेशी कहाता है।।2214।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. जिन गुरु जिनश्रुत आज्ञा मानूँ, जिनवर को स्वीकार करूँ।
त्रय योगों को आज सम्भालूँ, दोष रहित चर्या पालूँ।।2215।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. घत्ताणं त्रय शल्य करूँ मैं, निःशल्य हो निज में आऊँ।
पथ के दर्शक आप बनो प्रभु, तव पथ गामी बन जाऊँ।।2216।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. उत्सुक हूँ सुख पाने भगवन्, दुःख से मैं घबराया हूँ।
शुद्धातम में रमना चाहूँ, अतः शरण में आया हूँ।।2217।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मिथ्यातम से ही वह प्राणी, सुक्खों का संहार करे।
सम्यक् दीप जलाया जिसने, वह दुःखों पर वार करे।।2218।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. *वल्लरियाँ झूमें तव पद चूमें, जब त्रिपुरारि करें विहार।
देव बजायें दुन्दुभि बाजे, नर-नारी करते जयकार।।2219।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. संगति करते जो जिनवर की, उत्तम गति पा जाते हैं।
सर्व मलों का क्षय करके वे, पंचम गति को पाते हैं।।2220।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. मुक्ति पथ का लक्ष्य बनाकर, युक्ति से जो कार्य करें।
स्वर्ग सम्पदा चरण को चूमे, अरु आकाश विहार करें।।2221।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. खतरों के जो बने खिलाड़ी, परीषह जयी कहलाते हैं।
उपसर्गों में समता धरकर, कर्म नाश कर जाते हैं।।2222।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. मानव की पर्याय मिली है, मान नहीं अब करना तुम।
जिनवाणी माँ समझाती है, बेटा ना भव भ्रमना तुम।।2223।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. पथ में है उपसर्ग घनेरे, नाथ इन्हें अब दूर करो।
संयम रथ पर बैठा करके, द्रुतगति से इसे पूर करो।।2224।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. तन्मय होकर प्रभु चरणों में, तव मय अब हो जाना है।
चरणों रहना हृदय बसाना, अनुपम पद को पाना है।।2225।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. तं जिनपं अतुलं अमितं जो, अति शुभकारी हैं जग में।
श्रद्धा से हम भक्त पुकारें, आन पड़े जिन चरणन् में।।2226।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. त्वन्नाम से जग में जिनवर, बिगड़े काज सँवर जाते।
वंदन करते जो चरणों में, भवदधि पार उतर जाते।।2227।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

* बेल

44. नाम तुम्हारा सब दुःखहारा, तारण तरण कहाया है।
जपा यहाँ श्रद्धा से भरकर, जगनिधि पार कराया है।।2228।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. मम मन की जो चाहत जिनवर, आप उसे सब जानते हो।
भव सागर को आज सुखा दो, सुख के सदन में पहुँचा दो।।2229।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. कीर्तन करता जो आदीश्वर, कीर्ति को वह पाता है।
पुण्य बढ़ाता अतिशय लाता, अर्हत् पद भी पाता है।।2230।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कीं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तव गुण को गाने में भगवन्, जिह्वा मेरी सक्षम ना।
चरण पड़ा हूँ ईश्वर तेरे, और कोई भी शरणं ना।।2231।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. नगरी द्वार सजायें सुरगण, अमरावती सी मनहारी।
देव कुमारीं करतीं सेवा, जन्म कल्याण की तैयारी।।2232।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. जन्म समय दश अतिशय होते, दश ही होते केवलज्ञान।
चौदह सुरकृत होते अतिशय, चौंतीस होते ये कुल जान।।2233।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. लंघन कर न सकें सुर खगपति, जिनगुरु जिनप्रतिमा जिनधाम।
ऐसे जिनपति नाथ त्रिलोकी, चरणों करूँ विनम्र प्रणाम।।2234।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. शक करना आतम का शत्रु, निशंक मीत निज आतम का।
शिव पथ का सहकारी साथी, एकाकी शिवराही का।।2235।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. मनुजोत्तर पर्वत के आगे, कोई मनुज न जा सकता।
इसी क्षेत्र के बाद से कोई, शिवरमणी न पा सकता।।2236।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. यत्न और प्रयत्न करे जो, सम्यक् चारित्र वरता है।
विघ्न और कर्मों से लड़कर, कर्म विजेता बनता है।।2237।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. यज्ञ करे यज्ञोपवीत को, धारे वह श्रावक होता।
ध्यान यज्ञ जो करे त्रिसंध्या, कर्म दही साधक होता।।2238।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. शेर और मृग साथ में बैठे, जैसे पिता पुत्र दोनों।
समवशरण जो प्रभु की महिमा, सम्यक् पाते हैं दोनों।।2239।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. षंडादिक दर्शन खंडन हो, मंडन प्रकृति दर्श का जो।
वेद विनाशी ज्ञान प्रकाशी, बोध देत तत्त्वों का वो।2240।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "षं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

तुम नाम मंत्र के, मंत्रित जल से, प्रलयंकारी अग्नि बुझे।
भव रागानल हो, दावानल हो, अर्घ चढ़ा शिव पैंड़ी चढ़े।।

ॐ ह्रीं संसाराग्नि-ताप निवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय बलीणं झ्रौं झ्रौं नमः।

मेरे गुरुवर मेरे दिल में ज्ञान ज्योति जला देना,
मेरी इस रूह को रब सी खिलाकरके खिला देना।
तेरे चरणों की सेवा में है मेरी आरजू इतनी,
समाधि के समय आकर मुझे मुझसे मिला देना।।

भुजंग-भय भंजक

रक्तेक्षणं समद-कोकिल-कण्ठ-नीलं,
क्रोधोद्धतं फणिन-मुत्फण-मापतन्तम्।
आक्रामति क्रमयुगेण निरस्त-शंकस्,
त्वन्नाम-नाग-दमनी-हृदि यस्य पुंसः।।41।।

चौपाई

जिसकी आँखे हैं अतिलाल, काला नाग महा विकराल,
ऊपर फण करि भरा क्रोध में, देख नजर आ जाये काल।
ऐसा सर्प सामने आये, लाँघ उसे वह मानव जाये,
हे प्रभु! जिसके उर में तेरा, औषधि रूप नाम बस जाये।।41।।

क्षीर स्वादुमुनीन् वाचा, तर्पकान् क्षीरवन्नृणाम्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं क्षीरस्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता छन्द

1. रत्न सजाया, दीपक लाया, जगमग जगमग ज्योति जले।
प्रभु करके आरती, नमें भारती, सम्यक् पथ की बोधि मिले।।2241।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. भुक्ते दुःख भारी, हे त्रिपुरारि, शरण आपकी आया हूँ।
मुक्ति की आशा, दीजै दिलाशा, यही निवेदन लाया हूँ।।2242।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. क्षपणा कर स्वामी, श्रेणी माड़ी, मोह कर्म को क्षीण किया।
बिना वस्त्र के, बिना शस्त्र के, कर्म रिपु को जीत लिया।।2243।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. सिद्धाणं कहकर, अन्तः नमकर, सिर के केश उखाड़ दिये।
निज रूप निहारा, योग को धारा, चार ज्ञान तव प्राप्त किये।।2244।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. सब इन्द्र जु आवें, शीश नवावें, महिमा प्रभु की गावत हैं।
हे नाथ! अमल हो, तुम्हीं विमल हो, अपने हृदय सजावत हैं।।2245।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. ममता को तजकर, समता भजकर, ध्यान मग्न हो गये प्रभु।
स्वपर को जाना, निज पहिचाना, आत्मस्थ हो गये विभु।।2246।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. दर तेरे आऊँ, शीश झुकाऊँ, इतना वर दे दो प्रभुवर।
मम अंत समय में, संत चरण में, प्राण तजूँ करके सुमिरण।।2247।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. कोयल ज्यों कूके, सुरभि फूँके, आम्र मंजरी के कारण।
भक्ति से नाचें, भक्त जु आके, अंतस् श्रद्धा के कारण।।2248।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "को" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. किश्ती है भँवर में, प्राण सफर में, नाथ आप अघ हारक हो।
हे बोध! दिवैया, नाव खिवैया, जग जलनिधि के तारक हो।।2249।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. लगी लगन है, प्रभु चरण में, जिनवर की भक्ति कर लो।
है आज ये मौका, लगा लो चौका, मुक्ति की युक्ति वर लो।।2250।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. कंठ हिले न, तालु चले न, ओष्ठ आदि भी नहीं हिले।
जिन मुख से निःसृत, दिव्य ध्वनि जो, भव्य हृदय के कमल खिले।।2251।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. ठगिनी है माया, जग भरमाया, तत्क्षण आकर्षण करती।
प्रभु छोड़ी माया, नाम मिटाया, उस ठगिनी को प्रभु ठग ली।।2252।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ठ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. नीला है अम्बर, वेष दिगम्बर, स्वर्णिम तन अति दमक रहा।
दर्शन कर जिनवर, कहाँ मिले दर, भक्तों का मन मचल रहा।।2253।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. लंकापति हारा, सत्य के द्वारा, धर्म राज प्रभु जीते हैं।
सत्पथ पर चलना, प्रभु का कहना, धर्मी दुख से रीते हैं।।2254।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. क्रोध में पढ़कर, विभाव धरकर, दुर्गति दुःख उठाये हैं।
तुम क्रोध विजेता, समत्व नेता, शरण तुम्हारी आये हैं।।2255।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्रो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. धोया न मन को, रोया धन को, निज वैभव को बिसराया।
कई जन्म गँवाये, पाप कमाये, आज प्रभु के दर आया।।2256।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. तुम शुद्ध बुद्ध हो, परम सिद्ध हो, सिद्धालय के वासी हो।
आदि प्रभु स्वामी, हो जग नामी, शुद्धातम के पागी हो।।2257।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तं वृषभ जिनेशं, हे परमेशं! त्रय योगों से वंदन है।
प्रभु भक्ति बढ़ाई, कीरति गायी, काटे भव के बंधन हैं।।2258।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. फल हैं मँगवाये, थाल सजाये, छहों ऋतु के मन भावन।
प्रभु भक्त तुम्हारे, तुम्हें पुकारें, कर दो मन को प्रभु पावन।।2259।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "फ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. णिम्मल जल लाया, फासु कराया, मुनि के मन जैसा पावन।
प्रभु चरण चढ़ाया, रोग नशाया, तपती जेठ में है सावन।।2260।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. नव निधि के स्वामी, चरण जजामि, जब से तुमको निरखा है।
तुम दया निधानी, सुनते स्वामी, कितना पावन रिश्ता है।।2261।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. मुत्तामुत्त ज्ञाता, ज्ञान प्रदाता, तिहुँ जग के तुम त्राता हो।
हो सौख्य स्वरूपी, गुण चिद्रूपी, तव पद में नत माथा हो।।2262।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मुत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. फण को फैलाये, नाग जु आये, काल कराल सा भयकारी।
तव भक्त के आगे, ऐसे भागे, ज्यों मयूर की हुंकारी।।2263।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "फ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. णमोकार मंत्र में, प्रथम तंत्र में, आदि जिनेश्वर सुखकारी।
मन से जो ध्याता, शीश नवाता, बनता शिवपुर अधिकारी।।2264।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. माता जिनवाणी, सम उपकारी, और न दूजा है जग में।
सन्मार्ग दिखाये, सुमति बढ़ाये, दुःख मिटाये भव-भव में।।2265।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. पग धरते प्रभुवर, जलज रचें सुर, जब जिनवर नभ गमन करें।
हैं दो सौ पच्चिस, स्वर्णिम सच्चिस, प्रभु उन पर भी पग न धरें।।2266।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तन्मय होकर के, श्रद्धा भरके, नाथ आपके दर आया।
मैं शीश झुकाऊँ, तव गुण गाऊँ, भक्ति से भरकर आया।।2267।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. तं आदि जिनेशं, कृपा निधेशं, सविनय यही निवेदन है।
मैं द्वार खड़ा हूँ, चरण पड़ा हूँ, जीवन तुम्हें समर्पण है।।2268।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. हे आदि विधाता! देते साता, परमानन्द प्रदाता हो।
प्रभु पूज्य आप हैं, मैं पूजक हूँ, अटूट अपना नाता हो।।2269।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "आ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. आक्रामक होकर, नाग क्रोध भर, भक्त के सन्मुख आ जाये।
तुम नाम मंत्र के, जाप तंत्र से, भक्त उल्लंघन कर जाये।।2270।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मन मोहक है छवि, लज्जित है रवि, वीतराग परमेश्वर की।
तव राह चलूँ मैं, कष्ट सहूँ मैं, मुक्ति पथ दो जिनवर जी।।2271।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. प्रभु तिमिर मिटाया, दीप जलाया, ज्ञान सूर्य प्रकटाया है।
मैं इतना जानूँ, तुमको मानूँ, मुक्ति पथ दिखलाया है।।2272।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. क्रम युगल पखारूँ, राह निहारूँ, नाथ आज तो दर्शन दो।
प्रभु ध्यान लगाऊँ, समकित पाऊँ, ज्ञान ज्योति उर प्रकटा दो।।2273।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. महिमा अतिभारी, अतिशयकारी, समवशरण आदीश्वर की।
शत इन्द्र जु आवें, भक्ति रचावें, त्रिभुवनपति परमेश्वर की।।2274।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. युगपत् सब जानें, निज पहिचानें, केवलज्ञान की महिमा है।
जो क्रम से जाने, छद्म कहाने, गुण पाने की गरिमा है।।2275।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. गेहादिक धन को, तजके मन से, चेतन गृह में पहुँच गये।
मंदिर माला में, जप शाला में, भक्त आपको ढूँढ़ रहे।।2276।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. णर सुर से वंदित, गुण गण मंडित, नंत चतुष्टय के धारी।
मम तीव्र पुण्य से, भाग्य धन्य से, शरण मिली करुणाधारी।।2277।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. जो निर्निमेष हैं, श्री जिनेश हैं, अर्धोन्मीलित जिनवर के।
आशा न सृष्टि, नासा दृष्टि, ध्यान मग्न हैं ऋषिवर से।।2278।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. रति राग मिटाकर, घाति कर्म हर, पूर्ण ज्ञान पाया स्वामी।
निजगुण अनुरागी, गुण के पागी, बन जाऊँ मैं ध्रुवधामी।।2279।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. प्रभु अस्त न होते, प्रशस्त रहते, समस्त जग जगमग करते।
हे नाथ! आपके, ज्ञान भाव से, गुण खुश्बू बिखरा करते।।2280।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. शंभु कहलाते, सुख बरसाते, महागुणी हो इस जग में।
प्रभु गुण को पाने, निज गुण जाने, बसे भक्तगण के मन में।।2281।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. मैं कस्य शरण में, जाऊँ चरण में, कोई नहीं सुहाता है।
हे वीतराग! तुम, हो चिराग तुम, प्रभु गुण ही मन भाता है।।2282।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कस्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. त्वन्नाम मंत्र ही, काटे तंत्र ही, भक्तों का है रखवाला।
प्रभु हृदय विराजो, मम मन साजो, भक्ति का दे दो प्याला।।2283।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. नामावलि प्यारी, जग उजयारी, सहस आठ गुण रूपमयी।
जिनसेनं गायी, इन्द्र बधायी, जिनवर की महिमा भायी।।2284।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. मन वाँछित दाता, मैंट असाता, ज्ञानमयी गुण से भर दो।
हम भक्ति भरे हैं, शरण खड़े हैं, जीवन गुण गागर भर दो।।2285।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. नाथ कृपालं, दया निधानं, कैसे भक्ति करूँ भगवन्।
तुम हो जग पालं, जय भूपालं, मुझ पर नजर रखो स्वामिन्।।2286।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. गर्भांग गृहेषु, शुद्ध वेदीषु, नाथ सुशोभित होते हो।
हृदयाम्बुज दल पर, स्वच्छ कमल पर, भक्ति वेदी पर बसते हो।।2287।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. प्रभु दशा सुधारी, दिशा दिखायी, मुक्ति पथ के नेता जी।
चरणानुरागी, बनूँ विरागी, युक्ति दिखा दो त्राता जी।।2288।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. मैं मधुर स्वरों से, गीत पदों से, गुण गाऊँ गुण सागर के।
भर रत्नथाल ले, नम्र भाल से, भक्ति करूँ रत्नाकर की।।2289।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. यह नीर क्षीर भर, दीप धूप धर, अर्घ सजाया सुन्दर सा।
खुश होकर आया, चरण चढ़ाया, दीप जला मन मन्दिर का।।2290।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. हृदयेश्वर जाना, सब कुछ माना, तन मन किया समर्पित है।
प्रभु भाग्य बनाना, पार लगाना, जीवन चरणों अर्पित है।।2291।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. दिन रात भजूँ मैं, नाम जपूँ मैं, जो मुक्ति पथ दाता है।
आदीश्वर स्वामी, हे जगनामी! ध्यान तुम्हारा साता है।।2292।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. यह जीवन रीता, समय जो बीता, अब दर्शन की प्यास जगी।
प्रभु पास बुला लो, दर्श दिखा दो, निज दर्शन की आश लगी।।2293।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. था जस्य बुलाया, रहस्य हटाया, अन्तर दर्शन करवाया।
भव भ्रमण मिटाया, ताप नशाया, नाथ शरण में जब आया।।2294।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. पुंजांश चढ़ाऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, अर्घ्य समर्पण करता हूँ।
जिनदेव मनाऊँ, कीरति गाऊँ, निज को अर्पण करता हूँ।।2295।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. सः भोक्ता जो है, यः कर्ता है, स्वयं किए का फल भरता।
प्रभु ध्यान लगाता, निज गुण ध्याता, शिवरमणी को है वरता।।2296।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

क्रोधित हो काला, भुजंग निराला, भक्त सामने आ जाये।
तुम नाम की बूटी, जड़ी अँगूठी, पूर्ण अर्घ दे शिव पाये।।

ॐ ह्रीं त्वन्नाम-नागदमनी-शक्तिसम्पन्नाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं झ्रौं झ्रौं नमः।

दिले तस्वीर गुरुवर की जो अपने साथ रखता है,
समझ वो खुद अंधेरों में उज़ाला साथ रखता है।
गुरु के अक्स में हमको खुदा का अक्स नज़राये,
उठा नज़रें गुरु सिर पर हमारे हाथ रखता है।।

युद्ध भय विनाशक

वल्गत्तुरंग - गज - गर्जित - भीमनाद-
माजौ बलं बलवता-मपि भूपतीनाम्।
उद्यद्-दिवाकर-मयूख-शिखापविद्धं,
त्वत्-कीर्तनात्तम इवाशु भिदा-मुपैति।।42।।

चौपाई

हाथी की गर्जन भयकारी, घोड़े खूब उछलते भारी,
सेना है बलशाली जिसकी, जिसे जीतना कठिन है भारी।
ऐसा दृश्य सामने आये, तेरा यशोगान प्रभु! गाये,
विजय पताका वह फहराये, ज्यों तम सूर्य सभी खा जाये।।42।।

सर्पि: स्वादुयतीन् वाण्या, घृतवत् सौख्यदान् सताम्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं सर्पि: स्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अडिल्ल छन्द

1. वल्लरि झूम झूम प्रभु पद चुम्बन करें।
नर–नारी जयकार लगा भक्ति करें।।
नाम मंत्र हे आदीश्वर! जपता रहूँ।
पाठ सदा भक्तामर का करता रहूँ।।2297।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वल्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. गत्यादि को नाश गति पंचम गये।
बाह्यन्तर लक्ष्मी के पति स्वामी भये।।नाम मंत्र...।।2298।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. तुलना कोई प्रभु आपकी है नहीं।
तुम सम कोई जग में दूजा है नहीं।।नाम मंत्र...।।2299।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. रंक राव में भेद आपका है नहीं।
रंक बने है राव चरण रज पा यहीं।।नाम मंत्र...।।2300।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. गल जाते हैं पाप सभी तव ध्यान से।
शिव ललना का दर्श होय निज ज्ञान से।।नाम मंत्र...।।2301।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. गला न कुण्ठित होय प्रभु के जाप से।
प्रभु भक्ति ही यहाँ उबारे पाप से।।नाम मंत्र...।।2302।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. जय जिनवाणी मात सदा अर्चा करूँ,
गूँथी गणधर देव सदा चर्चा करूँ।।नाम मंत्र...।।2303।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. गर्हा निन्दा बँधे कर्मों को नाशते।
पर निन्दा से हो अपयश प्रभु भासते।।
नाम मंत्र हे आदीश्वर! जपता रहूँ।
पाठ सदा भक्तामर का करता रहूँ।।2304।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. जिनगुरु की आज्ञा को तुम मत टालना।
जो कहते वो तन मन से व्रत पालना।। नाम मंत्र...।।2305।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. तजकर घर परिवार प्रभु दीक्षा धरी।
भव्यों को संबोध मुक्ति ललना वरी।। नाम मंत्र...।।2306।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. भीम भँवर में फँसी प्रभु मम नाव है।
तव भक्ति ही यहाँ उबारे नाव है।। नाम मंत्र...।।2307।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. मदधारी सुर ललना मन न डिगा सकीं।
मेरु सम आदीश्वर मन न हिला सकीं।। नाम मंत्र...।।2308।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. नायक हो मुक्ति के ज्ञायक आप हो।
आत्म साधना से क्षय करते पाप हो।। नाम मंत्र...।।2309।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. दर्प हटा दर्पण सम जीवन कर लिया।
खेद खिन्नता त्यागी समता वर लिया।। नाम मंत्र...।।2310।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. माया ठगिनी कही ठगा संसार को।
ठगा प्रभु ने माया को भव पार हो।। नाम मंत्र...।।2311।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. जौहरी आप निजात्म मणि पहचानते।
रत्नत्रय पाने की हम भी ठानते।। नाम मंत्र...।।2312।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. बलवती आज भावना मेरी है यही।
कर्म शत्रु को नाश पाऊँ शिव की मही।।
नाम मंत्र हे आदीश्वर! जपता रहूँ।
पाठ सदा भक्तामर का करता रहूँ।।2313।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. लंकेश्वर भी हार गया सत्यार्थ से।
सत्पथ पंथी राम चले परमार्थ पे।। नाम मंत्र...।।2314।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. बहुत काल है व्यर्थ गँवाया पाप भज।
आदीश्वर प्रभु समझाते पर भाव तज।। नाम मंत्र...।।2315।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. ललक जगा लो निज आतम पहिचान लो।
पड़े रहोगे कब तक मन में ठान लो।। नाम मंत्र...।।2316।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. वस्त्राभूषण त्याग दिये वैराग्य धर।
शिवसुख पंथी बने प्रभु निज आत्म भज।। नाम मंत्र...।।2317।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. तार दिया भव्यों को जिनने पुकारा है।
घना अँधेरा जग में प्रभु सहारा हैं।। नाम मंत्र...।।2318।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. मद धारी हैं सब मतलब के साथी हैं।
प्रभु दर्शन से जली आज मम बाती है।। नाम मंत्र...।।2319।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. पिच्छी कमण्डल हाथ मेरे आ जायेंगे।
जैसा प्रभु कहते हम करते जायेंगे।। नाम मंत्र...।।2320।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. भूमण्डल पर चमके आभामण्डल है।
नाम प्रभु का जग में उत्तम मंगल है।। नाम मंत्र...।।2321।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. पवित्र हुई सब धरा जहाँ प्रभु पग धरा।
कमल बिछाते स्वर्णिम सुरगण मन खरा।।
नाम मंत्र हे आदीश्वर! जपता रहूँ।
पाठ सदा भक्तामर का करता रहूँ।।2322।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तीर्थेश्वर हो अगणित भवि तारे प्रभु।
सुनकर सुयश चरण में आया हूँ विभु।। नाम मंत्र...।।2323।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ती" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. भव्यानां सब दुःख हरण कर्ता तुम्हीं,
वचन अगोचर हैं उपकार नमूँ तुम्हीं।। नाम मंत्र...।।2324।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. उद्भव दिवस मनाया जोर अरु सोर से।
नौमी कृष्णा चैत्र चमकती भोर से।। नाम मंत्र...।।2325।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "उद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. यत्न किया जिसने भी ज्ञान प्रकाशिया।
केवलज्ञानी से मिल दीप जला लिया।। नाम मंत्र...।।2326।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दिशा बोध जीवों को जिनवर ने दिया।
शुद्धातम का भान प्रभु करवा दिया।। नाम मंत्र...।।2327।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. वाणी विश्व हिताय नाथ है आपकी।
सिद्ध शिला को पाया जिसने जाप की।। नाम मंत्र...।।2328।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. कहते जिनवर मान न तुम करना कभी।
मानवता की परिभाषा समझो सभी।। नाम मंत्र...।।2329।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. रत्न विनश्वर जड़ प्रभु ने बतलाये हैं।
सम्यक् रतन सजाकर शिवसुख पाये हैं।। नाम मंत्र...।।2330।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. मणिमय रतन न चाहूँ बस इक चाह है।
अविनाशी पद मिले यही इक भाव है।।
नाम मंत्र हे आदीश्वर! जपता रहूँ।
पाठ सदा भक्तामर का करता रहूँ।।2331।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. मयूर मन का झूम उठा प्रभु दर्श से।
पावन पान हुए प्रभु चरणन् पर्श से।। नाम मंत्र...।।2332।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. खन खन खनके कंगना छन छन नूपरा।
प्रभु भक्ति में नाचे मन भक्ति भरा।। नाम मंत्र...।।2333।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. शिशु अकेला नाथ आपके दर खड़ा।
आप सहायी मैं जिनवर चरणों पड़ा।। नाम मंत्र...।।2334।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. खास दास की एक अरज सुन लीजिए।
हूँ अयोग्य मैं नाथ शरण रख लीजिए।। नाम मंत्र...।।2335।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "खा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. पर परिणति का रमण मिटा दो नाथ तुम।
भ्रमण मिटे मिल जाये अखय पद जो शुभम्।। नाम मंत्र...।।2336।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. विश्व खड़ा है आज नाश के कगार पर।
तव दर आया विश्वशांति की आश धर।। नाम मंत्र...।।2337।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. शुद्धं बुद्धं नाम जपूँ दिन रात मैं।
जिह्वा पर हो नाम तजूँ जब प्राण मैं।। नाम मंत्र...।।2338।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्धं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. त्वत् भक्ति करके मुक्ति पुर जायेंगे।
प्रभु गुण में रम कर अनंत गुण पायेंगे।। नाम मंत्र...।।2339।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. कीर्तिं जगत में फैले जो कीर्तन करे।
आप कृपा की छाँव रहे मुक्ति वरे।।
नाम मंत्र हे आदीश्वर! जपता रहूँ।
पाठ सदा भक्तामर का करता रहूँ।।2340।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कीर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. तन्मय होकर आदि सुगुण गाता रहूँ।
कब तुम सम बन जाऊँ भाव भाता रहूँ।। नाम मंत्र...।।2341।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. विधानात् विधि के बल से प्रभु पास हैं।
ऐसा लगता अब सिद्धालय पास है।। नाम मंत्र...।।2342।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नात्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तव गुण से तकदीर सँवरती है यहाँ।
जनम जनम के पाप को संहरती यहाँ।। नाम मंत्र...।।2343।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मन हर मूरत देख अक्षि हर्षी प्रभो।
निरख निरख तव गुण को अब बरसी विभो।। नाम मंत्र...।।2344।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. इन्द्र और धरणेन्द्र आय वंदन करें।
यही भावना भाएँ प्रभु सम हम बनें।। नाम मंत्र...।।2345।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "इ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. वातरसना हो ध्यान मग्न भक्ति करें।
आदीश्वर को लक्ष्य बना मुक्ति वरें।। नाम मंत्र...।।2346।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. शुभ बेला में प्रभु ने केवलज्ञान पा।
घात अघाति चउ को पद निर्वाण पा।। नाम मंत्र...।।2347।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. भिन्न गिना निज देह जीव को आपने।
पंक में पंकज नाथ खिलाया आपने।। नाम मंत्र...।।2348।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. दान दिया भवि जीवों को प्रभु ज्ञान का।
दारुण दु:ख का कष्ट मिटाया भक्त का।।
नाम मंत्र हे आदीश्वर! जपता रहूँ।
पाठ सदा भक्तामर का करता रहूँ।।2349।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. मुख मण्डल अतिशय प्यारा जिनदेव का।
अवलोकन प्रभु निजानुभव के हेतु का।। नाम मंत्र...।।2350।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. पैदल चलकर प्रभु मंदिर जाना सभी।
विनय भाव से सिर ढककर आना सभी।। नाम मंत्र...।।2351।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तिमिरान्तक स्वामी अब तुमको पायकर।
धन्य हुआ हूँ शिवपुर गामी ध्याय कर।। नाम मंत्र...।।2352।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

रिपुओं की सेना, होवे भय ना, भक्ति से संबल मिलता।
प्रभु धर्म सुनेता, कर्म विजेता, अर्घ चढ़ा मैं पद नमता।।

ॐ ह्रीं संग्राम मध्ये क्षेमंकराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं झ्रौं झ्रौं नम:।

जरा सी जिन्दगी में तुम कभी भी आह मत भरना,
गमों सी जिन्दगी में तुम गमों की चाह मत करना।
ये दुनियां गम का सागर है इसे अपनी नहीं मानो,
इसे पाने को अपनी जिन्दगी तुम दाह मत करना।।

सर्व शान्ति दायक

कुन्ताग्र-भिन्न-गज शोणित वारिवाह-
वेगावतार - तरणातुर - योध भीमे।
युद्धे जयं विजित-दुर्जय - जेयपक्षास्,
त्वत्पादपंकज-वनाश्रयिणो लभन्ते।।43।।

चौपाई

भालों से गज किये हलाल, खूनी नदियाँ वहीं विशाल,
जिसमें योधा व्यग्र तैरने, शत्रु पक्ष है अति विकराल।
शत्रु पक्ष को जीता उसने, लिया चरण का आश्रय जिसने,
वे मुश्किल को सहज बनाते, तुमको जो प्रभु हृदय बसाते।।43।।

मुनीन्द्रान् मधुरास्वादून्, खाण्डवत् तृप्तिदान् विदः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं मधुरस्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता छन्द

1. कुन्द कुन्द ने ध्याया, ज्ञान बढाया, कलिकाल सर्वज्ञ हुए।
मुनिगण संबोधा, व्रत को शोधा, परोपकारी गुरु हुए।।2353।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कुन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. ता थेई थेई नाचें, प्रभु गुण जाँचें, भक्ति से मन झूम रहा।
सुर सुरी जु आवें, भक्ति रचावें, सब भूमण्डल गूँज रहा।।2354।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. है ग्रसित हुआ रवि, खो गई है छवि, जिनवर छवि न धूमिल हो।
हे ज्ञान दिवाकर! तेज प्रभाकर, तव भक्ति मन शामिल हो।।2355।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. भिक्षा वृत्ति से, उचित रीति से, श्रावक गृह जो अशन धरें।
कर्त्तव्य बोध से, आत्म शोध से, निज आतम मुनि रमण करें।।2356।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. जब प्रसन्न चित्त हो, शुभ निमित्त हो, तब आदीश्वर दर्शन हों।
मम चित्त शांत हो, दूर भ्रान्ति हो, जब चरणन् का पर्शन हो।।2357।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. गणपति गण ईशं, नमूँ मुनीशं, तुम शिवपथ दर्शायक हो।
जपूँ नाम तिहारा, बने सहारा, मुक्तिपुरी परिचायक हो।।2358।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. जन-जन कल्याणी, जिनवर वाणी, भव्य कमल विकसाती है।
इसे हृदय में धारो, आत्म निहारो, शाश्वत पद दिलवाती है।।2359।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. मम शोध किया मन, बोध दिया धन, हे जिनवर! उपकारी हो।
मुझे नंत भवों से, कर्म दुखों से, छुड़ाओ करुणाधारी हो।।2360।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. गुणिजन से वंदित, मन आनंदित, करते त्रिभुवन नामी जिन।
भवदधि से तारक, समता धारक, कहाँ मिले गुण स्वामी बिन।।2361।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. तन्मय होकर के, भक्ति भर के, आदीश्वर गुणगान करो।
सब पाप मिटाओ, पुण्य बढ़ाओ, वृषभेश्वर नित ध्यान करो।।2362।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. वाचन कर डाला, ग्रन्थ की माला, ज्ञान तनिक नहिं हो पाया।
प्रभु रूप तुम्हारा, बना सहारा, निज का दर्शन करवाया।।2363।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. रिश्ते सब झूठे, बंधन खूँटे, दुख ही रिसता रहता है।
अपने ही तप से, आतम बल से, प्रभु ने तोड़ा नाता है।।2364।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. वारिधि गुण के हो, रत्न सजे हो, जिनकी महिमा है न्यारी।
प्रभु ज्ञान निधि हो, मुक्ति विधि हो, छवि जिनवर की है प्यारी।।2365।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. हम भटक गये हैं, बुला रहे हैं, नैया नाथ तिरा देना।
है मगर मोह के, राग द्वेष के, इनसे नाथ बचा लेना।।2366।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. वेगावतार हैं, तेज धार है, युद्ध में चलते भालों की।
प्रभु भक्ति से बचता, नाम जो जपता, टूटे कड़ियाँ तालों की।।2367।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. गाथा गुण गाऊँ, भक्ति बढ़ाऊँ, पुण्य कोष भर जाऊँ मैं।
करुणा के सागर, भर दो गागर, अरज चरण में लाऊँ मैं।।2368।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. वसुधा भी पुलकित, जन-जन हर्षित, प्रथमेश्वर का जन्म हुआ।
सुर नर सब आवें, वाद्य बजावें, देख मेरा भव धन्य हुआ।।2369।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. तारो भव सागर, हे गुण आगर! बालक तुम्हें बुलाता है।
प्रभु पर विश्वास, पूर्ण हो आश, भक्ति का फल पाता है।।2370।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. रमता है जोगी, बहता पानी, शुद्ध सदा ही रहता है।
प्रभु भक्ति करता, गुण को वरता, जिनवर सम ही बनता है।।2371।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. तकदीर सँवारे, जो दर आये, उन भक्तों के भाग्य खुले।
प्रभु के गुण गाओ, मन हरषाओ, बड़े भाग्य जिनदेव मिले।।2372।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. रथ जैन चलाया, धर्म बचाया, जय जय घोष उचारा था।
श्रीषेण की माता, जग विख्याता, आदीश्वर को ध्याया था।।2373।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. णाणावरणी है, ज्ञान कमी है, जिन भक्ति से क्षय होवे।
प्रभु ज्ञान दान से, आत्म ध्यान से, सब कर्मों पर जय होवे।।2374।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. तुम नाम जाप से, कटें पाप ये, प्रभु सम कोई जग नाहीं।
तुलना न कोई, उपमा रोयी, अनुपमेय प्रभु जग मांही।।2375।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रचना भक्तामर, कण्ठ हार बन, भव्यों का शृंगार बनी।
जिसने भी गायी, प्रीति लगायी, हुआ जगत में सर्व धनी।।2376।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. योजन बारह का, समवशरण था, जिसकी थी महिमा न्यारी।
सुनकर जिनवाणी, खुश हो प्राणी, कर्म नाशने की ठानी।।2377।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. धन धन्य घड़ी ये, धन्य दिवस ये, धन्य जन्म मैंने पाया।
प्रभुध्यान लगाया, निज गुणपाया, धर्म ध्वजा है फहराया।।2378।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. भीगे भावों से, अति चावों से, भव्य जीव तुमको ध्यायें।
सब रोग नशावें, कष्ट मिटावें, कहीं न जग में दुख पायें।।2379।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. मेघों सी वर्षा, मन है हरषा, बन मयूर अब झूमा है।
अब दर्श है पाया, शीश नवाया, प्रभु चरणों को चूमा है।।2380।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. युग के आदि जिन, नमें मुनीजन, चरण युगल का ध्यान करें।
निज मुकुट झुकाकर, शीश नवाकर, सुरगण प्रभु सम्मान करें।।2381।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. सिद्धेश्वर की जय, करती तम क्षय, भक्त मनोबल बढ़ा रही।
भक्तों की टोली, जय-जय बोली, प्रभु चरणों में समा रही।।2382।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्धे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. हैं जन्म जरा ये, रोग महां ये, प्रभु ने इन्हें मिटाय दिया।
बने वैद्य सुस्वामी, त्रिभुवननामी, भविजन को समझाय दिया।।2383।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. सत्यं शिव सुन्दर, मन के अंदर, आदीश्वर जिनदेव बसे।
मुझको कैसा डर, भय भी भयकर, दूर भक्त से जाय बसे।।2384।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. विश्वास आप पर, नाथ द्वार पर, यही आश ले आया हूँ।
तुम करुणासागर, दुःख निवारक, कष्ट मिटाने आया हूँ।।2385।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जिनराज विजेता, मोक्ष के नेता, तीन भुवन को जीत लिया।
ऐसे जिनवर की, आदीश्वर की, स्तुति करके धोक दिया।।2386।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. तन्मय हो करके, भक्ति करके, पाप कर्म विनशाये हैं।
जो शक्ति लगाये, जिन गुण गाये, कर्म भुजंग भगाये हैं।।2387।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. दुर्जय कर्मों ने, प्रभु चरणों में, अपना माथा टेक दिया।
यह देख भक्त ने, बिना शक्ति के, प्रभु से नाता जोड़ लिया।।2388।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. जब विहार करते, सुरगण रचते, स्वर्ण कमल को भक्ति से।
चउ अंगुल ऊपर, उन कमलों पर, प्रभुवर चलें विरक्ति से।।2389।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. यह नाम तुम्हारा, मुझको प्यारा, यथा शक्ति से जपता हूँ।
हे नाथ! सिखा दो, भक्ति बढ़ा दो, यही आश उर रखता हूँ।।2390।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. जेता प्रभु जग के, नेता मग के, शिवपुर राह दिखायी है।
हो तुम अविकारी, आत्मविहारी, मुक्तिवधु दर आयी है।।2391।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. यह दुनियाँ माया, बहु दुख पाया, निज-निज स्वारथ के साथी।
मैं किसे पुकारूँ, अपना मानूँ, कोई न तुम सम है साथी।।2392।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. पर की नहिं आशा, नहीं निराशा, एक अकेले चलना है।
नायक नहिं बनना, ज्ञायक रहना, आत्म साधना करना है।।2393।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. अनुप्रेक्षाः द्वारा, भाव सँवारा, द्वादश विधि चिंतन करके।
जिनवर मैं हारा, ज्ञान विसारा, पंच परावर्तन करके।।2394।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. त्वत् भक्ति करके, मुक्ति वरके, सारे कर्म मिटाना है।
जिनवर को देखा, मन ने लेखा, निज गुण को अब पाना है।।2395।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. प्रभु पाद पीठ तं, नमत शीश हम, चरणों की बलिहारी है।
प्रभु दया निधानं, नाथ कृपालं, तारो अब मम बारी है।।2396।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. दरबार तुम्हारा, सबसे प्यारा, शरणागत को चैन मिले।
भक्ति से आता, जो गुण गाता, उसको सुख की रैन मिले।।2397।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. जो पंच प्रकारा, कहा आचारा, धारण कर आचार्य हुए।
शिष्यों को शिक्षा, अरु दी दीक्षा, भविजन के सिरमौर हुए।।2398।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. करके गुण कीर्तन, भीगे तन मन, कृपा छाँव प्रभु की पायी।
ये नयन हमारे, छवि निहारे, देख के आँखियाँ हर्षायीं।।2399।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. जगदीश्वर प्यारे, नाथ सहारे, छोड़ भक्त अब जायें कहाँ।
तुम जगत पिता हो, राह दिखा दो, सुत तव दर पर आन खड़ा।।2400।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. वर ली शिवनारी, हे त्रिपुरारी! जगन्नाथ सुखदायी हो।
यह भक्त पुकारे, बनो सहारे, केवल आप सहायी हो।।2401।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. नाना द्रव्यों से, नव छन्दों से, भक्त आदि गुण गाता है।
चरणों में आता, सन्मति पाता, वह गुण से भर जाता है।।2402।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. श्रमण कहे मुनि, श्रवण करें ध्वनि, समवशरण में आकर के।
तुम ध्यान लगाते, कर्म नशाते, निज अनुभव को पाकर के।।2403।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. अतिशायि जिनेश्वर, हे परमेश्वर!, प्रातिहार्य संयुक्त प्रभो।
तव घर सिद्धालय, सुख का आलय, अष्ट कर्म से मुक्त विभो।।2404।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. **नाणो जो सूत्रं, अति लघु सूत्रं, जिनवर द्वारा कहा हुआ।**
है शुद्ध दशा ये, पुद्गल की जो, उमास्वामी ने सूत्र रचा।।2405।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. **लखकर जिनमुद्रा, छोड़ी तन्द्रा, नंत काल से सोया था।**
हे नाभिनंद जी! परमानन्दी, पर परिणति मैं खोया था।।2406।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. **भन्ते हे भगवन्! नाभिनंदन, मम नैया अब पार करो।**
ये भक्त चाहता, बाट जोहता, अब तो बेड़ा पार करो।।2407।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. **हो तेज पुंज तुम, ज्ञान भानु जिन, सर्व जगत दर्शाया है।**
प्रभु देख दिव्य छवि, सुप्त हुआ रवि, चन्द्र बिम्ब शर्माया है।।2408।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

जो शूरवीर है, देत पीर है, मोह महा योद्धा भारी।
चरणों में नमता, भक्ति करता, उससे सब सेना हारी।।

ॐ ह्रीं वनगजादि-भयनिवारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो महु सवीणं झ्रौं झ्रौं नमः।

अगर दुनियाँ में हर इंसां यहाँ इंसान हो जाये,
तो ये धरती बने जन्नत नहीं श्मशान हो पाये।
तहे दिल से सभी के दर्द को अपना यहाँ समझे,
वही इंसान ही इक दिन यहाँ भगवान हो जाये।।

सर्वापति-विनाशक

अम्भोनिधौ क्षुभित - भीषण-नक्र-चक्र,
पाठीन - पीठ - भय दोल्वण - वाडवाग्नौ।
रंगत्तरंग शिखर स्थित यान पात्रास्,
त्रासं विहाय भवतः स्मरणाद् व्रजन्ति।।44।।

चौपाई

चक्र-नक्र से क्षोभित सागर, उसमें चंचल लहरें पामर,
बड़वानल की आग लगी हो, तूफां जिसमें अन्दर-बाहर।
उसमें जो जहाज ले जाता, लेकिन वही पार कर पाता,
जो प्रभु! तुमको मन में लाता, निडर हुआ वह भव तिर जाता।।44

बंधन सब निर्बन्ध हों-जब लें प्रभु का नाम।
आदिनाथ भगवान को करूँ "विनम्र" प्रणाम।।

यतीन्द्रानमृत स्वादून्, सुधावत् स्वादुभोगिनः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं अमृत स्राविभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा छन्द

1. अम्बर भी झुकता चरण, जब प्रभु करें विहार।
ज्योतिष मण्डल भी हँसे, जिन चरणों को निहार।।2409।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "अं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. भोग विषय के चोर ने, जकड़ लिया मम आत्म।
पर का कर्ता बना फिरा, भूला आतम राम।।2410।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. नित्य उदित है ज्ञान तव, सर्व लोक प्रकटाय।
लोकालोक निहारें जिन, सर्वदर्शी कहलाय।।2411।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. सुधीत कहते आपको, स्वर्ण समां तव देह।
राग द्वेष को छोड़कर, धारा निज से नेह।।2412।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. क्षुधा तृषादिक परीषह, सहते हैं मुनिराज।
कठिन तपस्या धार कर, बनते हैं जिनराज।।2413।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. अभिरामी जिनदेव का, शिवनामी है धाम।
जिन वचनामृत धार उर, अंतस् लूँ विश्राम।।2414।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. तपोमूर्ति जिनदेव की, मनहर मूरतिया।
इकटक छवि निहारतीं, भक्तों की अँखियाँ।।2415।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. भीति न व्यापे जगत में, भाव यही दिन-रैन।
हे जिनवर! वर दो अभय, सुभिक्ष देखें नैन।।2416।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. षड् दर्शन में श्रेष्ठ है, जिन दर्शन जिनदेव।
केवलज्ञानी ने दिया, यह अखण्ड उपदेश।।12417।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. णमो-णमो जिनदेव के, चरण युगल उर धार।
सुन लो अरज मेरी प्रभु, यातैं करूँ पुकार।।2418।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. नर में श्रेष्ठ नरेन्द्र हैं, देवों में जिनदेव।
चरण आपकी आ खड़ा, मैंटो राग कुटेव।।2419।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. क्रम कुल युगल सरोज तव, श्रम को दूर भगाएँ।
अंधकार मिट जाये सब, भवि मन में हर्षाएँ।।2420।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. चक्री खगधर इन्द्र भी, जिन्हें नवाते भाल।
जय जय जय आदीश जिन, मरुदेवी के लाल।।2421।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. क्रमवर्ती पर्याय जो, कही कर्म आधीन।
उनका नाश करूँ यहाँ, बनूँ नाथ स्वाधीन।।2422।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. पालन हारे नाथ तुम, जीना दिया सिखाय।
युग आदि में आदिजिन, बोध दिया तुम आय।।2423।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. श्रेष्ठी प्रभु पुकारते, ज्येष्ठी तुमको ध्यायें।
समवशरण में आयकर, पूजन कर हर्षायें।।2424।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्ठी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. नमन करूँ प्रथमेश को, नमन नाभि के लाल।
पुण्ययोग आया मेरा, लिया अष्ट द्रव्य थाल।।2425।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. पीकर मदिरा मोह की, काल अनादि बिताय।
किया चतुर्गति भ्रमण मैं, आज मिले जिनराय।।2426।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. ठगिनी माया ने ठगा, ये सारा संसार।
उससे बचने के लिए, आया प्रभु के द्वार।।2427।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ठ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. भव भव में भटका प्रभो, पग-पग खायी चोट।
भव से पार उतारिये, संयम की दे ओट।।2428।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. यज्ञ बहुत कीने यहाँ, आत्म यज्ञ नहिं होय।
अभिलाषी निज ज्ञान का, दीजै इच्छा जोय।।2429।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. दोष युक्त जीवन मेरा, प्रभु निर्दोष हो आप।
परम शान्तमय आप हैं, मिटा दीजिए पाप।।2430।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. भय दोल्वण भयभीत हूँ, भव से हे परमेश!
धरा हृदय में आपको, प्राप्त होय निज देश।।2431।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. प्राण जायें पर प्रण मेरा, कभी न जाए जिनेश।
दृढ़ता से व्रत पालकर, पाऊँ निज का वेश।।2432।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. वाणी कल्याणी प्रभु, जिसने पान किया।
स्वानुभव अमृत चखा, निज कल्याण किया।।2433।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. डरता पापों से यहाँ, वही पुण्य करता।
ज्ञानी समता धारकर, आत्म भूति वरता।।2434।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ड" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. वाग्गङ्गा बहकर प्रभो, गणधर कुण्ड डरी।
इस गङ्गा में डूब कर, भविजन मुक्ति वरी।।12435।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वाग्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. नौकर को निज के समां, नहीं करे कोई सेठ।
सच्चे मालिक आदि हैं, भक्त को दें निज भेष।।2436।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नौ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. रंग मंच संसार यह, पात्र बने सब जीव।
नाना विध पर्याय में, घूमें यहाँ सदीव।।2437।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. गत्यागति से मुक्त हो, पंचम गति के नाथ।
शाश्वत पद पाया प्रभु, शिवसुख के सरताज।।2438।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. तत्त्वान्वेषी मैं बनूँ, स्वात्म तत्त्व फल पाऊँ।
आर्त्त-रौद्र को त्यागकर, धर्म ध्यानी बन जाऊँ।।2439।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. रंच मात्र भी कष्ट नहिं, कोई इष्टानिष्ट।
ऐसी पृथ्वी पाऊँ मैं, बनूँ नाथ मैं सिद्ध।।2440।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. गमनागमन मिटायकर, निज में थिर हुए नाथ।
गजमुक्ता को लाय कर, चरण चढ़ाये तात।।2441।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. शिवपुर पाना है मुझे, बस ये ही इक आश।
राग द्वेष ने मिल प्रभु, बाँध लिया है पाँश।।2442।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. खत्म कर दिया नाथ ने, पंच परावर्तन।
निज की सुध अब हो मुझे, पाऊँ आप वचन।।2443।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. रत्न दीप का थाल ले, जगमग ज्योति जलाय।
करूँ आरती आपकी, मोह तिमिर नश जाय।।2444।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. स्थिर होकर आपने, भवस्थिति को नशाय।
मैं भी तट पर हूँ खड़ा, माँग रहा हूँ सहाय।।2445।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्थि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तव पद कमल में हे जिनम्! हृदय कमल अर्पित।
पास न कुछ भी है प्रभु, क्या कर दूँ अर्पित।।2446।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. यान* ज्ञान पर चढ़ चले, शुक्ल ध्यान उर धार।
मुक्ति पथ के राही को, नमूँ मैं बारम्बार।।2447।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. नम्र बनो मानी नहीं, यह जिनवर उपदेश।
नम्र मुक्ति को पात हैं, मानी भ्रमें हमेश।।2448।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. पावन पतित बना दिए, हे परमातम देव!
आप छवि देखत यहाँ, होता पाप का छेव।।2449।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. त्रास् पायी मैंने जगत, त्राहिमान हे नाथ!
तारण तरण जु आप हो, भवदधि के सरताज।।2450।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रास्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. त्राण आप ही कर सकें, बचें पाप से भक्त।।
तव चरणों को सेवकर, होवें पाप से मुक्त।।2451।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

* जहाज

44. सम्भव करते हे प्रभु! सभी असम्भव कार्य।
जिनने शरण लिया चरण, नाथ हुआ भव पार।।2452।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. विषय भोग के योग से, निज का हुआ वियोग।
पुण्य हुआ संयोग जब, धार लिया शिव योग।।2453।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. हा हा कार मचा दिया, हिंसा ने चहुँ ओर।
नाथ अहिंसा दे धरम, नई दिखाई भोर।।2454।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. यत्न यहाँ मैंने किया, प्राप्ति हेतु निज बोध।
प्रभु ने मार्ग दिखा दिया, अनुशासन से शोध।।2455।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. भगवन् की भक्ति यहाँ, सभी भुलाती दुक्ख।
आत्मबोध प्रकटाय कर, वरण कराती सुक्ख।।2456।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. वर्ण तीन बतलाये जिन, भरत बनाये चार।
दूर होय इन पा लिया, सिद्ध अवर्णा सार।।2457।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. अन्तः करण पवित्र है, हे आदीश्वर देव!
भक्ति आपकी नित करूँ, करूँ चरण की सेव।।2458।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. स्मरण मात्र से ही कटें, पूर्व बद्ध जो कर्म।
ध्यान करें प्रभु आपका, पा जायें शिवशर्म।।2459।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. रहता ना शाश्वत कोई, सिद्ध होय अक्षय।
द्वार खड़ा जिनवर तेरे, वर दो मुझे अभय।।2460।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. स्मरणाद् मिलता सुखं, मिलता मन को चैन।
ज्ञान कली खिल जाय मम, मिल जायें प्रभु वैन।।2461।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णाद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. व्रत नियमों को पालते, पाते हैं निज सार।
निज आतम अनुरक्त जो, पाते हैं शिव द्वार।।2462।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. जंजीरें सब कर्म की, जकड़ लिया चहुँ ओर।
ध्यान शस्त्र से आपने, नष्ट कर दिया छोर।।2463।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तिर कर तट तक पहुँचते, निज भुजबल से जीव।
ऊर्ध्व लोक को प्राप्त हो, करें जो प्रभु से प्रीत।।2464।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

तूफानी सागर, दिखे है डागर, प्रभु नाम के सुमिरन से।
भव सिन्धु बड़ा है, पार खड़ा है, अर्घ चढ़ा जिन भक्ति से।।

ॐ ह्रीं संसाराब्धितारणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं झ्रौं झ्रौं नमः।

जो सच अस्तित्व को माने उसे सम्यक्त्व कहते हैं,
सभी नय से यहाँ जाने उसे सच ज्ञान कहते हैं।
कषायें हों नहीं, इन्द्रिय विजय गुण व्रत समिति पाले,
ये षट् कर्तव्य करने को यहाँ चारित्र कहते हैं।।

जलोदरादि-विनाशक

उद्भूत-भीषण-जलोदर-भार-भुग्नाः,
शोच्यां दशा-मुपगताश्च्युत-जीविताशाः।
त्वत्पाद पंकज रजोऽमृत दिग्ध देहा,
मर्त्या भवन्ति मकरध्वज तुल्य रूपाः।।45।।

चौपाई

रोग जलोदर है अति भारी, जो इस तन को बहुदुखकारी,
जीने की सब आश छोड़कर, दशा भयंकर है भयकारी।
ऐसा रोगी चरणों आये, चरणामृत को देह लगाये,
गुरुवर मानतुंग यह गाये, कामदेव सा वह बन जाये।।45।।

अक्षीणर्द्धि परिप्राप्तान्, दात्राहार प्रवर्धकान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं अक्षीणमहानसेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

ज्ञानोदय छन्द

1. उद्भव दिवस जिनेश्वर आया, सृष्टि सारी हर्षायी।
इन्द्रों ने आ किया महोत्सव, मन की कलियाँ खिल आयीं।।2465।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "उद्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. भूपति ने जिनपति के आगे, अपना मस्तक झुका दिया।
तीन लोक का वैभव भी तो, तव चरणों में चढ़ा दिया।।2466।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. तव चरणों के ही प्रसाद से, तत्त्व बोध मिल पाता है।
वृषभेश्वर के चरणों आकर, आत्म शोध पा जाता है।।2467।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. भीग रहीं हैं पलकें जिनवर, करती हैं पद प्रक्षालन।
पुण्य योग से पाया दर्शन, हो अब पापों का गालन।।2468।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. षट्रस व्यंजन से भी भगवन्, क्षुधा रोग नहिं मिट पाया।
करके त्याग सभी इन रस का, आतमरस को चख पाया।।2469।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. णमो णमो वृषभेश्वर जिन को, णमो सृष्टि के करता जिन।
करता रहूँ सदा तव अर्चन, चरणों में बीते जीवन।।2470।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. जग में जी भर घूम लिया है, सुख क्षण भर भी नहिं पाया।
मिले आपके दर्शन जब से, मन मयूर है हरषाया।।2471।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. लोकालोक निरखते जिनवर, निज के ज्ञान चक्षुओं से।
यश फैला तव सर्वलोक में, दूर रहें अपकीर्ति से।।2472।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. दण्ड वही पाते हैं भगवन्, लिप्त रहें जो व्यसनों में।
तव चरणों की भक्ति से ही, मुक्त हुए दुर्व्यसनों से।।2473।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. रखता जिन को निज चेतन में, निज को जिन सम करता है।
ध्यान अग्नि में दहन कर्म कर, परमातम पद वरता है।।2474।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. भाया प्रभुवर दरश आपका, परश आपका मिल जाये।
जीवन की मुरझाई कलियाँ, रत्नत्रय से खिल जायें।।2475।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. रश्मि सूर्य की फीकी पड़ती, जब जिन सूर्य निकलता है।
कभी न ढकता वह बादल से, ऐसा तेज चमकता है।।2476।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. विश्वभुग् विश्वनायक जिनवर, विश्वजीत कर हुए महान।
गणनायक गणधर के स्वामी, गण के ईश्वर कहे प्रधान।।2477।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भुग्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. बनूँ निमग्नाः नदी के सम ही, जिन वचनों को हृदय धरूँ।
उन्मगनाः बन सर्व परिग्रह, का जिनवर परित्याग करूँ।।2478।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. शोधन करके हे वृषभेश्वर! निज का बोध उपाऊँ मैं।
गोपन कर इन्द्रिय को अपनी, जितेन्द्रिय बन जाऊँ मैं।।2479।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. प्राच्यां दिश में दिखे दिवाकर, पश्चिम में अस्ताचल है।
दिनकर कमल खिला कर हँसता, संध्या बेला चल चल है।।2480।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च्यां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. दर्शन कर मन मोहित होता, वीतराग की छवि लखकर।
मुद्रा सम्मोहन करती है, द्युति आपकी है मनहर।।2481।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. शाश्वतता के धाम आप हो, शाश्वत पद को पाया है।
शाश्वत साथ आपका चाहूँ, मन में आज समाया है।।2482।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. मुकलित होते कमल सरोवर, मुदित हुए प्राणी लखकर।
पुलकित होते भविजन जिनवर, अमृतमय वाणी सुनकर।।2483।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. पद पाया निर्वाण आपने, मम निर्माण करा देना।
जिस पथ पर प्रभु चले आप हैं, चलने का साहस देना।।2484।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. गर्व हो रहा मुझको भगवन्, दर्श आपका आज मिला।
धन्य जैन कुल को पाकर के, जीवन मेरा पर्व बना।।2485।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. शिव गताश्चिन्मयी शुद्धता, प्राप्त करी त्रिभुवन स्वामी।
सिद्धालय में जाय बसे हैं, नाश कर्ममल अभिरामी।।2486।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ताः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. अच्युत अक्षय पद को पाया, अविनाशी सुख पाय लिया।
सुनकर यशोपताका जिनवर, भागा तव दरबार मिला।।2487।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "च्यु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. तव अन्वेषण करते-करते, निज अन्वेषण हुआ प्रभो।
निज का वैभव पाने जिनवर, अन्तस् खोदा कुआँ विभो।।2488।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. जीव सदा जीता है जग में, मरता कभी न वो भव में।
विज्ञ मनाते मृत्यु महोत्सव, अज्ञ विलाप करें जग में।।2489।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. विश्वज्ञानी बन गये जिनेश्वर, फिर भी मान नहीं दिखता।
अतः तुम्हीं को मानें जिनवर, चरणों में नित सिर झुकता।।2490।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. तारण हारे आप जिनेश्वर, देख देवियाँ नृत्य करें।
वृषभेश्वर की लख मुखमुद्रा, निज सौभाग्य पै गर्व करें।।2491।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. आशाः पाश में बँधता प्राणी, जग से मिली निराशा है।
इसीलिए तो आदीश्वर ने, दृष्टि बनायी नासा है।।2492।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. त्वत् पद पंकज के प्रभाव से, कर्मों का हो यहाँ अभाव।
आप कृपा से शिवपुर पाकर, शाश्वत बनता यहाँ स्वभाव।।2493।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. पान किया अमृत वाणी का, मुक्ति की मिल गई कला।
मान गला दो जिनवर मेरे, कर दो मेरा आज भला।।2494।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. दर-दर की ठोकर खायीं हैं, प्रभु दर आज मिला हमको।
आज समझ में आया प्रभुवर, कौन भ्रमाता है सबको।।2495।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. पंच कल्याणक हुए आपके, सुरनर जय जयकार करें।
पंचमगति पायी जिनवर जी, हम तव गुण का गान करें।।2496।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. करी कल्पना व्यर्थ यहाँ पर, अर्थ न कोई पाया है।
निर्विकल्प होकर आदीश्वर, जीवन सुखी बनाया है।।2497।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. जन-जन के उपकारक जिनवर, हित का मार्ग बताया है।
पन्थ बताया मुक्ति पुर का, खुद चलकर दिखलाया है।।2498।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. रज चरणों की चंदन सम है, जग संताप मिटाती है।
मस्तक पर धारण की जिसने, कर्म धूलि हटवाती है।।2499।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. जोड़-जोड़ कर धरा यहाँ धन, धरा धरा पर रह जाता।
नश्वर काया नश्वर माया, किया कर्म संग में जाता।।2500।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. मृग तृष्णा में भटका अब तक, तृषा न निज की बुझ पायी।
आदीश्वर के आदर्शों से, निज में निज की शुध पायी।।2501।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. तम का नाश किया है जग में, जिनपद किरण रश्मियों ने।
पाप नशाया निज पद पाया, तव पद आकर भविकों ने।।2502।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. दिग्दिगन्त तक फैली जिनवर, तव यशकीर्ति महा सुखकार।
दिग्भ्रमितों को दिशा दे रही, वाणी प्रभुवर की दुखहार।।2503।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दिग्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. धर्म देशना की बेला में, आदीश्वर का जो वैभव।
वैसा जग में नहीं दिखा है, अन्य देव का भी ऐश्वर्य।।2504।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. देव बसे हैं देहालय में, तन देवालय हुआ मेरा।
भक्ति के निर्झर झरते हैं, मन श्रद्धालय बना मेरा।।2505।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "दे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. हार गया इन कर्मों से मैं, हुआ सदा परिहास यहाँ।
एक प्रार्थना तुमसे भगवन्, दे दो शिवपुर वास जहाँ।।2506।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. मर्त्यलोक में धूम मची है, सुरगण का दिखता मेला।
मुक्तेश्वर अवतार हुआ है, जन्म महोत्सव की बेला।।2507।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मर्तृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. याचूँ नहीं कभी पर वस्तु, निज वैभव को पाना है।
दर्श आपका पाके जिनवर, सिद्धालय घर जाना है।।2508।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. भगवत् पद पाने की शक्ति, सर्व जीव धारण करते।
पुण्यवान हैं ज्ञानवान हैं, निज शक्ति को प्रकटाते।।2509।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. वन्दन करता नाथ आपका, अभिनन्दन मैं करता हूँ।
बन्धन टूटें तव भक्ति से, निज में नन्दन करता हूँ।।2510।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. तिर्यक् लोक अरु ऊर्ध्व मध्य व, अधो लोक में चैन मिला।
जन्म हुआ जब आदीश्वर का, इक पल सबको चैन मिला।।2511।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मन में स्वात्म रुचि जागी है, उसको ना डिगने देंगे।
आदि जिनेश्वर के बिन अपना, सिर न कहीं झुकने देंगे।।2512।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. कथा आपकी पाप नाशती, जैसे तम नाशे ज्योति।
सुनकर मगन हुए हैं भविजन, पाया भक्ति का मोती।।2513।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "क" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. रत्नत्रय को धारण करके, तीन लोक के रत्न बने।
रत्नों का मैं अर्घ चढ़ाऊँ, रत्नत्रय की निधि मिले।।2514।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. ध्वज फहराया आप धर्म का, धर्मध्वज कहलाये हो।
धर्म दिलाता शर्म यहाँ पर, नाथ आप बतलाये हो।।2515।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. जयवन्तो हे जिनवर! जग में, देव करें जय-जय का घोष।
नाथ आपके जयकारों से, मिटता मिथ्यातम का दोष।।2516।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. तुम हो अव्यय आदि अनन्त, अविनाशी अविकारी नाथ।
अक्षय पद का भाव बनाया, चरण झुकाता हूँ मम माथ।2517।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. मूल्यवान सब वस्तु त्यागीं, पद अमूल्य तव पाया है।
मैं भी पद अनर्घ को पाऊँ, मन में आज समाया है।।2518।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल्य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. रूप आपका अतिशय सुन्दर, पर अरूपता भायी है।
निज स्वरूप को लखकर भगवन्, परम शान्तता पायी है।।2519।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रू" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. जगत प्रदीपा: बनकर जिनवर, जगत्प्रकाशी कहलाये।
प्रीति आपसे लगी है भगवन्, सच्चे मीत तुम्हीं पाये।।2520।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

हुआ रोग जलोदर, भीम भगन्दर, जीने की आशा नहिं हो।
प्रभु अर्घ चढ़ाकर, छुए चरण रज, कामदेव सी काया हो।।

ॐ ह्रीं दाहताप-जलोदर-अष्ट-दशकुष्टसन्निपातादि-रोगहराय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं झ्रौं झ्रौं नम:।

मेरे गुरुदेव सोते से हमें आकर जगा देना,
चलूँ सद्मार्ग पर हरदम कला ऐसी सिखा देना।
पड़ी मझधार में नैया किनारे पर लगा करके,
मुझे नवकार मंत्र को समाधि पर सुना देना।।

बंधन-विमोचक

आपादकण्ठ-मुरु-शृंखल-वेष्टिताङ्गा,
गाढं बृहन्निगड-कोटि-निघृष्ट जंङ्घा:।
त्वन्-नाम-मन्त्र-मनिशं मनुजा: स्मरन्त:,
सद्य: स्वयं विगत बन्ध भया भवन्ति।।46।।

चौपाई

साँकल सिर से पाँव बँधी हो, जाँघ खून से खूब रँगी हो,
इतनी हो बेड़ी मजबूत, ऐसी जग में कहीं नहीं हो।
हे प्रभु! हरदम नाम जु गाये, तुझको सदा हृदय में लाये,
जंजीरें उसकी कट जातीं, निर्बन्धनता वह नर पाये।।46।।

भुवनत्रय संसेव्यान्, वर्धमानान् महामुनीन्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं वर्धमानेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

चाल छन्द

1. आपत्ति ने आ घेरा, है नाथ सहारा तेरा।
किसको मैं व्यथा सुनाऊँ, दर छोड़ प्रभु कहाँ जाऊँ।।2521।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "आ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. पाया है जिनवर द्वारा, है जीवन का आधारा।
जीवन मैं यहीं बिताऊँ, नहिं छोड़ के ये दर जाऊँ।।2522।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. दरिया है हृदय तुम्हारा, जिसमें है ज्ञान अपारा।
करुणा की नहीं कमी है, करुणासागर के द्वारा।।2523।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. कंधों पर वे ही जाते, जो कंठ न प्रभु गुण गाते।
प्रभु नाम मंत्र ही जग में, उत्तम गति में पहुँचाते।।2524।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. ठगिनी माया ने सारा, देखो जग ही ठग डारा।
जिन जननी रक्षा करना, इस जग में नहीं अब भ्रमना।।2525।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ठ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. मुक्ति की युक्ति बताते, प्रभु भक्ति में रम जाते।
लेकर के नाम प्रभु का, वे भव सागर तिर जाते।।2526।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. रुकता न कभी प्रभाव, होता न द्युति का अभाव।
जिनवर का तेज प्रखर है, वाणी भी अजर अमर है।।2527।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. शृंगार किया निज तन का, गहना पहिना निज धन का।
किया राग द्वेष निरवारा, न हो फिर जनम दुबारा।।2528।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शृं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. खड्गासन अरु पद्मासन, हैं ध्यान के दोनों आसन।
उपसर्ग यहाँ पर जीता, सब कर्म को कर दिया रीता।।2529।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ख" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. लहराया तप का उपवन, शोधन कर लीना तन मन।
निज में ही निज को ध्याया, निर्वाण महापद पाया।।2530।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ल" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. वेष्टित कर्मों से आतम, मुझे भुला दिया परमातम।
हे निर्बन्धन! जिन स्वामी, काटो भव फंदन स्वामी।।2531।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वेष्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. टिमकार करें नभ तारे, शशि करता सर्व उजारे।
तारे हैं सब ऋषि मुनिगण, जिनवर हैं चाँद हमारे।।2532।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "टि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. आस्तां रहता है चंदा, जिस देख कुमुदनी नंदा*।
हैं भक्त कुमुद सम जग में, खुश हों लख नाभि नंदा।।2533।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. गाथा जो गुण की गाये, वह गुण से ही भर जाये।
प्रभु की दृष्टि हो जिस पर, वह गुण सागर बन जाये।।2534।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. गाफिल मत होना जग में, प्रभु जगा रहे इस भव में।
नहिं प्रभु पुकार सुन पाये, तो भव वन में भरमाये।।2535।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. ढोंग का नहिं जिया है जीवन, बस ढोंग रचाया तन मन।
कैसे प्रभु की भक्ति हो, तोता जैसी रट ली हो।।2536।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ढं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

* आनंदित

17. बृहज्ज्ञानाम्बुज सिन्धु हो, भविजन के प्रभु बन्धु हो।
इक बूँद पान को करके, भवि ना भवसागर भटके।।2537।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. अर्हन् तव नाम सुहाना, यह आज सभी ने जाना।
है पाप ताप का नाशक, बनता है जगत प्रकाशक।।2538।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हन्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. निद्रा देवी ने सताया, अरु स्वप्नलोक पहुँचाया।
प्रभु ने था बहुत जगाया, इक बार सम्भल नहिं पाया।।2539।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. गल जाये प्रभु मम मान, दे दो ऐसा वरदान।
यह मान करे अपमान, नहिं बनने दे भगवान।।2540।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. डब डब भर आयीं आँखें, प्रभु देखा खिल गई बाँछें।
उस पल ही ऐसा लागा, खुल गया हो भाग्य का ताला।।2541।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ड" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. कोई भी रोक न पाये, जिसे प्रभु शरण मिल जाये।
करता स्वतंत्र विचरण है, नित रहता आत्म मगन है।।2542।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "को" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. टिमकार समां जीवन है, नहिं टिका कभी ये तन है।
है शाश्वत की अभिलाषा, हो सिद्ध शिला पर वासा।।2543।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "टि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. निःसृत सब कर्म हुए हैं, नहिं प्रभु को पर्श किए हैं।
तुम निखिल विश्व के ज्ञाता, चरणों में नित नत माथा।।2544।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. घृत के पकवान बनायें, स्वर्णिम हम थाल सजायें।
चरणों में नाथ चढ़ाकर, निज क्षुधा वेदनी नशायें।।2545।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. अष्टम वसुधा पाना है, प्रभु निज में रम जाना है।
मैं रमण करूँ शुद्धातम, बन जाऊँ भगवन् आतम।।2546।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ष्ट" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. जंगल में मंगल करता, प्रभु नाम अमंगल हरता।
जो मन से जपे यहाँ पर, डर जाता उससे ही डर।।2547।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. विघ्नौघाः प्रलयं यांति, प्रभु नाम जपूँ मिले शांति।
जो पूजे चरण जिनेशा, उसके सब मिटें किलेशा।।2548।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "घाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. त्वन्नाम मंत्र सुमिरन से, भवि छूटें भव बंधन से।
भावों को शुद्ध बनायें, गुण सरवर में अवगाहें।।2549।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. नाभिनंदन जिनराजा, हो प्रथम आप महाराजा।
बड़भागी मात-पिता हैं, जिनके सुत जगत पिता हैं।।2550।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. मरुथल था मम उर का वन, गुरु वाणी बरसी जल बन।
समकित के फूल खिले हैं, जिनदेव चरण जो मिले हैं।।2551।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. मन्द्रादि शिखर के ऊपर, जिन न्हवन किया है सुरगण।
क्षीरोदधि का जल लाये, भक्ति से भरकर आये।।2552।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. त्रय रत्नों को धारण कर, रोगत्रय से मुक्ति वर।
सिर तीन छत्र को धारा, मुझे मिले चरण का सहारा।।2553।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मनमानी अब तक की है, नहिं मन की कमी हुई है।
दोषों ने मुझको घेरा, प्रभु कर दो आन सवेरा।।2554।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. निज भाव बनाया निर्मल, वाणी बन गई गंगा जल।
जिसने भी पान किया है, सम्यक् श्रद्धान लिया है।।2555।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. शंकादिक दोष हटाये, सम्यग्दृष्टि कहलाये।
वसु कर्म नष्ट कर जाये, सम्यक्त्वादिक गुण पाये।।2556।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. महामुनि जब ध्यान करेंगे, कर्मों के बंध नशेंगे।
करके विहार इस जग से, वे सिद्धालय में बसेंगे।।2557।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. नुत हो भवि भक्ति करेंगे, प्रभु गुण विधान सुमरेंगे।
सब विघ्न बला को हटाकर, यश पा जहान घूमेंगे।।2558।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. विरजाः हुए मुक्त जो रज से, जग में रहे खिले कमल से।
कहने को हैं संसारी, प्रभु भाव मुक्ति है धारी।।2559।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जाः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. स्मरण मात्र जिनवर का, सब कष्ट हरे भक्तों का।
सम्पूर्ण जगत नहिं देता, प्रभु से वह सुख है मिलता।।2560।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. रंगीला यहाँ जगत है, रंग राग द्वेष में लसित है।
प्रभु राग-द्वेष निरवारो, मुझे अपने रंग रंगालो।।2561।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. विगतः जिन सर्व विकार, किया निज स्वरूप स्वीकार।
प्रभु वीतरागता लखकर, हुआ मन में हर्ष अपार।।2562।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. सब गुणों से प्रभु सजे हैं, सिद्धालय जाय बसे हैं।
हे नंत चतुष्टयधारी! महिमा अचिन्त्य सुखकारी।।2563।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. आद्यः कह करके पुकारें, ऋषि मुनि गण उर में धारें।
श्रद्धा से तुमको ध्याते, सद्यः अनर्घ पद पाते।।2564।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्यः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. स्व-पर का भेद बताया, निज में स्वभाव निज पाया।
मैं पर परिणति में झूला, निज के स्वभाव को भूला।।2565।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. सत्यं शिव जिन सुन्दर हैं, रहते मन के अन्दर हैं।
छवि वीतरागी अनुपम है, वृषभेश्वर गुण सुन्दर हैं।।2566।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. विधि व्रत की प्रभु समझायी, शक्ति से भक्ति बतायी।
नहिं शक्ति यहाँ छुपाना, संयम पा शिवपुर जाना।।2567।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. गल जाते अघ के शूल, खिलते संयम के फूल।
जिन सूर्य किरण के पड़ते, पा जाते भव का कूल।।2568।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. तप बारह विध तपकर के, निज देह क्षीण हैं करते।
तन तेज कभी न कम हो, जब मन में दृढ़ संयम हो।।2569।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. बन्धन से मुक्त मुनि हैं, निर्बन्धन लगी धुनी है।
आदीश्वर के गुण गाते, गुणगागर भर ले जाते।।2570।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. धन को साथी समझा था, नहिं धर्म से जोड़ा नाता।
प्रभु धर्म वीर बन आये, धन धर्म का भेद बताये।।2571।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. भव-भव में भटक रहा था, चहुँ गति में अटक रहा था।
आदीश्वर राह दिखायी, मुक्ति की युक्ति बतायी।।2572।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. या भव कानन बीहड़ में, नहिं राह दिखे निर्जन में।
सत्पथ मुझको दिखला दो, प्रभु ज्ञान सुधा पिलवा दो।।2573।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. भगवद् भक्ति कर जाऊँ, भक्ति से पाप नशाऊँ।
जग वैभव नहिं मैं चाहूँ, निज वैभव पाने आऊँ।।2574।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. वंशज था मैं आदीश्वर, क्या भूल हुई परमेश्वर।
मैं दीन दुखी बतला दो, क्या है कसूर समझा दो।।2575।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तिरने की कला सिखाते, पत्थर भी हैं तिर जाते।
तुम नाम मंत्र की महिमा, सब वेद पुराण हैं गाते।।2576।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

हथकड़ी बेड़ियाँ, छिली एड़ियाँ, जकड़ा नख से शिख तक हो।
गुरु मानतुंग सम, नाम जपे त्वम्, बंधन क्षण में तड़तड़ हो।।

ॐ ह्रीं नानाविध कठिनबन्धन दूरकरणाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

हमें गुरु का यहाँ आशीष खुश होकर के मिल जाये,
उसी दिन जिंदगी में गम की खुद तासीर गल जाये।
गुरु की हर नज़र में जिंदगी का सच नज़र आता,
नज़र इकबार पड़ जाये मुझे सब चीज़ मिल जाये।।

अस्त्र-शस्त्रादि निरोधक

मत्त द्विपेन्द्र - मृगराज - दवानलाहि-
संग्राम वारिधि-महोदर-बन्धनोत्थम्।
तस्याशु नाश - मुपयाति भयं भियेव,
यस्तावकं स्तव-मिमं मतिमा-नधीते।।47।।

चौपाई

हाथी मत्त-क्रूर सिंहराज-दावानल अरु-सर्प विराट,
युद्धभूमि-वारिधि-बंधन मय, महा उदर ये आठ महाभय।
जो बुधजन भक्तामर गाते, उनके सारे भय मिट जाये,
शाश्वत सुख वे उर में पाते, गुरुवर मानतुंग बतलाते।।47।।

ऋषिनः सर्व सिद्धायत–नान् सन्मोक्षगामिनः।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं सिद्धायतनेभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

दोहा छन्द

1. महाश्रमण पुरुदेव हैं, बिन बोले सुन लेत।
भक्त पुकारें आपको, बिन माँगे प्रभु देत।।2577।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

2. उत्तम लीने द्रव्य हैं, जिन चरणों में चढ़ाए।
पुनः दर्श की आश ले, सुरपति निज घर जाएँ।।2578।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

3. अद्वितीय दीपक प्रभो, जगत्प्रकाशी नाथ।
नहीं आप सम अपर है, अतः नवाऊँ माथ।।2579।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

4. पेट भरो पेटी नहीं, जग को यह सिखलाय।
प्रथम जिनेश्वर आपने, श्रावक व्रत समझाय।।2580।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पे" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

5. इन्द्र नहीं धरणेन्द्र न, पद को चाहूँ नाथ।
सब पद मिलकर छूटते, अक्षय पद रहे साथ।।2581।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न्द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

6. मृदु हो जावें भाव मम, कृपा नाथ कर दो।
सब पर हो समभाव मम, हृदय सरल कर दो।।2582।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मृ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

7. गर्व भरा मन नहिं करे, जिनवर का गुणगान।
करे समर्पण भाव जो, करता निज कल्याण।।2583।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. राजा प्रजा झुके सदा, जिनवर के दर पे।
भक्त नयन प्रभु दर्श को, सावन से बरसे।।2584।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

9. जलनिधि के तल में भरा, रत्नों का भण्डार।
नाथ आप शुद्धात्म हैं, गुण गण भरे अपार।।2585।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

10. दया सिन्धु के गुण अगम, क्षण क्षण गान करूँ।
अन्त समय जिन वचन का, मैं रस पान करूँ।।2586।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

11. वादन करके दुन्दुभि, सुरगण हमें बुलाएँ।
भक्ति कर लो नाथ की, सबको यही बताएँ।।2587।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

12. नरतन रतन अमोल है, सफल किया प्रभु ने।
जीवन सफल बनाओ तुम, कथन किया विभु ने।।2588।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

13. लाल नहीं हैं नेत्र तव, कोप विजय धारी।
सर्व कषायें जीतलीं, चरण धोक मारी।।2589।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ला" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

14. हित मित प्रिय सब बोलते, धर्मी आपस में।
प्रभु गुरु के गुण को गहें, जो कहे आगम में।।2590।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

15. संकट मोचन जगत में, आदिनाथ प्यारे।
भक्तों के सरताज हैं, गुरु विनम्र न्यारे।।2591।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "सं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

16. ग्राम नगर में हो रही, जय जय कार बड़ी।
राह देखते आदि की, भक्तन भीड़ खड़ी।।2592।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग्रा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. मरु भूमि सम जगत है, संकट भरे अनेक।
प्रभु पद में मधुवन लगे, मिटते सर्व क्लेश।।2593।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. वाणी अमृत सी लगे, जो भी पान करे।
जीवन में धारे यहाँ, वो निर्वाण वरे।।2594।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. रिक्त हुआ अघ से यहाँ, गुण से पूरित होय।
आदीश्वर पद कमल का, अनुरागी जो होय।।2595।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "रि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. विधिनायक प्रभु आप हो, ज्ञाता दृष्टा नाथ।
मम हृदयासन पर सजे, करते मुझ पर राज।।2596।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. मर्म धर्म का जानकर, कर्म का किया विनाश।
शर्म शाश्वत पायकर, शिवपुर किया निवास।।2597।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. होनहार जिनकी प्रबल, वे ही करते ध्यान।
वीतरागी छवि देखकर, करते निज कल्याण।।2598।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "हो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. दर पर आया जो प्रभु, गया न खाली हाथ।
भक्त समर्पण से भरे, खाली झोली नाथ।।2599।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. रटती रसना नाम तव, थकती नहिं दिन शाम।
और नहीं कुछ काम मम, जपूँ मैं आठों याम।।2600।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. बंधन कटते हैं सभी, वंदन से तुम नाथ।
गुण गाते नहिं पता चले, बीते कब दिन रात।।2601।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "बं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. धन्य हुई पर्याय यह, धड़कन में जिन नाम।
आँखें खुली या बंद हों, मंत्र जाप ही काम।।2602।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. जिनोत्तमं हैं श्रेष्ठ चउ, सर्व श्रेष्ठ जिनराज।
उत्तमांग से मैं जजूँ, देना शिवपुर राज।।2603।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नोत्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. मानथंभ का दर्श कर, मान गलित हो जाय।
सम्यक् पाता भक्त है, विधि मल सब धुल जाय।।2604।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "थं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. तरंग उठती विकल्प की, मन कल्पित होता।
निर्विकल्प होने प्रभु, मन मेरा रोता।।2605।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. स्यात् अस्ति अरु नास्ति, भंग कहे हैं सात।
स्याद्वाद समझा दिया, मम प्रभु आदिनाथ।।2606।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. शुक्ल ध्यान की अग्नि में, दहन किये सब कर्म।
निष्कर्मा प्रभु हो गये, पाया निज का धर्म।।2607।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. नाव मेरी मझधार है, पार लगाओ नाथ।
निःस्वारथ निर्दाम ही, आप तिरा दो आज।।2608।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ना" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. शर्म मुझे आती प्रभु, कैसे गुण गाऊँ।
इसीलिए हर श्वास में, तुमको ही ध्याऊँ।।2609।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "श" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. मुख मण्डल मन मोहता, समवशरण में देव।
चउविधि सुरगण आपके, करें चरण की सेव।।2610।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. पर्वत श्री कैलाश पर, योग निरोध किया।
कर्माष्टक को नष्ट कर, शिवपुर राज किया।।2611।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "प" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. या विधि भक्तामर पढ़े, जो प्रभु भक्ति से।
पथ शाश्वत उसको मिले, कर्मन मुक्ति से।।2612।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. तिमिर बाह्य नशता प्रभु, सूर्य उजाला से।
मोह तमः प्रभु नाशते, निज उजियाला से।।2613।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. भव भटकें अज्ञानीजन, ज्ञानी मुनि शिव पायें।
शाश्वत पद पाये यहाँ, सिद्धालय बस जायें।।2614।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. यंत्र रखा गृह में यदि, श्रद्धा बिन सब व्यर्थ।
णमोकार हृदय बसे, तो इनका क्या अर्थ।।2615।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "यं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. भिन्न जान निज देह को, निज का कर श्रद्धान।
वे मुनिवर ही धन्य हैं, पाते शिवपुर थान।।2616।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. ध्येय बनाया एक बस, शिवपुर जाना है।
मुक्ति पथ के दूत तुम, हमने माना है।।2617।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध्ये" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. वर्द्धमान अंतिम कहे, प्रथम आदि तीर्थेश।
मध्यलोक से मैं जजूँ, स्वीकारो पूर्णेश।।2618।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. व्यस्त रहा पर वस्तु में, निज में न अभ्यस्त।
बंध बाँधता नित रहा, रहा हमेशा त्रस्त।।2619।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. ताल मेल ना शब्द का, न भक्ति में जोर।
बिन भक्ति कैसे रहूँ, प्रभु बताओ छोर।।2620।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. वर्धन दुःख का ही किया, वधुओं को वर के।
मुक्ति वधू को अब वरूँ, कर्म नष्ट करके।।2621।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. कंकर पत्थर को यहाँ, मणी रत्न माना।
ज्ञानी नंत चतुष्ट को, निज धन है जाना।।2622।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्रीवृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. अस्त न होता है कभी, न ग्रस सकता राहु।
सर्व जगत परकाशते, जिनवर शीश नवाऊँ।।2623।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. वश में रहा हमेश ही, इन्द्रिय विषयों के।
सुखाभास में वक्त खो, सच्चा सुख तज के।।2624।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. मिश्री से मीठी प्रभु, वाणी पाप हरे।
श्रवण और आचरण से, केवलज्ञान वरे।।2525।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. मंद मधुर मुस्कान जिन, जन-जन मनहारी।
भक्तों ने दर्शन किया, खिलि मन फुलवारी।।2626।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. मदिरा मोह पिया महा, जीव हुआ मदहोश।
ज्ञान खटाई दे प्रभु, दिला दीजिए होश।।2627।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. मति सुमति कर दो प्रभु, पंचम गति को पाऊँ।
जैसी मति वैसी गति, अतः तुम्हें ही ध्याऊँ।।2628।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. माध्यम हैं प्रभु मोक्ष के, भवि जीवों को आप।
सच्चे सुख का मार्ग तुम, प्रभु दिखाया आज।।2629।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. नगरी-नगरी घूमकर, प्रभु उपदेश दिया।
भवि जीवों ने दर्श पा, मन संवेग लिया।।2630।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. धीर वीर गम्भीर हैं, प्रभु मम आदीश्वर।
कैसे पाऊँ तुम शरण, भूला मैं निज घर।।2631।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "धी" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. तेज प्रखर है आपका, वीतराग गुण साथ।
ऐसी मूरत देख कर, भव्य झुकाते माथ।।2632।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता-छंद)

गज मृग दावानल, सर्प महाबल, समुद्र जलोदर बंधन भय।
सब स्वयं नष्ट हों, आप इष्ट हों, अर्घ चढ़ा हो क्षण में क्षय।।

ॐ ह्रीं बहुविध विघ्नविनाशाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं झ्रौं झ्रौं नमः।

वही दिल है दीवाना जो हदों को पार करता है,
खुदा से प्यार हो उसको जो खुद से प्यार करता है।
जो खुद से भी यहाँ ज्यादा खुदा को दिल से चाहेगा,
वही बंदा यहाँ हँसकर ये दुनियाँ पार करता है।।

मोक्ष-लक्ष्मी प्रदायक

स्तोत्र-स्रजं तव जिनेन्द्र! गुणै-र्निबद्धां,
भक्त्या मया विविध-वर्ण-विचित्र-पुष्पाम्।
धत्ते जनो य इह कण्ठगता-मजस्रं,
तं "मानतुङ्ग" मवशा समुपैति लक्ष्मी।।48।।

चौपाई

हे प्रभु! तेरे छंद बनाये, भक्ति भरे हैं फूल लगाये,
गुण हमने हैं उसमें गाये, महिमा महामहिम बतलाएँ।
जो यह छंद कंठ धरता है, निज को खुद "विनम्र" करता है,
गुरुवर "मानतुंग" यह गायें, शीघ्र वही मुक्ती वरता है।।48।।

वर्धमान् महावीरान्, महतो बुद्धि सागरान्।
भक्त्या शक्त्या यजाम्यहं, वंदे तद्गुण लब्धये।।
ॐ ह्रीं अर्हं भगवन्महावीर-वर्धमान बुद्धि ऋषिभ्योऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सखी छन्द

1. स्तोत्र आपका पावन, भवि को लगता है सावन।
सब भक्त हृदय से गायें, भक्ति में सभी भुलाएँ।।2633।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्तो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
2. त्रय रत्नों के प्रभु धारी, त्रैलोक्यपति सुखकारी।
तुम दया सिन्धु कहलाते, जीवों पर दया दिखाते।।2634।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
3. सहस्र नामों से तुम्हें गाते, सूरि जिनसेन कहाते।
जो भी भविजन इन्हें गाये, निज का ही ज्ञान बढ़ाये।।2635।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
4. जंगल में मंगल होता, भगवान भक्त से मिलता।
साक्षात् प्रभु का दर्शन, पावन मन ही कर सकता।।2636।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
5. तव गुणोद्यान की क्यारी, जग में अतिशय सुखकारी।
उसके कुछ फूल चुने हैं, भक्ति से हम गूँथे हैं।।2637।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
6. वक्ता तुम श्रेष्ठ कहाते, सब भाषा में समझाते।
पशु पक्षी भी सुन करके, पग मुक्ति पथ में बढ़ाते।।2638।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
7. जिन शासन आप अमर है, प्रभु दर्शन भी सुखकर है।
भावों को शुद्ध बना, भवि को जयवन्त बनाता।।2639।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "जि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

8. ज्ञानेन्द्रिय आज जगी है, भक्ति में आन पगी है।
प्रभु का अब गान करूँ मैं, निज का सम्मान करूँ मैं।।2640।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज्ञें" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
9. द्रव भाव रूप संयम है, धारा जिनवर ने यम है।
फिर ध्यान हृदय में धारा, कर्मों का किया संहारा।।2641।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
10. गुणियों से पूज्य जिनेश्वर, हैं नंत गुणी आदीश्वर।
गुण सागर आप कहाते, दोषों को दूर भगाते।।2642।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "गु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
11. गुणैर्निबद्धां सुमनां, माला गूँथी गुण गणनाम्।
यह सेवक धन्य हुआ है, भक्ति का पुंज लिया है।।2643।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "णैः" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
12. निष्काम भक्ति मैं कर लूँ, जिनवर की छाया वर लूँ।
ये अखियाँ अब नहिं झपती, अपलक हो प्रभु निरखतीं।।2644।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
13. बड़भागी निज को माना, पाया जिनवर का बाना।
रत्नत्रय को अपनाया, जग का वैभव नहिं भाया।।2645।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ब" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
14. सिद्धान्त के आप सृजेता, हो मुक्तिपथ के नेता।
मुक्ति की राह दिखा दो, मुझे नंत सिद्ध से मिला दो।।2646।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "द्धां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
15. भक्तामर स्तोत्र महान, श्री आदि प्रभु गुणगान।
छब्बीस सौ अठासी छन्दन, करूँ अर्घ चढ़ा गुण वन्दन।।2647।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "भक्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।
16. त्याग अरू ज्ञान की मूरत, जिनवर गुरुवर दो सूरत।
प्रभु मौन गुरु जब बोलें, भविजन आतम पट खोलें।।2648।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

17. मर्दन मद का हैं करते, समता का जीवन वरते।
प्रभु रूप आपका लखकर, भवि बढ़ते मुक्ति पथ पर।।2649।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

18. या विधि सुमरूँ प्रभुवर मैं, हो सु-मरण मम भव भव में।
पर से उपयोग हटाऊँ, मैं निज उपयोग जगाऊँ।।2650।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "या" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

19. विज्ञान भानु प्रकटाया, त्रैलोक्य नाथ दर्शाया।
चउ घाति कर्म क्षय करके, प्रभु नंत चतुष्टय पाया।।2651।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

20. विधि विधि के पुष्प मँगाये, सुंदर गुणमाल सजाये।
जिनवर के गुण को गूथूँ, भक्ति भर मन से पूजूँ।।2652।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

21. धर्मामृत पान करे प्रभु, फिर भी निरहार रहें विभु।
ज्ञानामृत भोजन करके, प्रभु तृप्त होय निज रम के।।2653।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

22. वर्षा ज्ञानामृत होवे, पी भव्य सदा खुश होवें।
तव चरणों में हमें आना, नहिं छोड़ इन्हें कहीं जाना।।2654।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वर्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

23. णमोकार में श्रेष्ठ तुम्हीं हो, गणधर के गुरु कहे हो।
सब कार्य पूर्ण करि आये, कृतकृत्य हैं नाथ कहाये।।2655।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ण" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

24. विचरण हो ज्ञान गगन में, गुण पंछी उड़ें चमन में।
बहते समभाव के झरने, निज शान्त स्वरूप हैं गहने।।2656।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "वि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

25. चिन्तन प्रभु गुण का करते, वे शुभ उपयोग में रहते।
शुद्धोपयोग को पाकर, निज जीवन सफल बनाते।।2657।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "चि" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

26. मैं यत्र तत्र नहिं देखूँ, जिनवर की मूरत लेखूँ।
मन को मन्दिर है बनाया, उसमें जिनवर को बिठाया।।2658।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्र" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

27. पुष्पों की माल सुकोमल, मुरझाती बीते कुछ पल।
मम हृदय कमल प्रभु पद में, आ खिलता होता निर्मल।।2659।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पुष्" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

28. पांडुक शिल पर बालक जिन, हो न्हवन देख हर्षे मन।
सब देव देवियाँ मिलकर, करें नृत्य लगे मनभावन।।2660।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पां" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

29. धवलाक्षत लेकर आया, रत्नत्रय भाव बनाया।
है द्रव्य शुद्ध अरु भाव, चरणों में आन चढ़ाया।।2661।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ध" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

30. धत्ते जिन वचन जो कण्ठे, कटते उनके भव टण्टे।
वे शान्त भाव को ध्याते, निज शाश्वत आनन्द पाते।।2662।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "त्ते" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

31. जड़ता को दूर भगाओ, प्रभु को निज में ही लाओ।
ये आदीश्वर की वाणी, सबको कल्याण प्रदानी।।2663।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

32. नो कर्मों ने है घेरा, चहुँ ओर लगाया डेरा।
हे नाथ! आपको लखकर, निज आत्मानन्द ने टेरा।।2664।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "नो" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

33. यह गुणस्तवन प्रभुवर का, धो देता मल भव भव का।
कई नाम से भक्त पुकारें, हैं सार्थक नाम तुम्हारे।।2665।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "य" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

34. इष्टों के थान तुम्हीं हो, कष्टों की हानि तुम्हीं हो।
है नाथ आपको पाया, सुख का भण्डार दिखाया।।2666।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "इ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

35. हर पल प्रभु की छवि देखूँ, दर्पण सम निज अवलोकूँ।
प्रभु वीतरागता ध्याऊँ, दुख का मैं नाम मिटाऊँ।।2667।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ह" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

36. उत्कंठित आज हुआ मन, नाशूँ कर्मों के बन्धन।
तुम सा संयम मैं पाऊँ, सिद्धालय में बस जाऊँ।।2668।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "कं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

37. ठगता ही रहा है अब तक, यह मोह बली बैठा ठग।
मैं शरण आपकी आया, तब ही छुटकारा पाया।।2669।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ठ" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

38. गरिमामय है जिन शासन, जो इसको हृदय धरे मन।
वह भव वन में न भटके, खोले मुक्ति के फटके।।2670।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

39. प्रभु ताज ज्ञान का पहिना, है गुण अनन्त का गहना।
तुम हुए विदेही सुन्दर, पहुँचे शिवपुर के अन्दर।।2671।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ता" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

40. मन मन्दिर बनाया सुन्दर, आ जाओ प्रभु जी अन्दर।
भक्ति से तुम्हें पुकारें, पूजा की विधि सँवारें।।2672।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

41. जग के उद्धारक स्वामी, करो मम उद्धार नमामि।
कर्मों ने मुझे सताया, मैं आदि शरण में आया।।2673।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ज" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

42. अजस्रं जिनवर भक्ति, करूँ जब तक तन में शक्ति।
भक्ति ही मुक्ति प्रदाता, देती भव्यों को साता।।2674।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स्रं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

43. तं आदीश्वर की वाणी, कहलाती है जिनवाणी।
जो इसको उर में धरेगा, वह शिव ललना को वरेगा।।2675।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

44. माना है सब कुछ प्रभु को, अब क्या माँगू मैं भव को।
प्रभु आप मिले हो जब से, नहिं चाह रही इस जग से।।2676।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

45. नख अरु नहिं केश बड़े हैं, प्रभु केवलज्ञान सजे हैं।
हो अकथनीय इस जग में, महिमा अद्भुत है मग में।।2677।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "न" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

46. तुंबी तैरे बिन माटी, चढ़ जाये भवि शिव घाटी।
रागादिक लेप हटाकर, भवि तर जाये भव सागर।।2678।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "तुं" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

47. गहना पहिना समता का, कर दिया त्याग ममता का।
बंधन टूटे मुनिवर के, रोया नृप चरणों पड़ के।।2679।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ग" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

48. मतलब के सारे साथी, दुख में नहिं दिखें बराती।
अब राग तजो इन सबका, वृषभेश्वर सच्चे साथी।।2680।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "म" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

49. वन भवन काँच कंचन में, नहिं भेद दिखे संतन में।
समता के धारी मुनिवर, श्री मानतुंग जी गुरुवर।।2681।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "व" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

50. शासन के नायक जिनवर, जय हो तेरी प्रथमेश्वर।
भक्ति से तुम्हें पुकारा, कर दो जिनवर उद्धारा।।2682।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "शा" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

51. सम्यग्दर्शन को पा लो, जीवन को सफल बना लो।
माँ जिनवाणी समझाती, मुक्ति की सीढ़ी चढ़ाती।।2683।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "स" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

52. प्रमुदित हो भक्ति करो तुम, मुक्ति की युक्ति वरो तुम।
गुरु मानतुंग समझाते, आदीश्वर के गुण गाते।।2684।।
ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

53. पैदल करते हैं विहार, नहिं होय जीव संहार।
स्थिर मन से जो रहते, वे मुनि स्थिर पद वरते।।2685।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "पै" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

54. तिर जाता है वह प्राणी, रस पान करे जिनवाणी।
सीपी में मोती के सम, ध्रुव धाम वरे वो सिद्धम्।।2686।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "ति" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

55. लक्ष्य को नहीं बनाया, वह भव वन में भरमाया।
चले लक्ष्य बना कर प्राणी, पा जाये शिव रजधानी।।2687।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "लक्षु" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

56. उद्यमी: हुये जो जग में, पुरुषार्थ करें शिव मग में।
धर कर विनम्रता उर में, पद पाये "विमल" इस जग में।।2688।।

ॐ ह्रीं अर्हं महिमायुक्त "मी:" बीजाक्षर संयुक्त श्री वृषभजिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

पूर्णार्घ (धत्ता छंद)

प्रभु गुण की डोरी, सुमनों जोड़ी, वर्ण वर्ण के पुष्प चुने।
मुनि मानतुंग सम, कण्ठ धरें हम, अर्घ चढ़ाकर मुक्ति वरें।।

ॐ ह्रीं सकलकार्य-साधनसमर्थाय क्लीं महाबीजाक्षर सहिताय
हृदय-स्थिताय श्री वृषभदेवाय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप-ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्व साहूणं झ्रौं झ्रौं नम:।

महार्घ्य (शम्भु छन्द)

मानतुंग गुरुवर ने देखो, भक्तामर रच दिया महान।
जो श्रद्धा से गाता इसको, वो पा जाता शिवपुर थान।।
मैंने उर का थाल बनाया, अर्घ सजाया चुन चुन कर।
अनर्घ पद के धारी जिनवर, मुझको दो पद अजर अमर।।

ॐ ह्रीं अष्टचत्वारिंशद्दल कमलाधिपतये क्लीं महाबीजाक्षर सम्पन्नाय
हृदयस्थिताय श्री वृषभजिनाय महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

युग के सृष्टा आदि जिन, आदि सुविधि करतार।
भक्ति भाव गुणमाल गा, हो जाऊँ भवपार।।

पद्धरि छन्द

युग के आदि में आदिनाथ, त्रिभुवन के त्राता प्राणनाथ।
मरुदेवी के नंदन प्यारे, पितु नाभि की आँखों के तारे।।1।।

दिया असि मसि का उपदेश नाथ, हुआ कर्म भूमि का सुप्रभात।
संसार देह वैराग्य धार, लख नीलांजन अंतिम विहार।।2।।

छियालीस गुणों से मण्डित हो, हे नाथ! तुम्हीं जग पण्डित हो।
करता हूँ गुण गण का बखान, प्रकटे मुझमें विज्ञान भान।।3।।

इस भरतक्षेत्र के आर्य खण्ड, मालव सुदेश है इक अखण्ड।
उज्जयिनी का नृप भोजराज, करता धरता था निज समाज।।4।।

विद्या प्रेमी कविवर धनंज, रची नाममाल गुणमय निकुंज।
थे मुनी भक्त जिनवर असक्त, मंत्री ईर्ष्यालु था सशक्त।।5।।

नृप भोज से जिन मुनिवर विरुद्ध, बातें बतलाईं कई अशुद्ध।
तब ही नृप ने मुनि मानतुंग, निज सभा बुलाया कह प्रसंग।।6।।

मुनिवर ने तब उपसर्ग जान, धर लिया मौन व्रत था महान।
शास्त्रार्थ हुआ नहिं राजसभा, तो कुपित हुआ नृप भोज महा।।7।।

गुरु मानतुंग पर क्रोधित हो, दुर्वचन कहे अपमानित हो।
हथकड़ी बेड़ियों से कसकर, किया अड़तालीस ताले अन्दर।।8।।

यह बन्धन भले देह का हो, मेरा स्वरुप निर्बन्ध अहो!
समता को धारण कर मुनीश, स्तुति कीनी आदि गणीश।।9।।

भक्ति का निर्झर बहा जहाँ, रच गया तभी स्तोत्र महां।
भक्तामर नाम हुआ प्रसिद्ध, मुनि मानतुंग हुए जगत सिद्ध।।10।।

इक इक श्लोक के रचते ही, ताले टूटे सब तड़ तड़ भी।
लख द्वारपाल आश्चर्य धार, फिर दिया नृपति को समाचार।।11।।

पुनः कैद कर दिया था मुनीश, उन ध्यान लगाया जगत ईश।
ऐसा कीना नृप तीन बार, मुनिवर की भक्ति थी अपार।।12।।

वंदन से बंधन हुए नाश, मुनिवर के मुख पर अति प्रकाश।
लख सुन करके यह चमत्कार, किया नृप ने चरणों नमस्कार।।13।।

श्रद्धा से मुनि का वंदन कर, खुश हुआ धर्म जिन धारण कर।
नृप ने श्रावक व्रत लिए धार, सबने जयघोष किया अपार।।14।।

भक्तामर की यह धर्म ध्वजा, फहरायी नृप ने सर्व प्रजा।
जिसने श्रद्धा से किया पाठ, उसके जीवन में हुए ठाठ।।15।।

निर्वांछित हो जिन भक्ति करें, वे ही शुद्धातम शक्ति वरें।
मुनि मानतुंग सम भक्ति कर, पा जाऊँ मैं पद अजर अमर।।16।।

दोहा –

दिव्य शक्ति भक्तामरी, भाव सहित मैं ध्याऊँ।
एक यही बस कामना, शुद्धातम रम जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं सर्वकर्म विनाशनाय आगतविघ्न निवारणाय श्री वृषभजिनाय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

धत्ता छन्द–

हे आदि जिनंदा, मैटो फंदा, भव भव का मम ताप हरो।
हो "विनम्र" ध्याऊँ, पूज रचाऊँ, "विमल" मेरे परिणाम करो।।

इत्याशीर्वाद : पुष्पाञ्जलिं क्षिपामि

प्रशस्ति

छन्द–ज्ञानोदय

आदि महा परमातम मेरे, हे आदीश्वर देव महान।
चरण झुकाया आज भक्त ने, दीजै शरण छाँव का दान।।
भक्तामर की करूँ अर्चना, भक्त आपका बनने को।
फाल्गुन मास में शुरु किया है, लघु प्रयास प्रभु भजने को।।
सिद्धभूमि सोनागिर पर है, चंदप्रभु का शुभ दरबार।
विमल गुरु की छत्र छाँव में, शुरु किया प्रभु गान पुकार।।
गुरु विनम्र का शुभाशीष ले, लेकर गुरु की शक्ति साथ।
भक्तिभर कर कलम हाथ ली, गुरु कर कमलों से निज हाथ।।
गुरु की चरण छाँव बिन कीना, पहला वर्षाकाल यहाँ।
नगर धौलपुर जो प्रसिद्ध है, भक्तों का है भाल यहाँ।।
मिला आदि दरबार पुण्य से, और विधान हुआ यह पूर्ण।
अल्प बुद्धि से जो लिख पाया, करने पाप कर्म सब चूर्ण।।
आदीश्वर की कृपा मात्र से, हुआ पुण्य वर्धक शुभ काज।
कृपा अनन्य रही गुरुवर की, जिसने दिया शब्दों को साज।।
पूर्ण हुआ दिन रविवार को, श्रावण का है शुभ यह मास।
भक्त हृदय को पुलकित कर दे, मम उर में है ये ही आश।।
रक्षा बंधन पर्व सुहाना, शुभ संकेत दिखाता ईश।
वीर मोक्ष के पच्चीस सौ अरु, ऊपर कहे है सैंतालीस।।
विमल गुरु के शिष्य जो कहे, विरागसागर जिनका नाम।
उनके ही शिष्योत्तम मम गुरु विनम्रसागर जी शुभ नाम।।
उनकी प्रथम शिष्या बनने का, मुझको सौभाग्य मिला।
प्रथमेश्वर के साथ वास हो, पा जाऊँ मैं सिद्ध शिला।।
अल्पबुद्धि से जो लिख पाया, शोधन करके पढ़ें धीमान्।
हे गुरु संबल बोध मुझे दो, कर लूँ सब कर्मों की हान।।
प्रमादवश कुछ गलत लिख गया, क्षमा दान दें सब धीमान्।
भक्तिभर विधान कर नाशें, अघ अपने सारे श्रीमान्।।

ऋद्धिमंत्रों के अर्घ

1. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जिणाणं, जिन संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
2. ॐ ह्रीं अर्हं णमो ओहि जिणाणं, अवधिज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
3. ॐ ह्रीं अर्हं णमो परमोहि जिणाणं, परमावधिज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
4. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोहि जिणाणं, सर्वावधिज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
5. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अणंतोहि जिणाणं, अनंतावधिज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
6. ॐ ह्रीं अर्हं णमो कोट्ठ बुद्धीणं, कोष्ठ बुद्धि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
7. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बीज बुद्धीणं, बीज बुद्धि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
8. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पदानुसारीणं, पदानुसारी बुद्धि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
9. ॐ ह्रीं अर्हं णमो संभिन्नसोदाराणं, संभिन्नश्रोतृ बुद्धि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
10. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सयं बुद्धाणं, स्वयं बुद्ध संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
11. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पत्तेय बुद्धाणं, प्रत्येक बुद्ध संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
12. ॐ ह्रीं अर्हं णमो बोहिय बुद्धाणं, बोधित बुद्ध संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
13. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उजु मदीणं, ऋजुमति ज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
14. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउल मदीणं, विपुलमतिज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
15. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दस पुव्वियाणं, दश पूर्व ज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
16. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चउदस पुव्वियाणं, चौदह पूर्व ज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
17. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अट्ठंग महाणिमित्त कुसलाणं, अष्टांग महानिमित्त ज्ञान प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
18. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विउव्वण पत्ताणं, विक्रिया ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
19. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विज्जाहराणं, विद्या ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
20. ॐ ह्रीं अर्हं णमो चारणाणं, चारण ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
21. ॐ ह्रीं अर्हं णमो पण्णसमणाणं, प्रज्ञाश्रमण संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
22. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आगासगामीणं, आकाशगामिनी ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।

23. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आसीविसाणं, आशीर्विष ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
24. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दिट्ठिविसाणं, दृष्टिविष ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
25. ॐ ह्रीं अर्हं णमो उग्गतवाणं, उग्रतप ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
26. ॐ ह्रीं अर्हं णमो दित्ततवाणं, दीप्तितप ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
27. ॐ ह्रीं अर्हं णमो तत्त तवाणं, तप्ततप ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
28. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महातवाणं, महातप ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
29. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरतवाणं, घोरतप ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
30. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोरगुणाणं, घोर गुण ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
31. ॐ ह्रीं अर्हं णमो घोर पक्कमाणं, घोर पराक्रम ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
32. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अर्हं अघोरगुण बंभयारीणं अघोरगुण ब्रह्मचारी त्वऋद्धि अर्घ्यं नि. स्वाहा
33. ॐ ह्रीं अर्हं णमो आमोसहि पत्ताणं, आमर्ष औषधि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
34. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खेल्लोसहि पत्ताणं, क्ष्वेल औषधि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
35. ॐ ह्रीं अर्हं णमो जल्लोसहि पत्ताणं, जल्लौषधि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
36. ॐ ह्रीं अर्हं णमो विट्ठोसहि पत्ताणं, विष्ठौषधि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
37. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वोसहि पत्ताणं, सर्वौषधि ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्व. स्वाहा।
38. ॐ ह्रीं अर्हं णमो मण बलीणं, मनबल ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
39. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वचि बलीणं, वचनबल ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
40. ॐ ह्रीं अर्हं णमो काय बलीणं, कायबल ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
41. ॐ ह्रीं अर्हं णमो खीर सवीणं, क्षीर स्रावी ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
42. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सप्पि सवीणं, सर्पिस्रावी ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
43. ॐ ह्रीं अर्हं णमो महुर सवीणं, मधुस्रावी ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
44. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अमिय सवीणं, अमृतस्रावी ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
45. ॐ ह्रीं अर्हं णमो अक्खीण महाणसाणं, अक्षीण महानस ऋद्धि प्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।
46. ॐ ह्रीं अर्हं णमो वड्ढमाणाणं, वर्द्धमान संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
47. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सिद्धायदणाणं, सिद्धायतन संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
48. ॐ ह्रीं अर्हं णमो सव्वसाहूणं, साधु संज्ञा प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

भक्तामर महोदधि उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज की पूजन

रचियत्री–आर्यिका विमलश्री माताजी

पाद प्रक्षालन

चलो गुरु चरण चलें–2, पाद प्रक्षाल करें–2
क्षीरोदधि का जल लेकर के, गुरु चरणों में आये हैं–
चरणों की रज मस्तक धर के, अपने भाग्य सँवारे हैं–2
गुरु आशीष मिले, नई तकदीर बने, पाद प्रक्षाल करें–2

स्थापना

सम्यग्दर्शन ज्ञान चरण तप के गुरुवर अधिकारी हो।
जिनवाणी को हृदय बसाकर इस जग के उपकारी हो।।
आह्वानन् कर आज गुरु को अपने मन पधराऊँगा।
हृदय कमल पर तुम्हें बिठाकर नितप्रति पूजा रचाऊँगा।।
मन मंदिर में आ बसो, तारण तरण जिहाज।
गुरु भक्ति से ही मिटें, भव–भव के संताप।।

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य श्री विनम्रसागर यतिवर! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वाननम्! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्! अत्र मम् सन्निहितो भव–भव वषट् सन्निधिकरणम्।

क्षीरोदधि के निर्मल जल सम, अपने मन को बना लिया।
तीर्थंकर का रूप धारकर, जीवों को सन्मार्ग दिया।।
स्वर्ण कलश से जल की धारा, गुरु चरणों में अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित है।।

ॐ ह्रूं प.पू. भक्तामर वाले बाबा उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो जन्म–जरा–मृत्यु विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

चंदन की खुशबू सम तुमने, रत्नत्रय को बिखराया।
तेरे चरणों की रज पाकर, भव आताप मिटा पाया।।
संसार ताप के नाश हेतु, गुरु चरणों चंदन अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. उच्चारणाचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

तीन रतन को धारण करके, तीन लोक में पूज्य हुए।
सम्यग्ज्ञान दरश चारित पा, तीन लोक के भूप हुए।।
हे गुरु अक्षय निधि को पाने, अक्षत तुम्हें समर्पित हैं।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. शिविर प्रणेता आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतं निर्वपामीति स्वाहा।

धर्म ध्यान के फूल खिलाकर, सब जग को महकाया है।
ऐसा धर्म हृदय में पाने, मेरा मन ललचाया है।।
पारिजात मंदार आदि के, कुसुम मनोहर अर्पित हैं।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. श्रमणरत्न आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

व्यंजन के विविध समूहों ने भी, तव मन को न डिगा पाया।
दृढ़ संकल्प के महामंत्र ने, जीवन पूज्य बना डाला।।
क्षुधा मिटाने गुरु चरणों में, लाडू बर्फी अर्पित हैं।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. वात्सल्यमूर्ति आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

सम्यग्ज्ञान का दीप जलाकर, निज स्वरूप का दर्श किया।
भव्य जीव को उसे बताकर, निज कर्त्तव्य को पूर्ण किया।।
रतन दीप की उज्ज्वल ज्योति, गुरु चरणों में अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. काव्य सम्राट् आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।

अष्ट कर्म को मूल नष्ट, करने का तुम संकल्प लिए।
आठ गुणों के पाने को तुम, शुक्लध्यान में लीन हुए।।
वसुकर्मों के नाश हेतु, चरणों में धूप समर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. भाषा विज्ञान पारगंत आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।

केला सेव बादाम आम को, देख न मन ललचाया है।
अंतराय को दूर भगाने, तुमने कदम बढ़ाया है।।
उत्तम फल को पाने गुरुवर, फल चरणों में अर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. सिद्धान्तज्ञ आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।

जल चंदन अक्षत कर में ले, पुष्प चरु हैं मिलवाए।
ज्ञान दीप का थाल सजाकर, अष्ट द्रव्य फल सजवाए।।
अनर्घ पद के हेतु हे गुरुवर! मेरा अर्घ समर्पित है।
इक जीवन क्या सौ–सौ जीवन, गुरुवर तुम्हें समर्पित हैं।।

ॐ ह्रूं प.पू. भक्तामर महोदधि आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जयमाला

आओ हम गायें गुणमाला, गुरुवर कृपा निधान की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्–4

छत्तीस गुणों से मंडित होकर, शिष्यों के ये ईश्वर हैं।
यंत्र रूप हैं, मंत्र रूप है, तंत्र रूप भी परिणत हैं।।
ऐसे गुरु को वंदन करते, मिले राह कल्याण की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्–4

दश धर्मों के डिब्बे लेकर, मोक्ष की ट्रेन चलाते हैं।
भव्य जनों को बैठा करके, मोक्ष पुरी पहुँचाते हैं।।
गुरु के नाम मंत्र की माला, जपो सभी सद्ज्ञान की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्–4

बारह तप को नितप्रति तपकर, जीवन को चमकाया है।
कुन्दन जैसी काया गुरु की, भव्यों का मन भाया है।।
रहें ध्यान में लीन सदा, और जाप जपें सिद्ध नाम की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्–4

तीन गुप्ति और पाँच समिति को, चर्या में दर्शाया है।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित्र का, जिनने बिगुल बजाया है।।
स्वपर का उपकार करें जो, चलें राह शिवधाम की।
जिनवर के जो लघुनंदन हैं, भक्तों के भगवान की।।
वंदे गुरुवरम्–4

भक्तामर को शुद्ध पढ़ाकर, पूजन करना सिखलाते हैं।
जीवन के अनसुलझे प्रश्नों, को भी गुरुवर सुलझाते हैं।।
ऐसे गुरु के गुण गाएँ हम, जाप जपें गुरु नाम की।
जिनवर के जो लघुनंदन है, भक्तों के भगवान की।।

वंदे गुरुवरम्–4

ॐ ह्रूं प.पू. आचार्य 108 श्री विनम्रसागर यतिवरेभ्यो जयमालाये अनर्घ पद प्राप्तये महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

गुणानुरागी बन गुरो, गाऊँ हर पल गान।
गुण को पाने के लिए, करूँ "विनम्र" प्रणाम।।

इत्याशीर्वादः (पुष्पांजलिं क्षिपामि)

घड़ी जो बीत जायेगी कोई लौटा न पायेगा,
कमा लो धन बहुत सारा न कुछ भी साथ जायेगा।
सुपुर्दे खाक तू होगा पड़ा होगा जमीं पर सब,
सिर्फ अच्छे विचारों का धरम ही काम आयेगा।।

आरती

जय–जय गुरुवर भक्त पुकारे, आरति मंगल मंगल गावे,
करके आरति विनम्र गुरु की, जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन्–मुनिवर के चरणों में नमन्

1. ग्राम भिण्ड में जन्म लिया है, धन्य चमेली माता,
मेरूचन्द जी पिता आपके, छोड़ा जग से नाता।
सत्य अहिंसा महाव्रती की SSS–2 महिमा कही न जावे।
करके आरति विनम्र गुरु की जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन–2...मुनिवर के चरणों में नमन–2

2. सूरज सा तेज आपका, नाम रतन बतलाया,
बीता बचपन आयी जवानी, जग से मन अकुलाया।
जग की माया को लखकर के SSS–2 मन वैराग्य समाये।
करके आरति विनम्र गुरु की जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन–2...मुनिवर के चरणों में नमन–2

3. नग्न दिगम्बर दीक्षा लेकर, करते निज उद्धारा,
विनम्र सिंधु है नाम आपका, विनम्र मोक्ष का द्वारा।
गुरु की भक्ति करने वाला SSS–2 उभयलोक सुख पावे।
करके आरति विनम्र गुरु की जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन–2...मुनिवर के चरणों में नमन–2

4. धन्य है जीवन, धन्य है तन–मन गुरुवर यहाँ पधारे।
सगे स्वजन सब छोड़ दिये हैं, आतम रोज निहारें।
आशीर्वाद हमें दो स्वामी SSS–2 अनुगामी बन जावें।
करके आरति विनम्र गुरु की जन्म सफल हो जावे।
गुरुवर के चरणों में नमन–2...मुनिवर के चरणों में नमन–2

उच्चारणाचार्य श्री विनम्रसागर जी महामुनिराज

आरती

(मेरे सर पर रख दो...)

रत्नों के दीप सजाये–2 और कंचन के ले थाल।
भक्त उतारें आरती, गुरु–विनम्र के द्वार।।

मेरचंद के राजदुलारे, मात चमेली के प्यारे।
भिण्ड नगर में जन्म लिया है, गुरुवर जी जग से न्यारे।
चंबल के चंदन प्यारे–2, करुणा के तुम अवतार। भक्त उतारें...

रत्नों सी मुस्कान गुरु की, नाम रत्न को पाया है।
बाल ब्रह्मचारी गुरुवर जी, झूठा जग न भाया है।
किया गुरु विराग चरणों में–2, निज जीवन का उद्धार। भक्त उतारें...

शिष्य नम्रता देख गुरु ने, "विनम्र सागर" नाम दिया।
चरितार्थ कर गुरुवर ने, गुरुवर की बात को मान दिया।
हमको भी नम्र बनाओ–2, करो अहंकार का नाश। भक्त उतारें...

सूरज से बढ़कर तेज आपका, देख शशि भी शर्माये।
मुस्कायें जब गुरु हमारे, चाँद चाँदनी हर्षाये।
अब आओ गुरु बस जाओ–2, पापों का हो संहार। भक्त उतारें...

धन्य हुए हैं भाग्य हमारे, गुरुवर यहाँ पधारे हैं।
तीर्थंकर से गुरु के पीछे, शिष्य मण्डली साजें है।
आया चौथा काल यहाँ पर–2, सब पाओ पुण्य बहार। भक्त उतारें...

सुर ताल नहीं है फिर भी हम, गुरुवर के गुण को गाते हैं।
संबल दो सहने का गुरुवर, गम तो आते–जाते हैं।
बस इतनी सी इच्छा है–2, दे दो मुस्कान फुहार। भक्त उतारें...

महाअर्घ्य

अर्हत् देव सदा मैं पूजूँ, सिद्ध प्रभु उर लाऊँ मैं,
चरणाचार्य धरूँ उवझाया, साधु पंच गुरु ध्याऊँ मैं।
जिनवाणी जो द्वादशांगमय, अमृत जैसे हैं शुभ वैन,
पंचगुरु के दर्शन करके, होते तृप्त हमारे नैन।।

षोडश भावन दशविध धर्म, रत्नत्रय पूजूँ उर लाय,
अकृत्रिम–कृत्रिम चैत्यालय, चैत्य जजूँ नित मन हर्षाय।
पंचमेरु–नन्दीश्वर देवालय, में राजित जिन भगवान,
हृदय धरूँ नित भावन वन्दूँ, पाने अपना शिवपद धाम।।

सम्मेदाचल–अष्टापद, पावापुर–चम्पापुर–गिरनार,
बीस विदेह क्षेत्र प्रभु पूजूँ, चौबीसों जिन लूँ उरधार।
जिनवर के वसु सहसनाम शुभ, बहुविधि गाऊँ उनका सार,
सब मंगलदायी सुखकारी, नमहूँ उर से बारम्बार।।

दोहा

जल–गंधाक्षत–पुष्प–चरु–दीप–धूप–फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूजहूँ, बहुविधि भक्ति बढ़ाय।।

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–सर्वसाधुभ्यो, द्वादशांग जिनागमेभ्यो, दशलक्षण धर्मेभ्यो, षोडश कारणेभ्यो, सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्रेभ्यो, त्रिलोक स्थित कृत्रिमाकृत्रिम जिन चैत्यालयेभ्यो, नन्दीश्वर द्वीप स्थित द्विपंचाशत् जिन चैत्यालयेभ्यो, पंचमेरु स्थित अशीति जिनचैत्यालयेभ्यो, श्री सम्मेद–अष्टापद–ऊर्जयन्तगिरि–चम्पापुर–पावापुर आदि सिद्ध क्षेत्रेभ्यो सातिशय क्षेत्रेभ्यो, विद्यमान विंशति तीर्थङ्करेभ्यो, अष्टाधिक जिन सहस्रनामेभ्यो, श्री वृषभादि चतुर्विंशति तीर्थङ्करेभ्यो जलादि महार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्ति पाठ

चौपाई

शान्तिनाथ मुख शशि उनहारी, शील-गुणव्रत-संयमधारी।
लखन एक सो आठ विराजे, निरखत नयन कमलदल लाजे।।
पंचम चक्रवर्तीपद धारी, सोलम तीर्थंकर सुखकारी।
इन्द्र नरेन्द्र पूज्य जिन नायक, नमो शान्तिहित शान्ति विधायक।।
दिव्य विटप पहुपन की वरषा, दुन्दुभि आसन वाणी सरसा।
छत्र चामर भामण्डल भारी, ये तव प्रातिहार्य मनहारी।।
शान्ति जिनेश शान्ति सुखदाई, जगत्पूज्य पूजौं शिर नाई।
परम शान्ति दीजै हम सबको, पढ़ैं तिन्हें पुनि चार संघ को।।

बसन्ततिलका

पूजैं जिन्हें मुकुट हार किरीट लाके,
इन्द्रादि देव अरु पूज्य पदाब्ज जाके।
सो शान्तिनाथ वरवंश जगत्प्रदीप,
मेरे लिये करहिं शान्ति सदा अनूप।।

इन्द्रवज्रा

सम्पूजकों को प्रतिपालकों को, यतीनकों को यतिनायकों को।
राजा प्रजा राष्ट्र सुदेश को ले, कीजै सुखी हे जिन! शान्ति को दे।

स्रग्धरा छन्द

होवे सारी प्रजा को सुख, बलयुत हो, धर्मधारी नरेशा,
होवे वर्षा समय पै, तिलभर न रहे, व्याधियों का अन्देशा।
होवे चोरी न जारी, सुसमय बरतैं हो न, दुष्काल मारी,
सारे ही देश धारैं, जिनवर-वृषको जो, सदा सौख्यकारी।।

दोहा

घातिकर्म जिन नाश कर, पायो केवलराज।
शान्ति करो सब जगत में, वृषभादिक जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्रीमन्तं भगवन्तं कृपालसंतं वृषभादि महावीर पर्यन्त चतुर्विंशति तीर्थंकर परं देवं आद्यानामाद्ये-मध्यलोके-जम्बूद्वीपे-भरत क्षेत्रे-आर्य खण्डे- भारतदेशे..... प्रदेशे..... जिले..... मासे..... पक्षे..... वासरे शुभदिन पौर्वाह्णिक समये मुन्यार्यिका श्रावक-श्राविकानां सकल कर्म क्षयार्थं चरणारविंदे शांतिधारा समर्पयामि (करोमि) (मुनि-आर्यिका-श्रावक-श्राविका जो तीर्थंकर भगवान के सामने शांतिधारा देवें देखें ताके कर्मन की क्षय।)

मन्दाक्रान्ता

शास्त्रों का हो, पठन सुखदा, लाभ सत्संगति का,
सदवृत्तों का, सुजस कहके, दोष ढाकूँ सभी का।
बोलूँ प्यारे, वचन हित के, आपका रूप ध्याऊँ,
तौलौं सेऊँ, चरण जिन के, मोक्ष जौ लौं न पाऊँ।।

आर्या

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में।
तब लौं लीन रहूँ प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति पद मैंने।।
अक्षर पद मात्रा में दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे।
क्षमा करो प्रभु सो सब करुणा करि, पुनि छुड़ाहु भवदुख से।।
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण शरण बलिहारी।
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी।।

शान्तिभक्ति समाधिभक्ति पठित्वा कायोत्सर्गं करोम्यहम्
(पुष्पांजलिं क्षिपामि)

विसर्जन

बिन जाने व जानके रही, टूट जो कोय।
तुम प्रसादतैं परम गुरु, सो सब पूरन होय।।1।।

पूजन विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान।
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहुँ भगवान।।2।।

मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव।
क्षमा करहुँ राखहुँ मुझे, देहु चरण की सेव।।3।।

(यहाँ ठोने में पुष्प क्षेपण करके समापन करें)

आये जो जो देवगण, पूजैं भक्ति प्रमाण।
ते सब जावहुँ कृपाकर, अपने अपने थान।।

(निम्नांकित छन्द पढ़ते हुये गवासन मुद्रा से अर्हंत भगवान को नमोऽस्तु करके आशीर्वाद लेते हुए कायोत्सर्ग पूर्वक कार्य पूर्ण कर ठोने में चढ़े पुष्प की आशिका नहीं लेना चाहिये)

श्री जिनवर जी की आसिका, लीजै शीश चढ़ाय।
भव भव के पातक कटैं, दुःख दूर हो जाय।।

साथ हो साधु का गर तो दिखाई सार देता है,
हमें इंसान में खिलता दिखाई प्यार देता है।
बिना साधु के दुनियाँ में न होली है न दीवाली,
वो साधु ही सभी जन को दिखा त्यौहार देता है।।

।। वीतराग शासन जयवंत हो ।।

श्री भक्तामर महामण्डल विधान

पानी में डूबने पर मृत्यु और
भक्ति में डूबने पर मुक्ति निश्चित है।

* उच्चारणाचार्य विनम्रसागर

प्रकाशन
श्रमण श्रुत संवर्द्धन ट्रस्ट

मुद्रक : ज्योति ग्राफिक्स, किशनपोल, जयपुर मो. 8290526049, 8619727900